國家圖書館出版品預行編目(CIP)資料

[illegible]
[illegible]
[illegible]

自 2011 年起，達賴喇嘛尊者因應東南亞聯合請法團之懇請，傳授《入菩薩行》；本作品所收錄《入行論》第一～五品即是 2011 與 2012 年尊者之教授。尊者於傳授中指出：思維菩提並於成辦菩提竭盡心力之菩薩，於行持乃說爲三行持——趣入之行持、修習之行持、成辦之行持，因爲是針對這些菩薩行持作解說，所以，便將宣講此所詮之典籍稱名爲《入菩薩行》。

本作品之翻譯，由於必須配合尊者以藏文講解時所使用之語詞，因此整部論典之頌文主要乃依據藏文再行翻譯，此外，譯者亦獲得目前任教於印度、瓦拉那西．鹿野苑「高級藏學研究學院」之師長——拉巴次仁法師（Ven. Lhakpa Tsering）的協助，對照梵文原文以及參考印度譯文而將此論典重新譯出，故未採用任何前賢之譯文。另外，爲了提供一些希求者更多學習參考，亦將貢曹杰尊者解釋《入行論》之著作——《入菩薩行之佛子津梁釋》重新翻譯，置於附錄部分以供參閱。

本出版品之光碟未如往昔附有“片頭提問”，而是以《入行論》第三品之迴向祈願文作代替；藉此，期望本作品不論以直接或間接等任何方式，都能令一切有所希求之眾生獲得利益，並願此些善業成爲無量無邊有情證獲遍智佛果之因。

如意寶影音流通佛學會　謹誌

國家圖書館出版品預行編目資料

入菩薩行 第六~八品 附 入菩薩行之佛子津樂釋中三品
寂天菩薩 造論；寶雲杰尊者 作釋
達賴喇嘛尊者 傳授；漢津翻譯 中譯. -- 初版. --
臺南市 : 南市如意寶影音流通佛學會, 民104.07
面； 公分 YN1507B
ISBN 978-986-86089-8-6(精裝附數位影音光碟)
1.中觀部
222.12 104012275

©YN1507B

入菩薩行第六~八品——附入菩薩行之佛子津樂釋中三品

作　者：寂天菩薩 造論 / 寶雲杰尊者 作釋
傳授者：達賴喇嘛 尊者
中　譯：漢津翻譯
出版者：台南市如意寶影音流通佛學會
發行人：簡芳欽
地　址：台南市東區70166東光路二段25巷3號
電　話：(06)2366562
部落格：http://blog.xuite.net/yeshin.norbu/wretch
電　郵：yeshin.norbu@gmail.com
劃撥帳號：31602809 台南市如意寶影音流通佛學會
銀行匯款：銀行代號 006　帳號 5713-717-218676
　　合作金庫銀行 南永康分行
　　戶名：台南市如意寶影音流通佛學會
海外護持銀行帳號（Donation for Overseas Bank Account）
BANK NAME : TAIWAN COOPERATIVE BANK CHIHKAN BRANCH
SWIFT CODE : TACBTWTP521　A/C NO. 5713-785-444208
NAME : JEAN CHIAN YEONG
印　刷：耿欣印刷有限公司 (02)22254005
初　版：中華民國104年7月
ISBN 978-986-86089-8-6(精裝附數位影音光碟)

◉ 印度・達蘭莎拉「達賴喇嘛尊者辦公室」授權發行

◎本佛學會所出版之法寶，免費結緣贈送，禁止販售◎
為了維護法寶內容完整性以及防止不肖商人圖利
歡迎大量影印　請勿隨意翻印

自 2013 年起，達賴喇嘛尊者因應東南亞聯合請法團之啓請，傳授《入菩薩行》；本作品所收錄《入行論》第九～十品乃是尊者於 2014 年以及 2015 年之教授。其中，〈般若度品〉主要內容是快擇空性見，因此，便與內外道許多宗論產生關聯；〈迴向品〉是在修持無限量的利他心之後，於其上所作之迴向，對增廣善業具有相當大的效益。

爲了提供一些希求者更多學習參考，本書於尊者之教授外，譯者亦將貴普杰尊者解釋《入行論》之著作——《入菩薩行之佛子津梁釋》重新翻譯，置於附錄部分以供參閱。

本作品之翻譯，由於必須配合尊者以藏文講解時所使用之語詞，因此整部論典之頌文主要乃依據藏文再行翻譯，而未採用任何前賢之譯文。另外，譯者亦獲得目前任教於印度，瓦拉那西．鹿野苑「高級藏學研究學院」之師長——拉巴次仁法師（Ven. Lhakpa Tsering）的協助，對照《入行論》梵文原文以及參考印度譯文[1]之後，將藏譯與梵文原文有所出入之字句於釋中加註說明。

如意寶影音流通佛學會　謹誌

---

1. ACHARYA SHANTIDEVA'S BUDHICHARYAVATAR, By Prof. Rama Sankara Tripathi, (BAUDDHA-HIMALAYA-GRANTHAMALA VOL-8, CENTRAL INSTITUTE OF BUDDHIST STUDIES LEH LADAKH 1989)

國家圖書館出版品預行編目資料

入菩薩行 第九～十品 附 入菩薩行之佛子津梁釋後二品
寂天菩薩 造論；賈曹杰尊者 作釋
達賴喇嘛尊者 傳授；譯津翻譯 中譯. — 初版. —
臺南市 : 台南市如意寶影音流通佛學會,
民105.08 面； 公分 YN1608B
ISBN 978-986-93484-0-9（精裝附數位影音光碟）
1.中觀部
222.12 105014033

©YN1608B

入菩薩行第九～十品——附入菩薩行之佛子津梁釋後二品

作　者：寂天菩薩 造論 / 賈曹杰尊者 作釋
傳授者：達賴喇嘛 尊者
中　譯：譯津翻譯
出版者：台南市如意寶影音流通佛學會
發行人：簡芳歆
地　址：台南市東區70165東光路二段25巷3號
電　話：(06)2368562
部落格：http://blog.xuite.net/yeshin.norbu/wretch
電　郵：yeshin.norbu@gmail.com
劃撥帳號：31602809 台南市如意寶影音流通佛學會
銀行匯款：銀行代號 006 帳號 5713-717-218676
合作金庫銀行 南永康分行
戶名：台南市如意寶影音流通佛學會
海外護持銀行帳號（Donation for Overseas Bank Account）
BANK NAME : TAIWAN COOPERATIVE BANK CHIHKAN BRANCH
SWIFT CODE : TACBTWTP521 A/C NO : 5713-765-444203
NAME : JEAN CHIAN YEONG
印　刷：耿欣印刷有限公司 (02)22254005
初　版：中華民國105年8月
ISBN 978-986-93484-0-9（精裝附數位影音光碟）

● 印度・達蘭莎拉「達賴喇嘛尊者辦公室」授權發行

◎本佛學會所出版之法寶，免費結緣贈送，禁止販售◎
為了維護法寶內容完整性以及防止不肖商人圖利
歡迎大量助印　請勿隨意翻印

自 2011 年起，達賴喇嘛尊者因應東南亞聯合請法團之邀請，傳授《入菩薩行》；本作品所收錄《入行論》第六～八品即是 2012～2014 年尊者之教授。尊者於傳授中指出：平常在修學菩提心方面，整體來說是根據《入行論》，其中特別是第六品〈忍辱〉以及第八品〈靜慮〉二品，於修持自他平等相換之菩提心修持上，乃成爲最重要的憑依。

本作品之翻譯，由於必須配合尊者以藏文講解時所使用之語詞，因此整部論典之頌文主要乃依據藏文再行翻譯，而未採用任何前賢之譯文。另外，譯者亦獲得目前任教於印度．瓦拉那西．鹿野苑「高級藏學研究學院」之師長——拉巴次仁法師（Ven. Lhakpa Tsering）的協助，對照《入行論》梵文原文以及參考印度譯文[1]之後，於藏譯與梵文原文有所出入之字句加註說明。除此之外，爲了提供一些希求者更多學習參考，亦將賈曹杰尊者解釋《入行論》之著作——《入菩薩行之佛子津梁釋》重新翻譯，置於附錄部分以供參閱。

如意寶影音流通佛學會　謹誌

1. ACHARYA SHANTIDEVA'S BUDHICHARYAVATAR, By Prof. Rama Samkara Tripathi, (BAUDDHA-HIMALAYA-GRANTHAMALA VOL-8, CENTRAL INSTITUTE OF BUDDHIST STUDIES LEH LADAKH 1989)

Jyoti Singh -(2)

उपन्यास: मूल्यांकन के नये आयाम

सं. प्रभाकर सिंह

Upanyas : Mulyankan Ke Naye Aayam

Edited by
Prabhakar Singh

© सम्पादक

ISBN : 81-85997-11-X

आवरण : आशीष कुमार गुप्ता

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 300/-

प्रकाशक :
प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर
दुकान नं. 5
श्री विश्वनाथ मंदिर
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
फोन : 09415813151
ईमेल : progressivebhu@gmail.com

अक्षर संयोजन
पी.पी. कम्प्यूटर
अखरी, बाईपास, वाराणसी

मुद्रक :
मित्तल ऑफसेट
कौशलेश नगर, सुन्दरपुर, वाराणसी

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय/Deemed University
भारत सरकार, सारनाथ, Varanasi

इस पुस्त

भारत में 'उपन्यास' का जन्म उपनि
विचार एवं सृजन स्रोत के संश्लेष से 'उ
हिन्दी के आरम्भिक उपन्यासकार पश्चि
हैं तो आधुनिक परिवेश में उपन्यासों की
और आधुनिकता के साथ भारतीयता की
में उपन्यास की संरचना और रचना-दृ
कहा जाय कि हिन्दी उपन्यास को व्याप
गलत न होगा। इसके बाद उपन्यासों का
अज्ञेय, इलाचन्द जोशी मनोविज्ञान के आ
और स्मृति की नई चेतना के साथ भगव
के उपन्यास रचे गये। उपन्यासों में स
त्रासदी, लोकतंत्र के यथार्थ, आँचलिक
विडम्बनाओं को यशपाल, रेणु, भीष्म
पिल्लै, श्रीलाल शुक्ल और मंजूर एह
के अन्तिम दशकों में स्त्री, दलित और
बहुरंगी हुई। इसी दौर में भूमण्डलीक
रचनाशीलता का विस्तार हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय भा
रचनात्मक मूल्यांकन हुआ है। उपन
रुचि और आलोचना में उनकी गति क
में गौरतलब बात यह है कि ये उपन
को तो सृजित करते ही हैं इनमें इतिह
के चयन और आलोचना के कैनवस
सम्प्रेषित हो जाय और अनायास पै
विधान और कथापन को इतने भर
है तो इसका सारा श्रेय पुस्तक में श
मिला। अनुज विशाल विक्रम, विन

का आभारी हूँ
ा खतरा है जो
त्मक नया पाठ
ह और विश्वास

प्रभाकर सिंह

विषय-सूची

क्र.सं.	उपन्यास का नाम	लेखक	पृष्ठ सं.
१.	उपन्यास : आरम्भ से अब तक	प्रभाकर सिंह	१-२८
२.	रंगभूमि : मानवीय जिजीविषा और संघर्ष की व्यथा-कथा	अखिलेश कुमार शंखधर	२९-३२
३.	गबन : आदर्श और यथार्थ का द्वन्द्व	शिखा तिवारी	३३-३९
४.	कर्मभूमि : 'स्वातन्त्र्य चेतना' की व्यापक कथा-भूमि	मनोज कुमार सिंह	४०-४३
५.	गोदान : पढ़ने और परखने के क्रम में	राहुल सिंह	४४-५४
६.	चित्रलेखा : पाप और प्रेम की अनूठी कथा	अजीत प्रियदर्शी	५५-७२
७.	त्यागपत्र : सार्थकता और निरर्थकता की द्वन्द्व कथा	प्रवीण कुमार यादव	७३-८३
८.	शेखर एक जीवनी और सुनीता : अकादमिक पठनों की एक पड़ताल	संजीव कुमार	८४-१०७
९.	दिव्या : इतिहास, कल्पना और आकांक्षा	मिथिलेश शरण चौबे	१०८-१२१
१०.	बाणभट्ट की आत्मकथा : यथा और यथार्थ के बीच गल्प का सार्थक प्रयोग	विनोद तिवारी	१२२-१४०
११.	झाँसी की रानी : मुक्ति और गौरव की स्मृति कथा	विशाल विक्रम सिंह	१४१-१४८
१२	बहती गंगा : पुनर्मूल्यांकन	सर्वेश कुमार सिंह	१४९-१६८
१३	मैला आँचल : चेथरिया पीर में एक चौथड़ा और	अमित एस. परिहार	१६९-१७४
१४.	झूठा-सच : विभाजन की त्रासदी का स्याह और सफेद	आशीष त्रिपाठी	१७५-१८८
१५.	काला-जल : मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाएं और भौतिक संघर्ष का दस्तावेज	बृजराज सिंह	१८९-२०५
१६.	आधा-गाँव : विभाजन की त्रासदी और राष्ट्रीय एकता की महागाथा	मेराज अहमद	२०६-२१६
१७.	तमस : रात के उर में दिवस की चाह का शर	विन्ध्याचल यादव	२१७-२२८

REGISTRAR

उपन्यास

क्र.सं.	उपन्यास का नाम	लेखक	पृष्ठ सं.
१८	राग-दरबारी : भारतीय जनतंत्र पर महाव्यंग्य	नीरज कुमार द्विवेदी	२२९-२३८
१९.	धरती धन न अपना : शोषण का अप्रतिम दस्तावेज	कृष्ण मोहन	२३९-२५०
२०.	नाच्यों बहुत गोपाल : अप्रत्यक्ष शोषण की मार्मिक गाथा	कृष्ण मोहन	२५१-२६०
२१.	महाभोज : संसदीय राजनीति का सच	रविशंकर उपाध्याय	२६१-२६५
२२.	नौकर की कमीज : यथार्थ में कल्पना और कल्पना में यथार्थ	वैभव सिंह	२६६-२७८
२३.	कसप : विद्रूप यथार्थ पर व्यंग्य	भरत प्रसाद	२७९-२८२
२४.	सूखा बरगद : सम्पूर्ण व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न	कुमार वीरेन्द्र	२८३-२९०
२५.	झीनी-झीनी बीनी चदरिया : ताना और बाना में ढली बनारस की बुनकरी	नीरज खरे	२९१-२९८
२६.	मित्रो मरजानी : स्त्री संवेदना की साहसिक अभिव्यक्ति	श्रुति कुमुद	२९९-३०५
२७.	कठगुलाब : स्त्री जीवन का संघर्ष और सृजन	नीलेश	३०६-३११
२८.	कलिकथा : वाया बाईपास की संवेदना से गुजरते हुए	श्वेता सिंह	३१२-३१८
२९.	आवां : कंथ तुम्हारा मरम मैं चीन्हा	वन्दना मिश्रा	३१९-३२७
३०.	दौड़ : समकालीन समाज का यथार्थ	महात्मा एस. पाण्डेय	३२८-३३२
३१.	गोरा : पाठ और संदेश	ज्योति सिंह	३३३-३३९
३२.	चेम्मीन :विवश मानव पीड़ाओं की महागाथा	ज्योतीश्वर मिश्र	३४०-३५३
३३.	संस्कार : कृत्रिमता पर स्वाभाविकता की जीत	अभिषेक शर्मा	३५४-३६१
३४.	आग का दरिया : वाया वक्त, हुस्न और मौत	अविनाश कुमार सिंह	३६२-३६६

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी-221007, Sarnath, Varanasi

आयाम

हुए कहता है कि किसी व्यवसाय
ना चाहिए, उसमें अपना सिद्धांत

रपोरेशन' में बराबर की सहभागी
ाई करती है। स्टैला की उम्र
ब वह लगभग आधी दुनिया घूम
से गोरी रंगत मिली है और पिता
लड़की कम लड़का ज्यादा नजर
कड़ी नजर रहती है। इस प्रकार
हे बाज़ारवादी और उपभोक्तावादी
र गढ़ा है, उसे तैयार किया है।
ड़ी के नवदंपति हैं, उनका एक
— है। अभिषेक जिस विज्ञापन
में टूथपेस्ट युद्ध छिड़ा
ऐसे माडल की तलाश
भी हो। विज्ञापन और
लग हैं। दोनों में छोटी-
पन्यास में अभिषेक और
ता के साथ चित्रित किया

गोरा : पाठ और संदेश

ज्योति सिंह

रवीन्द्रनाथ का विश्वप्रसिद्ध उपन्यास 'गोरा' (१९१०) भारतीय कथा साहित्य की इतिहास यात्रा में मील का पत्थर है। यह पहले बंगला के सुप्रसिद्ध पत्र 'प्रवासी' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। समसामयिक समाज और उसमें चलने वाली विचारधाराओं के घात-प्रतिघात का जैसा सजीव चित्रण इसमें पाया जाता है वैसा किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलता। शान्तिनिकेतन के प्रशान्त वातावरण में बंगाली समाज को गहराई से समझने का अवसर कवि को इस बार मिल गया था। इसके साथ ही अपने दो मित्रों—श्री ब्रह्मबान्धव उपाध्याय और श्री रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी से समाज की तत्कालीन राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं पर भी उनका विचार—विनिमय चलता रहता था। 'गोरा' इसी अध्ययन और विचार विनिमय का प्रतिफल है।

इसमें एक पक्ष समाज के उस दल का है जो अपने को सुधारक या प्रगतिशील मानता है—सुचरिता, ललिता, आनन्दमयी और परेशबाबू उसी दल के सदस्य हैं। वह दल ब्रह्म समाज के नाम से जाना जाता है। वह दल समस्त सुधारों को हिन्दू समाज में लाना चाहता है और ऐसा करना चाहता है इसकी पुरानी इमारत का विध्वंस करके। वह रूढ़ि और परम्परागत प्रथाओं का घोर-विरोधी है। दूसरा दल उन लोगों का है जो सनातनधर्म के पक्के अनुयायी हैं और जो अपने उस पुराने धर्म में जरा-सा परिवर्तन भी सहन नहीं कर सकते; न अन्य मतावलंबियों द्वारा की जाने वाली समीक्षा ही सहन कर सकते हैं। प्रगतिशील दल पुरानी प्रथाओं और विश्वासों के प्रति जितनी अनास्था प्रकट करता है, यह दल अपनी प्राचीनता के साथ उतनी ही तीव्रता के साथ और चिपटता जाता है। गोरा इसी दल का प्रतिनिधि है। दोनों पक्षों में लम्बे-लम्बे तर्क वितर्क और वाद-विवाद चलते हैं और उन्हीं के साथ-साथ धीरे-धीरे कथानक भी सरकता रहता है। दोनों पक्षों में समन्वय कर चलने वाले सुधी भी हैं, जिनका प्रतिनिधित्व परेशबाबू करते हैं। गोरा के कथानक पर युगनायक स्वामी विवेकानन्द की सुयोग्य शिष्या भगिनी निवेदिता के व्यक्तित्व और विचार का प्रभाव बतलाया जाता है।

'गोरा' के कथानक के चित्रपट पर दो रेखाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं—पहली स्वदेश अथवा राष्ट्रीयता की रेखा, और दूसरी हिन्दुत्व की रेखा। भारत के अतीत गौरव को दृष्टिपथ में रखते हुए हमें भारत माता को विदेशी शासन से बचाना है, यह चेतना 'गोरा' का मूलमंत्र है। स्वराष्ट्र का उद्धार कर हमें पूरे विश्व की सुख-शांति पर दृष्टि रखनी है, यह संदेश भी 'गोरा' में मुखर है। इस तरह 'गोरा' में विश्वात्मकता की दृष्टि से मनः संकोच

रजिस्ट्रार/REGISTRAR
केन्द्रीय तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार/Ministry of Human Resource Development, Government of India)
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

R K Sharma
—(3)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

T. A Shastri (4)

ISSN 2395 - 1524

धीः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

V.R Vajracharya - (5)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Banaras; Vol-(6)

पालि-विमर्श

प्रबन्ध सम्पादक
पी. सीवली थेरो

सम्पादक
विमलेन्द्र कुमार
रमेश प्रसाद

महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया
(अन्तर्राष्ट्रीय पालि संस्थान)
सारनाथ, वाराणसी

भारती प्रकाशन, वाराणसी

बुद्धाब्द 2559 खीस्ताब्द 2015

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया
(अन्तर्राष्ट्रीय पालि संस्थान)
सारनाथ, वाराणसी

भारती प्रकाशन, वाराणसी

ISBN: 978-93-80550-82-4

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

पालि-विमर्श

[redacted]

[redacted]



महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया
(अन्तर्राष्ट्रीय पालि संस्थान)
सारनाथ, वाराणसी

भारती प्रकाशन, वाराणसी

[redacted]

खीस्ताब्द 2015

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Managing Editor :
Ven. P. Seewalee Thero
Bhikkhu-in-charge, MBSI, Sarnath, Varanasi

Editors :
Prof. Bimalendra Kumar
Deptt. of Pali & Buddhist Studies, Faculty of Arts,
Banaras Hindu University, Varanasi-221005 (U.P.)
email: bimal_bhu_60@yahoo.co.in
bimalendrakumar9@gmail.com

Dr. Ramesh Prasad
Associate Professor
Deptt. of Pali & Theravada,
Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi-221002 (U.P.)
email: rprasadpali@gmail.com

© Editors

First Edition : 300 Copies, 2015

Price : Rs. 600.00

ISBN : 978-93-80550-82-4

Publishers :
Maha Bodhi Society of India,
(International Pali Institute)
Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.)
email: mbsi.sarnath@yahoo.co.in
Bharati Prakashan
Oriental Publishers and Distributors,
Dharmasangha Complex, Shop No. 49
Durgakund, Varanasi-221010
Phone 09305292293
email : bharatiprakashan@gmail.com
ashutosh936@gmail.com

Printers :
Sattanam Printers
Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Banaras Vol -⑦

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Thakur Sain Negi - (8)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्ध ग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी-221007, Varanasi

Dhīḥ

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55



Editors

LOSANG NORBU SHASTRI
Director

KAMESHWAR NATH MISHRA
Head of Department

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 VAIŚĀKHA PŪRṆIMĀ C.E. 2015

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Chief Editor : Prof. L. N. Shastri

Publication In-charge : Dr. Pema Tenzin

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya

Banarsi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Vol. LV, 550 copies, 2015

Price : Rs. 200.00

© Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi, 2015

Published by:

Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221 007

ISSN 2395 - 1524

Printed by:

Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

T.S. Negi (9)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

REGISTRAR
Central University of Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Tsering Dolkar (10)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

Rampa Dorjee (11)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Central University of Tibetan Studies
Sera Jey Campus, Sarnath, Varanasi

Gautam Nandal
(12)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

Library Purpose (13)

ISSN 2395 - 1524

धीः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal
of
Rare Buddhist Texts Research

55

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2015

Prof. Ven. Samdhong Rinpoche
Chancellor
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi (Deemed University)
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

Mahesh Sharma (14)

Education as a Basic Right of Humankind

International Gandhi Jayanti Conference 2015

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

INDIALOGUE FOUNDATION
Dialogue for Peace

Jamia Millia Islamia
(A Central University)

Gandhi Smriti
and
Darshan Samiti

First Impression: 2015

© Indialogue Foundation, New Delhi

International Gandhi Jayanti Conference 2015 on Education as a Basic Right of Humankind

ISBN: 978-81-931347-0-2

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Published by

INDIALOGUE FOUNDATION
New Delhi

Typeset by
Excel Publishing Services, New Delhi–110067
E-mail: prepress@groupexcelindia.com

Printed by
Excel Printing Universe, New Delhi–110067
E-mail: printing@groupexcelindia.com

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

48. Educational Philosophy of Gandhi and Gulen: Discussing the Similarities and the Differences
M.A. Mufazzal 330

CHAPTER X: SPORT, ART, MUSIC AND HEALTH EDUCATION: HOLISTIC DEVELOPMENT

49. Role of Sport, Art and Music for Human Development
U. Pandian 337

50. The Face of Music Education in Schools in India
Vishal 341

51. Rural Healthcare Scenario and Health Education at Village Level in India
Vijayetta Sharma 348

52. Physical Education, Sports and Education—An Unified Domain for the All-Round Human Development
Madhu Sudan Hazra and Sudarsan Biswas 352

53. Holistic Education: A Cementing Backbone for Cognitive Development and Self-Regulation
Jagannath Kunar 356

CHAPTER XI: NAI TALIM: BASIC EDUCATION IN GANDHI'S VISION

54. Elementary Education of Muslims in India
Vetukuri P.S. Raju 365

55. Present Status and Problems of Secondary School Level Education in Himachal Pradesh: An Analytic Study
Sanjeev Kumar 375

56. Integration of Mathematics and Craft at Elementary Level
Roohi Fatima 394

57. Education for Life through Life: Philosophy and Principle of Basic Education
K. Mohammed Basheer 402

58. Exploring Incentives in School Education: A Micro Study
Indrani Sengupta 406

CHAPTER XII: ETHICS AND KNOWLEDGE SOCIETY

59. Aligning Science and Values in Classroom Teaching: A Myth or a Reality?
Remya Parameswar Iyer 419

60. Gandhian Values through the Lens of Scientific Temperament
Jasim Ahmad 425

61. Open Educational Resources: An Overview in Indian Perspective with Special Reference to Professors and Students
Keerti Singh and Nidhi Prajapati 429

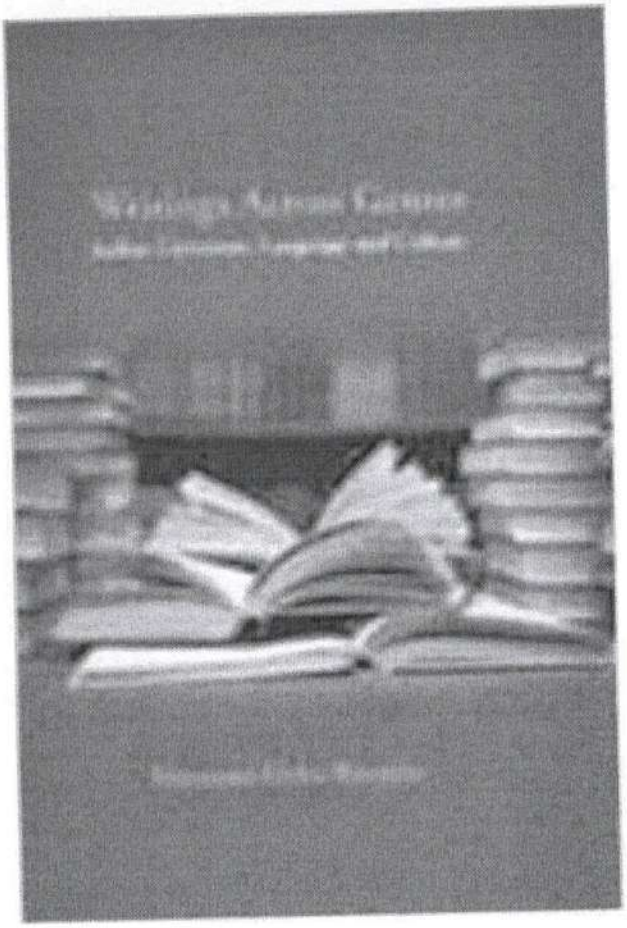
62. Understanding the Gandhian Ethics of Education: A Case for Vernacular Cosmopolitanism
Mahesh Sharma 435

63. Religious and Scientific Education in the Knowledge Society
Saidalavi Kundupuzhakkal 439

AUTHOR INDEX 443

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Varanasi

M. G. Banerjee (15)



Brand: Kaveri Book Service
Product Code: KBS-S153

Author : Banerjee, Mousumi Guha
ISBN : 9788192624488
Year of Publication: 2015

सुनीता/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

M G Banerjee - 16

Daring to Write

The Two Creative Daughters of Victorian England

Mousumi G. Banerjee

The book deals with the poetry of Elizabeth Barrett Browning and Christina Rossetti who wrote during stringent Victorian times when women's poetry had to suffer several onslaughts of conventional standards of thought and practice, since it gave expression to the woman writer's hidden and personal experience through language – a subject that was formerly taken up only as a supplementing device. Amidst such challenges of a stifling convention, they wrote resiliently about the power of female art and the struggles of intelligent women for cultural autonomy. The work thus takes up this crusading and self-conscious emphasis on the female voice that proved to be a badge of their literary accomplishment.

Mousumi G. Banerjee teaches at The EFL University. She is also an Associate at IIAS Shimla and a Fulbright-Nehru Postdoctoral Research Fellow at Amherst College, Massachusetts, USA.

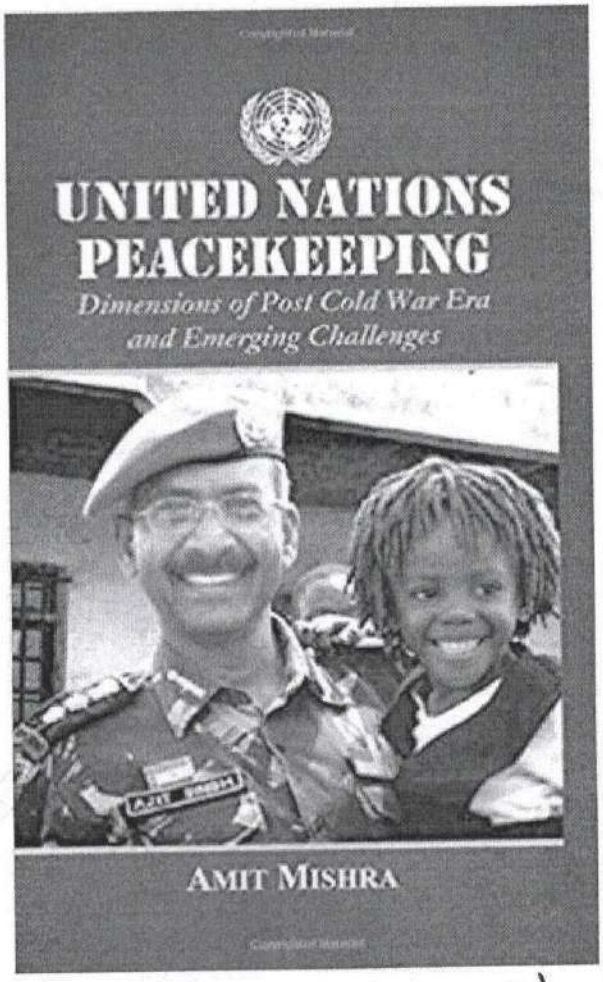


ISBN 9798631752184

90000

9 798631 752184

Amit Mishra (17)



कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

YS Books International
(A Tribute to Martyrs)
We ♥ Books
(Publishers, Distributors, Importers, Exporters & Library Order Suppliers)

Off: F-31 Bali Nagar, Near Ramesh Nagar Metro Station, New Delhi -110015
Tel No. 011-45562623, Mob. No. 9801412623
Email: ysbooks.international@gmail.com,
Website: ysbooksinternational.com

Copyright © 2015 by Amit Mishra

No part of the book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission from the publishers.

The views, content and opinion expressed in the book are the individual assertion and opinion of the author and the publisher do not take any responsibility for the same in any manner whatsoever. The same shall solely be the responsibility of the author.

ISBN-13: 978-93-837932-2-8

Printed at Mayur Press, New Delhi

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Jampa Samten - 18

རྒྱལ་རྩེ་ཐེམ་སྤྱངས་མའི་བཀའ་འགྱུར་དཀར་ཆག

CATALOGUE OF THE ULAN BATOR RGYAL RTSE THEM SPANGS MA MANUSCRIPT KANGYUR

Jampa Samten

Hiroaki Niisaku

THE SANKIBO PRESS

TOKYO 2015

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN978-4-7963-0250-0
C3315 ¥9500E

定価（本体 9,500 円＋税）





केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ཨུ་ལན་བཏོ་ཕོམ་རྒྱལ་རྩེ་ཐེམ་སྤངས་མའི་བཀའ་འགྱུར་དཀར་ཆག

CATALOGUE OF THE ULAN BATOR RGYAL RTSE THEM SPANGS MA

MANUSCRIPT KANGYUR

Published in 2015 by the SANKIBO PRESS
5-28-5 Hongo, Bunkyo-ku, Tokyo 113-0033 Japan

© Jampa Samten, Hiroaki Niisaku

All rights reserved. No part of this book may be reproduced by any means without prior written permission from the publisher.

ISBN 978-4-7963-0250-0-C-3315

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jampa Samten (19)

བསྟན་བཅོས་ཀྱི་དཀའ་ཚག

དཀའ་བ་ཐོག་གསལ་ཚིག་བའི་ཤེ་ཀེ་ས་བཞི་ཀས།
བྱམས་ཐ་བསམ་གདམ་ཀྱི་ས་ཁུས་ཐུབ་དང་མཚན་ཁུ་བའིན།

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

བསྟན་བཅོས་ཀྱི་དཀར་ཆག



།སྟོན་ཀྱི་དཀར་ཆག་ཆོས་གསུངས་ཤེས་རབ་དཔེ་མཛོད་དེའི་ནང་གསུམ་དང་དུད་དེར་བཞུགས་པའི་དབེ་མཛོད་ཆག་རེད། ཕྱི་ལ་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་དཀར་ཆག་ལྟ་བུ་སྡེ་དགེ་སྐབས་བསྡུས་ཐེབས་དབེ་ཚིའི་སྐྱེད་ཡིན་ཡིད་དེ་སྐབས་བསྡུས་པ་ཆེས་ཤོས་ཡིན་ཞིང་ཤེས་རབ་ཀྱི་དཀར་ཆག་དེའང་པ་ཚེ་གཞལ་ཁ་སྐོང་བའི་རྗེས་ཐོག་ཏུ་ཡོད་ཅིང་ཡིན། ཡང་བསྟན་འགྱུར་ཀྱི་དཀར་ཆག་དེའང་པ་ཚེ་གཞལ་ཁ་སྐོང་བའི་རྗེས་ཐོག་ཏུ་ཡོད་ཅིང་ཡིན། འགྱུར་ཀྱི་དཀར་ཆག་ཚོགས་རིགས་ཚེན་ཡིན་པའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷ་ཅ་ཚེས་མཚའི་གཙུག་ལག་ཁང་གི་ཚོ་རྒྱུས་ཚུལ་ཁྲིམས་ཞུས་ཏེ་ཁོ་ཚོའི་ཐུགས་དགོངས་ཀྱང་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་དཀར་ཆག་ཆེ་ཆུང་ཐུན་མོང་ཙམ་ཞིག་ཏུ་ཡོད་པ་ལས་ཁྱད་པར་ཅུང་ཞིག་ཏུ་ཡོད་པ་ཡིན་ཞེས་ཁས་ལེན་ཞུས་ཡོད་པ་ཡིན་ལ། དེ་དུས་ཚེས་ཀྱི་གཙུག་ལག་ཁང་གི་ཚོ་རྒྱུས་ཚུལ་ཁྲིམས་ཞུས་ཏེ་དཔར་མཛོད་བཞིན་པ་ཡིན། །སྟོན་ཚེད་རྒྱས་བཤད་དང་བཅས་པ་ལེགས་པར་གྲུབ་སྟེ་དེ་ལས་ཚུར་ཡོད།།

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN:93-83441-58-7
9 789383 441587

© 2015 Library of Tibetan Works and Archives

དཔར་ཞྭངས་དང་པོ། ५००

བསྟན་བཅོས་ཀྱི་དཀར་ཆག

Series Title: lo rgyus deb phreng vol.19
Volume Title: bstan bcos kyi dkar chag (Catalogue of the Narthang Manuscript Tangyur)

Subject: Catalogue of Tangyur
Author: dpus pa blo gsal rtsod pa'i seng ge
Editor: Jampa Samten

ISBN:978-93-83441-58-7

Published by Library of Tibetan Works & Archives, Dharamshala, India, and printed at Norbu Graphics, New Delhi-110024

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jampa Chophel (20)

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

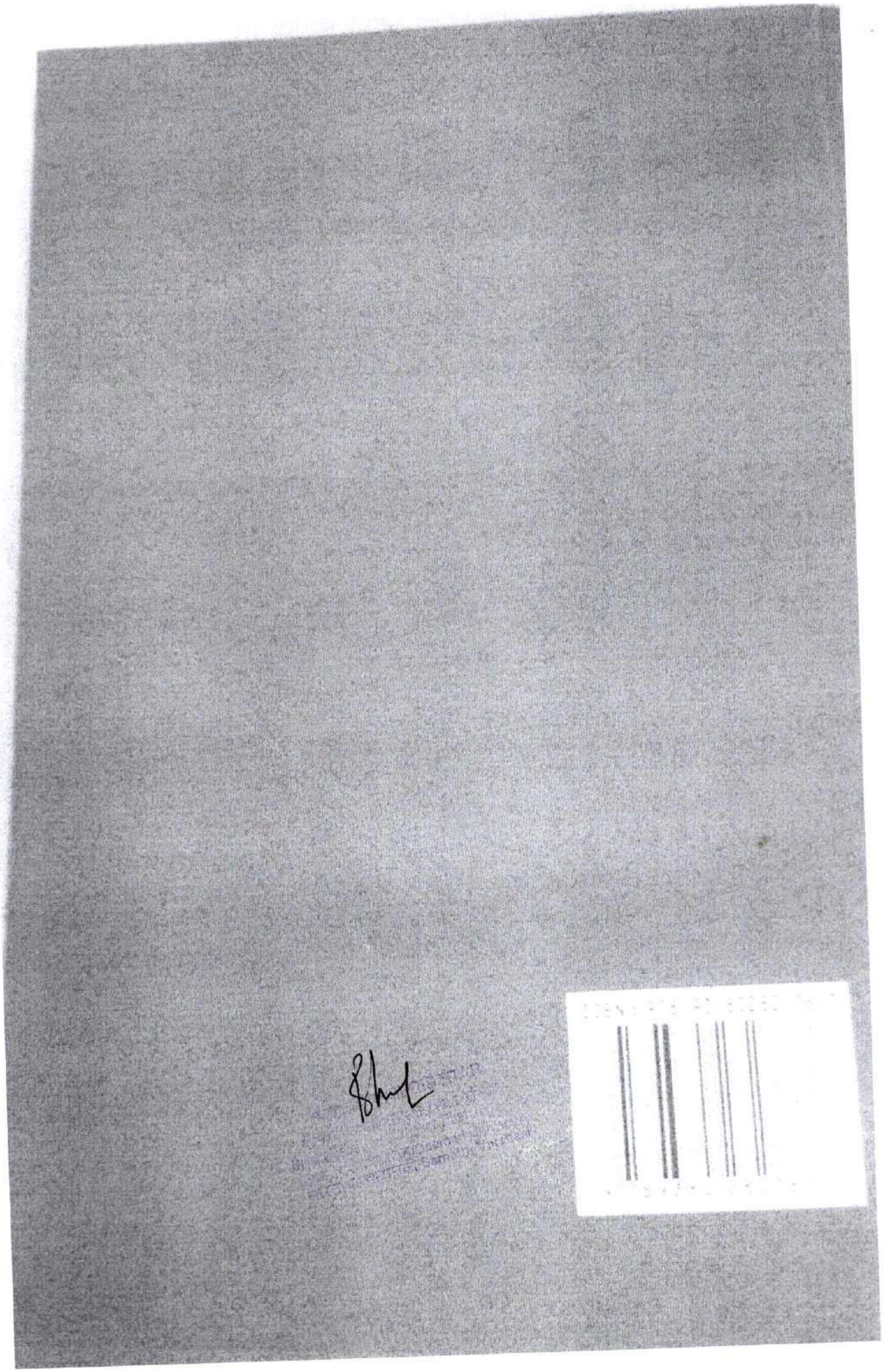
(बौद्धसाहित्यम्)

सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559 ख्रीष्टाब्दः 2016





What is Buddhist Studies?

Editor
Sanjib Kumar Das

Central Institute of Higher Tibetan Studies

The book titled "What is Buddhist Studies?" resembles a mirror that reflects some outlines of the most important and demanding topic on the academic study of Buddhism, subsuming both Buddhist doctrine and philosophy. The aforesaid term applies to both the traditional and scientific studies. It also applies to the academic field, which is a subset of religious studies, and is distinct from Buddhist Philosophy or Buddhist theology. Hence, Buddhist Studies covers the study of the five major and five minor sciences. These sciences are interconnected like spider-web. Each one of them has its own importance and significance. Each one of them is the supplement for each other and it is done by overcoming some specific discordant factor. Seeing the importance and significance, a plan was made to bring out a publication containing the outlines of some important and significant subject of Buddhist Studies introduced by Gautama the Buddha and his authorized disciples like Nāgārjuna, Asaṅga, Vasubandhu, Āryadeva, Śāntideva and so on. Accordingly, works were carried out to collect matters for the publication. The entire matter of the said publication has been abridged in fifty articles, which have mostly been prepared by the author while few have been contributed by the eminent Buddhist scholars.

Born in a middle class in West Bengal, Dr. Sanjib Kumar Das was educated at Chandpara Nimna Buniyadi Vidyalaya (Āmtalā) and then in Gobardanga Khāntura High School. Meanwhile, due to some of his personal problems, he fled away from home and worked as a waiter in several hotels and sweet shops for about two years in Kolkata. Later, he went to Darjeeling and took shelter in a Buddhist Monastery where he also worked as a helper of mason for about a year. There, an auspicious co-incidence came upon in his life that also totally changed his life as well. On account of the kindness of the Thupten Sanga Ch ling Monastery, he was admitted in its branch school named 'Drukpa Kagyu Destitute Home' where he studied upto standard VIII. Subsequently, he was sent to Varanasi in 1989 in order to get admission in the then Central Institute of Higher Tibetan Studies (present CUTS), Sarnath for higher studies. Getting admission, he obtained M.A., pursuing upon Buddhist Philosophy, Tibetan Language and other prescribed subjects. In 1998, he was awarded with the Kashi Naresh Gold Medal for being the best student of 1998. After completing M.A., he started doing his Ph.D, which he completed in 2002. In 1999, he was invited as a Translator from Tibetan into English to Taiwan where he stayed for about five months. In 2002, he got a temporary job in the Translation Department in the CIHTS, Sarnath and simultaneously a permanent job in the Central Institute of Buddhist Studies, Leh where he worked for about six years. In 2008, he got a new job in Visva-Bharati University, Santiniketan where he has been working till the post of Associate Professor in the Department of Indo-Tibetan Studies since he joined. Dr. Das composed, translated, edited, restored and compiled several books which have been published by different universities, institutions and publishers in India. Apart from translation, compilation, restoration and editing work, Dr. Das attended numbers of Local, National and International seminars, and presented papers.

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

ISBN 9789380852607



Buddhist World Press
425, Nimri Colony, Ashok Vihar
Phase-IV, Delhi-110052
Tel. 011-23259196, 23259648

Rs.2000

R K Sharma — 22

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

ख्रीस्ताब्दः 2016

ISBN : 978-93-80282-78-7



केन्द्रीय
Central
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

KĀLACAKRATANTRALAGHUGRANTHA-SAṂGRAHAḤ

(Vol. II)



Editor

Prof. Kameshwar Nath Mishra

Rare Buddhist Texts Research Department

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 C.E. 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinley Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya
Banarasi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price: Paperback Rs.130.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016. All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-78-7 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

༄༅། །དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཆུང་ཕྱོགས་བཏུས།

(པོད་གཉིས་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधविभागः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

R. K. Sharma (23)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

सुरक्षा सचिव/REGISTRAR
केन्द्रिय तुलना शि क्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

T. R. Shastri (24)

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

सम्पादकः
प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559 ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REG...
उच्च तिब्बती
...stitute of Hi...
...विद्यालय/Deemed...
...वाराणसी/Sarnath, Varanasi-22

ISBN : 978-93-80282-78-7

Central Institute
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी/Sa

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

KĀLACAKRATANTRALAGHUGRANTHA-SAṂGRAHAḤ

(Vol. II)



Editor
Prof. Kameshwar Nath Mishra

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 C.E. 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinley Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya
Banarasi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price: Paperback Rs.130.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016. All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-78-7 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

༄༅། །དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཆུང་ཕྱོགས་བཏུས།

(པོད་གཉིས་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधविभागः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

T. R. Shashni (25)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्ध ग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

REGISTRAR
Central University of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

V R Vajracharya-(26)

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

सम्पादकः
प्रो. कालिदासमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559 ख्रीस्ताब्दः 2016

Central Institute of Higher Tibetan Studies
सारनाथ, वाराणसी

ISBN : 978-93-80282-78-7

Central Institute
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी/Sa

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

KĀLACAKRATANTRALAGHUGRANTHA-SAṂGRAHAḤ

(Vol. II)



Editor
Prof. Kameshwar Nath Mishra

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 C.E. 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinley Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya
Banarasi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price: Paperback Rs.130.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016. All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-78-7 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

༄༅། །དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཆུང་ཕྱོགས་བཏུས།

(པོད་གཉིས་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधविभागः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559 ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

J. R. Vajracharya 27

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

BUDDHIST STUDIES

A Prospective Dimension



Editor

SANJIB KUMAR DAS

The works contain the scenario of the "Buddhist Studies : A Prospective Dimension" in India and abroad that developed since its inception dated back about 2550 years. Buddhist Studies, also known as Buddhology, is the academic study of Buddhism. The term applies especially to the modern academic field, which is a subset of religious and philosophical studies. Thus, scholars of Buddhist Studies represent a variety of disciplines including history, anthropology, hagiography and philosophy. The book contains a number of twenty-five selected valuable articles in tri-language which were presented during the last international seminar organized by the Centre for Buddhist Studies, Bhasha-Bhavana, Visva-Bharati, Santiniketan in collaboration with the Department of Indo-Tibetan Studies, Visva-Bharati in March, 2013 in which more than thirty-forty scholars from outside of the University and even from abroad including the scholars from within the University participated. The entire articles specially focus on the background, existing Buddhist Centres and Organizations, significance and prospective of Buddhist Studies.

Born in a middle class in West Bengal, **Dr. Sanjib Kumar Das** was educated at Chandpara Nimna Buniyadi Vidyalaya (Āmtalā) and then in Gobardanga Khānturā High School. Meanwhile, due to some family problems, he fled away from his home and worked as a waiter in several hotels and sweet shops for about two years in Kolkata. Later, he went to Darjeeling and took shelter in a Buddhist Monastery where he also worked as a helper of mason for about a year. Here, an auspicious co incidence came upon in his life that totally changed his life too. On account of the kindness of the Thupten Sanga Chöling Monastery, he was admitted in its branch school where he studied upto standard VIII. Subsequently, he was sent to Varanasi in 1989 in order to get admission in the then CIHTS, Sarnath for higher studies. Getting admission, he obtained M.A., pursuing upon Buddhist Philosophy, Tibetan Language and other prescribed subjects. In 1998, he was awarded with the Kashi Naresh Gold Medal for being the best student of 1998. After completing M.A., he started doing his Ph.D. which he completed in 2002. In 1999, he was invited as a Translator from Tibetan into English to Taiwan where he stayed for about five months. In 2002, he got a temporary job in the Translation Department in CIHTS, Sarnath and simultaneously a permanent job in CIBS, Leh where he worked for about six years. In 2008, he got a new job in Visva-Bharati University, Santiniketan where he is working now on the post of Associate Professor in the Department of Indo-Tibetan Studies. Dr. Das translated, edited, restored, compiled and composed more than fifteen books which have been published by different universities, institutions and reputed publishers in India. Apart from translation, compilation, restoration and editing work, Dr. Das attended number of Local, National and International seminars, and presented papers.



Buddhist World Press
425, Nimri Colony, Ashok Vihar
Phase-IV, Delhi-110052
Tel. 011-23259196, 23259648

ISBN 9789380852546

Rs.1500

Dr. Banarsilal, CUTS

BUDDHIST STUDIES

A Prospective Dimension

Editor

SANJIB KUMAR DAS

Centre for Buddhist Studies
Visva-Bharati, Santiniketan-731235

in association with

B.E. 2560 **C.E. 2016**

Buddhist World Press
Delhi-110 052

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Published by:

Buddhist World Press
425, Nimri Colony, Ashok Vihar, Phase-IV
Delhi-110 052
E-Mail : brpc@vsnl.com

First Published 2016

© **Centre for Buddhist Studies,** Visva-Bharati, Santiniketan

ISBN 9789380852546

Digitally Printed at D.K. Fine Art Press (P) Ltd.

Publisher's note:
Every possible effort has been made to ensure that the information contained in this book is accurate at the time of going to press, and the publisher and author cannot accept responsibility for any errors or omissions, however caused. No responsibility for loss or damage occasioned to any person acting, or refraining from action, as a result of the material in this publication can be accepted by the editor, the publisher or the author. The Publisher is not associated with any product or vendor mentioned in the book. The contents of this work are intended to further general scientific research, understanding and discussion only. Readers should consult with a specialist where appropriate.
Every effort has been made to trace the owners of copyright material used in this book, if any. The editor and the publisher will be grateful for any omission brought to their notice for acknowledgement in the future editions of the book.
All Rights reserved under International Copyright Conventions. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written consent of the publisher and the copyright owner.

Cataloging in Publication Data--DK
Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>

International Seminar on "Buddhist Studies : a Prospective Dimension" (2013 : Santiniketan, India)
Buddhist studies : a prospective dimension / editor, Sanjib Kumar Das.
pages cm
Papers presented in International Seminar on "Buddhist Studies : a Prospective Dimension", organized by the Centre for Buddhist Studies, Bhasha Bhavana, Visva-Bharati, Santiniketan in collaboration with the Department of Indo-Tibetan Studies, Visva-Bharati in March, 2013.
Includes bibliographical references.
ISBN 9789380852546

1. Buddhism--India--History--Congresses. 2. Buddhist literature--India--History and criticism--Congresses. I. Das, Sanjib Kumar, editor. II. Visva-Bharati. Centre for Buddhist Studies.organizer. III. Visva-Bharati. Department of Indo-Tibetan Studies.organizer. IV. Title.

BQ286.I58 2013 DDC 294.30954 23

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Bamasi kal - 29

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

ཉི་མ་ཀུན་གྱི་གཏེར་མཛོད་ཅེས་བྱ་བ་ཐབས་ཤེས་ཟུང་འཇུག

(དོན་བདུན་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

खीस्ताब्दः 2016

Central Tibetan Studies University Sarnath, Varanasi

ISBN : 978-93-80282-78-7

Central Institute
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी/Sar

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

KĀLACAKRATANTRALAGHUGRANTHA-SAṂGRAHAḤ

(Vol. II)



Editor
Prof. Kameshwar Nath Mishra

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 C.E. 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinley Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya
Banarasi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price: Paperback Rs.130.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016. All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-78-7 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

༄༅། །དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཆུང་ཕྱོགས་བཏུས།

(པོད་གཉིས་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधविभागः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Bamarsi 191 (30)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्चतिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

T.S Negi — (31)

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

(सेट् गठितम्)

सम्पादकः
प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559 ख्रीष्टाब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानित विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN : 978-93-80282-78-7

Central Institute
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी/Sa

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

KĀLACAKRATANTRALAGHUGRANTHA-SAṂGRAHAḤ

(Vol. II)



Editor
Prof. Kameshwar Nath Mishra

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 C.E. 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinley Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya
Banarasi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price: Paperback Rs.130.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016. All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-78-7 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

༄༅། །དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཆུང་ཕྱོགས་བཏུས།

(པོད་གཉིས་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधविभागः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Thakur Sain Negi - 32

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Dhīḥ

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56



Editors

GESHE NGAWANG SAMTEN
Vice Chancellor

KAMESHWAR NATH MISHRA
Head of Department

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2560 VAIŚĀKHA PŪRṆIMĀ C.E. 2016

ASSISTANT REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय, Deemed University
सारनाथ, वाराणसी, Sarnath, Varanasi

Chief Editor : Prof. Geshe Ngawang Samten

Publication In-charge : Dr. Pema Tenzin

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya

Banarsi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Vol. LVI, 550 copies, 2016

Price : Rs. 240.00

© Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi, 2016

Published by:

Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221 007

ISSN 2395 - 1524

Printed by:

Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

T. S. Negi (33)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्ध ग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Tsering Dolkar (34)

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

सम्पादकः
प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559 ईसवीयाब्दः 2016

ISBN : 978-93-80282-78-7



केन्द्रीय उच्च
Central Institute
तिब्बती विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

KĀLACAKRATANTRALAGHUGRANTHA-SAṂGRAHAḤ

(Vol. II)



Editor
Prof. Kameshwar Nath Mishra

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 C.E. 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

RARE BUDDHIST TEXT SERIES - 34

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinley Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya
Banarasi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price: Paperback Rs.130.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016. All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-78-7 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला – 34

कालचक्रतन्त्रलघुग्रन्थसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

ཨཨ། །དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་རྒྱུད་ཀྱི་གཞུང་ཆུང་ཚོགས་བཏུས།

(པོད་གཉིས་པ།)



सम्पादकः

प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधविभागः

केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः 2559

ख्रीस्ताब्दः 2016

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Tsering Dolkar (35)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

56

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2016

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Pema Tenzin (36)

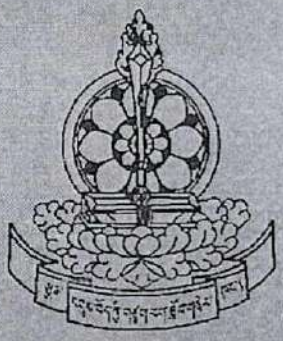
BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 82

།།དེ། །སྒོམ་དངོན་བླ་ན་ཐགས་བས་མཇད་བའི་དབུ་མ་ལ་
འཇུག་བའི་སེམས་བསྐྱེད་རྒྱ་བ་དང་དེའི་
བཤད་པ་བཞུགས་སོ།།

आचार्य चन्द्रकीर्ति विरचित

मध्यमकावतार एवं भाष्य

(छठा चित्तोत्पाद)



अनुवादक एवं सम्पादक
डॉ० पेमा तेनजिन

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५६०

ख्रीष्टाब्द-२०१६

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 82

MADHYAMAKĀVATĀRA

ĀCĀRYA CANDRAKĪRTI

(Root text and Auto-Commentary along with Tibetan Text)

[6th Chapter]



Translated and Edited
by
Dr. Pema Tenzin

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Supervisor
Prof. R. S. Tripathi

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2560 C.E. 2016

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 82

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2016

Price Hardback Rs. 560.00
Paperback Rs. 475.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2016
All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN: 978-93-80282-79-4 HB
978-93-80282-80-0 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रकाशकीय	v-vi
पुरोवाक्	vii-viii
विषय-सूची	ix-x
भूमिका	1–120
मूलग्रन्थ (हिन्दी)	121–364
मूलग्रन्थ (भोटपाठ)	365–636
परिशिष्ट	637–709

भूमिका

मध्यमा प्रतिपदा-10, माध्यमिक दर्शन का विकास-20, तिब्बत में माध्यमिक परम्परा का विकास-23, स्वातन्त्रिक एवं प्रासंगिक माध्यमिक-31, सत्यद्वय-33, संवृतिसत्य-36, परमार्थसत्य-39, नैरात्म्यद्वय-41, पुद्गल नैरात्म्य-42, धर्मनैरात्म्य-52, चारस्मृत्युपस्थान-52, कायस्मृत्युपस्थान-52, वेदनास्मृत्युपस्थान-54, चित्तस्मृत्युपस्थान-56, धर्मस्मृत्युपस्थान-58, माध्यमिक की पाँच महायुक्तियाँ-59, एकानेकरहित युक्ति-59, वज्रकण्टक युक्ति-62, सदसद् उत्पाद-निरोध युक्ति-62, चतुष्कोटिक उत्पाद-निरोध युक्ति-65, प्रतीत्यसमुत्पाद युक्ति-68, चतुष्कोटिविनिर्मुक्त युक्ति-71, प्रतीत्यसमुत्पाद एवं शून्यता-82, प्रस्तुत ग्रन्थ मध्यमकावतार (छठा चित्तोत्पाद)-92, ग्रन्थ का विषय-109, आचार्य चन्द्रकीर्ति-112, आचार्य की कृतियाँ-118

मूलग्रन्थ (हिन्दी अनुवाद)
मध्यमकावतार एवं भाष्य (छठा चित्तोत्पाद)

भूमि का निर्वचन एवं प्रज्ञापारमिता की विशेष देशना-123, प्रज्ञापारमिता की प्रशंसा-124, गम्भीर प्रतीत्यसमुत्पाद का निर्देश-126, गम्भीरार्थ कथन हेतु प्रतिज्ञा-126, गम्भीरार्थ कथन हेतु पात्र की पहचान-128, गम्भीरार्थ कथन से गुणोत्पाद-128, योग्य पात्र को प्रेरित करना-130, स्वत: उत्पाद का निषेध-131, परत: उत्पाद का निषेध-136, सत्यद्वय की सामान्य व्यवस्था-151, संवृतिसत्य-155, परमार्थसत्य-157, लोक-व्यवहार में भी परत:

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान Central Institute of Higher Tibetan Studies डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

उत्पाद न होने से लोकबाधा का प्रहाण-161, आलयविज्ञान का निषेध-172, विशेषत: विज्ञानवादी मत का निषेध-181, स्वप्न द्वारा चित्त की स्वभावसत्ता की असिद्धि-184, केशोण्डुक दर्शन के दृष्टान्त का निषेध-189, विज्ञानवादी मत की स्थापना एवं उसका निषेध-197, विज्ञानवादी मत के निषेध में आगम बाधा न होना-200, परतन्त्र-निष्पादक स्वसंवेदन का निषेध-204, स्वसंवेदन के अभाव में स्मृति का उत्पाद-209, अन्य युक्ति से स्वसंवेदन का निषेध-210, स्वभावत: सिद्ध परतन्त्र का वन्ध्यापुत्र सदृश कथन-210, विज्ञानवादी मत में दोनों सत्यों से हानि- 211, आचार्य नागार्जुन के मत की युक्तता-211, परतन्त्र एवं लोकव्यवहार के निषेध में असमानता-216, मात्र शब्द द्वारा बाह्यार्थ का निषेध नहीं-218, उभयत: उत्पाद का निषेध-235, अहेतुत: उत्पाद का निषेध-238, चतुष्कोटिक उत्पाद के निषेध का परिणाम-245, चतुष्कोटिक उत्पाद के निषेध में विवाद का परिहार-246, प्रतीत्यसमुत्पाद नय द्वारा अन्तग्राहरूपी मिथ्या कल्पना का निषेध-254, युक्ति द्वारा परीक्षित फल की पहचान-258, युक्ति द्वारा पुद्गलनैरात्म्य की सिद्धि (स्वभावत: सिद्ध आत्मा का निषेध)-262, स्वभावत: सिद्ध आत्मा-आत्मीय का निषेध-263, स्वयूथ्य द्वारा प्रज्ञापित आत्मा का निषेध-271, अन्य बाधाएं-281, स्कन्धों को आत्मा कहने वालों का अभिप्राय-283, अन्य मत की असम्बद्धता-292, आधार-आधेयभाव एवं युक्त तीनों का निषेध-293, भिन्नाभिन्न रहित पुद्गल की पृथग् सत्ता का निषेध-297, प्रतीत्यसमुत्पाद-नय से आत्मा की प्रज्ञप्तिमात्रता-299, पूर्व में अनुक्त शेष दो पक्षों का विस्तारपूर्वक कथन-300, विवाद का परिहार-306, आत्मीय की स्वभाव सिद्धि का निषेध-316, स्वपक्ष में समान दोष लागू न होना-323, शून्यता-प्रभेद-329, शून्यता के सोलह भेद-331, शून्यता के चार अन्य भेद-360, भूमि के गुणों के अभिधान द्वारा उपसंहार-362

मूलग्रन्थ का भोटपाठ

(365-636)

परिशिष्ट (637-709)

सहायक ग्रन्थों की सूची 637-642
ग्रन्थगत उद्धरणों की अनुक्रमणी 643-685
भोट ग्रन्थगत श्लोकानुक्रमणी 686-697
भोटपाठ की विषय-सूची 698-709

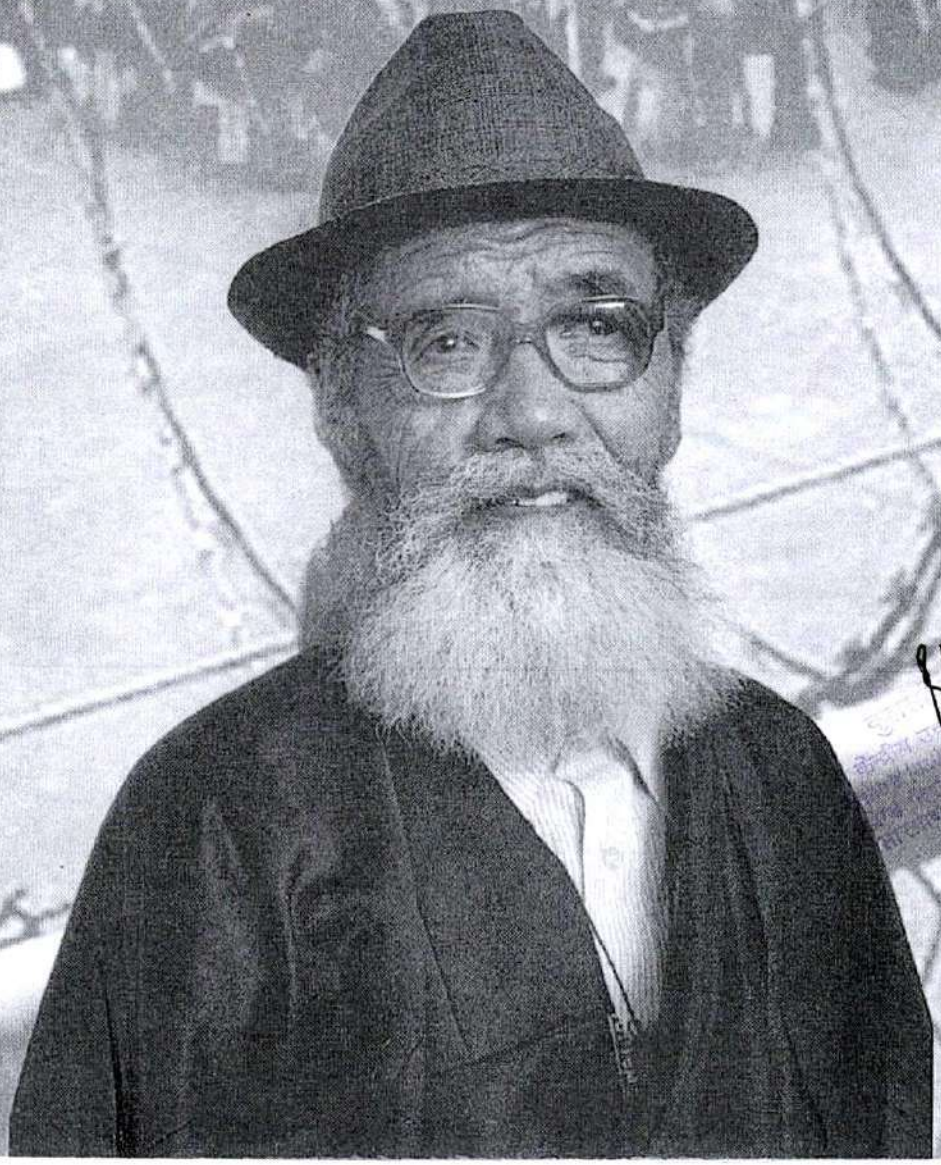
REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

*****

Lema Tenzin - 34

भूतपूर्व राजनीतिक क़ैदी तागना जिग्मेद सांगपो के जीवन के अनुभव

प्रश्नोत्तरी के रूप में संकलित



07/02/2010

भूतपूर्व राजनीतिक क़ैदी तागना जिग्मेद सांगपो के जीवन के अनुभव

प्रश्नोत्तरी के रूप मे संकलित

संकलनकर्ता : ल्हाछब जिन्पा

अनुवादक : डॉ. पेमा तेनज़िन

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय (Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

तिब्बती ग्रन्थ एवं अभिलेख पुस्तकालय

© प्रकाशनधिकार 2016 : तिब्बती ग्रन्थ एवं अभिलेख पुस्तकालय, गङचेन किशोङ,
धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश- 176215

प्रथम संस्करण : 500 प्रतियाँ, 2016 (बुद्धाब्द 2559)

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटो कॉपी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व तिब्बती ग्रन्थ एवं अभिलेख पुस्तकालय की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

ISBN : 978-93-83441-70-9

प्रकाशक : तिब्बती ग्रन्थ एवं अभिलेख पुस्तकालय, गङचेन किशोङ,
धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश- 176215

मुद्रक : वि ईन प्रिन्ट्-ओ-पेक, नई दिल्ली-110020

प्रस्तावना

अपने जीवन की अनुभूतियों को प्रकाशित करने की पहले से ही मेरी प्रबल इच्छा रही है, किन्तु एक तो मेरा शैक्षणिक स्तर प्रारम्भिक शिक्षा से अधिक नहीं था, और दूसरी तरफ आधा से अधिक जिन्दगी साम्यवादी चीन के तानाशाही शासन के तहत कैदी तथा मज़दूर वर्ग के रूप में काम करते हुए लाल सेना के तानाशाही शासन के अन्तर्गत सिर उठाने की तनिक भी स्वतन्त्रता नहीं थी।

स्वयं में शिक्षा की कमी के साथ बीमारी एवं बुढ़ापे के बोझ तले दबा हुआ सामर्थ्य हीन होने के कारण दूसरे की सहायता लेनी पड़ी। मेरे एक कैदी मित्र फुनछोग वांगछुग (डुबथोब) ने मेरी कहानी लिखने में सहयोग किया और वह पुस्तक छपने वाली थी। किन्तु संशोधन करते समय मुझे वह पसन्द नहीं आया, क्योंकि उन्होंने मेरी कहानी के मंच पर काफ़ी कुछ अपनी कहानियों को भी जोड़ दिया था। ऐसी कहावत है कि "अपनी तारा-स्तुति का पाठ स्वयं को करना चाहिए" – इस प्रकार मेरी कहानी में दूसरे के अभिप्राय को जोड़ने का कोई मतलब नहीं था। इस कारण लगभग सत्तर हज़ार रुपये खर्च हो जाने पर भी मुझे इसके प्रकाशन को रोकना पड़ा और अपनी कहानी को फिर से लिखनी पड़ी।

तत्पश्चात् 'तिब्बती गु-चु-सुम आन्दोलन समिति' के संकलनकर्ता ल्हाछब जिनपा ने मेरे जीवन की अनुभूतियों की इस कहानी को शब्दों में पिरौने का कार्य किया और मेरी अनुभूतियों को यथावत् एवं बिना किसी मिलावट के लिपिबद्ध किया, किन्तु उन्होंने बुद्धवचन कग्युर एवं तनग्युर की शास्त्रीय भाषा शैली की भाँति उच्च स्तरीय भाषा शैली का प्रयोग किया। संकलनकर्ता की तिब्बती भाषा का स्तर उत्कृष्ट है तथा

Central Institute of Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

कारण कुछ भी रहा हो, किसी प्रकार इसे लिपिबद्ध करके कार्य को अन्तिम रूप देने में सक्षम हुआ। इतना ही नहीं, पुस्तक में स्थान का नाम, नदियों का नाम, व्यक्तियों का नाम आदि को यथारुप उतारा गया है, इसमें त्रुटियां अवश्य सम्भव हैं, अत: प्रमुख रूप से कथाकार सहित पाठकों एवं आलोचकों से क्षमा प्रार्थी हूँ। साथ ही, ऐसी प्रार्थना करता हूँ कि सैंतीस वर्षों तक जेल में रहकर तिब्बती जाति एवं राष्ट्र के हित में हिम्मत न हारते हुए संघर्ष करने वाले वीर पुरुष आप नीरोग हो, दीर्घायु हो तथा आपकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हों।

संकलनकर्ता:
ल्हाछब ज़िनपा

विषय-सूची

	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
क.	प्रस्तावना	iii
ख.	प्रकाशकीय	v
ग.	सम्पादकीय	vii
घ.	मंगलाचरण एवं प्रयोजन	1

पहला अध्याय

जेल से अमेरिका पहुँचने की विधि तथा अमेरिका पहुँचने का क्रम

01.	जेल से मुक्ति के बारे में	03
02.	अमेरिका किस प्रकार पहुँचे?	08
03.	अमेरिका में पहुँचने का तरीका	11
04.	प्रथम जहाज़ यात्रा का अनुभव	12
05.	बीजिंग में पहुँचने पर अनुभव	13
06.	बीजिंग से अलग होकर पश्चिम की ओर उड़ान	15

दूसरा अध्याय

अमेरिका पहुँचने के बाद

01.	उच्चस्तरीय लोगों से भेंट तथा तिब्बती समस्या का प्रचार	19
02.	अमेरिका में रोग का उपचार तथा जन-साधारण से सम्पर्क	24

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

03. अमेरिका से स्विट्ज़रलैण्ड पहुँचने का प्रयोजन 26
04. पहली बार परम पावन दलाई लामा के दर्शन का सौभाग्य 33
05. दोलग्यल-सेवन तथा तद्विषयक शंका का निदान 41
06. स्विट्ज़रलैण्ड में रहते हुए अन्य क्रियाकलाप 45

तीसरा अध्याय

ल्हासा के प्रथम प्राथमिक विद्यालय का अध्यापक

01. प्रथम प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक के रूप में कार्यरत 49
02. कार्यकर्ता दल में शामिल होना 55
03. कार्यकर्ता दल से वापस विद्यालय लौट आना एवं कृत कार्यों का अनुभव 62
04. उक्त कार्यों के गुण-दोषों के बारे में 66
05. चीन द्वारा तिब्बत पर बलपूर्वक कब्जा करने की स्थिति में ल्हासा में हलचल 75
06. सन् 1959 के पहले और बाद की साक्षात् स्थिति 82
07. सन् 1959 की क्रान्ति के बाद ल्हासा की स्थिति 91

चौथा अध्याय

जेल में जाने के बारे में

01. जेल में जाने के बाद प्रत्येक बार की कठिनाई 95
02. पहली बार जेल में भेजने का कारण 97
03. दूसरी बार जेल की सज़ा का कारण 99
04. तीसरी बार जेल की सज़ा का कारण 101
05. जेल में पहुँचने पर अच्छा-बुरा अनुभव 103
06. जेल में पूछताछ की प्रक्रिया के बारे में 105
07. जेल में भूख हड़ताल 114

08. जेल की स्थिति एवं जीविका के बारे में अनुभव 119
09. जेल में कठिनाईयों का अनुभव 123
10. डबशी जेल में कैदियों द्वारा विरोध 125

पाँचवा अध्याय

जन्म स्थान एवं माता-पिता के बारे में

01. जन्म स्थान एवं माता-पिता की वंश परम्परा की कहानी 129
02. अपने जीवन में धर्म परम्पराओं के प्रति दृष्टिकोण 133

छठाँ अध्याय

शरणार्थी तिब्बती प्रशासन के प्रति दृष्टिकोण

01. प्रवासी तिब्बती प्रशासन के प्रति एक समग्र दृष्टि 137
02. क्या तिब्बत आदिकाल से ही चीन का अंग रहा है? 141
03. अन्त में, नवयुवकों से निवेदन 145
04. कृतज्ञता-ज्ञापन 148

कहानी से सम्बद्ध कुछ महत्त्वपूर्ण चित्र 151

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

सौम्याब्दकाव्यामृतम्

SAUMYĀBDAKĀVYĀMṚITAṂ

एकवर्षीयघटितघटनाश्रितं हिन्दी-अनुवादसमेतम्,
421 एकविंशत्यधिकचतुश्शतपद्यात्मकम्



रचयिता

डॉ. धर्मदत्तचतुर्वेदी

सहाचार्योऽध्यक्षश्च

संस्कृतविभागः, केन्द्रीयतिब्बती-अध्ययनविश्वविद्यालयः

सारनाथो, वाराणसी (उ.प्र.)

वि.सं. 2073 सन् 2016

Saumyābdakāvyāmṛtam

(Based on various events occurred in a year

With Hindi Translation)

BY

Dr. Dharmadatt Chaturvedi

HoD, Sanskrit and Faculty of Shabda Vidya

Central Deemed University of Tibetan Studies

Sarnath, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Publisher

Sharada Sanskrit Samsthan

Jagatganj, Varanasi

संक्षिप्त परिचय



लेखक : डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी
पिता : पं. देशराज चतुर्वेदी
जन्मस्थान : ग्राम व पोस्ट- आरी, जिला- महोबा (उ.प्र.)
जन्मतिथि : १.०३.१९५९
शैक्षणिक योग्यता : आचार्य नव्यव्याकरण, बौद्धदर्शन व पी-एच.डी., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
अध्यापन : १९८९ से अद्यावधि-संस्कृत अध्यापन, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग एवं अध्यक्ष, शब्दविद्या संकाय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी ।

शिक्षा गुरु : आचार्य यमुना प्रसाद शास्त्री (पितृव्य), प्राचार्य, श्रीरामकृष्ण सं.म.वि., मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.), आचार्य वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, वाराणसी, स्व. पं. शशिधर मिश्र (व्याकरणाचार्य), वाराणसी, अनुसन्धान-निर्देशन- प्रो. श्रीनारायण मिश्र, वाराणसी ।

प्रकाशन-लेखन : कातन्त्रोणादिसूत्रवृत्तिः (रूपसिद्धि व हिन्दी टीका), वज्रयानदर्शनमीमांसा (संस्कृत-सम्पादन), संस्कृतसेवासाधना (सम्पादन), सर्वदेवपूजादर्पणः (सम्पादन), संस्कृतपत्रमञ्जूषा (सम्पादन), यज्ञसुधा (स्मारिका-सम्पादन), संस्कृतकाव्यगीतवैभवम् । अनेक राष्ट्रीय शोध-सङ्गोष्ठियों में शोधपत्र प्रस्तुति, कविसम्मेलनों में कविता-प्रस्तुति, नाटक अभिनय का निर्देशन, संस्कृतप्रशिक्षण शिविरों का संचालन, संस्कृत-प्रचार कार्य में सहयोग व पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक शोध-निबन्ध व कवितायें, संस्कृत पत्रिकाओं के सहभागी सम्पादक कार्यपरिषद् एवं विद्वत् समितियों की सदस्यता ।

शिवार्चना : निज जन्मभूमि ग्राम- आरी में चन्देले कालीन प्राचीन शिव नादिया मन्दिर जो पूर्णतया विनष्ट हो चुका था, उसका नव-निर्माण जुलाई २०१२ से फरवरी २०१३ तक किया गया, जिसमें १२ ज्योतिर्लिङ्ग एवं अन्य देव-देवियों की कुल २५ प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा महारुद्र यज्ञ के अन्तर्गत वसन्तपंचमी २०१३ को कराई गई । इसका विशेष कार्यक्रम इन्टरनेट यूट्यूब पर Dharmdatt Chaturvedi लगाने पर यज्ञ को क्लिक करने से १-७ डी.वी.डी. २८ भागों में विभाजित यज्ञ कार्यक्रम को देखा जा सकता है ।

सम्पर्क : चलभाष : ०९४५१५७०८३५, ईमेल : ddcsanskrit@gmail.com
वर्तमान पता : संस्कृत विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-०७

ISBN: 978-93-81999-87-5

मूल्य : 350.00

शारदा संस्कृत संस्थान
जगतगंज, वाराणसी-221 002.
फोन : (0542) 2204168 (संस्थान) 2452037 (आवास)
e-mail: sharadabhawan@yahoo.co.in, website: www.sharadasansthan.in

सौम्याब्दकाव्यामृतम् रचयिता डॉ. धर्मदत्तचतुर्वेदी
Saumyābdakāvyāmṛtam

प्रकाशक
शारदा संस्कृत संस्थान
सी. २७/५९ जगतगंज, वाराणसी - २२१००२
फोन (०५४२) २२०४१६७
Email: sharadabhawan@yahoo.co.in
Website: www.sharadasansthan.in

प्रथमसंस्करणम् ५०० प्रतयः

© रचयितृप्रकाशकाधीनम्

ISBN : 978-93-81999-87-5

सन् : २०१६

मूल्यम् : सजिल्द 350/-

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

मुद्रकः
साधना प्रेस, वाराणसी
मो. 9005440099

नान्दीवाक्

येषु नव्येषु संस्कृतरचनाधर्मिष्वतितरां प्रीताऽनुकूला वात्सल्यमेदुरा च भगवती शारदा तेष्वन्यतमो धर्मदत्तश्चतुर्वेदीति सम्वानुभवमहं मन्ये। तत्राप्यतिशेतेऽयमन्यान् स्वकवित्वप्रौढिम्ना, भाषापरिशुद्ध्या, प्रत्यग्रवृत्तान्तवर्णनैश्च। प्रकृतिवर्णनं, वस्तुविशेषवर्णनं, स्तोत्रादिकं वा न भवति दुरुत्तरं दुष्करं वा। यतो हि तत्र वर्ण्योपादानवैशिष्ट्यजातं सुजातं सुपलब्धं भवत्येव सहायकम्। परन्तु दैनन्दिनवृत्तं प्रत्यग्रघटितं भवत्येव वर्णयितुमशक्यं समपेक्षितपदाबल्याः कोशेष्वनुपलब्धत्वात्। अतएव विरला एव साहसिकाः, पारम्परीणां वस्तुवर्णनामपहाय किमपि वैलक्षण्यं नावीन्यं वा समाश्रयन्ते।

परन्तु यदिदमुक्तं भाषायां *लीक छाँड़ि तीनहिं चले शायर सिंह सपूत* इति तत् सत्यमेव प्रतिभात्यधिधर्मदत्तम्। स खलु चिरोत्पक्षुण्णमेवाध्वानम्। परन्तु तस्मिन् उद्घातप्रचुरेऽपि वर्त्मनि सुखं समञ्जसं सञ्चरन् प्रीणयत्येव पाठकान् मल्लिकाक्षवाहिनीं भगवतीं वाग्धिष्ठात्रीं च। तत्प्रगतिप्रत्यक्षदर्शिना मयोपलक्षितं यद् धर्मदत्तः प्रतिहायनं द्वुततरः शक्ततरः प्रभविष्णुतरश्च जायमानस्तिष्ठति। तदस्माकं परितोषाय सुरवाग्वैभवं समीहमानानाम्।

इदानीं मम हस्तयोर्विराजते तदुपज्ञं **सौम्याब्दकाव्यामृतम्**, यस्मिन् विलसन्ति १५०कविताशीर्षकाणि परिशिष्टे च तद्रचिताः स्फुटरचनाः। इमाः सर्वा एव कविता एकहायन्यः। विगतवर्षेऽपि धर्मदत्तस्य काव्यं **संस्कृतकाव्यगीतवैभवं** नाम प्रकाशितं जातम्। हन्त भोः! धर्मदत्तस्य काव्यधेनुस्समासमीनैव प्रतीयते। आवर्षं राष्ट्रेऽस्मिन् यद्घटितं भद्राऽभद्रं, शुभाऽशुभं निष्प्रोग्रतश्च तत्सर्वमेव, काव्यविषयीकृत्य सुकविनाऽत्र गुम्फितम्। एतादृशं कविं काव्यमीमांसाकारो राजशेखरः इतिहासकविं मनुते।

D.D. Chaturvedi
39

अमरयशः सौरभम्

(प्रो. अमरनाथपाण्डेय - स्मृतिग्रन्थ)



सम्पादक

प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी

Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
Sarnath, Varanasi

Central Sanskrit University
Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth
Katwaria Sarai, New Delhi-110016

प्रकाशक :

शारदा संस्कृत संस्थान

सी. २७/५९, जगतगंज, वाराणसी- २२१ ००२

दूरभाष - ०५४२-२२०४१६८

E-mail - sharadabhawan@yahoo.co.in

Website - www.sharadasansthan.in

ISBN 9381999844-8

9 789381 999844

प्रकाशक :
शारदा संस्कृत संस्थान
सी. २७/५९, जगतगंज, वाराणसी- २२१ ००२
दूरस्वन - ०५४२-२२०४१६८
E-mail - sharadabhawan@yahoo.co.in
Website - www.sharadasansthan.in

प्रकाशन वर्ष - २०१६ ई.

© सम्पादक

मुद्रितबन्ध - ३०० (तीन सौ)

मूल्य - ₹ २५००/- (₹ दो हजार पाँच सौ मात्र)

ISBN : 978-93-81999-84-4.

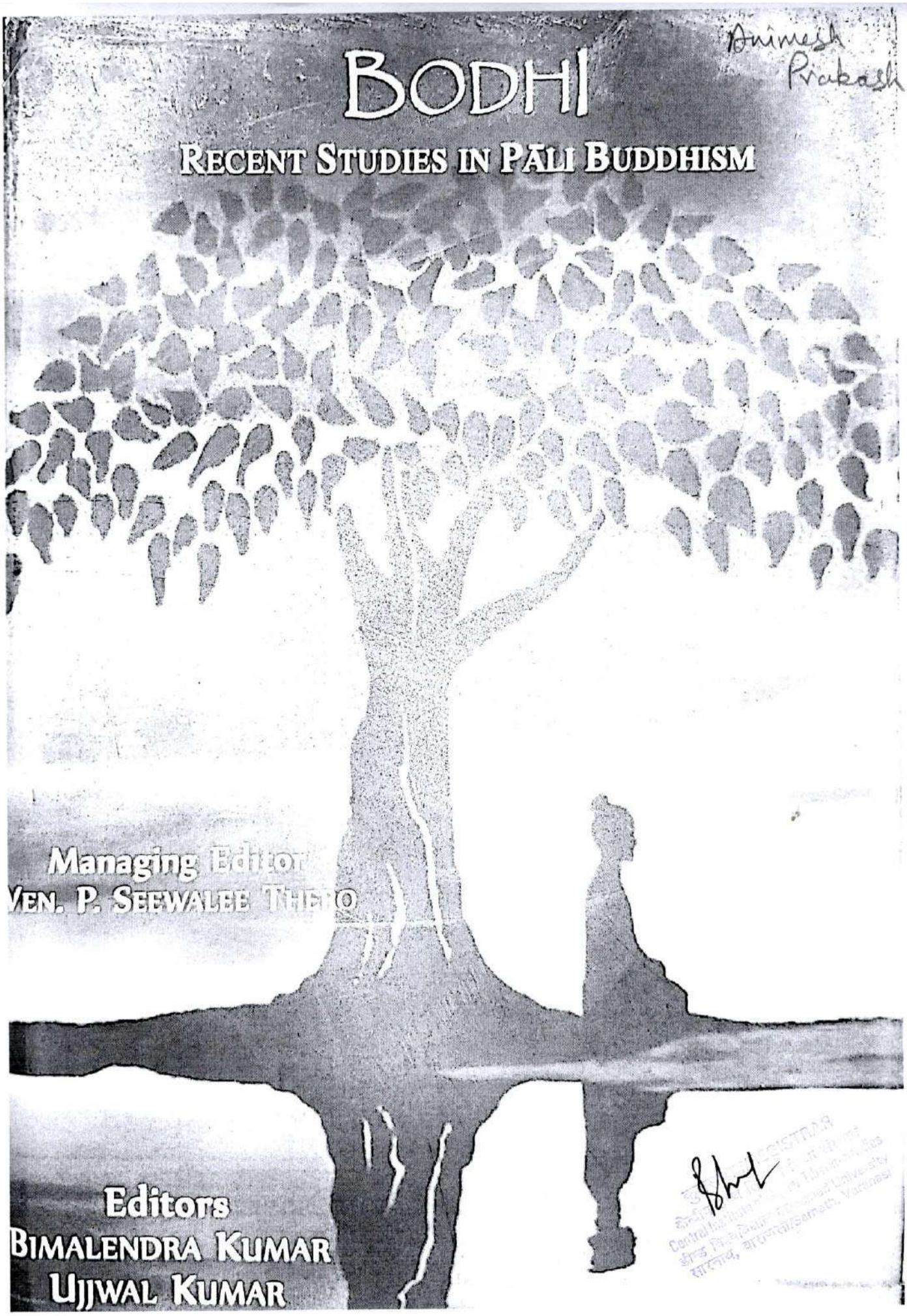
कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

मुद्रक :
राजकुमार जायसवाल
डी.जी. प्रिण्टर्स
खोजवाँ, वाराणसी-२२१०१०.
चलदूरस्वन - ९९३५४०८२४७.

Animesh Prakash (40)

BODHI

RECENT STUDIES IN PĀLI BUDDHISM



Managing Editor
VEN. P. SEEWALEE THERO

Editors
BIMALENDRA KUMAR
UJJWAL KUMAR

Central Institute of Tibetan Studies
Deemed University
Varanasi

BODHI

RECENT STUDIES IN PĀLI BUDDHISM

Managing Editor
VEN. P. SEEWALEE THERO

Editors
BIMALENDRA KUMAR
UJJWAL KUMAR





MAHA BODHI SOCIETY OF INDIA
SARNATH
BHARATI PRAKASHAN
VARANASI
2016

REGISTRAR
Central Institute of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

BODHI: RECENT STUDIES IN PĀLI BUDDHISM

Managing Editor
VEN. P. SEEWALEE THERO
Bhikkhu-in-charge,
Maha Bodhi Society of India
Sarnath, Varanasi- 221007

Editors

BIMALENDRA KUMAR
Professor,
Departmnet of Pali and
Buddhist Studies,
Banaras Hindu University,
Varanasi- 221005, U.P.
bimal_bhu_60@yahoo.co.in

UJJWAL KUMAR
Assistant Professor,
Department of Pali,
Savitribai Phule Pune
University,
Pune- 411007, Maharashtra.
ujjwal1980@gmail.com

Publishers

Maha Bodhi Society of India
(International Pali Institute)
Sarnath
Varanasi- 221007, U.P.
Phone: +91-542-2595955
mbsi.sarnath@yahoo.com

Bharati Prakashan
45, Dharmasangha Complex
Durgakund
Varanasi- 221010, U.P.
Phone: +91-9305292293
bharatiprakashan@gmail.com

ISBN: 978-93-80550-38-1
Copyright©Editors



Price: 700 INR

First Edition- 2016, Sarnath, Varanasi

Animesh Prakash - (41)

Study of Material Remains in Indian Perspective

Editors:
Anil Kumar Dubey
Kanhaiya Lal Yadav
Sachin Kr. Tiwary

केन्द्रीय उच्चतर शैक्षिक अध्ययन संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी/Deemed University
Sarnath, Varanasi

Bookwell
Delhi

Study of Material Remains in Indian Perspective

© Editors, 2016

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form, or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from copyright holder.

ISBN: 978-93-80574-95-0

First Published in 2016 by:

Bookwell
3/79, Nirankari Colony,
Delhi 110009, India
Ph: 91-11-27601283, 27604536
E-mail: bkwell@nde.vsnl.net.in
bookwelldelhi@gmail.com
Website: www.bookwellindia.com

Dr. SACHIN KR. TIWARY
A.I.H.C. & ARCHAEOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

13. Recent Explored Archaeological Settlements in Faizabad District
Dipak Kumar Shukla 113

14. Water Abutted Fort And Palaces of Bharatpur, Rajasthan
Praveen Singh, Rajesh Kumar Meena 123

15. Water and Religion –An Environmental Impact in India
Baisakhi Bandyopadhyay 131

16. North-West frontier policy of ancient India: Problem and perspective
Surendra Narayan Upadhyay 137

17. Early Settlement Patterns of the Pratapgarh District in Uttar Pradesh with Special Reference to Mesolithic Period
Kanhaiya Lal Yadav 141

18. Prehistoric settlements of Varanasi region
Chandra Shekhar 149

19. The appearance of the Upper Paleolithic and microlithic industries in the Middle Son Valley
Arun Kumar 157

20. Volume Matrix Method (VMM): Application of New Method for Quantification and Typological Understanding of the Cupules (Petroglyphs)
Arjun R 167

21. Rock Art : When Why and to Whom
A.K. Dubey, Sachin Kr. Tiwary 179

22. The Civilization and the Culture at Odds or the Clash of Civilization and Culture
Devendra Singh 187

23. History of Buddhism in Ancient India in its First Millennium
Animesh Prakash 201

24. Thin Section Petrographic Investigation of Ceramic in Archaeology
Pankaj Singh 207

25. Archaeology of Eastern Uttar Pradesh with Special Reference to Excavations at Dwarkapur, District Sant Ravidas Nagar
Ashok Kumar Singh, Ravishankar 215

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi-221007

Animesh Prakash
42

परिसंवादः [१७]

संस्कृतसाहित्ये भ्रमण-परम्परायाः अवदानम्

कुलपतेः प्रो. यदुनाथप्रसाददुबेमहोदयस्य पुरोवाचा विभूषितम्

सम्पादकः
प्रो. रमेशकुमारद्विवेदी

REGISTRAR

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः वाराणसी

PARISAṂVĀDA [17]

SAṂSKṚTASĀHITYE ŚRAMAṆAPARAMPARĀYAḤ AVADĀNAṂ

FOREWORD BY

PROF. YADUNATH PRASAD DUBEY

VICE - CHANCELLOR

ADVISORY BOARD

PROF. HARISHANKAR PANDEY

PROF. HAR PRASAD DIXIT

DR. RAMESH PRASAD

EDITED BY

PROF. RAMESH KUMAR DWIVEDI

Prof. Bauddha Darshan Department

Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya

Varanasi

REGISTRAR
Central Institute ... Tibetan Studies
(Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

VARANASI

2016

ISBN : 81-7270-295-7

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute
Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya
Varanasi.

❐

Published by—
Dr. Padmakar Mishra
Director, Institute of Academic, Research & Publication.
Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya
Varanasi- 221002

❐

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalaya
Varanasi- 221002.

❐

First Edition : 500 Copies
Price : Rs. 332=00

❐

केन्द्रीय उच्च शिक्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed by--
Ashirvad Printers
Meerapur Basahi, Varanasi .

18. **गद्य चिन्तामणि की काव्य शैली** 117-136
डॉ0 अशोक कुमार जैन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

19. **बौद्ध साहित्य में श्रमण परम्परा** 137-140
डॉ0 लक्ष्मीशंकर उपाध्याय
म0गाँ0का0 विद्यापीठ, वाराणसी

20. **संस्कृत जैन कोश-साहित्य परम्परा और उसका वैशिष्ट्य** 141-154
डॉ0 अनेकान्त कुमार जैन
श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
कुतुबसांस्थानिक क्षेत्र, नव देहली-16

21. **संस्कृत साहित्य में बौद्ध-दार्शनिकों का योगदान** 155-162
डॉ0 रमेशचन्द्र नेगी
केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय सारनाथ, वाराणसी

22. **संस्कृत साहित्य में बौद्ध दर्शन का योगदान** 163-166
डॉ0 महेश कुमार श्रीवास्तव
बी. आई. टी. ई. निबाह पिण्डरा, वाराणसी

23. **संस्कृत-साहित्य के विकास में जैनाचार्यों का योगदान** 167-174
डॉ0 मारकण्डेय नाथ तिवारी
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
कुतुबसास्थानिक क्षेत्र-नव देहली-16

24. **डॉ0 भीमराव अम्बेडकर एवं बौद्ध धर्म** 175-177
डॉ0 शोभनाथ पाठक
डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

25. **बौद्ध साहित्य में वर्णित काशी की समृद्धि एवं महात्मा बुद्ध की शिक्षायें** 178-184
डॉ0 लतापंत तैलंग
सं.सं.वि.वि., वाराणसी

26. **अभिधर्मकोश में 'रूप' का विवेचन** 185-189
अनिमेश प्रकाश

REGISTRAR
Deemed University
Sarnath, Varanasi

10. Application of *Attha* for Gahapati-s: A Study of the Practical Approach of the Buddha 131
Radha KUMAR

11. *Bodhisatta*-s from Canon to Commentarial Literature: A Note on Denotation and Categorization 145
Ujjwal KUMAR

12. Buddhism and Ideals of a Teacher: Changing Paradigm in the 21st Century 159
B. LABH

13. Mental Disorder: Buddhist and Western Psychotherapy 169
Gautam Kumar LAMA

14. Fetters of *Māra* and *Nirvāṇa* in Buddhism 179
N. C. PANDA

15. *Ācārya* Buddhaghosa on '*evaṃ me sutaṃ*' 197
Animesh PRAKASH

16. Historical and Linguistic Relation Between Telugu and Pāli 207
C. Upender RAO

17. Significance of Teaching of Pāli and Buddhist Sanskrit 223
Bhikkhu SATYAPALA

18. Role of *Sekhiya Dhammā* in Human Life 235
Gyanaditya SHAKYA

19. Five-fold Method of Investigation to Discern the Reality (FFMIDR) 253
Jagdish SHINDE

20. *Brahma-vihāra* (Sublime States): Wholesome Attitudes of Mind and World Peace 281
Lalji 'SHRAVAK'

21. Buddhist Perspective on Animals as Depicted in the *Dhammapada* 305
Arvind Kumar SINGH

22. Perspectives of Applied Buddhism 315
Ram Nandan SINGH

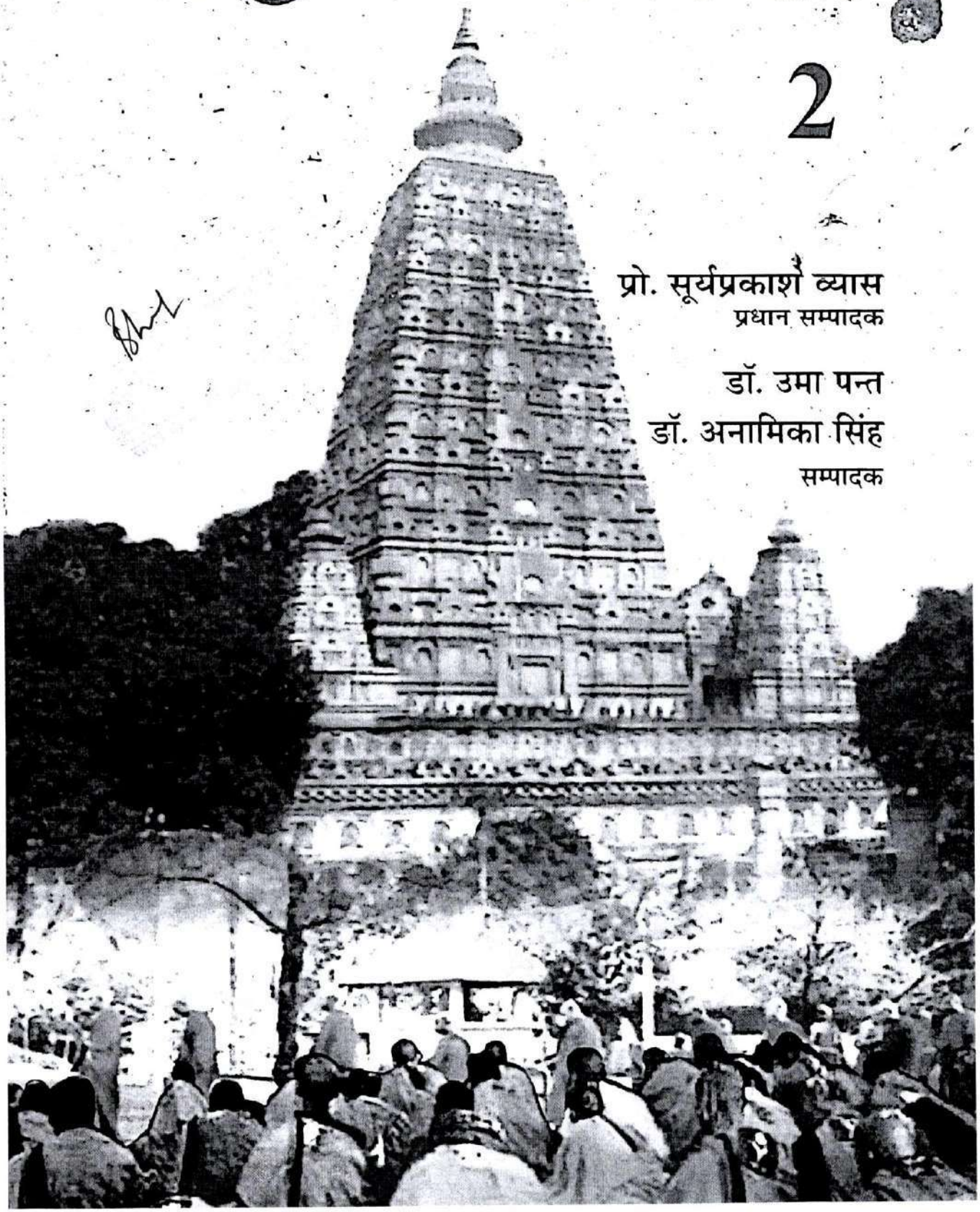
REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

बौद्ध विमर्श

2

प्रो. सूर्यप्रकाश व्यास
प्रधान सम्पादक

डॉ. उमा पन्त
डॉ. अनामिका सिंह
सम्पादक



बौद्ध विमर्श

(बौद्ध साहित्य में लोकतांत्रिक मूल्य)

BAUDDHA VIMARSH

प्रधान सम्पादक

डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास

अवकाशप्राप्त प्रोफेसर

संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान सङ्काय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी

सम्पादन

डॉ. उमा पन्त

निदेशिका

बौद्ध अध्ययन केन्द्र

आर्य महिला पी.जी.कॉलेज

वाराणसी।

डॉ. अनामिका सिंह

शोध अधिकारी

बौद्ध अध्ययन केन्द्र

आर्य महिला पी.जी.कॉलेज

वाराणसी।

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

प्रकाशक

आर्यभाषा संस्थान, वाराणसी

©
इस ग्रन्थ के सर्वाधिकार बौद्ध अध्ययन केन्द्र,
आर्य महिला पी.जी.कॉलेज, चेतगंज, वाराणसी के अधीन हैं।

ISBN : 978-81-87978-40-4



मूल्य : रु. 400/- (चार सौ रुपये मात्र)
प्रथम संस्करण : 2016 / प्रकाशक : आर्यभाषा संस्थान, बी. 2/143-ए, भदैनी, वाराणसी-221001 / सम्पादक : उमा पन्त, अनामिका सिंह / अक्षर संयोजन : आर.के.कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर, राजघाट, वाराणसी / मुद्रक : दी महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी / कुल प्रतियाँ : दो सौ

BAUDDHA VIMARSH
Edited by : Uma Pant, Anamika Singh

अनुक्रमणिका

	सम्पादकीय		३
१.	धम्मपद में लोकतांत्रिक मूल्य	डॉ. रमा पाण्डे	७
२.	धम्मपद में लोकतांत्रिक मूल्य	मधु नन्दिनी श्रीवास्तव	११
३.	विनयपिटक का लोकतांत्रिक महत्त्व	नितेश कुमार तिवारी	१६
४.	सुत्तनिपात में लोकतान्त्रिक मूल्य	सुरेश कुमार	२३
५.	सक्कपञ्हसुत्त में लोकतांत्रित मूल्य	वैभव कुमार श्रीवास्तव	३०
६.	जातक कथाओं में पारमिताएँ एवं लोकतान्त्रिक मूल्य	श्रीमती शची मालवीया	३६
७.	ज्वलिता चण्डाली और लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. अर्चना तिवारी	४२
८.	पालि-त्रिपिटक में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. सन्ध्या श्रीवास्तव	४७
9.	Duties of an Ideal King as depicted in Pali Tipitaka	Mr. Animesh Prakash	55
१०.	गौतम बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता	डॉ. पूनम पाण्डेय	६१
११.	भगवान् बुद्ध का सामाजिक न्याय में अवदान	अर्चना कुमारी करण	६७
12.	Buddha in Democratic Arena	Abhishek Kumar Tiwari	74
13.	Democratic Values in Dhammapada	Miss Arti Srivastava	83
१४.	ललितविस्तर में लोकतांत्रिक मूल्य : नारी-पात्रों के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. सीमा मुन्शी	८९
१५.	बुद्धचरित में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. ममता गुप्ता	९५
१६.	बोधिचर्यावार में प्रतिपादित लोकतान्त्रिक प्रक्रिया : चित्त के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी	१००
१७.	बुद्धचरितम् में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. मंजू कुमारी	१०६
१८.	बौद्ध साहित्य में लोकतान्त्रिक मूल्य	अजय कुमार मौर्य	११०
१९.	बौद्ध साहित्य में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. राजकुमार चौबे	११४
२०.	बौद्ध साहित्य में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. रामजी सिंह	११९

सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ हायर टिबेटियन स्टडीज
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Anirban Dash 44

इयं धम्मलिपि



बौद्ध साहित्य प्रसारक मंडळ, नाशिक.

Scanned with CamScanner

इयं धम्मलिपि

लेखकः

अनिर्वाण दाश

प्रकाशक

बौद्ध साहित्य प्रसारक मण्डल, नाशिक

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Scanned with CamScanner

इयं धम्मलिपि
Iyam Dhammalipi

प्रथम आवृत्ती २०१६

लेखक : प्रा.डॉ. अनिर्वाण दश
Prof. (Dr.) Anirban Dash

सर्व हक्क : प्रकाशकाधीन © ISBN 978-81-932980-0-8

किंमत : रु. ३००/- (रुपये तीन सौ सिर्फ)
Rs. 300/- (Rupees Three Hundred Only)

प्रकाशक : बौद्ध साहित्य प्रसारक मंडळ
४, गजरा पार्क - ४,
कमोद नगर, नाशिक - ४२२ ००९
फो. ०२५३ - २३२०२९९, ९५४५२७७४१०

मुखपृष्ठ : अंकिता पाटील

मुद्रण : सम्यक प्रिंटर्स, MIDC, सातपुर, मो. ९९२२६२३२३७



कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका

अनुशसा	i-i v
प्रकाशकीय	v-vi
प्रस्तावना	vii-xi
भारतीय लिपि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
लिपि का स्वरूप	1
लिपि का उद्भव और विकास	2
लिपि के देवता	9
लिपि की प्रामाणिक उत्पत्ति	10
भारत में लेखन परम्परा की प्राचीनता	11
लेखन परम्परा के साहित्यिक प्रमाण	12
भारत की प्राचीन लिपियाँ	15
लिपियो का वर्गीकरण	19
मातृकाओ की नामकरण परम्परा	22
भारत की आधुनिक लिपियाँ	24
धम्मलिपि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
ब्राह्मी लिपि के नामकरण	26
अशोक कालीन धम्मलिपि की उत्पत्ति	35
अशोक कालीन धम्मलिपि	40
धम्मलिपि वर्णमाला परिचय	62
स्वर वर्ण परिचय	62
व्यञ्जन वर्ण परिचय	62
धम्मलिपि में मात्राओ का प्रयोग	63
धम्मलिपि अनुस्वार का प्रयोग	79
धम्मलिपि में सयुक्ताक्षर	80
समयानुसार धम्मलिपि में परिवर्तन की तालिका	90
धम्मलिपि में संख्याएँ	99
खुरोष्ठी लिपि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	105
धम्म अभिलेख	108
1 अभिलेखो के प्रकार	108
2 अभिलेखो की भाषा एव लिपि	110
3 लेखन पद्धति	114
4 अशोक के अभिलेख	117
5 चुने हुए अभिलेखो के अध्ययन	123
अभ्यास हेतु सामग्री	
1 परिशिष्ट – 1	143
2 परिशिष्ट – 2	151

...

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Scanned with CamScanner

Jampa Samten (5)

MISCELLANEOUS SERIES - 32

CATALOGUE OF THE TSHALPA MANUSCRIPT TANGYUR



B.E. 2559 C.E. 2016

ISBN : 978-93-80282-75-6

MISCELLANEOUS SERIES - 32

CATALOGUE OF THE
TSHALPA MANUSCRIPT TANGYUR



Edited & Annotated
by
Dr. Jampa Samten

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2559 **C.E. 2016**

MISCELLANEOUS SERIES - 32

Chief Editor: Vice Chancellor Prof. L. N. Shastri
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

1st Edition: 550 Copies, 2016

Price Hardback ₹ 380.00
Paperback ₹ 290.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007, India, 2016
All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-74-9 HB
978-93-80282-75-6 PB

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jampa Samten (46)

བོད་ཀྱི་ཡོ་རྒྱུས་སྤྲོད་གཞེས་དང་ཞིབ་འཇུག་ལ་ཞེ་བར་མཁོ་བའི་རབ་ཡོད་སྤྱི་ཡོན་ཡོ་ཕྱིགས་སྤྱོད་ཚུལ་ཆོ་ག་དང་བཅས་པ།

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

རབ་ཚོ་དང་སྦྱི་ཚའི་ཚ་ཆི་གས་སྦྱོར་ཚུལ།

ཁ། །རབ་ལོ་དང་སྦྱི་ཚེའི་ལོ་ཆོགས་སྦྱོར་ཚུལ་གྱི་རེའུ་མིག་ཆོ་ག་དང་བཅས་པ་འདིར། བོད་ཀྱི་ལོ་རྩྭ་རིག་པར་སློབ་གཉེར་དང་ཞིབ་འདྲུག་བྱེད་པ་ལ་ཉེ་བར་མཁོ་བའི་དོན་གནད་ཁག་བསྡུས་ཡོད་ཅིང། དེའང་བོད་གཅོ་བོར་གྱུར་བའི་ནང་བའི་ཡུལ་ལུང་ཁག་ཏུ་རྩམ་འཛེན་བཞི་པ་ཤྲཱུ་ཐུབ་པ་སྐུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་བའི་ལོ་ཆེགས་བཅུ་ལྔགས་མི་མཐུན་པ་གྲགས་ཆེ་བ་ཁག་གི་བཅུ་ཚུལ་ཆོ་ག་དང་། འདས་ལོ་དེ་དག་སོ་སོའི་ཁུངས་བཅོལ་སའི་གཞི་གང་ཡིན། དེ་དག་སྦྱི་ལོ་གང་འཁེལ་བཅས་ལ་ཞིབ་ཅིང་ཐུ་བས་གསལ་སྟོན་བྱས་འདུག་པ་དང་། བོད་དུ་དམ་བའི་ཆོས་དབུ་བརྙེས་པའི་ལོ་དང་། བོད་ཆུལ་ལོ། མེ་མཁའ་ཆུ་མཆོའི་ལོ་བཅུ་ཚུལ་རྩམས་སྦྱོར་ཚུལ་གྱི་ཆོ་ག་དང་སྤུར་ནས་གསལ་སྟོན་བྱས་འདུག འདིའི་ཆོ་ག་ཞེས་པ་ནི་ལག་ལེན་སྦྱོར་སྟངས་རིམ་པར་སྦྱིག་པ་ལ་ཟེར་བས། འདིར་བསྒྲིགས་པའི་བཅུ་ལྔགས་ཀྱི་ཆོ་ག་བློ་ངོར་ཅེས་ན་རབ་ལོ་དང་སྦྱི་ལོ་སྦྱོར་ཚུལ་དཀའ་ཆེགས་མེད་པར་ཤེས་པའི་ཐྲུབ་ཆོས་ལྟོན་ཡོད་པ་བཅས་སོ།།

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN: 978-93-83441-98-3
9 789383 441983
₹95

བོད་ཀྱི་ཚོ་རྒྱས་སྒོའ་གཉེར་དང་ཞིབ་འཇུག་ལ་ཉེ་བར་མཁོ་བའི་
རབ་ཚོ་དང་སྐྱི་ཚའི་ཚོ་ཆོགས་སྒོར་ཚུལ་
ཆོ་གཤོད་བཅས་པ།

བྱམས་པ་བསམ་གཏན་གྱིས་བསྒྲིགས།

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

བོད་ཀྱི་དཔེ་མཛོད་ཁང་།

© 2017 Library of Tibetan Works & Archives
All rights reserved.

བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་སྦྱོར་གཞེར་དང་ཞིབ་འདྲུག་ལ་ཉེ་བར་མཁོ་བའི་ རབ་ལོ་དང་། སྤྱི་ལོའི་ལོ་ཚིགས་སྦྱོར་ཚུལ་ ཚོར་གྱ་དང་བཅས་པ།

Series title: *lo rgyus deb phreng Vol. 25*
Volume title: *rab lo dang spyi lo'i lo tshigs sbyor tshul*
Subject: Formula of Finding Sixty-Year-Cycle Period with Christian Era & Others
Author: Jampa Samten

སྤྱི་ལོ་ ཟ୦୨୬ ལོར་དཔར་ཞིངས་དང་པོ་བསྒྲུན།

ISBN: 978-93-83441-98-3

Published by Library of Tibetan Works & Archives, Dharamsala, and printed at Indraprastha Press(CBT), 4 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002.

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jampa Sonden-47



།།སྒེར་རིག་ལགོ་ལས་ལས་ཆུབས་མཁོག་ཆེ་ཤ་ཕོ་མཆོག་དགུང་གྲངས་༡༠ ལ་འབེབས་པར་
དགེ་ཕུག་ཤེའབས་ཀྱི་ལས་རྒྱལ་བའི་བརྟན་བཞུགས་དང་བཀའ་དྲིན་རྗེས་བྱེད་དང་འབྲེལ་

ལས་རྒྱལ་བའི་མཛད་རྣམ་དང། གསུང་ཚྭོམ། དགོངས་གཞི་བཅས་ཀྱི་སྐོར་ལ་རིས་མེད་མཁས་པའི་ བཀྲིད་གི་གསུང་ཚྭོམ།

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

དགེ་ལུགས་ཡོངས་ཀྱི་ལས་རྒྱལ་བའི་བརྟན་བཞུགས་དང་བཀའ་དྲིན་རྗེས་བྱེད་ཆོགས་ཆུང་གིས་གོ་སྒྲིག་དང་
དབང་སྒྱུན་འཛིན་མས་སྤེལ་ཞུས།

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN: 93-84839-94-9

༡༤། སྤྱི་ཚོགས་ལས་སོ་སོའི་ཁས་ལེན་ཆུང་ཆུང་ཞིག་ཡོད་མཚོན་ཐུབ་པའི་ཐོག་ནས་ཁ་ཐུག་ཏུ་ཕྱིན་ཡོད་པ་དེ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཁས་ལེན་ཐུབ་པ་དང་།

ཁོ་ཚོས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོ་ལ་ཡིད་ཆེས་ཐུབ་པ་ཡིན་ཞེས་ཁས་ལེན་ཐུབ་པ་ཡིན་ནོ།

ཁོ་ཚོས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོ་ལ་ཡིད་ཆེས

ལྷན་ཚོགས་བཅུ་མཐུན་རྒྱབ་སྐྱོར་དང་། གཤུང་སྐྱོབས། དགོངས་གཞི་བཅས་ཀྱི་སྐོར་ལ་རིག་མེད་ཤེད་མཁས་
ཐབས་བསྟོད་ལྷེད་ཀི་གཤུང་སྐྱོབས།

བརྗོད་བྱ། ལྷན་བཅུ་མཐུན་རྣམ་དང་། གསུང་རྩོམ། དགོངས་གཞི་བཅས་ཀྱི་སྐོར།

མཁྱེན་པ་པོ། རིས་མེད་མཁས་པ་རྣམས།

སྤྱི་ཁབ་འགན་ཁྲབ་པ། དགེ་ལུགས་ཡོངས་ཀྱི་ལྷན་བཅུ་བའི་བརྟན་བཞུགས་དང་བཀའ་དྲིན་རྗེས་དྲན་ཚོགས་ཆུང་།

གཞུང་བསྒྲུབ་ཞུ་སྤྱིག་པ། རྩྭང་ཚང་བསྟན་འཛིན་རབ་བརྟན།

དབར་སྤྲུན་བདག་དབང་། དགེ་ལུགས་ཡོངས་ཀྱི་ལྷན་བཅུ་བའི་བརྟན་བཞུགས་དང་བཀའ་དྲིན་རྗེས་དྲན་ཚོགས་ཆུང་།

རྒྱུག་སྤྱིའི་ཚད་ལྡན་དེབ་ཨང་ ཅ༩༡ ཅ༣ ༡༤༣ཅ ཅ༤ ཅ

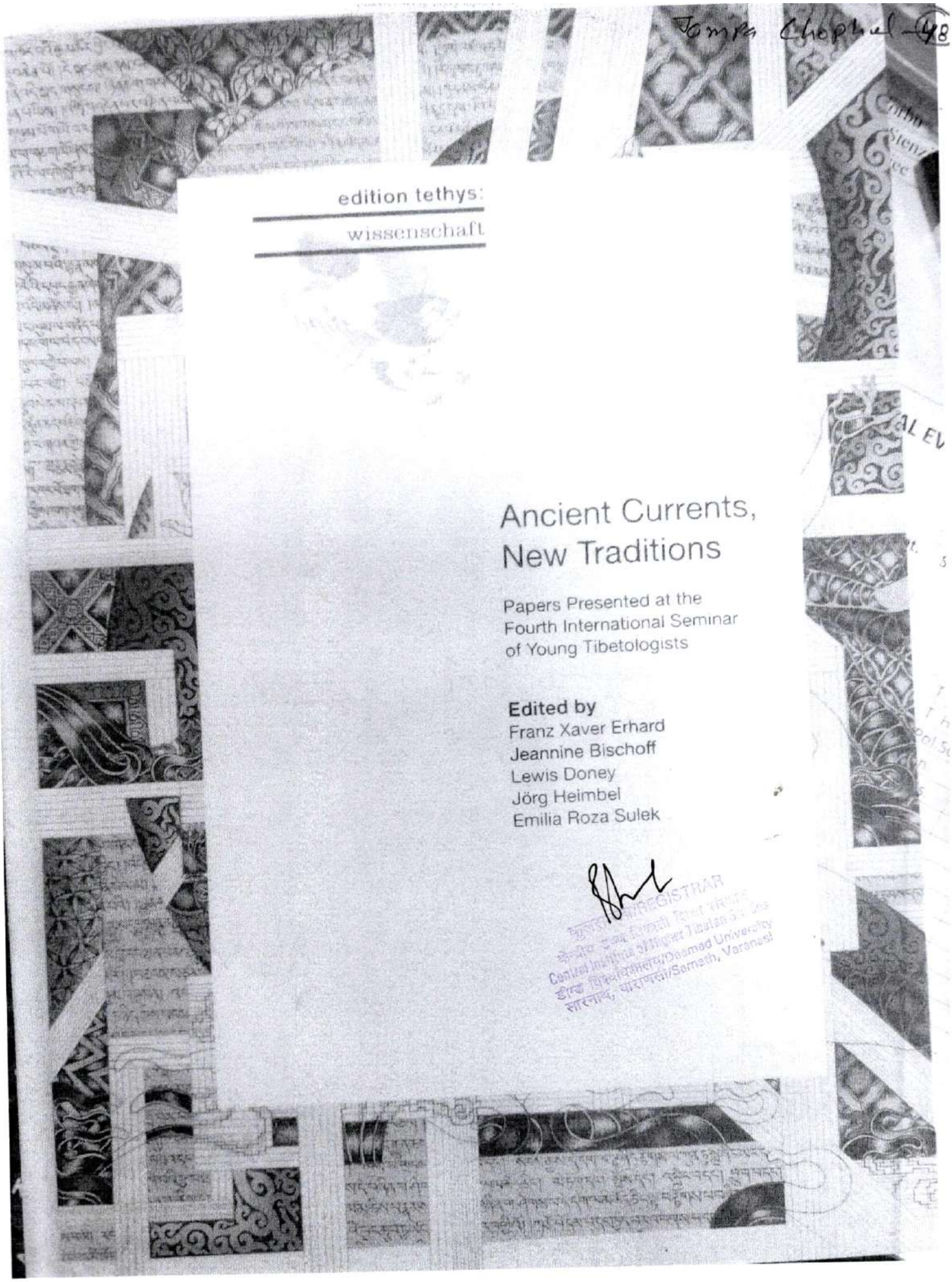
Discussion papers, on His Holiness the Dalai Lama's biography, writings and thoughts, by adepts of all traditions.

Subject:	Biography, writings and thoughts of His Holiness the Dalai Lama
Authors:	Adepts of all traditions
Executive In-Charge:	Committee for Tenshuk and Kindness-Remembrance
Input Editor:	Langtsang Tenzin Rabten
Publisher/Copyright:	Committee for Tenshuk and Kindness-Remembrance

ISBN 978-93-84839-94-9

Printed in New Delhi by Norbu Graphics

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi



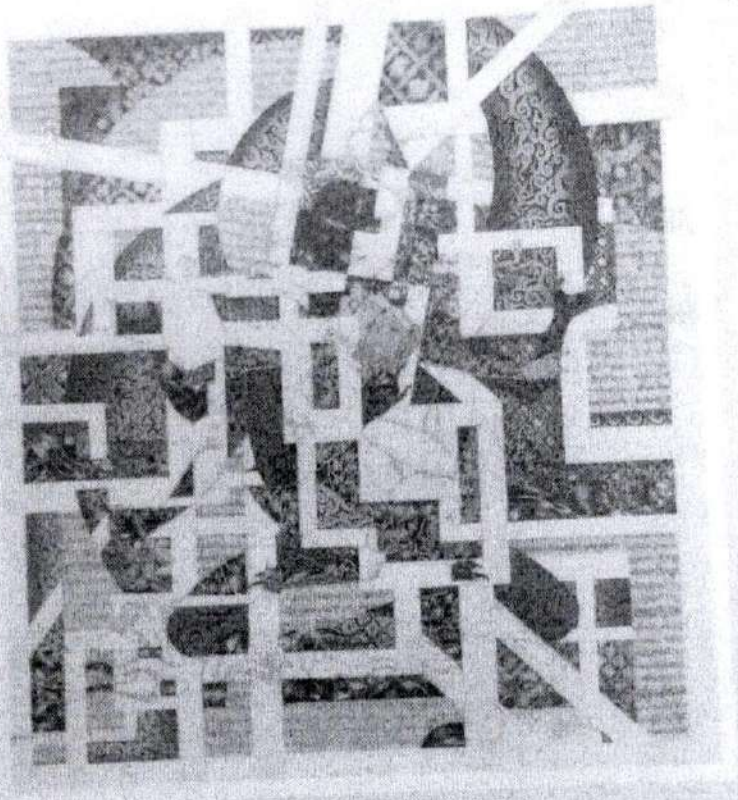
edition tethys:
wissenschaft

Ancient Currents, New Traditions

Papers Presented at the
Fourth International Seminar
of Young Tibetologists

Edited by
Franz Xaver Erhard
Jeannine Bischoff
Lewis Doney
Jörg Heimbel
Emilia Roza Sulek

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi



REGISTRAR
Central Institute
of Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

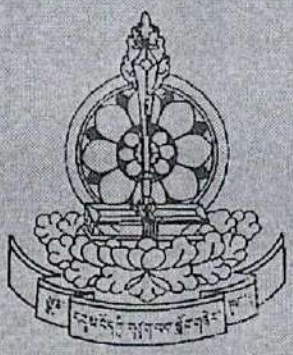
9 783942 527057

W·D-Negi 49

विविध ग्रन्थमाला - 7

वज्रयान दर्शन एवं साधना

(द्वितीय संस्करण)



ग्रन्थकार

प्रो० वङ्छुग दोर्जे नेगी

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द - 2561

ख्रीस्ताब्द - 2017

MISCELLANEOUS SERIES - 7

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 1998
Second Edition: 500 Copies, 2017

Price Hardback Rs. 300.00
Paperback Rs. 260.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi-221007, India, 2017
All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN: 978-93-80282-87-9 (HB)
978-93-80282-88-6 (PB)

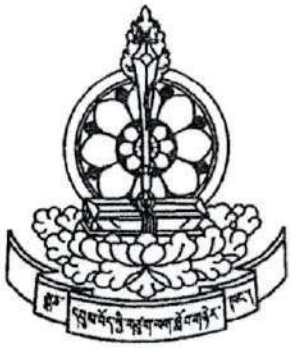
Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

MISCELLANEOUS SERIES - 7

VAJRAYĀNA DARŚANA EVAṂ SĀDHANĀ

(Theory & Practice of Buddhist Tantra)

(Second Edition)



Author

Prof. Wangchuk Dorjee Negi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

B.E. 2561

C.E. 2017

ग्रन्थ शरीर संक्षेप

प्रकाशकीय	v -viii
प्राक्कथन	ix-xiv
ग्रन्थ शरीर संक्षेप	xv-xvi
विषयानुक्रमणिका	xvii-xx
भूमिका	१-१३२
ग्रन्थ	१-२९८
प्रथम परिच्छेद (वज्रयान तत्त्व दर्शन)	१-६४
द्वितीय परिच्छेद (क्रियातन्त्र)	६५-९०
तृतीय परिच्छेद (चर्यातन्त्र)	९१-१०६
चतुर्थ परिच्छेद (योगतन्त्र)	१०७-१३८
पंचम परिच्छेद (अनुत्तरतन्त्र)	१३९-२८४
षष्ठ परिच्छेद (शमक-परम्परा)	२८५-२९०
सप्तम परिच्छेद (जिड्मा-परम्परा)	२९१-२९८
परिशिष्ट	२९९-३२३
परिशिष्ट-१ सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (संस्कृत)	३०१-३०५
परिशिष्ट-२ सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (भोट- तन्युर)	३०६
परिशिष्ट-३ भोटदेशीय आचार्यों के ग्रन्थों की सूची	३०७-३०८
परिशिष्ट-४ भोट भाषा में उपलब्ध सम्पूर्ण तन्त्र-आगमों- (बुद्धवचनों) की सूची	३०९-३२३

दुलगपा REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jyoti Singh - 50

Swami Vivekananda's Contribution to India

स्वामी विवेकानन्द की भारत को देन



Swami Vivekananda's Contribution to India

Published by
Ramakrishna Advaita Ashrama, Varanasi
in association with Pilgrims Publishing Varanasi

© 2017 General Secretary,
Ramakrishna Math and Ramakrishna Mission,
P. O. Belur Math Dist. Howrah, West Bengal 711202

First Published 2017
ISBN: 978-93-5076-168-7
All rights reserved
Cover art graphics and layout Christopher N Burchett

The contents of this book may not be reproduced, stored or copied in any form—printed, electronic, photocopied, or otherwise—except for excerpts used in review, without the written permission of the publisher.

Printed in India:
Pilgrims Publishing/ Pilgrims Book House
B 27/98 A8 Nawabganj Road, Durgakund,
Varanasi- 221010, Uttar Pradesh, India
Tel: (+91) 542 2314060/ 6544060/ 2312456
E-mail: pilgrimspublishingvns@gmail.com

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

३. स्वामी विवेकानन्द के विचारों की वर्तमान समय में प्रांसगिकता
-डॉ० अरविन्द कुमार सिंह एवं डॉ० अजय कुमार सिंह 215
४. देश-प्रेमी कविः स्वामी विवेकानन्द -डॉ० शिवा मिश्रा 223
५. भारत-सेवक विवेकानन्द -शैलेन्द्र कुमार मिश्र 229
६. स्वामी विवेकानन्द का भारतीय युवकों के लिए आह्वान -वन्दना सोनकर 230
७. स्वामी विवेकानन्द का युवकों के लिए संदेश -सुदर्शन कुमार झा 233

खण्ड-२ नारी शक्ति एवं मानव विकास 235
१. स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में भारतीय नारी -डॉ० ज्योति सिंह 237
२. स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में भारतीय का नारी पुनरुत्थान -अंशु सिंह 240

खण्ड-३ शिक्षा 243
१. स्वामी विवेकानन्द जीवनः समस्या के समाधानकर्त्ता एवं मानवीय शिक्षा के दिव्य प्रकाश स्रोत
-डॉ० अजय कुमार सिंह एवं डॉ० विनोद कुमार सिंह 245
२. स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एवं आधुनिक शिक्षा में उनका योगदान
-विभा सिंह पटेल 258
३. शिक्षा एकमात्र समाधान : स्वामी विवेकानन्द -संजय कुमार कर्ण 265
४. स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा विषयक विचार -सुमिता विश्वास 269

खण्ड-४ धर्म 275
१. स्वामी विवेकानन्द की धर्म विषयक अवधारणा -डॉ० नीलिमा सिंह 277
२. मानविक एकता -दैवदिन्न बनर्जी 280
३. शिकागो धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द का योगदान -ज्योति गुप्ता 282
४. स्वामी विवेकानन्द की धर्म विषयक अवधारणा -शिखा शुक्ला 284

खण्ड-५ पुनर्जागरण एवं विचार-प्रवाह 287
१. नवभारत के भविष्यद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द -डॉ० रामसुधार सिंह 289
२. स्वामी जी की भविष्य - दृष्टि -डॉ० दीनानाथ सिंह 291
३. स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रदत्त व्यावहारिक वेदान्त के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन
-दीपिका सिंह 293
४. स्वामी विवेकानन्दः प्राच्य और पाश्चात्य -मुकेश कुमार मालवीय 297
५. स्वामी विवेकानन्द और वेदांत -प्रियंका 301
६. आधुनिक भारत के पुनर्जागरण में स्वामी विवेकानन्द का योगदान -अहाना शर्मा 304
७. नवभारत के निर्माण में स्वामी जी की भूमिका -अंजली श्रीवास्तव 308

स्वामी जी के जीवन की घटनानुक्रमणिका 310

Thoughts of Power 311

PART—II: ENGLISH 317

SECTION I: Rural Development and Message to Youth 319

1. The Role of Ramakrishna Mission in Promotion of Agriculture and Rural Development — Kalyan Ghadei and S.K. Painkra 321

2. Swami Vivekananda's Message to the Youth — Astha Bagai 329

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
Sarnath, Varanasi

9

स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में भारतीय नारी

डॉ० ज्योति सिंह*

नर-नारायण के एकनिष्ठ सेवक स्वामी विवेकानन्द के निर्मल चित्त में अतीत, वर्तमान तथा भावी समाज का जो चित्र प्रतिफलित हुआ था, उसका एक ऐसा सनातन रूप है, जो काल के विपर्यय से म्लान नहीं होता। नारी समाज के सम्बन्ध में उनकी उक्तियाँ आज भी प्रायः डेढ़ सौ साल के बाद भी इसीलिए समभाव से उज्ज्वल तथा समाज जीवन के लिए उपयुक्त हैं कयोंकि वे थे 'आमूल संस्कारक'। वे समाज की जीवनी शक्ति को प्रबुद्ध करना चाहते थे, जिससे उसके हृदय के आनंद की शतधारा स्वतः ही उच्छ्वासित हो सके।

विश्व के किसी भी समाज का विकास और सर्वांगीण उन्नति तब तक सम्भव नहीं है जब तक की उस समाज की महिलाओं के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था उस समाज में न हो। नारी की उन्नति केवल भौतिक सुविधाओं और समृद्धि के द्वारा सम्भव नहीं है। नारीत्व के इस चरम विकास के सूत्र को अत्यन्त प्राचीन काल में ही हमारे ऋषियों ने समझ लिया था और इसीलिए उचित शिक्षा द्वारा नारी जाति के नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विकास की पूर्ण व्यवस्था की। इसलिए हमारे देश में गार्गी, मैत्रेयी, अरुन्धती, अनसूया, सीता, सावित्री, दमयन्ती आदि महान नारी विभूतियाँ उत्पन्न हुई थीं। ''वैदिक युग में, उपनिषद युग में मैत्रेयी, गार्गी आदि प्रातः स्मरणीय स्त्रियाँ ब्रह्मविचार में ऋषितुल्य हो गई थीं। सहस्र वेदज्ञ ब्राह्मणों की सभा में गार्गी ने गर्व के साथ याज्ञवल्क्य को ब्रह्मज्ञान के शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया था। इन सब आदर्श विदुषी स्त्रियों को जब उस समय अध्यात्मज्ञान का अधिकार था, तब फिर आज की स्त्रियों को वह अधिकार क्यों न रहेगा? एक बार जो हुआ है, वह पुनः अवश्य हो सकता है। इतिहास की पुनरावृत्ति हुआ करती है। सभी जातियाँ स्त्रियों की पूजा करके बड़ी बनी हैं।''

स्वामी जी कहते हैं ''हम चाहते हैं कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति निभा सकें और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलायी गई परम्परा को आगे बढ़ा सकें एवं वीरप्रसू बन सकें। भारत की स्त्रियाँ पवित्रता व त्याग की मूर्ति हैं, क्योंकि उनके पास वह बल और शक्ति है जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणों में सम्पूर्ण आत्मसमर्पण से प्राप्त होती है। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि धर्म ही शिक्षा का मेरुदण्ड है।''

*अतिथि प्रवक्ता, दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

R.C. Negi (51)

ལུས་སེམས་སྤྲོག་གི་བཙོ་སྒྲིང་ཚོགས་ཆེན་ཐེངས་གཉིས་པའི་གསུང་བཤད་ཕྱོགས་སྡེབ།



བོད་ཀྱི་སྨན་རྩིས་ཁང་།

2011

ལུས་སེམས་སྨོག་གི་བཟོ་གྲྭངས་ཚོགས་ཆེན་ཞེངས་གཉིས་བའི་གསུང་བཤད་ཁག

ཞུ་སྒྲིག་འགན་ལྷང་བ། དགེ་བཤེས་བསྟན་པ་བཀྲ་ཤིས།

ཞུ་སྒྲིག་ལས་རིགས། སྒེན་རམས་པ་བསུ་སྡང་ངག་དབང་སྒྲིན་པ།
ཚེས་རམས་པ་བསྟན་འཛིན་སྟན་ཐགས།

ཡིག་སྒྲུར་བ། ངོ་ཆེ་ཀུན་ལྡན་དཔལ་བཟང་།

དེབ་གཟུགས་ཌས་འགོད་པ། ཐུ་མོ་སྒྲིད་འཛོམས།

བོད་ཀྱི་སྒེན་ཚོས་ཁང་དབེ་ཐོག་ཞིབ་འཇུག་དང་པར་སྐྲུན་སྲེ་ཚན་ནས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས།

Published by:

Documentation & Publication Department
Men-Tsee-Khang
(Tibetan Medical & Astro. Institute of H.H. the Dalai Lama)
Gangchen Kyishong, Potala Road
District Kangra, Dharamsala – 176 215
HP. INDIA

Tel: 0091-1892-223222/223113

Fax: 0091-1892-224116

E-mail: docpub@men-tsee-khang.org

Website: www.men-tsee-khang.org (Eng)
www.mentsee.org (Tib)
www.men-tsee-khang-cn.org (Ch)
www.men-tsee-khang-exports.org

© Men-Tsee-Khang 2017/09 : 300 Copies

ISBN: 978-93-83086-11-5

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ལུས་སེམས་སྦྱོག་གི་བའྲེལ་བ།

१०। ཆང་བའི་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—མ་སྐྱེ་རྡོང་གསར་མཁན་པོ་རྩོལ་བའྲིལ་རྡོ་རྗེ། ४१

११। ཀུ་གར་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་གར་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་སྐྱེས་པ་ཀི་ཀྱོར་བཟང་ཕྲན། ४५

१२। སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་པ་ཉི་ཐི་རུ་ན་ར་ཡ་ནམ། ४०

१३। ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་པ་ཡིངང་ཀུ་བའི། ४४

१४। དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—འཕྲལ་རབས་པ་ཐེ་ཀིལ་མེ་ཏེ་སོ། ४४०

ལུས་སེམས་སྦྱོག་གི་འཕྲུག་ཆེན།

१५। ཆང་ལའི་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ལྟ་རྟ་སྒྲོལ་དཀོན་རམེགས་ཆེགི། ४४५

१६। ཀུ་གར་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་གར་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་སྐྱེས་པ་ཀི་ཀོར་བཟང་ཕྲན། ४४७

१७। སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་པ་ཚེ་སེམས་ཀུན། ४४६

१८। ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་པ་ཁ་ཤ་བཟ་ཀ་ཏིར། ४४४

१९। ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་པ་ཡིངང་ཀུ་བའི། ४४४

२०। དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—དེང་རབས་སེམྱས་ཁཅོང་ཁགོ་རིག་སྐྱེས་པ་ཀེ་ཤི་སྐྱེས། ४४६

२१। ཆིན་གཡོས་པའི་སྐྱབས་ཀྱི་དྲི་བ་དྲིས་ལན། ४४८

ལུས་སེམས་སྦྱོག་གི་བཅོས་ཐབས།

२२। ཆང་ལའི་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སྐྱ་རྟ་སྒྲོལ་དཀོན་རམེགས་ཆེགི། ४४९

२३। ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་ཀྱི་གཞུང་ནས་བཤད་པའི་སེམས་ཀྱི་འཕྲོད་བསྟེན་ལ་
བཅེས་སྤྱོད་དང་གཉེན་པཱུག་སྐྱབས་སྐྱང་ས་འཇོན།
—ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་དཀོན་རམེགས་ཆེན་པོ་རམ་ཀརྟ་ཤིད། ४५०

२४। སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་པ་ཚེ་སེམས་ཀུན། ४४०

२५। ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་ལུགས་སྐྱེས་པ་ཁ་ཤ་བཟ་ཀ་ཏིར། ४४६

२६। ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་པ་ཡིངང་ཀུ་བའི། ४४४

२७। དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་སྐྱེན་པ་ཀེ་ཤི་སྐྱེས། ४४४

२८। ཆང་ལའི་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སྐྱ་རྟ་སྒྲོལ་དཀོན་རམེགས་ཆེགི། ४४९

२९। ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་ཀྱི་གཞུང་ནས་བཤད་པའི་སེམས་ཀྱི་འཕྲོད་བསྟེན་ལ་
བཅེས་སྤྱོད་དང་གཉེན་པཱུག་སྐྱབས་སྐྱང་ས་འཇོན།
—ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་དཀོན་རམེགས་ཆེན་པོ་རམ་ཀརྟ་ཤིད། ४५०

३०। སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་པ་ཚེ་སེམས་ཀུན། ४४०

३१। ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་ལུགས་སྐྱེས་པ་ཁ་ཤ་བཟ་ཀ་ཏིར། ४४६

३२। ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་པ་ཡིངང་ཀུ་བའི། ४४४

३३। དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་སྐྱེན་པ་ཀེ་ཤི་སྐྱེས། ४४४

३४। ཆང་ལའི་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སྐྱ་རྟ་སྒྲོལ་དཀོན་རམེགས་ཆེགི། ४४९

३५। ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་ཀྱི་གཞུང་ནས་བཤད་པའི་སེམས་ཀྱི་འཕྲོད་བསྟེན་ལ་
བཅེས་སྤྱོད་དང་གཉེན་པཱུག་སྐྱབས་སྐྱང་ས་འཇོན།
—ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་དཀོན་རམེགས་ཆེན་པོ་རམ་ཀརྟ་ཤིད། ४५०

३६। སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་པ་ཚེ་སེམས་ཀུན། ४४०

३७। ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་ལུགས་སྐྱེས་པ་ཁ་ཤ་བཟ་ཀ་ཏིར། ४४६

३८। ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་པ་ཡིངང་ཀུ་བའི། ४४४

३९। དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་སྐྱེན་པ་ཀེ་ཤི་སྐྱེས། ४४४

४०। ཆང་ལའི་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སྐྱ་རྟ་སྒྲོལ་དཀོན་རམེགས་ཆེགི། ४४९

४१। ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་ཀྱི་གཞུང་ནས་བཤད་པའི་སེམས་ཀྱི་འཕྲོད་བསྟེན་ལ་
བཅེས་སྤྱོད་དང་གཉེན་པཱུག་སྐྱབས་སྐྱང་ས་འཇོན།
—ཀུ་ཏབ་རྩོ་ཡི་རིག་ཀྲིད་དཀོན་རམེགས་ཆེན་པོ་རམ་ཀརྟ་ཤིད། ४५०

४२। སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སིདྡྷའམ་ཀྱབ་ཏོག་སྐྱེས་པ་ཚེ་སེམས་ཀུན། ४४०

४३। ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཡུ་རྟ་ཆིའམ་ཁ་ཚེ་སྐྱེས་ལུགས་སྐྱེས་པ་ཁ་ཤ་བཟ་ཀ་ཏིར། ४४६

४४। ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—ཀུ་ཏབ་སྒོལ་ཀྱུན་སྐྱེན་པ་ཡིངང་ཀུ་བའི། ४४४

४५। དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—དེང་རབས་སེམྱས་ཁམྱས་སྐྱེན་པ་ཀེ་ཤི་སྐྱེས། ४४४

४६। ཆང་ལའི་སེམྱས་ཁམྱས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་བཤད་པ།
—སྐྱ་རྟ་སྒྲོལ་དཀོན་རམེགས་ཆེགི། ४४९

४७। འབྲུང་བཀྱུར་སེམས་ཁམས་བམས་འབྲོད་བསྟེན་ཐང་ཁྱབ་ཚོང་གི་བསྟུན་བྱ་
གང་ཡོད་སྐྱོར་ལ་ལ་སྐྱང་བཤད་གི་བསྟུར། ४४९

४८। ཆོ་ཏགས་བཅུར་བའི་སྐྱོང་ཆོར་གཏུམ་བཤད། ४४४

४९। བོད་ཀྱི་སྐྱན་ཁྲིས་ཁང་གི་བཅན་འཛིན་མཆོག་གི་མཐུ་སྟོབས་བཤད། ४४४

५०। མཐུག་སྐྱོས་མཚང་སྐྱེའི་སྐྱ་མཁྱོན་གཙོ་བོ་བོད་མི་མང་སྐྱེ་འཕྲུས་ཆོག་ཙོ
སྐྱ་ངོ་སྐྱན་པ་ཆོ་རིང་མཆོག་གི་གསུང་བཤད། ४४०

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi
सत्यापित/VERIFIED

RC Negi - 52

ལུས་སེམས་སྨོག་གི་བཟོ་སྒྲིང་ཚོགས་ཆེན་ཞེངས་གཉིས་པའི་ གསུང་བཤད་ཕྱོགས་སྒྲིག



བོད་ཀྱི་སྐབས་ཆོས་ཁང་།

2012

ལུས་སེམས་སྒོག་གི་བཙོ་སྒྲིང་ཚོགས་ཆེན་ཞེངས་གཉིས་བའི་གསུང་བཤད་ཁག

ཞུ་སྒྲིག་འགན་ལྟར་བ། དགེ་བཤེས་བསྟན་པ་བཀྲ་ཤིས།

ཞུ་སྒྲིག་ལས་རོགས། སྨན་རམས་པ་བསུ་སྡང་དག་དབང་སྒྲིན་པ།
ཚེས་རམས་པ་བསྟན་འཛིན་སྟན་ཐགས།

ཡིག་སྒྲུར་བ། ངོ་ཆེ་ཀུན་ལྡན་དཔལ་བཟང་།

དེབ་གཟུགས་ཌུས་འགོད་བ། ལྷ་མོ་སྒྲིད་འཛོམས།

བོད་ཀྱི་སྨན་ཚེས་ཁང་དབེ་ཐོག་ཞིབ་འཇུག་དང་པར་སྐྲུན་སྲེ་ཚན་ནས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས།

Published by:

Documentation & Publication Department
Men-Tsee-Khang
(Tibetan Medical & Astro. Institute of H.H. the Dalai Lama)
Gangchen Kyishong, Potala Road
District Kangra, Dharamsala – 176 215
HP. INDIA

Tel: 0091-1892-223222/223113

Fax: 0091-1892-224116

E-mail: docpub@men-tsee-khang.org

Website: www.men-tsee-khang.org (Eng)
www.mentsee.org (Tib)
www.men-tsee-khang-cn.org (Ch)
www.men-tsee-khang-exports.org

© Men-Tsee-Khang 2017/09 : 300 Copies

ISBN: 978-93-83086-11-5

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ལུས་སེམས་སྟོག་གི་འཆེལ་བ།

༡༠། རང་བའི་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—མ་སྐྱེ་རྡོང་གསར་མཁན་པོ་ཚོས་དབྱིངས་རྡོ་རྗེ། ༡

༡༡། རྒྱ་གར་ཚོ་ཡི་རིག་བྱེད་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—རྒྱ་གར་ཚོ་ཡི་རིག་བྱེད་སྨན་པ་ཀི་ཁྱོར་ཡང་ཁཏན། ༧

༡༢། སིདྡྷའམ་གྱུབ་ཐོབ་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—སིདྡྷའམ་གྱུབ་ཐོབ་སྨན་པ་ཀི་ཁ་རྒྱུན་ཡ་ཡ་ཆན། ༡༠

༡༣། རྒྱ་ནག་སྲོལ་རྒྱུན་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—རྒྱ་ནག་སྲོལ་རྒྱུན་སྨན་པ་ཉིའང་རྒྱ་ཁྱེ། ༡༤

༡༤། དེང་རབས་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—འབྲུམ་རཏྣ་པ་ཀེ་ཤེས་ཡེ་ཤེ། ༡༩

ལུས་སེམས་སྟོག་གི་འཁྲུག་རྐྱེན།

༡༥། རང་བའི་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—རྡོ་རྗེ་སྐྱོབ་དཔོན་རཏྣ་རྒྱ། ༢༤

༡༦། རྒྱ་ནག་ཚོ་ཡི་རིག་བྱེད་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—རྒྱ་ནག་ཚོ་ཡི་རིག་བྱེད་སྨན་པ་ཀིའོང་པཱ་ལན། ༢༩

༡༧། སིདྡྷའམ་གྱུབ་ཐོབ་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—སིདྡྷའམ་གྱུབ་ཐོབ་སྨན་པ་ཀེ་ཤེས་ཀུན་སྐར། ༣༦

༡༨། ཡུ་རྒྱལ་རིལ་ཆེ་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—ཡུ་རྒྱལ་རིལ་ཆེ་སྨན་པ་ཚེ་ཟུང་ཁ་ཤས། ༣༣

༡༩། རྒྱ་ནག་སྲོལ་རྒྱུན་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—རྒྱ་ནག་སྲོལ་རྒྱུན་སྨན་པ་ཉི་ཤར་ཐུབ་ཁྲིས། ༣༧

༢༠། དེང་རབས་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—དེང་རབས་སེམས་ཁམས་རིག་པ་ཡི་ཚེ་ཐུབ། ༤༡

༢༡། ཉིན་གཤུམ་པའི་སྨན་པ་ཀི་དྲི་བ་དཔལ་ལན། ༤༤

ལུས་སེམས་སྟོག་གི་བཅོས་ཐབས།

༢༢། རང་ལའི་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—ཐུབ་སྟོན་དཔོན་རཏྣ་རྒྱ། ༤૯

༢༣། རྒྱ་གར་ཚོ་ཡི་རིག་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་ནས་འཁད་པའི་སེམས་ཀྱི་འཕྲོད་བསྟེན་ལ་
གཅེས་སྤྱོང་དང་གཉེན་ཤུགས་སྤང་བཤོམ།
—རྒྱ་གར་ཚོ་ཡི་རིག་བྱེད་སློབ་དཔོན་ཚེན་པོ་རཏྣ་ཀཱརྟི། ༤૦

༢૬། སིདྡྷའམ་གྱུབ་ཐོབ་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—སིདྡྷའམ་གྱུབ་ཐོབ་སྨན་པ་ཚེ་ཚེམ་ཀུམཱར། ༤૧

༢૫། ཡུ་རྒྱལ་རིལ་ཆེ་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—ཡུ་རྒྱལ་རིལ་ཆེ་སྨན་ཀུགས་སྨན་པ་ཙཱ་ཏི་དེར། ༤૬

༢૬། རྒྱ་ནག་སྲོལ་རྒྱུན་སྨན་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—རྒྱ་ནག་སྲོལ་རྒྱུན་སྨན་པ་ཨ་ཙང་རྒྱ་ཁྱེ། ༤૯

༢૭། དེང་རབས་སེམས་ཁམས་རིག་པའི་གཞུང་ནས་འཁད་པ།
—དེང་རབས་སེམས་ཁམས་རྣམ་པ་རེ་ཤི་ཐེ་ཐུན། ༤૯

༢૮། ཉེན་གསུམ་པའི་སྨན་པ་ཀི་དྲི་བ་དཔལ་ལན། ༥૦

༢૯། འབྲང་བཀྲན་སེམས་ཁམས་འབྱོང་བསྟེན་ཐད་ཀྱན་མོང་གི་བསྟན་བྱ་
གང་ཡོད་སྐོར་ལ་སྤྱང་བཤད་གོ་བསྟར། ༥૪

༣૦། ཚོགས་བཅར་བའི་སྲོང་ཚོར་གཏམ་བཤད། ༥૮

༣૧། བོད་ཀྱི་སྨན་ཚེས་ཁང་གི་འཕན་འཛིན་མཆོག་གི་མཐུག་སྟོས་གསུང་བཤད། ༦૧

༣૨། མཐུག་སྟོས་མཛད་སྐྱེའི་སྐུ་མཆྱོག་གཙོ་བོའི་བོད་ཕྱི་མང་ཐབས་ཚོགས་གཙོ་
སྐྱང་ཁྲིན་པ་ཚོ་རིང་མཚོག་གི་གསུང་བཤད། ༦૦

ꯀꯨꯂꯩꯁꯤꯟꯅꯥ/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

R K Sharma (53)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

T. R. Shashini 54

ISSN 2395 - 1524

ह्रीः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

V. R. Vajracharya (55)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

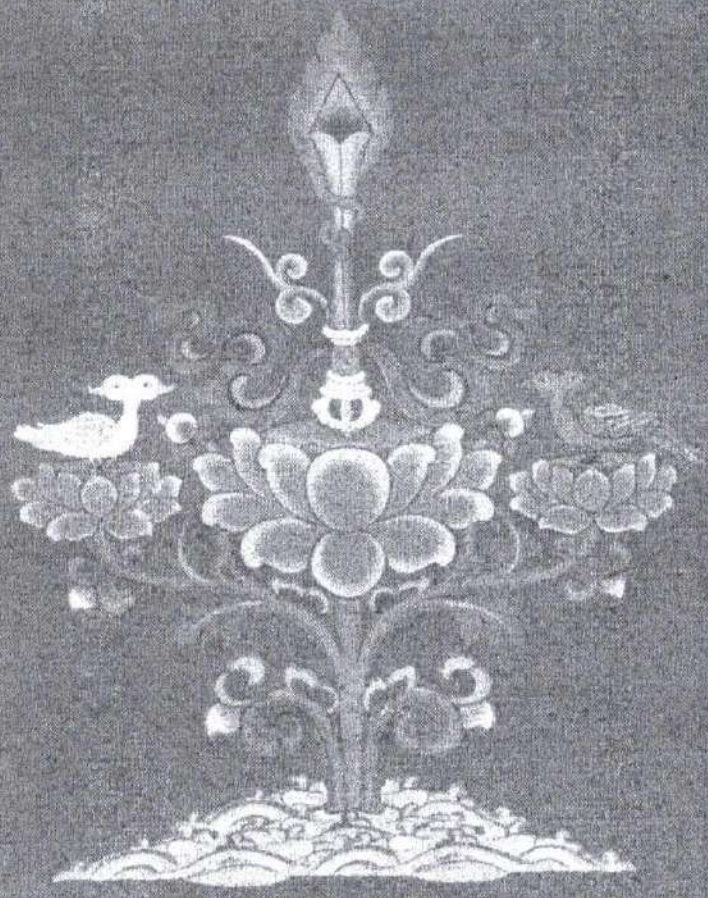
REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्चतिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Banarsi lal - 56

अद्भुत-कोश नामक श्रीमाल्क्या पीठ की वंश-परम्परा का संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त

तथा

महापीठाधीशों की अध्येषणा



लेखक: खेनपो सोनम ग्याछो (आचार्य पुण्यसागर)
भाषान्तरकार: डॉ. बनारसी लाल
प्रकाशक: सपण् ट्रान्सलेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन

Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi



Unit of Tsechen Shed Dub Samten Phuntsok Ling Charitable Society
P.O. Manduwala, Via Prem Nagar, 248007
Dehradun, Uttarakhand, INDIA



Central Institute of Higher
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

अद्भुत-कोश नामक श्रीसास्क्या पीठ की वंश-परम्परा का संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त

तथा

महापीठाधीशों की अध्येषणा

लेखक

खेनपो सोनम ग्याछो (आचार्य पुण्यसागर)

भाषान्तरकार

डॉ. बनारसी लाल

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी

प्रकाशक

सपण् ट्रान्सलेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन

देहरादून, 2016

REGISTRAR

केन्द्रीय तिब्बती शिक्षा संस्थान

Central Institute of Higher Tibetan Studies

डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University

सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi



SAPAN SERIES - VI

First Edition (1000 copies) November 2016

Copyright © 2016,
Sapan Translation & Research Foundation
All rights reserved. This book or parts thereof,
may not be reproduced without permission.

Published by:
Sapan Translation & Research Foundation
Unit of Tsechen Shed-Dub Samten Phuntsok
Ling Charitable Society
P.O. Manduwala, Via Prem Nagar
Dehradun, Uttarakhand, India

Printed in India, New Delhi, by Norbu Graphics

Central Institute ... Deemed University
डीम्ड विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Banaras Ind (57)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

REGISTRAR
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

T.S. Negi – 58

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्ध ग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Dhīḥ

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

Editors

GESHE NGAWANG SAMTEN
Vice Chancellor

KAMESHWAR NATH MISHRA
Head of Department

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2561 VAIŚĀKHA PŪRṆIMĀ C.E. 2017

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Chief Editor : Prof. Geshe Ngawang Samten

Publication In-charge : Dr. Pema Tenzin

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya

Banarsi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Vol. LVII, 550 copies, 2017

Price : Rs. 00.00

© Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi, 2017

Published by:

Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221 007

ISSN 2395 - 1524

Printed by:

Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड वि. विद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Thakur Sain Negi (59)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

केन्द्रिय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Tsering Dolkar (60)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

57

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2017

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

L.N Shastri (61)

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES-XV

महर्षिणा अग्निवेशेन प्रणीता

चरक-संहिता

। द्वितीयो भागः ।

། ཚ་བ་རྒྱས་པའི་བསྟན་བཅོས་ཐང་པོ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་པ་ནི།

ཙ་རྟ་གཞི་བསྡུ་བ།

। རོང་གཞིས་པ། ।



अनुवादक एवं सम्पादक

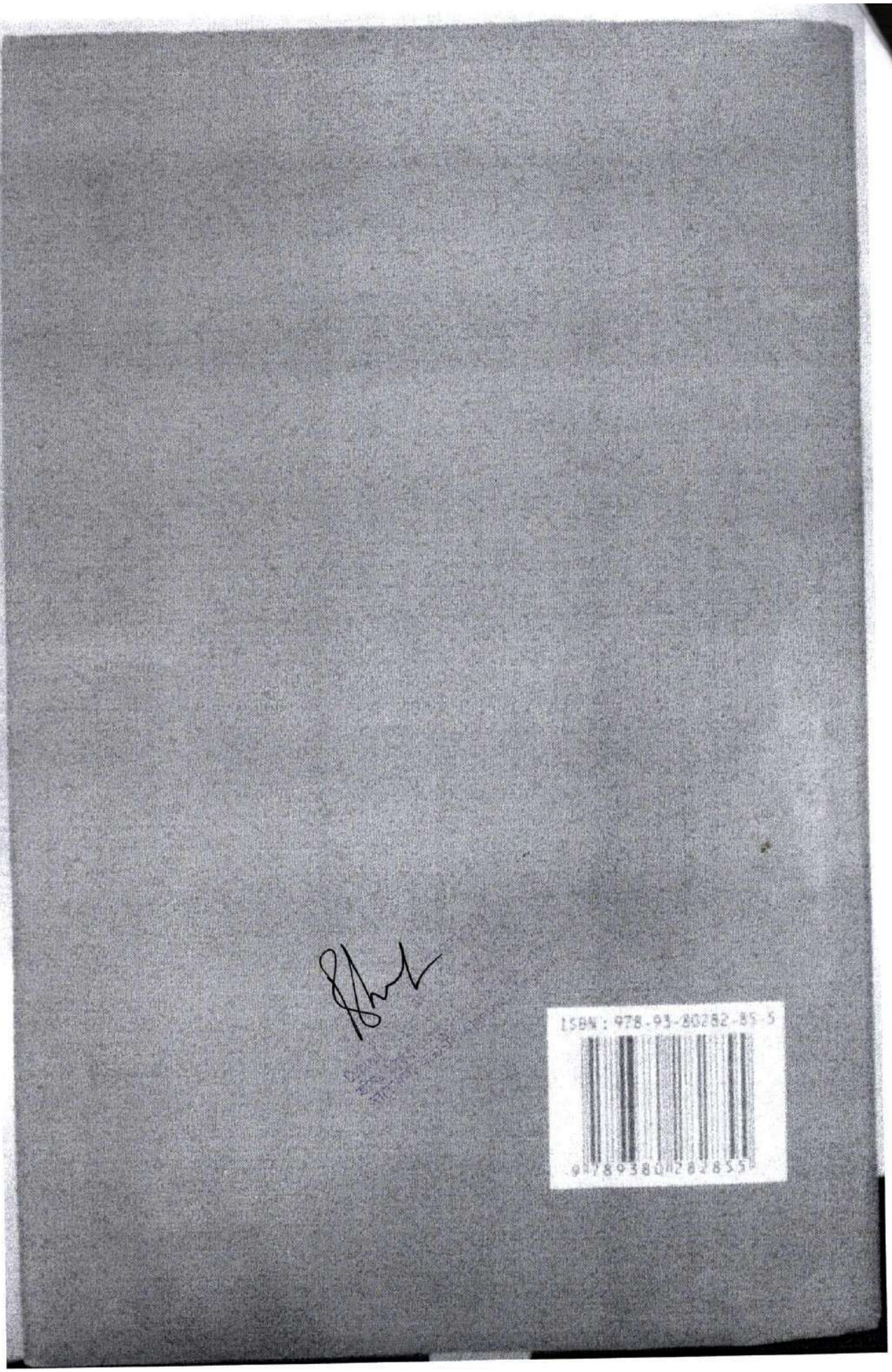
डो० त्सासङ नोरबु शास्त्री

श्र० त्सोसङ चत्रजिन

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय

सारनाथ, वाराणसी

संवत्सर 2561


ISBN : 978-93-80282-85-5

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 83

CARAKA-SAṂHITĀ

of

Maharṣi Agniveśa

(Sanskrit text with Tibetan translation)

[Volume II]



Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

Translated into Tibetan and Edited
by
Prof. Lobsang Norbu Shastri
Prof. Lobsang Tenzin

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

C.E. 2017

B.E. 2561

BIBLIOTHEA INDO-TIBETICA SERIES - 83

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2017

Price Hardback Rs. 300.00
Paperback Rs. 240.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi-221007, India, 2017
All rights reserved

Published by:
Central University of Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-68-5 (HB)
978-93-80282-86-2 (PB)

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - 83

महर्षिणा अग्निवेशेन प्रणीता

चरक-संहिता

[द्वितीयो भागः]

अनुवादक एवं सम्पादक
प्रो. लामड़ु योंगु ञाम्बी
प्रो. लामड़ु तेनज़िन

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द - 2561 ईस्वीसन - 2017

དཀར་ཆག

དབུ་སྐྲའི་ཆེད་བརྗོད། (བོད་སྐད།) v-vii

प्रकाशकीय (हिन्दी) ix-xi

དཀར་ཆག xiii-xxvi

མདོ་གནས་ལེའུ་བཅུ་དྲུག་པ། གསོ་བ་རབ་ཏུ་མཁས་པ།

སྐྱེ་བ་མཁས་ལྷུན་གྱི་འབྲས་བུ། 1

ཡང་དག་པའི་བཀྲས་པའི་མཚན་ཉིད། 2

བཀུ་བ་དམན་པའི་མཚན་ཉིད། 2

ལྷུང་བ་དབྱས་པའི་མཚན་ཉིད། 3

ལྷུང་ཁྱོད་བའི་ནད། 4

ལྷུང་བའི་འབྲས་བུ། 5

སྐྱེ་ཁྱིམ་ཟད་པ་ལ་སོགས་པ། 6

བཀུ་སྐྱེ་མེས་གཉིད་དྲུགས་པའི་གསོ་ཐབས། 6

མེ་བཞིན་འཇུག་པོ་དྲི་བ། 8

རབས་སོ་སྐྱེས་ཀྱི་ལན། 8

ལེའུ་ཉེ་བར་བསྡུ་བ། 10

མདོ་གནས་ལེའུ་བཅུ་བདུན་པ། མགོ་བོའི་རྒྱུ་ཚོམ་ཁྱི།

མད་ཡ་མེ་བཞིན་འཇུག་ཤི་འདྲི་བ། 12

ཁྱ་མའི་ལན། 13

མགོ་བོའི་ནད་ཀྱི་རྒྱུ། 13

མགོ་བོའི་མཚན་ཉིད། 14

Sampurnanand Sanskrit University
Digitized by eGangotri
Siddhanta eGangotri Gyaan

D. D. Chaturvedi (62)

साधारणाब्दकाव्यामृतम्

SĀDHĀRAṆĀBDAKĀVYĀMṚTAṂ

एकवर्षीयघटितघटनाश्रितं हिन्दी-अनुवादसमेतम्,

434 चतुस्त्रिंशदुत्तरचतुश्शतपद्यात्मकम्



Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्चतिब्बती शिक्षासंस्थान
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

रचयिता

प्रो. धर्मदत्तचतुर्वेदी

आचार्योऽध्यक्षश्च संस्कृतविभागः

केन्द्रीयउच्चतिब्बती-शिक्षासंस्थानम्, मानितविश्वविद्यालयः

सारनाथः वाराणसी (उ.प्र.)

वि.सं. 2074 सन् 2017

संक्षिप्त परिचय



लेखक : डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी
पिता : पं. देशराज चतुर्वेदी
जन्मस्थान : ग्राम व पोस्ट- आरी, जिला- महोबा (उ.प्र.)
जन्मतिथि : १.०३.१९५९
शैक्षणिक योग्यता : आचार्य नव्यव्याकरण, बौद्धदर्शन व पी-एच.डी., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
अध्यापन : १९८९ से अद्यावधि-संस्कृत अध्यापन, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग एवं अध्यक्ष, शब्दविद्या संकाय, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी।

शिक्षा गुरु : आचार्य यमुना प्रसाद शास्त्री (पितृव्य), प्राचार्य, श्रीरामकृष्ण सं.म.वि., मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.), आचार्य वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, वाराणसी, स्व. पं. शशिधर मिश्र (व्याकरणाचार्य), वाराणसी, अनुसन्धान-निर्देशन- प्रो. श्रीनारायण मिश्र, वाराणसी।

प्रकाशन-लेखन : कातन्त्रोणादिसूत्रवृत्तिः (रूपसिद्धि व हिन्दी टीका), वज्रयानदर्शनमीमांसा (संस्कृत-सम्पादन), संस्कृतसेवासाधना (सम्पादन), सर्वदेवपूजादर्पणः (सम्पादन), संस्कृतपत्रमञ्जूषा (सम्पादन), यज्ञसुधा (स्मारिका-सम्पादन), संस्कृतकाव्यगीतवैभवम्, सौम्याब्दकाव्यामृतम् (उ.प्र. संस्कृत संस्थान लखनऊ द्वारा २०१७ वर्षीय विशेष पुरस्कार से सम्मानित)। अनेक राष्ट्रीय शोध-सङ्गोष्ठियों में शोधपत्र प्रस्तुति, कविसम्मेलनों में कविता-प्रस्तुति, नाटक अभिनय का निर्देशन, संस्कृतप्रशिक्षण शिविरों का संचालन, संस्कृत-प्रचार कार्य में सहयोग व पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक शोध-निबन्ध व कवितायें, संस्कृत पत्रिकाओं के सहभागी सम्पादक कार्यपरिषद् एवं विद्वत् समितियों की सदस्यता।

शिवार्चना : निज जन्मभूमि ग्राम- आरी में चन्देले कालीन प्राचीन शिव नादिया मन्दिर जो पूर्णतया विनष्ट हो चुका था, उसका नव-निर्माण जुलाई २०१२ से फरवरी २०१३ तक किया गया, जिसमें १२ ज्योतिर्लिङ्ग एवं अन्य देव-देवियों की कुल २५ प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा महारुद्र यज्ञ के अन्तर्गत वसन्तपंचमी २०१३ को कराई गई। इसका विशेष कार्यक्रम इन्टरनेट यूट्यूब पर Dharmdatt Chaturvedi लगाने पर यज्ञ को क्लिक करने से १-७ डी.वी.डी. २८ भागों में विभाजित यज्ञ कार्यक्रम को देखा जा सकता है।

सम्पर्क : चलभाष : ०९४५१५७०८३५, ईमेल : ddcsanskrit@gmail.com
वर्तमान पता : संस्कृत विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-०७

मूल्य : 350.00

ISBN: 978-93-80550-58-9

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

शारदा संस्कृत संस्थान
जगतगंज, वाराणसी-221 002.
फोन : (0542) 2204168 (संस्थान) 2452037 (आवास)
e-mail: sharadabhawan@yahoo.co.in, website: www.sharadasansthan.in

प्रकाशक
भारती प्रकाशन
45, धर्मसंघ कॉम्प्लेक्स, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी - 01
फोन - 0542-2312677, 09305292293
ई-मेल : bharatiprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.bharatiprakashan.in

वितरक
शारदा संस्कृत संस्थान
मी. २७/५९, जगतगंज, वाराणसी - २२१००२
फोन (०५४२) २२०४१६७
Email: sharadabhawan@yahoo.co.in
Website: www.sharadasansthan.in

प्रथमसंस्करणम्

© रचयितृवितरकाधीनम्

ISBN: 978-93-80550-58-9

सन् : २०१७

मूल्यम् : 350/- सजिल्द

मुद्रक :
साधना प्रेस, वाराणसी
मो: 9005440099

सहायक रजिस्ट्रार/ASSISTANT REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानित विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Sādhāraṇābdakāvyāmṛtaṃ

(Based on various events occurred in a year

With Hindi Translation)

BY

Dr. Dharmadatt Chaturvedi

HoD, Sanskrit and Dean, Faculty of Shabda Vidya

Central Institute of Higher Tibetan Studies

(Deemed Univesity)

Sarnath, Varanasi

Publisher

Bharati Prakashan

45 - Dharmasangh Complex, Durgakund, Varanasi - 1

Distributor

Sharda Sanskrit Sansthan

Jagatganj, Varanasi - 2

V.S. 2074 - Year: 2017

Sarup Book

History Reconstrued

Through Literature



कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Rajshree Ranawat

History Reconstrued Through Literature

Edited by

Rajshree Ranawat



Sarup Book Publishers (P) Ltd.
New Delhi-110002

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Varanasi

Publisher

Sarup Book Publishers (P) Ltd.

4740/23, Ansari Road
Darya Ganj, New Delhi-110 002
Phone: 23281029, 23244664
Email: sarupandsonsin@hotmail.com

History Reconstrued through Literature

© *Editor*

I[st] Edition-2017

ISBN: 978-93-5208-072-4

Laser Typesetting: Aadil Printographics, Delhi

SECTION OFFICER/REGISTRAR
संस्थित उच्च शिक्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
शेरबुग, सारनाथ/Deemed University
Sherpug, SARNATH-Varanasi

Contents

Preface *xi*

Acknowledgments *xv*

Introduction *xvii*

1. Diverse Voices and Alternative Traditions: Rajasthani Tales as Artifacts 1
   Pradeep Trikha
2. Delving into the Oral Storytelling Traditions of Rajasthan 13
   Santosh Kanwar Shekhawat
3. Kashmir Folklore and Shaikh Noor-ud-Din: A Study in Tales and Traditions 23
   Sarah Siddiqui & Shahida Kutubuddin
4. Revisiting Mythology- An Incessant Metamorphosis of Sita 40
   Rashmi Mathur
5. Retelling the Mythical Legend, Lord Shiva, in Amish Tripathi's *The Immortals of Meluha* 55
   Sunita Sadh

REGISTRAR

6. Zarghuana Karagar's *Dear Zari*: Representing the History of the Oppressed Afghan Women in Literature 73
Namita Singh
7. Women, History and Identity: Shauna Singh Baldwin's *What the Body Remembers* 83
Pragati Sobti
8. *Saint Joan:* The Saga of Female Heroism 92
Shalini Sharma
9. Postcolonial History and Possibility of Reconciliation– A Case Study of 'Sorry Literature' 98
Mahesh Sharma
10. Michael Ondaatje's *Anil's Ghost*: Reconstructing History Through Art 114
Pritam Singh
11. Nation and Identity Palimpsest as Reflected in Selected Works of Saadat Hasan Manto 124
Jagriti Upadhyaya
12. Narrating Nationalism in *The Scope of Happiness*: Autobiography of Vijay Laxmi Pandit 137
Sanjana Sharma
13. Factual History and its Dramatic Representation: An Analysis of Mahesh Dattani's *Final Solutions* 148
Govind Saraswat
14. Nostalgic Representation of Nation: A Case Study of Ahmed Ali's *Twilight in Delhi* 158
Rani Rathore
15. Portrayal of Women as 'Survivors and Victims' in Literature during the Historical Partition Trauma: A Synoptic Analysis 164
Meghna Sharma
16. Harlod Pinter: Anxiety Peeps Through the Skylight 183
Shweta Verma & Sangeeta Jhajharia

REGISTRAR

17. Revelation of Real Life Identities on Screen: An Exploratory Study of Biopics and Documentaries in Indian Cinema 191
Sushila Shekhawat & Neerja Vyas

18. Reading History Through Language in Literature 200
Sucharita Sharma

19. Multifaceted World of Rabindranath Tagore's Creativity 211
Manju Bishnoi

20. Spotlight on Henry James's Work: A New Avatar of Transatlantic Cultural Dilemma 224
Ankita Mehta

21. Revisioning History in Shashi Tharoor's *The Great Indian Novel* 244
Rashmi Bhatnagar

22. Ancient Ganika: An Enigma for Modern India 250
Persis Latika Dass

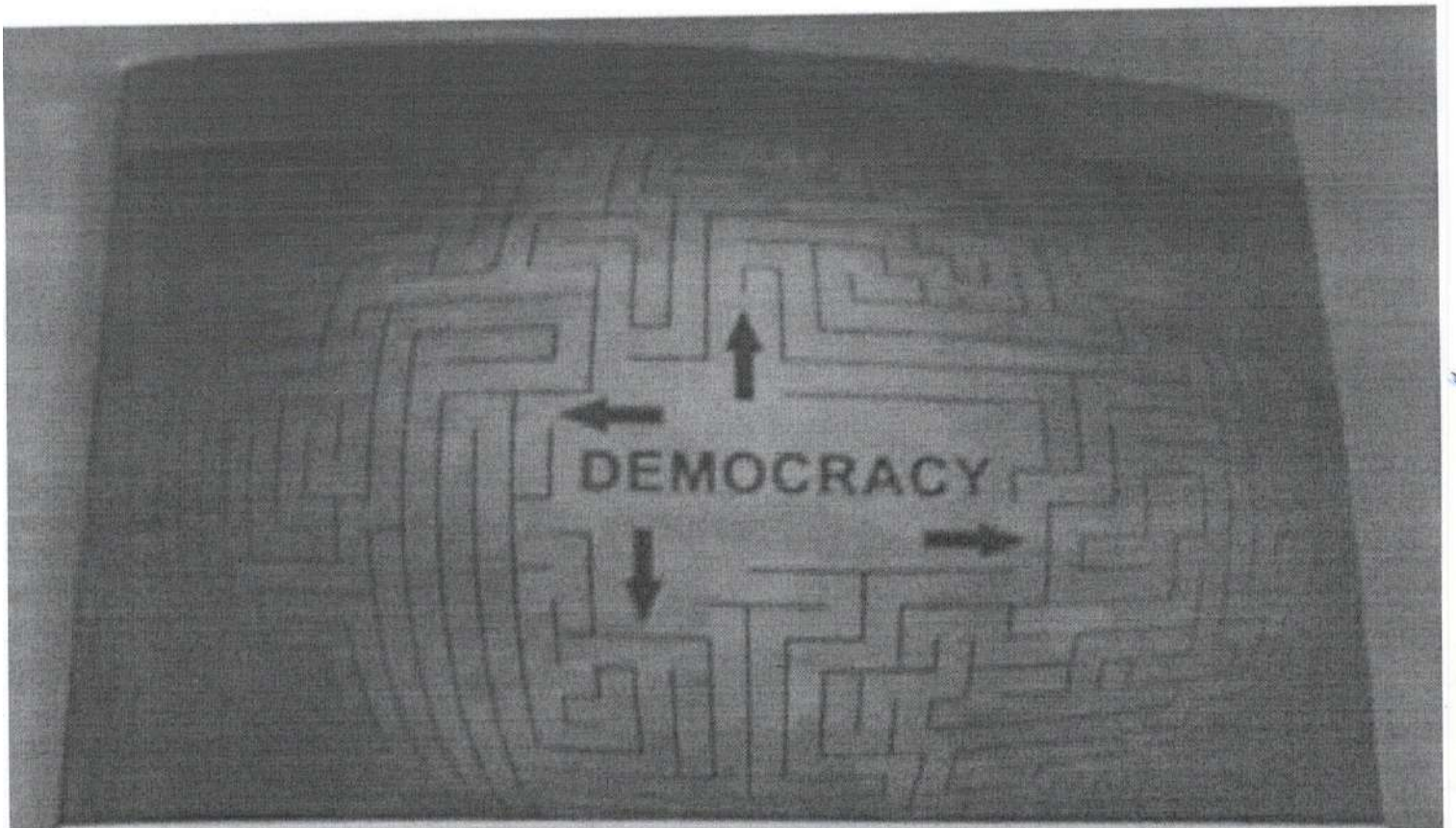
23. Reading Partition Short Stories as History 264
Rajshree Ranawat

24. Tracing Traumatic Memories , Tracking Troubled Histories: Insights into *Kamila Shamsie's Burnt Shadows* and Githa Hariharan's *Fugitive Histories* 285
Kiran Deep

Contributors 303

Index 309

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi



Amit Mishra

Social democracy in Latin America

Achievments and Challenges

LAP LAMBERT Academic Publishing

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर शिक्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Amit Mishra

Social democracy in Latin America

Achievments and Challenges

LAP LAMBERT Academic Publishing

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Imprint
Any brand names and product names mentioned in this book are subject to trademark, brand or patent protection and are trademarks or registered trademarks of their respective holders. The use of brand names, product names, common names, trade names, product descriptions etc. even without a particular marking in this work is in no way to be construed to mean that such names may be regarded as unrestricted in respect of trademark and brand protection legislation and could thus be used by anyone.

Cover image: www.ingimage.com

Publisher:
LAP LAMBERT Academic Publishing
is a trademark of
International Book Market Service Ltd., member of OmniScriptum Publishing Group
17 Meldrum Street, Beau Bassin 71504, Mauritius

Printed at: see last page
ISBN: 978-620-2-19684-0

Copyright © Amit Mishra
Copyright © 2017 International Book Market Service Ltd., member of OmniScriptum Publishing Group
All rights reserved. Beau Bassin 2017

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Table of Contents:-

Chapters	Page
1. Introduction	3-7
1.1 Geography of the Region	
1.2 Common Sub-regions of Latin America	
1.3 Factors which stimulated movement for social democracy in Latin America	
2. Historical Background	8-12
2.1 The Colonization Process and its Consequences	
2.2 Process of Exploitation of Indigenous people	
2.3 Gaining of Independence from Colonialists	
2.4 The Classic Case of Decolonization struggle by Brazil	
2.5 Conservative-liberal conflicts in the 19th Century	
2.6 American Neo-colonialism in Latin America and Monroe Doctrine	
3. Growth of democracy in Latin America: Major Aspects Involved	13-18
3.1 Contributing Factors to Social Democracy	
3.2 Social democracy and the left in Latin America	
3.3. Fresh Turn to Socialist Revolution	
3.4 Social Democracy's Fluctuating Fortunes in Recent Period	
4. Case Studies of Socialist Experiments in Latin America	19-39
4.1 The Case of Brazil	
4.2 Case of Chile's Quest for social democracy	
4.3 Case of Uruguay	
4.4 Case of Venezuela	
4.5 Global Significance of the New Left In Latin America	
4.6 Bolivia's Experiment with New Socialism	
5. Authoritarian Symptoms in Socialist Democracy	40-43
5.1 Regarding the lessons learnt from Latin American Socialist Experience	
6. Conclusion	44-47
References & Extended Bibliography	48-50

रजिस्ट्रार/REGISTRAR
केन्द्रीय तुलना शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Dorjee Damdul (65)

༄༅།།བོད་ཀྱི་གསོ་བ་རིག་པའི་བྱུང་རབས་ལོ་རྒྱུས་
གཟུར་གནས་མཁས་པ་ཌབ་ཇོས་པའི་མཆོད་སྦྱིན་
དེབ་ཆེར་གྱུན་གསལ་ཚོར་ལ་ཐིག་
ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

བོད་ཁྲེར་དང་པོ།

Volume I

C.E. 2017

རྩོམ་སྒྲིག་པ། དཔོན་སློབ་རྡོ་རྗེ་དམྱལ།

དཔྱལ་མོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་། ལྷ་རྩ་ཁ། ལྷུན་རྩེས།

༄༅། །བོད་ཀྱི་གསོ་བ་རིག་པའི་བྱུང་རབས་ལོ་རྒྱུས་གཟྱེར་གནས་སཱཁས་བ་དབྱེས་པའི་མཆོད་སྦྱིན་དེབ་ཕེར་གྱན་གསལ་ཚངས་མིག་ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

བོད་སྐད་དང་པོ།

Volume I

པེ་ཅིན།

རྒྱལ་སྤྱིགས། བཅོན་པོ་ཏོ་ཏེ་ཏ། བཀའ་འདུལ།

བཏུས་བོད་ཀྱི་ཞུ་ནུ་ལག་སློབ་གཉེར་བཅང་། སྡེ་རབ་ཐུབ། ལྷ་རྟ་རྟགས།

Central Institute of Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

C.E. 2017

སྐྱོན་བའི་འབས་ལོ། ২৮৫২ བོད་རྒྱལ་ལོ། ২১৩৩

༄༅། བོད་ཀྱི་གསོ་བ་རིག་པའི་བྱུང་ཁུངས་ལོ་རྒྱུས་བཀྲན་མཁས་པ་དགེས་པའི་མཐོ་སློབ་དེབ་སྒྲིན་དེབ་ཁང་གནས་གསལ་ཚང་མ་ཞིག་
ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

དེབ་འདིའི་བདག་དབང་ལྷན་རྩིའི་དབུས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་ཅི་
ཤར་ཀར་རིག་པའི་སྡེ་ཚན་ལ་ཡོད།

© Department of Sowa Rigpa, CUTS, Sarnath, Varanasi, U.P. India

སྐྱེ་ལོ། ༢༠༡༧ བོད་ཟས་ཤེར་ཁང་བོད་དེབ་གྲུབ་མ་ ༡༠༠ དབར་དུ་བཏབ།

རྒྱལ་སྤྱིའི་ཚད་འཛིན་དེབ་རྟགས་ཨང་། ISBN:978-81-936254-0-8

C.E. 2017

སྐྱོན་བའི་འཇམ་ལོ། ༢༥༤༡ རབ་ཀོ། ༥༢༡ བོད་རྒྱལ་ལོ། ༢༡༠༣

ཕྱན་ཆའི་སྐུ་རྟེན་དབང་ཕྱུག་དང་དུ་དབང་བསྡུན་ཞུས།



THE DALAI LAMA

༄༅། །ཇར་ཏ་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གྲྭའི་སྐུབ་དགེ་ཆུར་ས་འདོན་པ་ཆེ་རྣམས་འབའ་ཞིག་ལ་དུ་མས་གསོལ་རེ་ཞུ་ཞིའི་ཚོ་རྒྱུན་དང་ཆུད་ཟཧིའི་འཚེལ་ཡ་ཐ་བཅས་པོད་ཟེང་སུམ་རྩེ་བཅས་རྩོམ་ཐབས་ཡིན་ཞུ་ཡིག་ཐ་ཤའི་ཞུ་ཡིག་ཚོགས་ཀྱི་ཆུད་ཟཧིའི་འཚོལ་ཡ་ཐ་ཚང་ཚོད་པ་དང་། ནོར་བ་ཆུན་འབྲུམས། མཁས་པའི་བཞེད་པ་ཙི་མ་ཐུན་པ་སོགས་ལ་བདུད་བསྡུར་ཀྱི་མ་བང་ཆུ་ཤ་གང་ཡོང་ཀྱི་ཤ་འཚེལ་ཡ་ཐ་དང་། ཐུན་ཀྱི་སྐོར་བཟོས་ཤ་ཁག་ཚོགས་ཀྱི་ཐུན་ཚོག

དཀར་ཆག

ཨང་།	བརྗོད་བྱ།	ཤོག་གྲངས།
	ཞི་གྲུབ་ཆེན་པ་ཤཱནྟ་རཀྵི་ཏའི་རྣམ་ཐར་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་སྒྲུབ་བྱེད་།	iii
	རྩོམ་པ་པོའི་གསལ་བཤད།	v
	གཞུང་དངོས་ཀྱི་དཀར་ཆག	xxvii
	བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ཡན་ལག་མཚན་དང་མཆོད་བརྗོད་སོགས།	1

ལེའུ་དང་པོ།

༡	བོད་ཀྱི་ཡུལ་དང་མི་མང་གི་ངོ་སྤྲོད་མདོར་བསྡུས།	5
༡.༡	བོད་ཡུལ་ཀྱི་སྤྱོད་ཀྱི་བགོད་པ་ཆགས་ཚུལ།	5
༡.༢	བོད་ཡུལ་དུ་བཅུད་ཀྱི་སེམས་ཅན་ཆགས་ཚུལ།	10
༡.༣	བོད་མིའི་འཆི་ཁབས།	19
༡.༤	བོད་ཀྱི་ཆོས་དང་རིག་གཞུང་།	20
	༡.༤.༡ ཆོས་ལུགས།	22
	༡.༤.༡.༡ བོན་པོ།	22
	༡.༤.༡.༢ ནང་ཆོས།	22
	༡.༤.༡.༢.༡ རྙིང་མ།	23
	༡.༤.༡.༢.༢ ཝ་སུམ།	24

Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

བོད་སྐད་དང་བོཀེ་ནང་དོན་བརྗོད་ཟུ་སྒྲིང་བསྡུས།

ལེའུ་དང་པོར། ཀུན་སྤྱི་བོད་ཀྱི་ཡུལ་དང་མི་མང་གི་ངོ་སྤྲོད་ལས། བོད་ཀྱི་སྐོད་བཅུད་ཆགས་ཚུལ་དང་། སོད་མིའི་འཚོ་ཐབས། བོད་ཀྱི་ཆོས་དང་རིག་གནས་། སྐད་ཡིག བོད་ཀྱི་རྒྱལ་རབས་ལོ་རྒྱུས་མདོར་བསྡུས་བཅས་དང་།

ལེའུ་གཉིས་པར། ཏེ་བྷ་ཀུ་བོད་ཀྱི་གསོ་ནད་རིག་པའི་ལོ་རྒྱུས་ལས། གདོད་མའི་བོད་ཀྱི་སྨན་དང་། ཞང་ཞུང་བོན་གྱི་སྨན། ཅིན་ཅོར་གི་སྨན་དབུང་ཡིག་སྣོངས། གཅེར་མའི་སྨན་དབྱུང་ བཅོན་པོ་དང་ཆོས་རྒྱལ་རིམ་བྱོན་ཀྱི་སྐབས་ཀྱི་བོད་སྨན་ བོད་སིལ་བུའི་དུས་དང་། ས་སྐྱ་ གཙ་བྱུ རིན་སྤུངས། ཕྱེ་སྲིད་གཅོང་ཁ་ པརྒྱལ་དབང་སྐུ་ལྔའི་རིམ་བྱོན་སྣམས་ཀྱི་སྐབས་སུ་བོད་སྨན་དང་ཀྲབ་ལོ་རྒྱུས་དང་། རྒྱུད་བཞི་བཀའ་བསྒྱུར་ཀྱི་སྐོར། གསོ་བ་རིག་པའི་ལྟ་བུ། བོད་དང་ཀྱི་རྒྱལ་ཡུལ་བྱང་གསོ་བ་རིག་པའི་འབྲེལ་དོན་དང་ཀྲབ་དང་ཐྲིམས་ཁོག་ཏེ་གནས་བབས། གསོ་བ་རིག་པའི་མཁས་དབང་དང་བསྟེ་གནས་འགའ་ཡི་དོ་སྤྲོད། སྨན་རྩིས་གཉིས་ཀྱི་འབྲེལ་བའི་སྐོར་བཅས།

ལེའུ་གསུམ་པར། ཨར་བྱད་ཀྱོལ་རྒྱུན་ཀྱི་སྨན་གཞན་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་ལས། རྒྱ་གར་ཀྱི་སྐྱེལ་རྒྱུན་སྨན་ཁག་གི་ལྟ་བྱུབ་ལོ་རྒྱུས་དང་། བསྟན་འགྲུར་སོགས་སུ་གཞུགས་པའི་རྒྱ་གར་ཀྱི་སྨན་གཞུང་། གསོ་བ་རིག་པ་དང་ཆེ་ཡི་རིག་བྱེད་ཀྱི་ཀྲད་པར། གཞན་ཡང་ཀ་ཆེའི་ཡུ་ན་རིའི་སྨན་དང་། འཇམ་སྨན་ཀྱི་རོ་ལོ་ཥའི་སྨན། རྒྱ་ནག་གི་སྨན་རྩམས་ཀྱི་ལོ་རྒྱུས་དང་ལྟ་བུ་སྣོང་བསྡུས་རེ་བཅས་སོ།།

Central Institute of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007

ISBN : 978-81-936254-0-8

9 788193 625408

Sattanam Printers, Varanasi. Mob. : 9415222495

Dorjee Damdul - 66

ཀ།། ཁགས་ལ་རིག་པའི་གཞུང་ལུགས་ཐམས་ཅད་
ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་རྒྱུད་བཞི་ལས་དུམ་བུ་དང་
ཐོ་རྒྱ་བའི་ཚུལ་ཀྱི་འབྲེལ་གསར་བསྡུས་
དོན་གསལ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་
བཞུགས་སོ།།

ཚོད་ཐེར་གཉིས་པ།

Volume II

C.E. 2017

Central Institute of Higher Tibetan Studies
ཀྲིས་དཔལ་བྱིན་ཀྱི་ཡིག་ཚང་ཆེན་མོ།
Sarnath, Varanasi

རྒྱལ་སྤྲྭ་པ། དམོན་ཚོང་རྡེ་དབུ་འཕྲལ།
དབུས་གཙང་ཀྱི་གཤུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་། སྣར་རྟགས། ལྷུན་རྩེ་སྐྱི།

སོང་ཐེང་གཉིས་པའི་ནང་དོན་བརྗོད་བྱ་སྡིང་བསྡུས།

བོད་ཐྲེང་འདི་ནི་གསོ་ བ་རིག་པའི་ཐབས་ལུགས་ཀུན་གྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་ཆུད་བཞིའི་དུམ་བུ་དང་ཕོ་རྒྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་འབྲེལ་པ་ཡིན་ཞེད།། ཪ་རྒྱུད་ལ་ལེའུ་དྲུག་ཡོད་པ་ལས་ལེའུ་དང་པོ་གཉིས་ནི་རྒྱུད་སྡུད་ལུ་ཁུངས་ཅིང་ཐབ་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཁྱབ་ཅིང་ཐུན་མོང་བ་དང་། ཪ་རྒྱུད་བཅོས་ནི་ལེའུ་གསུམ་པ་དང་བཞི་པ་ལྟ་བ་གསུམ་གྱིས་བསྟན་ལ། ལེའུ་དྲུག་པས་ཪ་རྒྱུད་ཀྱི་སྟོམ་ཚིག་བསྟན་ཡོད། ལེའུ་དང་པོར། རྒྱུད་བཞིའི་མཚན་དང་མཆོད་པྱག་སྟོན་དུ་བཀོད་ནས་སྐབས་དོན་གྱི་ཚིག་ཙམ་ཞིག་ཅོག་ཙར་ཁྱབ་ཅིང་ཐུན་མོང་བ་ཞིག་ཀྱང་བཤད་པ་དང་། ལེའུ་གཉིས་པས། གཞུང་གི་དགོས་འབྲེལ་དང་། རྒྱུད་བཞི། ཡན་ལག་བརྒྱད། གནས་བཅུ་གཅིག་སྐབས་བཅོ་ལྔ། མདོ་བཞི། ལེའུ་བརྒྱ་དང་ཁྱབ་བྱ་བསྡུ་དྲུག་རྣམས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་བཤད་ནའི་སྐོར་ནས་གཞུང་གི་ནང་དོན་མདོར་བསྟན་པ་དཀར་ཆག་གི་ཚུལ་དུ་བསྟན་ཡོད།

ལེའུ་གསུམ་པས། ཚད་རྒྱངས་ལྟོ་མ་ཆ་སྐོམས་པར་གནས་བའི་རྣམ་བཅས་མ་འགྲུབ་བ་ནད་མེད་ཀྱི་གནས་ལུགས་དང་། རྣམ་པར་བཅུད་པ་ནད་ཅན་གྱི་གནས་ལུགས་རྣམས་བསྟན་ཡོད།

ལེའུ་བཞི་པས། ནད་རྒྱུད་མཐྱོས་བའ་ཀན་རྣམས་བལྟ་རེ་ཁ་བྱེ་གསུམ་གྱིས་ངོས་འཛིན་ཚུལ། ལེའུ་ལྔ་པས། ནད་དོས་ཅིན་པ་རྣམས་ཀཉེན་པོ་ཟས་སྐྱོད་སྨན་དབྱད་བཞི་ཡིས་བཅོས་ཐབས། ལེའུ་དྲུག་པས། ཪ་རྒྱུད་ལེའུ་གསུམ་གྱི་ནང་དོན་རྣམས་མདོར་བྱིལ་གྱིས་དྲིལ་ནས་མྱ་ངན་མེད་པའི་ཡུལ་ལ་དབེ་དོན་སྤྱད་ཅེ་སྟོང་འབྱེལ་ཏེ་བཀྲམས་པ་ཡིན།

ISBN : 978-81-936254-1-5

Sattanam Printers, Varanasi, Mob. : 9415222495

༢༠༡༧། ཀཀསོ་ན་རིག་བའི་གཞུང་ལུགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡིད་ཆུ་
དབལ་ལྡན་རྒྱུད་བཞི་ལས་དྲྭ་བ་བོ་ཏ་ཀྱི་
འགྲེལ་གསར་བསྡུས་དོན་གསལ་བྱེད་ཅེས་
བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

བོད་སྐད་གཅིག་པ།

Volume II

བོད། ཁ་པ།

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དབུ་འཕྲིན།
དབུས་གཙོ་ཀྱི་གཏུགས་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་། སྐུ་རྟགས། ཚྭ་རྟགས།

C.E. 2017

སྒོན་གཞི་འདས་ལོ། ༢༥༤༢ . བོད་རྒྱལ་ལོ། ༢༢༤༤

CTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

།།ཀ་ལས་ལ་རིག་བའི་ཐུབ་ཤུགས་ཧཨས་ཅད་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་ཀྱིད་བཞི་
ལས་དུས་ཐུ་དང་པོ་ཆུ་བའི་རྣྀ་ཀྱི་འཕྲིལ་གསར་བསྒྲུབ་དོན་
གསལ་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

རྣྀ་སྒྲིག་དང་དབང་ཕྱུག་ཆེན་པོ་ཐུབ་བསྟན་
ཆུས་དཀའ་ཁྲིགས་རམ་གཏད་མགན།

དབོན་པོ་རིན་ཆེན་
སྐྱབས་པ་གཉིས་ཚོགས་སྐྱོབ།

དེབ་འདིའི་བདག་དབང་ཤེས་རབ་སྐུ་རྣམས་ཚོགས་ལུགས་བོད་ཀྱི་ཁྲིགས་ལག་ཤེས་ཁང་གི་
གསོལ་ཁ་ཕིག་པའི་སྐེ་ཚན་ལ་ཡོད།

© Department of Sowa Rigpa, CUTS, Sarnath, Varanasi, U.P, India

ཟླ་ཨེ། ༢༠༡༧། ལོངས་སྤྱོད་རྒྱལ་ཁབ་ནས་ ༧༠༠ དབར་དུ་བཏབ།

ཀུན་སྐྱོབ་ཚོང་འཛིན་བའེ་ཧཱན་ཁའེ།།

C.E. 2017

སྐྱོན་བའི་འདས་ལོ། ༢༧.6? རབ་ལོ། ७४? བོད་ཀྱལ་ལོ། ২১৩৯

ཨ་སྐྲ་ཧཱ་སྐྱི་ས་སྐྱབ་ཁབ་བང་དུ་བཤད་བསྒྲུབ་ཞུས།



THE DALAI LAMA

།།ཁང་ཁ་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་སྐབས་ཀྱི་ཁྲིགས་ལག་ཤེས་
པ་དུ་མས་གསོལ་རེ་ཞུ་ནས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོས་ཀྱང་བཞིའི་འགེལ་པ་བཅས་བོད་སྐད་དུ་ཡིད་ཆེས་
བའི་ཁ་ཡིག་ཏུ། སྐྱེ་ཚེགས་སུ་ཁྱེད་བཞིའི་བརྩོངས་པ་མ་ཚང་ཡོད་ཀྱི་ཡིན་ལུགས་ཟེར་བ་བདག་
གིས་བཞེད་པ་ཞི་མཐུན་པ་སོགས་ལ་དཔྱད་བསྡུར་ཞྱི་ཤ་སང་ཁྱབ་ཡོད་ཀྱི་ཤེས་བཞིན་བཅད་དང་
གསོལ་རེ་གཏེར་བ་སྐོབ་གཉེར་བདག སྐབས་ཀྱི་སྐྱོར་བཟོས་ཐུབ་ཀྱི་ཤེས་བཞིན་ཐུབ་ཅས་བབས་
བའི་ཆོས་ཤ་ཐོག་ཏུ་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཐུབ་ཅས་ཀྱི་ཤེས་
སྐབས་དང་ཞིབ་ཕྲ་ཞུ་ཐུབ། ཁྱེད་ཀྱི་སྐྱོར་བཟོས་ཐུབ་ཅས་ཀྱི་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་
ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་
ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་
ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་
ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་
ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་
ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་
ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་ཆུང་ཞུས་ཀྱང་ཁྱེད་ཚོའི་ཞུ་ཐུབ་ཤེས་ཁྱེད་ཚོས་ཁ་ཤས་ཆེ་

དཀར་ཆག

ལེའུ་དང་།		ཤོག་གྲངས།
	[illegible]	iii
	རྒྱ་མཚོ་ལྟ་བུའི་ཀུན་མཁྱེན་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་སྐྱོན་བཤད།	v
	ཀུན་མཁྱེན་འཇིགས་ཀྱི་དཀར་ཆག	xxix
༡	ཀུན་མཁྱེན་ཁྲིམས་ཀྱི་ཡན་ལག་ལ་ཞུགས་ནང་མཆོད་ལེའུ་མོའོ།	1
	ཐུ་ཤྲུད་ཀྱི་རབ་དྲིན་སྐྱིང་པོ།	6
	[illegible]	8
༡.༡	ཀུན་མཁྱེན་ཁྱིམ་མཚན།	9
	མཚན་བཏགས་པའི་དགོས་པ།	9
༡.༡.༡	མཚན་ཀུ་སྤྲད།	10
	ཀུ་ཁར་སྐད་སྒྲོས་པའི་དགོས་པ།	13
	ཀུ་ཁར་ཆེས་པའི་ཐ་སྙད་རྣམས་ཚུལ།	15
༡.༡.༢	མཚན་བོད་སྤྲད།	17
	རྒོད་ཅེས་པའི་ཐ་སྙད་རྣམས་ཚུལ།	19
	ཀུ་བོད་སྐད་ཁའིམ་ཤན་སྐྱར་ཏུ་བསྒྲན་པ།	23
	མཚན་སྐད་ཤན་སྐྱར་ཀྱི་དོན་འབྱེལ།	23
༡.༢	མཆོད་པར་བཤད་ཅིང་བྱག་འཚལ་བ།	40
༡.༢.༡	རང་དོན་སྐྱང་རྣམས་མཐར་ཕྱིན་པ་བྱག་འཚལ་བ།	40

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Tashi Tsering (T)
67

སྒོམ་ཚིག་དེ་བཞི་དཀའ་གཅོད།



CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ཇོ་ག་ངར་བཀྲ་ཤིས་ཚེ་རིང་།

སྐད་ཡིག་དེབ་ཟྱེད། ཇ

སྡེན་ཚོག་རིག་པའི་དཀའ་གནད།

ཀོག་ཏར་བཀྲ་ཤིས་ཚེ་རིང།

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

བོད་ཀྱི་དཔེ་མཛོད་ཁང།

© 2017 Library of Tibetan Works and Archives

དཔར་རྩོམ། དང་པོ།

དེབ་གྲངས། ५००

སྐད་ཆོག་རིག་པའི་དཀའ་གནད།

Series Title: *skad yig deb 'phreng Vol. 26*
Volume Title: *Snyan tshig rig pa'i dka' gnad*
Subject: Intricacies of the Poetic Theory
Author: Dr. Tashi Tsering

ISBN: 978-93-87023-21-5

Published by Library of Tibetan Works & Archives, Dharamshala, India, and printed at VEE ENN Print-O-Pac, New Delhi-110020

དཀར་ཆག

དཔལ་སྐྱབ་གསལ་བཤད། v
ཞེན་འཇུག་དབྱད་རྩོམ་གྱི་བྱེད་བཟོ། vii
རྩོམ་པ་ཡོའི་སྟོན་བྱེད། xix
๑ བོད་དུ་སྐབས་གཞུང་མེ་ཙོང་མའི་འཕེལ་པ་དང་འཛེག་བྱང་ཚུལ། 1
๒ བོད་དུ་སྐབས་རྩོམ་ཐོག་མར་བྱང་བའི་དུས་ལ་དབྱད་པ། 27
๓ སྐབས་ངག་དང་ཆོག་རྒྱན་གྱི་དོན་གྱི་ཁྱད་པར་ལ་དབྱད་པ། 39
๔ རྩོམ་རིག་ཅམ་བའི་གེ་དོན་འཕེལ་ཚུལ་ལ་དབྱད་པ། 59
๕ སྐབས་ངག་གི་སྟོག་ལ་དབྱད་པ། 75
๖ དོན་རྒྱན་གྱི་ནང་གསེས་སྦྱར་བའི་རྒྱན་ལ་དབྱད་པ། 101

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Lobsang Tenzin-68

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES XX

महर्षिणा अग्निवेशेन प्रणीता

चरक-संहिता

[द्वितीयो भागः]

ཤེས་རབ་རྒྱ་མཚོ་དང་མཁས་བཙུན་གཞོན་ནུར་བཅས་པའོ།

ཚོང་ཁའི་ཁམ་བུ་བ།

[ཞོང་གཏེམས་བ།]



Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

अनुवादक एवं सम्पादक

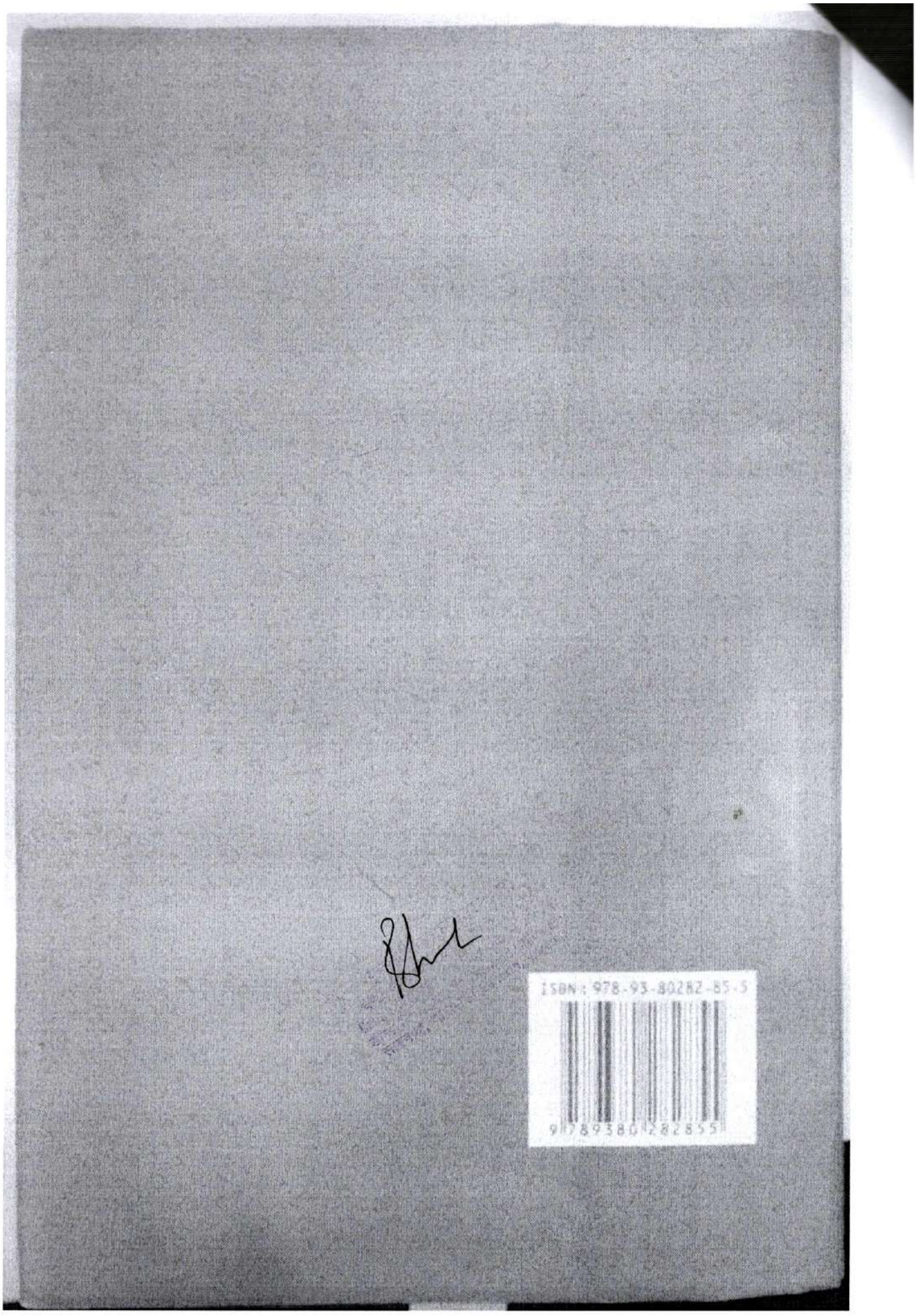
प्रा० लोसङ् तौन्दु शास्त्री

प्रो. लामडु तेरीङ

केन्द्रीय निच्वती अध्ययन विश्वविद्यालय

सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द 2561 ईस्वीसन् 2017


ISBN: 978-93-80282-85-5

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES 80

CARAKA-SAṂHITĀ

of

Maharṣi Agniveśa

(Sanskrit text with Tibetan translation)

[Volume II]



Translated into Tibetan and Edited
by
Prof. Lobsang Norbu Shastri
Prof. Lobsang Tenzin

CENTRAL UNIVERSITY OF TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2560

C.E. 2017

དཀར་ཆག

དབུས་སྨྱན་ཆེད་བརྗོད། (བོད་སྐད།) v-vii

प्रकाशकीय (हिन्दी) ix-xi

དཀར་ཆག xiii-xxvi

མདོ་གནས་ལེའུ་བཅུ་དྲུག་པ། གསོ་བ་རབ་ཏུ་མཛད་པ།

སྨན་པ་མཁས་ལྷུན་གྱི་འབྲས་བུ། 1

ཡང་དག་པའི་བཀྲམ་པའི་མཆོན་ཉིད། 2

བཀྲ་བ་དམན་པའི་མཆོན་ཉིད། 2

ཕྱོགས་པ་དྲུགས་པའི་མཆོན་ཉིད། 3

ཕྱོགས་པའི་ནད། 4

ཕྱོགས་པའི་འབྲས་བུ། 5

སྨན་གྱི་ཟས་བདེ་པ་ལ་ཕན་པ། 6

བཀྲ་སྨན་མས་བཀོད་དྲུགས་པའི་གསོ་ཐབས། 6

མེ་བཞིན་འཇུག་གི་དྲི་བ། 8

རབས་སོ་སྐྱེས་ཀྱི་ལན། 8

ལེའུ་ཉེ་བར་བསྡུ་བ། 10

མདོ་གནས་ལེའུ་བཅུ་བདུན་པ། མགོ་བོའི་དྲི་ཚམ་གྱི།

ནད་ལ་མེ་བཞིན་འཇུག་གི་འདྲི་བ། 12

བྱ་མའི་ལན། 13

མགོ་བོའི་ནད་ཀྱི་རྒྱུ། 13

མགོ་བོའི་མཆོན་ཉིད། 14

BIBLIOTHEA INDO-TIBETICA SERIES – 83

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Dr. Pema Tenzin

First Edition: 550 Copies, 2017

Price Hardback Rs. 300.00
Paperback Rs. 240.00

© Copyright by Central University of Tibetan Studies, Samath, Varanasi-221007, India, 2017
All rights reserved.

Published by:
Central University of Tibetan Studies,
Samath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-85-5 (HB)
978-93-80282-86-2 (PB)

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला – 83

महर्षिणा अग्निवेशेन प्रणीता

चरक-संहिता

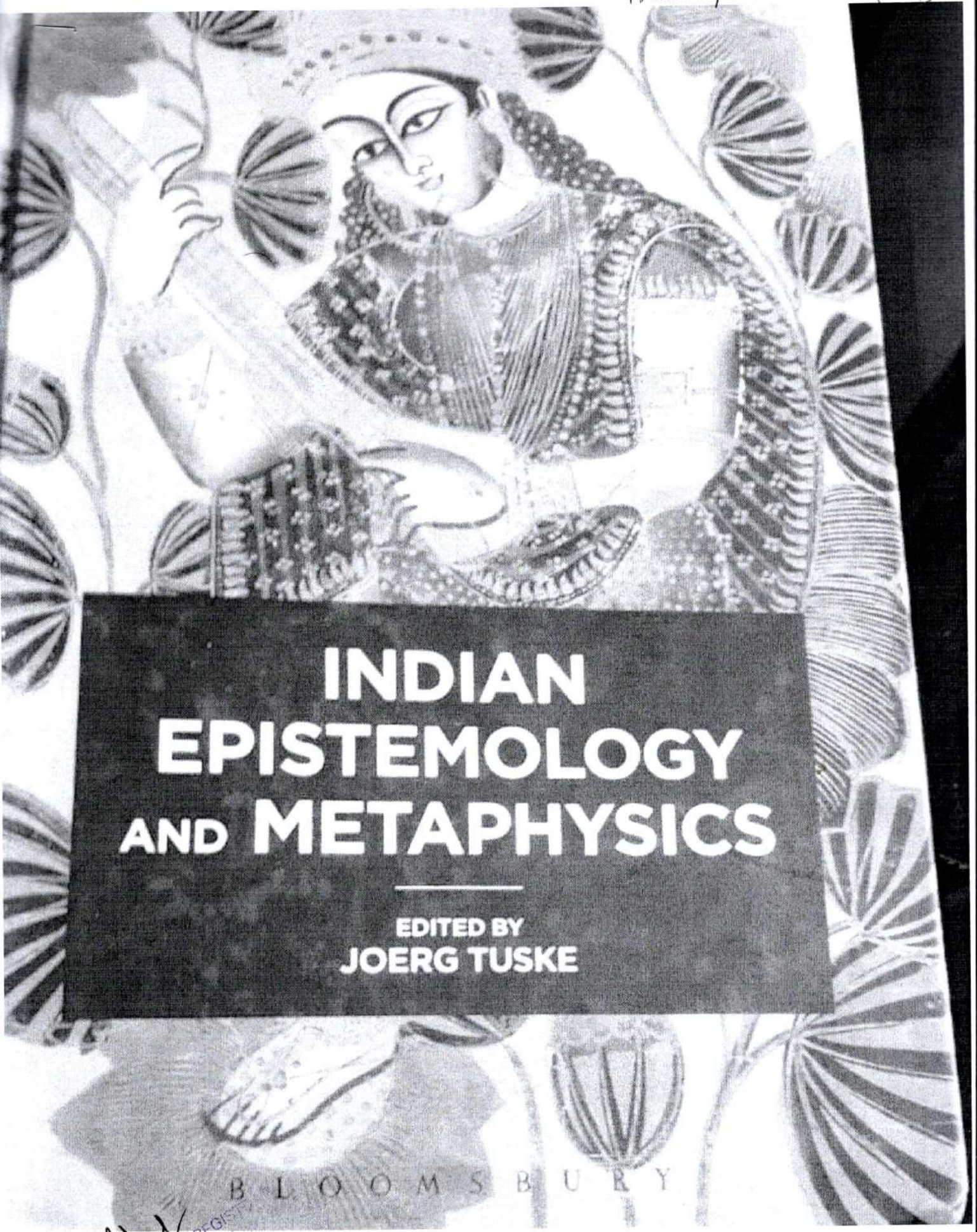
[द्वितीयो भाग:]

अनुवादक एवं सम्पादक
प्रो. नगवङ् नोर्बु शास्त्री
प्रो. लोसाङ् तेनज़िन

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द 2561 ईस्वीसन् 2017

Pradeep Gokhale-(69)



INDIAN EPISTEMOLOGY AND METAPHYSICS

EDITED BY
JOERG TUSKE

BLOOMSBURY

Indian Epistemology and Metaphysics

Edited by
Joerg Tuske

Bloomsbury Academic
An imprint of Bloomsbury Publishing Plc

BLOOMSBURY
LONDON • OXFORD • NEW YORK • NEW DELHI • SYDNEY

system, without prior permission in writing from the publishers

no responsibility for loss caused to any individual or organization acti
or refraining from action as a result of the material in this publicat
can be accepted by Bloomsbury or the editor.

British Library Cataloguing-in-Publication Data

A catalogue record for this book is available from the British Libra

ISBN: HB: 978-1-4725-2953-4
ePDF: 978-1-4725-2930-5
ePub: 978-1-4725-3447-7

Library of Congress Cataloging-in-Publication Data

Names: Tuske, Joerg, editor.
Title: Indian epistemology and metaphysics / edited by Joerg Tusk
Description: New York : Bloomsbury Academic, 2017. |
Includes bibliographical references and index.
Identifiers: LCCN 2017009504 | ISBN 9781472529534 (hb) |
ISBN 9781472529305 (epdf)
Subjects: LCSH: Indian philosophy. | Knowledge, Theory of–India. | Meta
Classification: LCC B5131 .I47 2017 | DDC 181/.4–dc23
LC record available at https://lccn.loc.gov/2017009504

Cover design: Irene Martinez Costa
Cover image © V & A Images/Alamy

Typeset by Newgen Knowledge Works (P) Ltd., Chennai, India.
Printed and bound in Great Britain

Find out more about our authors and books visit www.bloomsbury.c
You will find extracts, author interviews, details of forthcoming ever
the option to sign up for our newsletters.

कुलसचिव/REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Contents

Contributors

Introduction: Indian Epistemology and Metaphysics *Joerg Tuske*

Part I Knowledge, Language, and Logic

1 Epistemology, Metaphysics, and Logic in Prācina Nyāya and Buddhist Philosophy *Claus Oetke*

2 Fallacies and Defeaters in Early Navya Nyāya *Stephen H. Phillips*

3 Jayarāśi and the Skeptical Tradition *Eli Franco*

4 Jainism: Disambiguate the Ambiguous *Piotr Balcerowicz*

Part II Consciousness and the External World

5 Proofs of Idealism in Buddhist Epistemology: Dharmakirti's Refutation External Objects *Birgit Kellner*

6 Materialism in Indian Philosophy: The Doctrine and Arguments *Pradeep P. Gokhale*

7 Sāṁkhya: Dualism without Substances *Ferenc Ruzsa*

8 Śaiva Nondualism *Raffaele Torella*

9 An Indian Debate on Optical Reflections and Its Metaphysical Implications: Śaiva Nondualism and the Mirror of Consciousness *Isabelle Ratié*

Part III Universals and Momentary Existence

10 A Road Not Taken in Indian Epistemology: Kumārila's Defense of Perceptibility of Universals *John Taber*

11 The Role of Causality in Ratnakirti's Argument for Momentariness *Joel Feldman*

Part IV Self, No-Self, and Self-Knowledge

12 Self or No-Self? The Ātman Debate in Classical Indian Philosophy *Alex Watson*

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jampa Chophel - 70

༣ | རྒྱལ་སྤྱིའི་བོད་ཀྱི་གསོ་བ་རིག་པའི་བསྟོད་གླེང་ཆོག་ཤེན་

ཞེངས་གསུམ་པའི་དགྱེད་རྩོམ།

PROCEEDINGS OF THE 3rd INTERNATIONAL CONFERENCE ON SOWA-RIGPA (TIBETAN MEDICINE)

ཞེ་ས་༢༠༡༨ ཟླ་༢ ཚེས་༢༥ ནས་ཟླ་༣ ཚེས་༡ བར།

ཚོགས་ཡུལ། ཝཱརཱ་དཎས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་།

Date: 25th February to 1st March, 2018
Venue:CIHTS, Sarnath, Varanasi

Jointly organized by:

CCTM Dharamsala, DSR of CIHTS Varanasi and CTMI Darjeeling

REGISTRAR
Deemed University
Sarnath, Varanasi

ISBN : 9788193625439

ISBN : 978-81-93625-43-9

༢༡། །རྒྱལ་སྤྱིའི་བོད་ཀྱི་གསོ་ནད་པའི་བའི་བྱ་སྤྱོད་སྒྲིག་ཚོགས་ཆེན་

ཞེའུས་གསུམ་པའི་ངའུད་ཆོས།

PROCEEDINGS OF THE 3rd INTERNATIONAL CONFERENCE ON SOWA-RIGPA (TIBETAN MEDICINE)

ཕྱི་ལོ་༢༠༡༨ ཟླ་༢ ཚེས་༢༥ ནས་ཟླ་༣ ཚེས་༡ བར།

ཚོགས་ཡུལ། ལྷན་དབུས་བོད་ཀྱི་གཏུགས་ཕན་སློབ་གཉེར་ཁང་།

Date: 25th February to 1st March, 2018
Venue:CIHTS, Sarnath, Varanasi

Jointly organized by:

CCTM Dharamsala, DSR of CIHTS Varanasi and CTMI Darjeeling

Jyoti Singh – (71)

हिन्दी साहित्य में भारतीय संस्कृति : पुनर्खोज





डॉ. अम्बे कुमारी

HINDI-SAHITYA MEIN BHARTIYA SANSKRITI : PUNARKHOJ

Edited by

Dr. Ambe Kumari

© सम्पादक

ISBN : 0978-81-85997-33-0

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : ₹ 250.00

प्रकाशक

प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर

दुकान संख्या : 4

श्री विश्वनाथ मन्दिर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी

फोन : 0-9415813151

ई-मेल : progressivebhu@gmail.com

अक्षर संयोजन

गोपी चन्द

मोबाइल : 0-9450543858

ई-मेल : gopi35chand@gmail.com

अनुक्रम

1. भारतीय संस्कृति के गौरव सूर्य : रामधारी सिंह दिनकर
डॉ० अम्बे कुमारी 1

2. 19वीं सदी का सांस्कृतिक पुर्नजागरण :
हिन्दी-साहित्य के विशेष सन्दर्भ में *प्रीति कुमारी* 9

3. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में
राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना *आशीष* 18

4. कुँवर नारायण के कृतित्व में सांस्कृतिक चेतना
डॉ० अपर्णा पाण्डेय 28

5. संस्कृति स्रष्टा और द्रष्टा : जयशंकर प्रसाद
डॉ० अम्बे कुमारी 36

6. राहुल सांकृत्यायन के कहानियों में भारतीय
संस्कृति के मूल तत्त्व *शिखा सिंह* 44

7. दलित आत्म कथाओं में अभिव्यक्त सामाजिक-
सांस्कृति सम्बन्ध *शशि* 51

8. संत कबीर के चिन्तन में अभिव्यक्त सामाजिक-
सांस्कृतिक चेतना *रेखा यादव* 56

9. भारतीय संस्कृति में संत दरिया का योगदान
डॉ० सुधा निकेतन रजनी 73

10. हिन्दी साहित्य, बीसवीं सदी पूर्वार्द्ध :
संस्कृति और नारी *मिथिलेश* 82

11. विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में सांस्कृतिक चेतना
डॉ० मधुलिका बेन पटेल 97

12. तुलसी के गीतावली में सामाजिक संस्कृति :
एक मूल्यांकन *शालिनी सिंह* 106

13. केरल की संस्कृति *ममता* 115

14. भारतीय संस्कृति और दिनकर की उर्वशी
डॉ० सन्दीप कुमार सिंह 120

15. सूर-साहित्य में ब्रज की लोक संस्कृति *विनीता सिंह* 133

16. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की सांस्कृतिक
चेतना *डॉ० ज्योति सिंह* 151

17. शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' काशिकेय :
काशी की संस्कृति के संरक्षक *डॉ० मंजरी खरे* 161

18. मैथिलीशरण गुप्त और भारतीय संस्कृति *डॉ० अम्बे कुमारी* 169

लेखक परिचय 176

REGISTRAR
Central University of Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की सांस्कृतिक चेतना

डॉ० ज्योति सिंह

भारतीय संस्कृति के अनन्य सेवक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के लेखन में चाहे उपन्यास हो, समीक्षा हो या निबन्ध सर्वत्र एक सांस्कृतिक चेतना प्रवहमान है। 'संस्कृति' उनकी आत्मा में समायी हुई है। उनके व्यक्तित्व का अंश है और कलम से उतरकर उनके साहित्य में रच बस गई है। वे आधुनिक और प्राचीन सब में सहजतापूर्वक आवाजाही करते रहते हैं और अपना मंतव्य तरह–तरह के प्रसंगों द्वारा बड़े सरल ढंग से पाठक तक पहुँचाने में सफल हो जाते हैं। वे शब्दों की तमाम छटाओं को ढूँढ़ते हैं–शास्त्र में, लोक व्यवहार में, गल्प में या फिर सद्यः प्रसूत कल्पना में। वे पाठक के मन में पैठ जाते हैं और वह भी अपने पूरे तरंगित उल्लास के साथ।

द्विवेदीजी ने संस्कृति को संकीर्ण अर्थ में न लेकर उसके व्यापक स्वरूप को ही अपने लेखन में स्थान दिया है। "हिन्दी में संस्कृति अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' का पर्याय हो गया है और उसका प्रयोग कम से कम संकीर्ण और व्यापक दो अर्थों में होता है। जिस संस्कृति को द्विवेदीजी ने महत्व प्रदान किया है, वह संकीर्ण नहीं बल्कि व्यापक संस्कृति है। इस प्रकार संस्कृति समस्त सीखे हुए व्यवहार–उस व्यवहार का नाम है जो सामाजिक परम्परा से प्राप्त होता है। इस अर्थ में संस्कृति को सामाजिक तथा 'कस्टम' का पर्याय भी कहा जाता है।[1]

संस्कृत की आचार्य परम्परा में दीक्षित होकर, शान्ति निकेतन में काव्य, कला, इतिहास, प्रकृति के आस्वाद का व्यापक अवसर उनके लिए गम्भीर विचार–मंथन और परिष्कार का ब्याज और अवसर बना। द्विवेदीजी की विचारधारा और उनकी रचनाओं में पग–पग पर जो उदार मानुष भाव परिलक्षित होता है उसके निर्माण में गुरुदेव और शान्ति निकेतन के संस्कृति समृद्ध परिवेश का विशेष योगदान है। जिसके परिणामस्वरूप द्विवेदीजी समाज, साहित्य और संस्कृति की पड़ताल के लिए एक व्यापक मानवीय संलग्नता के साथ आगे बढ़ने का साहस करते हैं। द्विवेदीजी संस्कृति को किसी देश–विशेष या जाति विशेष की अपनी मौलिकता नहीं मानते संस्कृति के सम्बन्ध में उनके विचार एकदम, स्पष्ट, सन्तुलित एवं

पूर्ण हैं। वे लिखते हैं–"मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति हैं।" द्विवेदीजी मनुष्य के सर्वोच्च चिन्तन, मनन के मूर्त रूप (मन्दिर, मूर्ति, चित्रकला, कविता, नाटक, संगीत, धर्म, शिष्टाचार) को संस्कृति मानते हैं। इतिहास में जो कुछ सोचा गया वह सब संस्कृति नहीं बल्कि उसमें जो सर्वोत्तम है वह संस्कृति है। संस्कृति मनुष्य को पशु–सुलभ धरातल से अधिक से अधिक ऊपर उठाकर मानवता के सिंहासन पर दृढ़तापूर्वक बिठाती है। सर्वोत्तम चिन्तन और उसका मूर्त रूप केवल भारत की ही विशेषता नहीं, विश्व की विशेषता है। भारतीय संस्कृति तभी संस्कृति होगी जब वह विश्व–संस्कृति के मेल में होगी, विरोध में नहीं। द्विवेदीजी के अनुसार, "भारतीय संस्कृति और कोई भी अन्य संस्कृति विश्वजनीन सत्य की विरोधी नहीं है।" इस विश्वजनीन सत्य को द्विवेदीजी 'सामूहिक विवेक' कहते हैं। वे वैश्विक धरातल पर एक 'स्टैंडर्डमन' की खोज करते हैं और उसकी आवश्यकता पर बल देते हैं।[2]

द्विवेदीजी के अनुसार विश्व संस्कृति में भारत ने जो विशिष्ट योगदान दिया है वही 'भारतीय संस्कृति' है। जब वे संस्कृति के क्षेत्र में भारतीय योगदान या भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हैं तो उसका अर्थ व्यापक होता है। वे सांस्कृतिक योगदान को किसी मंडली, कबीले या जाति तक सीमित नहीं मानते। पता नहीं कितनी जातियों ने भारतीय संस्कृति के निर्माण में योगदान किया है, सबको अपने भीतर स्थान देना अर्थात् समन्वय की संस्कृति भारत की अपनी विशेषता है। कुछ लोग सांस्कृतिक विरासत की उपलब्धि के लिए कुछ जातियों तथा क्षेत्रों के ही लोगों के योगदान पर बल देते हैं। वे संस्कृति के नाम पर संस्कृति विरोधी कार्य करते हैं और साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, जातिवाद जैसी समस्याओं को बढ़ावा देते हैं। ऐसे लोगों की मान्यताओं का खण्डन द्विवेदीजी 'अशोक के फूल' में इस प्रकार करते हैं–'मुझे मानव जाति की दुर्दम–निर्मम धारा के हजार वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवनी शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती–बहाती यह जीवन–धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने शक्ति पायी है। हमारे सामने समाज का जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बात की बात है। सब कुछ में मिलावट है, सब कुछ अविशुद्ध है, शुद्ध है केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा (जीने की इच्छा) वह गंगा की

R-C. Negi — 72

राहुल सांकृत्यायन
का साहित्य सृजन

सम्पादक

डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय



125वीं जयन्ती वर्ष के अवसर पर

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी

राहुल सांकृत्यायन
का साहित्य सृजन

सम्पादक
डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय



125वीं जयन्ती वर्ष के अवसर पर

₹ 600

ISBN 978-93-88019-14-9

भारती प्रकाशन
45, धर्मसंघ कॉम्पलेक्स, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-10
फोन : 0542-2312677, 09305292293
ई-मेल : bharatiprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.bharatiprakashan.in

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

राहुल सांकृत्यायन का साहित्य सृजन
सं.—डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय

प्रकाशक :
भारती प्रकाशन
45, धर्मसंघ काम्प्लेक्स,
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-221010
Cell No. : 09305292293
e-mail : bharatiprakashan@gmail.com
ashutosh936@gmail.com

© संपादक

प्रथम संस्करण - 2018

मूल्य : 600/-

ISBN - 978-93-88019-14-9

कम्प्यूटर अक्षर संरचना एवं मुद्रक
कुमार ग्राफिक्स
सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Rahul Sankrityayan Ka Sahitya Srijan
Edited by : Dr. Om Parkash Pandey

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

अनुक्रम

अपनी बात *i-iv*

सम्पादकीय *i-vi*

1. हिन्दी-स्थानीय भाषाओं के वृहत् संग्रह की आवश्यकता 1
त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन

2. महापंडित राहुल सांकृत्यायन एवं उत्तराखण्ड की भूमि 12
डॉ. कमला सांकृत्यायन

3. दुर्गम मार्ग के यात्री राहुल जी 18
श्रीमती जया पड़हाक

4. लंका : जिसने केदारनाथ पाण्डेय उर्फ रामोदार स्वामी उर्फ रामोदार सांकृत्यायन को राहुल सांकृत्यायन बनाया 21
डॉ. जगदीश्वर पाण्डेय

5. महापण्डित राहुल सांकृत्यायन : एक बहु-आयामी व्यक्तित्व 26
डॉ. रमेशचन्द्र नेगी

6. राहुल सांकृत्यायन की कर्मभूमि सारण 37
प्रो. सदानन्द शाही

7. महापण्डित राहुल सांकृत्यायन : एक अप्रतिम व्यक्तित्व 42
प्रो. वेदप्रकाश उपाध्याय

8. भारतीय मनीषा के महान चिन्तक : महापण्डित राहुल सांकृत्यायन 53
डॉ. जगदम्बा प्रसाद दुबे

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

R. K Sharma 73

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2018

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

T. R. Shastri

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI
2018

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

U. R. Vajracharya (75)

ISSN 2395 - 1524

धीः

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI
2018

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय, Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Banarsilal -

76

तिब्बत बौद्ध ग्रन्थमाला - 35

आचार्यक्षितिगर्भपादविरचित-

दशतत्त्वसङ्ग्रहः



002359

डॉ० बनारसीलाल

केन्द्रीय उच्च-तिब्बती-शिक्षासंस्थानम्
सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
सारनाथ : वाराणसी

ISBN : 978-93-80282-91-6

केन्द्रीय उच्च
Central Institute of Higher
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

कार्यालय उपयोग/OFFICE USE

RARE BUDDHIST TEXT SERIES -35

DAŚATATTVASAṄGRAHAḤ
OF
ĀCĀRYA KṢITIGARBHA



Editor
Dr. Banarasi Lal

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
(Deemed to be University)
SARNATH, VARANASI

B.E. 2561

C.E. 2017

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला - 35

प्रधान सम्पादक : प्रो. गेशे ङवङ् समतेन
प्रकाशन प्रभारी : डॉ. पेमा तेनजिन

प्रथम संस्करण : 550 प्रतियाँ, 2017

Accession No. 002359
NBTRP Library
CIHTS, Sarnath, Varanasi

मूल्य : अजिल्द रु. 100.00

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-221007 (उ.प्र.), 2017, सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

ISBN : 978-93-80282-91-6 PB

मुद्रक : सत्तनाम प्रिन्टर्स, पाण्डेयपुर, वाराणसी

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Banarsi Pal - (77)

ISSN 2395 - 1524

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI
2018

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Thakur Sain Negi - 78

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्ध ग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

2018

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Dhīḥ

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

Editors

GESHE NGAWANG SAMTEN
Vice Chancellor

KAMESHWAR NATH MISHRA
Head of Department

Rare Buddhist Texts Research Department
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2562 VAIŚĀKHA PŪRṆIMĀ C.E. 2018

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Chief Editor : Prof. Geshe Ngawang Samten

Publication In-charge : Dr. Pema Tenzin

Co-Editors

Thakur Sain Negi
Thinlay Ram Shashni
Vijay Raj Vajracharya

Banarsi Lal
Tsering Dolkar
Ranjan Kumar Sharma

Vol. LVIII, 550 copies, 2018

Price : Rs. 310.00

© Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi, 2018

Published by:

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221 007

ISSN 2395 - 1524

Printed by:

Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

P.S. Negi (79)

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI
2018

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Tsering Dalkar

ISSN 2395 - 1524

ॐ

दुर्लभबौद्धग्रन्थशोधपत्रिका

Journal of Rare Buddhist Texts Research

58

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI
2018

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

D D Chaturvedi
(81)

प्रमाणकौस्तुभम्

(नास्तिकास्तीकदर्शनेषु वेदसाहित्य-ज्योतिषव्याकरणेषु
पाश्चात्ये विज्ञानेतिहासविधिविषयेषु च
प्रमाणसिद्धान्त-मीमांसा)

सम्पादकः
आचार्य भगवत्शरणशुक्ल

KW



आत्म-परिचय

नाम	:	**डॉ. भगवत् शरण शुक्ल**
पिता का नाम	:	स्व. पं. रामकृष्ण शुक्ल
मातृनाम	:	श्रीमती मूलादेवी शुक्ला
जन्म-तिथि	:	10 अप्रैल 1956 (दश अप्रैल सन उन्नीस सौ छप्पन)
पता	:	वार्डेन क्वार्टर - 2, रुईया छात्रावास संस्कृत ब्लॉक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी - 221005
स्थायी पता	:	ग्राम एवं पत्रालय कोठिया मोहगवाँ, थाना बरही, जिला कटनी, मध्यप्रदेश
शैक्षणिक योग्यताएँ	:	विद्यावारिधि, (पी-एच.डी.) नव्यव्याकरणाचार्य, नव्यन्याय शास्त्री, संगीत प्रवीण (बाँसुरी), पारम्परिक शुक्लयजुर्वेद शाखाध्यायी, आकाशवाणी अनुबन्ध कलाकार
प्रकाशितग्रन्थ	:	08
शैक्षणिक कार्य	:	[redacted] प्रोफेसर, व्याकरण विभाग, का.हि.वि.वि, वाराणसी, 1. परिभाषार्थचन्द्रिका, 2. वाच्यपरिवर्तनसिद्धान्त 3. सिद्धान्तकौमुदीकारक-प्रकरणटीका, 4. शाब्दिकसिद्धान्तविमर्शः, 5. परिहारषष्ठीव्रतकथा, 6. अमृतकुम्भपर्व, 7. वैदिकतन्त्वविमर्शः
सम्पादक	:	सौदामनि संस्कृत शोध पत्रिका (1999 से प्रतिवर्ष)
प्रकाशित निबन्ध	:	85
शोधनिर्देशन	:	अनेक
पुरस्कार एवं सम्मान	:	1. मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी, भोपाल 'व्याकरण शास्त्रार्थ पुरस्कार' 1984, 2. अन्तर्विद्यापीठीय युवसमारोहः गाष्ट्रीय संस्थान, नई दिल्ली 'न्यायशास्त्र भाषण पुरस्कार' (1985) 3. 'वेद पण्डित पुरस्कार' उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ (1998) 4. 'ज्योतिष महर्षि सम्मान' भारतीय ज्योतिष परिषद, कानपुर, (1997) 5. 'संस्कृतमहामहोपाध्याय सम्मान' हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (2005) 6. 'संस्कृत साहित्य पुरस्कार' उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ (2005) 7. 'पतंजलिपुरस्कार' मध्यप्रदेश संस्कृत बोर्ड, भोपाल (2006) 8. 'शिक्षा प्रवीण सम्मान' रामायण मेला समिति, प्रयाग (2007) 9. 'वैदिक भूषण सम्मान' पद्मेश इंस्टीट्यूट ऑफ वैदिक साईंसेज, कानपुर (2012)

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता एवं शोधपत्र-वाचन :

राष्ट्रीय	:	150
अन्तर्राष्ट्रीय	:	12
विभिन्न समितियों मे सदस्य और प्रशासनिक अनुभव	:	10

Year : 2018

Price : ₹ 600/-

ISBN : 978-93-84299-96-5

9 789384 299965

किशोर विद्या निकेतन
वाराणसी

Books Available on flipkart amazon.com

सम्पादक : **आचार्यभगवत्शरणशुक्लः**

सर्वाधिकार : **किशोर विद्या निकेतन,भदैनी, वाराणसी।**

प्रथम संस्करण : 2018 ई०

ISBN : 978-93-84299-96-5

मूल्य : 600 रुप्यकाणि

प्रकाशक
किशोर-विद्या-निकेतन
बी. 2/236-ए, भदैनी, वाराणसी-221001
दूरभाष - 09415996512, उत्तर-प्रदेश

मुद्रक :
श्रीमहावीर प्रेस
वाराणसी

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

प्रास्ताविकम्

विश्व की प्रत्येक वस्तु परमाणु से लेकर परमात्मा पर्यन्त प्रमेय (यथार्थज्ञान का विषय) है। प्रमेय का ज्ञान स्वतः बिना किसी साधन आदि के द्वारा सम्भव नहीं है। अतः हम जिन प्रमुख साधनों से प्रमेय वस्तु का ज्ञान करते हैं। उन्हें ही हम प्रमाण शब्द से जानते है। प्रमाण की आवश्यकता न केवल शास्त्रों में अपितु समस्त संसार में है। क्योंकि जागतिक व्यवहार प्रमाण के बिना सम्भव ही नहीं है। इसी प्रमाण शब्द को हम कहीं पर साक्ष्य शब्द से भी व्यवहार करते है। व्यवहार जगत में भी हम किसी बात पर तब तक विश्वास नहीं करते जब तक उसकी सत्यता में कोई प्रमाण हमें नहीं मिलता। यह प्रमाण व्यवहार में विद्यमान कोई भी हो सकता है। प्रायः हम जिसको प्रमाणित करते है। या हमारा कोई शुभचिन्तक उसे प्रमाणित किया होता है उसी पर विश्वास करते है। इस कारण व्यवहार में प्रत्यक्ष एवं शब्द प्रमाण की प्रधानता रहती है। कहीं-कहीं अनुमान से तो कहीं-कहीं उपमान से वस्तु की सत्यता सिद्ध करते है। इसी सामाजिक व्यवहार को ध्यान में रखकर नैयायिकों ने इन चार प्रमाणों को स्वीकार किया। किन्तु बहुत से स्थल ऐसे हैं जहां इनके द्वारा वस्तु प्रमाणित नहीं होती। जैसे संगीत स्वरों की पहचान, शुद्ध रत्न परिक्षण, औषधि का ज्ञान ये सब दृढ़तम अभ्यास से ही ज्ञात होते। अतः इनके ज्ञान हेतु अभ्यास प्रमाण माना गया। इसी प्रकार देवयोनि विशेष के क्रिया कलाप के ज्ञानार्थ अदृष्ट प्रमाण को भर्तृहरि ने स्वीकार किया। इसी प्रकार अनेक आचार्यों ने तत्तद् प्रमेय विषयक ज्ञानार्थ सामान्य प्रमाणों के असामर्थ्य को ध्यान में रखकर अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, प्रत्यभिज्ञा, ऐतिह्य, सम्भव, चेष्टा, ऊहा स्मृति इन प्रमाणों को भी स्वीकार किया है। अनेक दार्शनिकों का इसमें विशिष्ट विचार हुए है। सङ्क्षेप में प्रमाणों का परिचय द्रष्टव्य हैं-

प्रमाणाद्धि प्रमेयसिद्धिः इस सांख्यकारिका के वचन के अनुसार यथा पूर्व में कहा गया है **विश्व की सम्पूर्ण** वस्तु प्रमेय है और ज्ञान करने के लिए साधन विशेष को प्रमाण शब्द से स्वीकार किया जाता है प्रमीयते यथार्थज्ञानविषयीक्रियते वस्तुजातं येन तत् प्रमाणम् । जिस का ज्ञान चक्षु कर्ण, स्पर्श, जिह्वा, नासिका से करते हैं,वे प्रत्यक्षप्रमाण के विषय बनते हैं। जिनका ज्ञान दो के साहचर्य के माध्यम से उस सहचरित एक वस्तु से द्वितीय

D.D. Chaturvedi 82

विरोधकृन्नामाब्दकाव्यामृतम्

VIRODHAKRNNĀMĀBDAKĀVYĀMṚTAṂ

एकवर्षीयघटितघटनाश्रितं हिन्दी-अनुवादसमेतम्,

462 द्विषष्ट्यधिकचतुश्शतपद्यात्मकम्



रचयिता

प्रो. धर्मदत्तचतुर्वेदी

आचार्योऽध्यक्षश्च संस्कृतविभागः

केन्द्रीयउच्चतिब्बती-शिक्षासंस्थानम्, मानितविश्वविद्यालयः

सारनाथः वाराणसी (उ.प्र.)

वि.सं. 2075 सन् 2018

संक्षिप्त परिचय



लेखक	: डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी
पिता	: पं. देशराज चतुर्वेदी
जन्मस्थान	: ग्राम व पोस्ट- आरी, जिला- महोबा (उ.प्र.)
जन्मतिथि	: १.०३.१९५९
शैक्षणिक योग्यता	: आचार्य नव्यव्याकरण, बौद्धदर्शन व पी-एच.डी., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
अध्यापन	: १९९२ से प्राध्यापक, रीडर तथा २००९ से प्रोफेसर संस्कृतविभागाध्यक्ष एवं शब्दविद्यासंकाय-प्रमुख, केन्द्रीय उच्चतिब्बतीशिक्षासंस्थान, सारनाथ, वाराणसी ।

शिक्षा गुरु : आचार्य यमुना प्रसाद शास्त्री (पितृव्य), प्राचार्य, श्रीरामकृष्ण सं.म.वि., मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.), आचार्य वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, वाराणसी, स्व. पं. शशिधर मिश्र (व्याकरणाचार्य), वाराणसी, अनुसन्धान-निर्देशन- प्रो. श्रीनारायण मिश्र, वाराणसी ।

प्रकाशन-लेखन : १. कातन्त्रोणादिसूत्रवृत्तिः (रूपसिद्धि व हिन्दी टीका), २.वज्रयानदर्शनमीमांसा (संस्कृत-सम्पादन), ३.संस्कृतसेवासाधना (सम्पादन), ४.सर्वदेवपूजादर्पणः (सम्पादन), ५. संस्कृतपत्रमञ्जूषा (सम्पादन), ६.संस्कृतकाव्यगीतवैभवम्, ७.सौम्याब्दकाव्यामृतम् (उ.प्र. संस्कृत संस्थान लखनऊ द्वारा २०१७ वर्षीय विशेष पुरस्कार से सम्मानित) ८.साधारणाब्दकाव्यामृतम् एवं अनेक राष्ट्रीय शोध-सङ्गोष्ठियों में शोधपत्र प्रस्तुति, कवि-सम्मेलनों में कविता-प्रस्तुति, नाटक अभिनय का निर्देशन, संस्कृतप्रशिक्षण शिविरों का संचालन, संस्कृत-प्रचार कार्य में सहयोग व पत्र-पत्रिकाओं में ९० से अधिक प्रकाशित अनेक शोध-निबन्ध व कवितायें, संस्कृत पत्रिकाओं के सहभागी सम्पादक कार्यपरिषद् एवं विद्वत् समितियों की सदस्यता ।

शिवार्चना : निज जन्मभूमि ग्राम- आरी में चन्देले कालीन प्राचीन शिव नादिया मन्दिर जो पूर्णतया विनष्ट हो चुका था, उसका नव-निर्माण जुलाई २०१२ से फरवरी २०१३ तक किया गया, जिसमें १२ ज्योतिर्लिङ्ग एवं अन्य देव-देवियों की कुल २५ प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा महारुद्र यज्ञ के अन्तर्गत वसन्तपंचमी २०१३ को कराई गई । इसका विशेष कार्यक्रम इन्टरनेट यूट्यूब पर Dharmdatt Chaturvedi लगाने पर यज्ञ को क्लिक करने से १-७ डी.वी.डी. २८ भागों में विभाजित यज्ञ कार्यक्रम को देखा जा सकता है ।

सम्पर्क : चलभाष : ०९४५१५७०८३५, ईमेल : ddcsanskrit@gmail.com

वर्तमान पता : संस्कृत विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-०७

ISBN: 978-81-935801-7-2

मूल्य : 350.00

शारदा संस्कृत संस्थान

जगतगंज, वाराणसी-221 002.

फोन : (0542) 2204168 (संस्थान) 2452037 (आवास)

e-mail: sharadabhawan@yahoo.co.in, website: www.sharadasansthan.in

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

विरोधकृन्नामाब्दकाव्यामृतम्, रचयिता प्रो. धर्मदत्तचतुर्वेदी
Virodhakṛnnāmābdakāvyāmṛtam

प्रकाशक
शारदा संस्कृत संस्थान
सी. २७/५९, जगतगंज, वाराणसी - २२१००२
फोन (०५४२) २२०४१६७
Email: sharadabhawan@yahoo.co.in
Website: www.sharadasansthan.in

प्रथमसंस्करणम् ५०० प्रतयः
© रचयितृप्रकाशकाधीनम्

ISBN: 978-81-935801-7-2

सन् : २०१८

मूल्यम् : 350/-

मुद्रकः
साधना प्रेस, वाराणसी
मो. 9336838939

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

डॉ० प्रभुनाथ द्विवेदी
पूर्व आचार्य, संस्कृत विभाग
Dr. Prabhu Nath Dwivedi
Ex-Professor, Dept. of Sanskrit

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी - 221002 (भारत)
MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPITH
VARANASI-221002

पत्र/Letter No. ...

दिनांक/Date ...

कीर्तिश्चिरं स्थास्यति

सुकविः धर्मदत्तोऽसौ चतुर्वेदिमहाशयः ।
करोति नूतनं काव्यं शब्दविद्याविचक्षणः ।।1।।

पाण्डित्यं प्रतिभा चैव पदशय्या मनोहरा ।
तेषु तेषु च काव्येषु कवेरस्य विराजते ।।2।।

मेधावी शब्दसम्पन्नो रसज्ञो भावमर्मगः ।
कविताकामिनीकान्तो धर्मदत्तो विशिष्यते ।।3।।

विगतेभ्यस्तु वर्षेभ्यो याऽऽरब्धा काव्यपद्धतिः ।
सोऽयं कविः पुनश्चास्मिन् श्रयते तां सुपद्धतिम् ।।4।।

विशिष्टा घटना या या देशे देशान्तरेषु वा ।
घटितास्ताश्च सन्धार्य काव्यं निर्माति शोभनम् ।।5।।

अस्मिन् काव्यविनिर्माणे तिथीनां क्रमबद्धता ।
प्रामाण्यं हि द्रढीकर्तुमितिवृत्तधिया कृता ।।6।।

एतद् विरोधकृन्नामाब्दकाव्यामृतसंज्ञितम् ।
अपूर्वं काव्यसंसारे सुधन्योऽसि महाकवे ।।7।।

घटितानां विभिन्नानां वस्तु चारु व्यवस्थितम् ।
तिथिवारानुसारेण प्रियं कस्मै न रोचते ।।8।।

Animesh Prakash (83)

International Association of Theravada Buddhist Universities

5th International Conference 2018

27th 28th November, 2018
at
Buddhist and Pali University of Sri Lanka

Buddhist and Pali University of Sri Lanka

International Association of Theravada Buddhist Universities

Bhiksu University of Sri Lanka

International Association of Theravada Buddhist Universities

5th International Conference 2018

27th - 28th November, 2018

at

Buddhist and Pali University of Sri Lanka

Ministry of Education and Higher Education, Sri Lanka

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Facts and opinions in research articles published on Journal of the 5th International Conference of IATBU - 2018 are solely the personal statement of respective authors. Authors are responsible for all contents in their article(s) including accuracy of Language, facts, statements, citing resources, and so on.

International Association of Theravada Buddhist Universities
5th International Conference - 2018

First Print : 2018

© Buddhist and Pali University of Sri Lanka

ISBN 978-955-9373-40-7

Page Layout: Dushyanthi Chandumali Piyasena

Cover Design: Saman Deshapriya

Printed by: State Printing Cooperation,
Panaluwa, Wataraka,
Padukka, Sri Lanka.

Published by : Buddhist and Pali University of Sri Lanka

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

27th November 2018

Parallel Session - 02 C

Tradition of Pali Education and New Dimensions

Time : *4.30 p.m. - 6.00 p.m.*
Room No : *03*
Chair : *Ven. Prof. Miriswaththe Wimalagnana*
Co- Chair : *Ven. Dr. Witharandeniye Chandasiri (Senior Lecturer)*
Moderator : *Ven. Vijithapura Gunarathana (Lecturer)*

35. තෙරවාදය යනු විභජ්ජවාදය ද?
පූජ්‍ය නිලපොල ධම්මතිලක හිමි
IATBU/2018/35

36. සිහළවත්ථුවෙන් විවරණයවන තත්කාලීන ලාංකේය ජනසමාජයෙහි පූජාචාරිත්‍ර පිළිබඳ අධ්‍යයනයක්
කේ. උදාරි අනුපමා
IATBU/2018/36

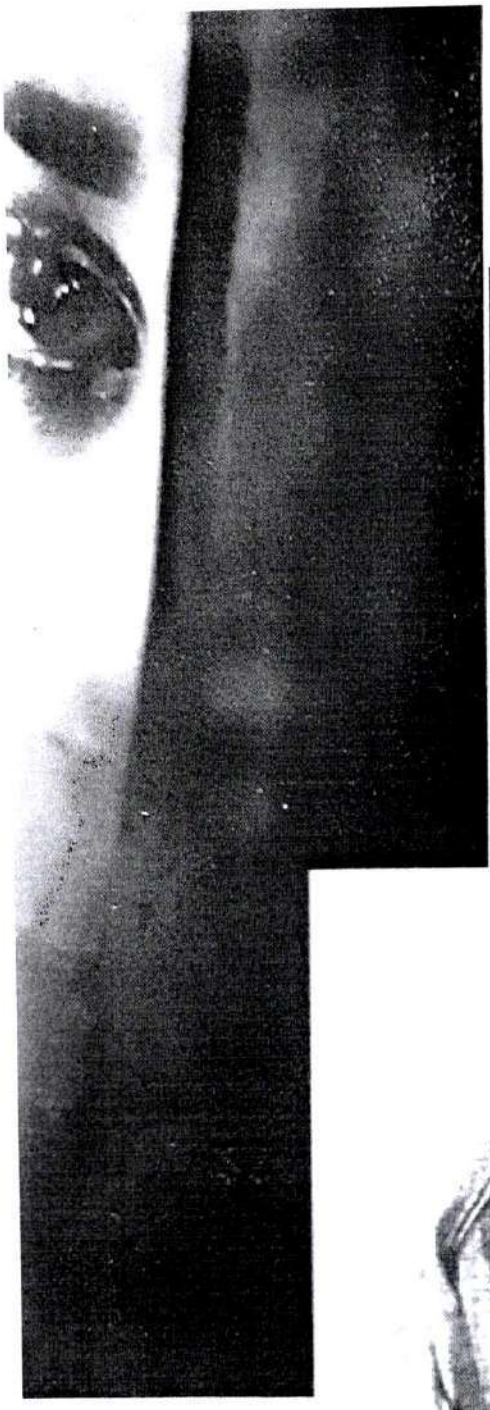
37. ආතති කළමනාකරණයට සබ්බාසව සූත්‍රයේ උපයෝගීතාව පිළිබඳ අධ්‍යයනයක්
පූජ්‍ය මාමඩලේ නන්ද හිමි
IATBU/2018/37

38. **PĀLINĪTI LITERATURE: A NOTE ON ORIGIN, DEVELOPMENT, METHOD OF TRANSLATION OF LOKANĪTI**
Dr. Ujjwal Kumar
IATBU/2018/38

39. ***NANDOPANANDANĀGARĀJADAMANA-KATHĀ*** **IN TIBET: A HISTORICAL TRANSMISSION AND ITS LINGUISTIC ASPECTS**
Dr. Animesh Prakash
IATBU/2018/39

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

krishna
Pandey
84



विनोबा भावे का नारीवादी विमर्श



कृष्णा पाण्डेय

विनोबा भावे
का नारीवादी विमर्श

कृष्णा पाण्डेय

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ADHYAYAN
अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
नई दिल्ली (भारत)

अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
4378/4Bए 105, जे.एम.डी. हाउस, मुरारी लाल स्ट्रीट,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
फोन : 011–23263018, 011–23277156,
ई–मेल : adhyayanpublishers@yahoo.com

विनोबा भावे का नारीवादी विमर्श

संस्करण : 2018
© लेखक
ISBN: 978-81-8435-612-0

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं। जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

राकेश कुमार यादव द्वारा 'अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के लिए प्रकाशित।

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान/CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

प्रा

समकालीन चिन्तन में 'नारीवाद
स्थापित हो चुका है। इस दर्शन
परिवर्तन किये है। सदियों तक
विज्ञान, कला, साहित्य व दर्शन
स्थान ही प्राप्त रहा है। सामाजि
की दृष्टि, पुरूषोचित गुणों एवं
किया गया। यहां तक कि प्रजा
स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ
चेतना का जो प्रचार एवं प्र
विविध पड़ावों– उदारवादी नारी
क्रांतिकारी नारीवाद, उत्तर आ
गयी। भारत में भी राजा राम
विमर्श की एक सघन परम्परा
सशक्त कड़ी है।

डॉ0 कृष्णा पाण्डेय द्वार
शीर्षक से प्रस्तुत इस पुस्तक
विवेक व बौद्धिक कौशल के
पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत
दोनों ही पक्षों पर ध्यान को
जीवन दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में
की गयी है। साथ ही विनोब
नारी–विमर्श की दृष्टि से

समकालीन चिन्तन में "नारीवाद" एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण दर्शन के रुप में स्थापित हो चुका है। इस दर्शन ने ज्ञान की समस्त विधाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। सदियों तक अधिकांश राष्ट्रों में एवं साथ ही साथ समाज विज्ञान, कला, साहित्य व दर्शन की सभी विधाओं में स्त्री को दोयम दर्जे का स्थान ही प्राप्त रहा। सामाजिक मूल्यों एवं सामाजिक व्यवहार को पुरुष की दृष्टि, पुरुषोचित गुणों एवं पुरुष की आवश्यकताओं के अनुसार निर्धारित किया गया। यहाँ तक कि प्रजातन्त्र के अभ्युदय के बाद भी वर्षो तक स्त्री की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। समकालीन चिन्तन के इतिहास में नारीवाद एक ऐसी अवधारणा के रुप सामने आया हैं, जिसने न केवल सदियों से दबी हुयी आधी आबादी की अस्मिता के प्रश्न को उठाया है, बल्कि यह एक वैचारिक शक्ति एवं आन्दोलन के रुप में पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती है। प्रस्तुत पुस्तक में विनोबा भावे के "स्त्री–शक्ति" सम्बन्धीं विचारों की विवेचना नारीवाद के सन्दर्भ में समीचीन है।



कृष्णा पाण्डेय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश से बी. ए. (सन 2002), एम. ए. (राजनीति विज्ञान विभाग, 2004) की उपाधि प्राप्त की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ही सन 2011 में राजनीति विज्ञान विभाग से डॉक्टर ऑफ फिलासाफी की उपाधि प्रदान की गयी। वीर बहादुर सिंह पूर्वांच्चल विश्वविद्यालय जौनपुर के विक्रम सिंह कन्या डिग्री कॉलेज मुगलसराय से बी. एड. की उपाधि प्राप्त हुयी। तत्पश्चात C.T.E.T. तथा U.P.T.E.T. जैसी परीक्षायें उत्तीर्ण की। सन 2013– 2017 तक महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के महादेव महाविद्यालय, बरियासनपुर, वाराणसी में राजनीति विज्ञान विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्य किया। वर्तमान समय (सन 2018 से) में राँची विश्वविद्यालय के डोरण्डा महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग में सहायक प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। दर्जनों राष्ट्रीय संगोष्ठियों में उनके द्वारा लिखित शोध पत्रों का वाचन किया जा चुका है। अनेक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके है।

अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

4378/4 बी, 105, जे एम डी हाउस, गली मुरारीलाल
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
फोन : 011-23263018, 23277156
E-mail : adhyayanpublishers@yahoo.com
Website : www.adhyayanbooks.com

ISBN 978-81-8435-612-0

9 788184 356120

₹800

Pupa Dorjee — (85)

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 84

ཨཱཙཱརྱ་ཨ་ཏི་ཤ་བིརཙིཏཿ

རཏྣཀརཎྜོདྒཊ-མདྷྱམནཱམོཔདེཤཿ

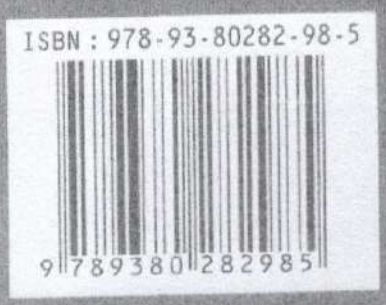
पुनरुद्धारकः, अनुवादकः सम्पादकश्च
डॉ. पेम्पा दोर्जे

केन्द्रीय-उच्चतिब्बतीशिक्षासंस्थानम्
(मान्य-विश्वविद्यालयः)
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः - 2562 ईसवीयाब्दः - 2018

Central Institute of Higher Tibetan Studies Sarnath

ISBN : 978-93-80282-98-5



डीन
सारनाथ, वाराणसी

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - 84

ཨཱཿ །རྡོ་རྗེ་དབང་ཕྱུག་ཨ་ཏི་ཤས་མཛད་བའི་
དབུ་མའི་མན་ངག་རིན་པོ་ཆེ་ཟ་མ་ཏོག་ཁ་སྒེ་བ་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

आचार्य-अतिशविरचितः

रत्नकरण्डोद्घाट-मध्यमनामोपदेशः



पुनरुद्धारकः, अनुवादकः सम्पादकश्च

डॉ. पेन्पा दोर्जे

केन्द्रीय-उच्चतिब्बतीशिक्षासंस्थानम्

(मान्य-विश्वविद्यालयः)

सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः – 2562 **ख्रीस्ताब्दः – 2018**

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला - 84

प्रधान सम्पादक : प्रो. गेशे ङवङ् समतेन
प्रकाशन प्रभारी : प्रो. पेमा तेनजिन

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, २०१८

मूल्य : सजिल्द रु० २७०.००
अजिल्द रु० २१०.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-221007 (उ.प्र.), 2018, सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

ISBN: 978-93-80282-98-5 HB
978-93-80282-99-2 PB

मुद्रक : सत्तनाम प्रिन्टर्स, पाण्डेयपुर, वाराणसी

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

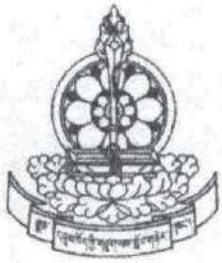
BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 84

RATNAKARṆḌODGHĀṬA-MADHYAMANĀMOPADEŚAḤ

OF

ĀCĀRYA ATIŚA

(Tibetan text, Sanskrit Restoration and Hindi Translation)



Restored, Translated & Edited
by
Dr. Penpa Dorjee

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
SARNATH, VARANASI

B.E. 2562 **C.E. 2018**

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA SERIES - 84

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Prof. Pema Tenzin

First Edition: 550 copies, 2018

Price: Hardback Rs. 270.00
Paperback Rs. 210.00

© Copyright by Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi-221007 (U.P.) India, 2018
All rights reserved

Published by:
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-93-80282-98-5 HB
978-93-80282-99-2 PB

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi

Lobsang Tenzin 86

༣ཨ། །རྒྱལ་སྤྱིའི་གོང་ཀྱི་གསོ་བ་རིག་པའི་བསྟོད་གླིང་ཚོགས་ཆེན་
ཟེངས་གསུམ་པའི་དཔྱད་རྩོམ།

PROCEEDINGS OF THE 3rd INTERNATIONAL CONFERENCE ON SOWA-RIGPA (TIBETAN MEDICINE)

ཟླ་ལོ་༢༠༡༨ ཟླ་༢ ཚེས་༢༥ ནས་ཟླ་༣ ཚེས་༡ བར།
ཚོགས་ཡུལ། ཝཱ་ར་ཎ་སིའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་།

Date: 25th February to 1st March, 2018
Venue:CIHTS, Sarnath, Varanasi



DEPUTY REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jointly organized by:







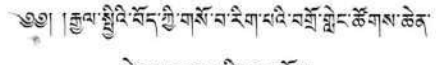
CCTM Dharamsala, DSR of CIHTS Varanasi and CTMI Darjeeling

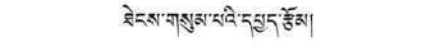
ISBN : 9788193625439

ISBN : 978-81-93625-43-9



PROCEEDINGS OF THE 3rd INTERNATIONAL CONFERENCE ON SOWA-RIGPA (TIBETAN MEDICINE)





Date: 25th February to 1st March, 2018
Venue:CIHTS, Sarnath, Varanasi



Jointly organized by:



CCTM Dharamsala, DSR of CIHTS Varanasi and CTMI Darjeeling

Organizing Committee Members:

President	:	Dr. Rakdho Lobsang Tenzin
Vice President	:	Dr. Sonam Dolkar Oshoe
Secretary	:	Dr Tsering Tsamchoe
Members	:	Dr. Dawa Tsering Dranyi
		Dr. Rabga Bhutia

Editorial Board:

Chief Editor	:	Dr. Rakdho Lobsang Tenzin
Assistant Editors:		Dr. Dorjee Damdul
		Dr. Jasmeet Gill
		Dr. Tsering Tsamchoe
		Dr. Tashi Dawa
		Dr. Sonam Dolkar Oshoe

Published by Department of Sowa-Rigpa, CIHTS Sarnath-221007, Varanasi, UP.

Copyright © 2018, Department of Sowa-Rigpa, CIHTS Sarnath-221007, Varanasi, UP./Central Council of Tibetan Medicine, Dharamsala-176215, HP./Chagpori Tibetan Medical Institute, Darjeeling-734101

All rights reserved. No portion of this book may be reproduced by any means without the prior written permission of the publisher.

CONTENTS

Keynote Address: *Prof. (Dr.) Rakdho Lobsang Tenzin, Chairman CCTM, Dean, Faculty of Sowa-Rigpa and Bhot Jyotish* 1

Session Theme: A Glimpse into the Three Great Medical Systems of Asia
ཐྲུབ། གསོ་རིག་ཚོ་ཆུས་ལས་འཛོས་པའི་ཀུཏགས་ཆེན་གསུམ་ཀྱི་སྐོར།

PL1: Ayurveda: Knowledge from Home to Hospital
Dr. Shiv Ji Gupta 21

PL1: Traditional Chinese Medicine: Antidotes from History to Present
Dr. Edward Yap 24

PL1: Sowa-Rigpa: Healing from Physical to Spiritual
Prof. (Dr.) Rakdho Lobsang Tenzin
English and Tibetan version 25

PL3: Education, Practice and Research in Ayurveda: Evolutionary Development and Future Challenges
Prof. (Dr.) Sanjeev Rastogi 29

PL4: The Evolutional Development of Traditional Chinese Medicine: Challenges, Training, Practice, Research and Future Development
Dr. Edward Yap 31

PL5: The Evolutional Development of Unani Medicine: Education, Practice, Research, Future Development and Challenges
Prof. (Dr.) Rais-Ur-Rahman 32

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Session Theme: Present Status of Sowa-Rigpa in Asian Countries

ཐེམ། ཨེ་ཤིཡའི་རྒྱལ་ཁབ་ཁག་ཏུ་གསོ་ར་རིག་པའི་ད་ལྟའི་གནས་བབས།

PS1: Legal Issues of Tibetan Medicine in Russia
Ms. Oyuna S. Rinchinova
Co-author-*Tsymzhit P. Vanchikova* 34

PS4: Sowa-Rigpa in Asia: A Quantitative Overview
Stephan Kloos 42

PS5: Development of Sowa-Rigpa in Bhutan through Research
Mr. Sherab Tenzin 44

PS11: Legal Status of Sowa-Rigpa in Nepal
Dr. Nyima Tsering
English and Tibetan version 47

PS24: Sowa-Rigpa: Historical Background and Current Status in Mongolia
Dr. Ganzorig Davaa-Ochir
English and Tibetan version 51

Session Theme: Clinical Management of Somatic Disorders

ཐེམ། ལུས་ཀྱི་ཅང་བཅོས་སྐོར།

PL6: Sowa-Rigpa: Knowing Cancer and its Important Parameters
Dr. Dorjee Rapten Neshar
English and Tibetan version 69

PS8: Sowa-Rigpa: Understanding Auto Immune Disease
Dr. Dorjee Rapten Neshar
English and Tibetan version 74

PS20: The Management of Malposition and Malpresentation (Through Sowa-Rigpa and Modern Medicine)
Dr. Passang Dolma, Menrampa
English and Tibetan version 79

Session Theme: Clinical Management of Psychological Disorders

ཐེམ། སེམས་ནད་བཅོས་པའི་སྐོར།

PS6: Breakdown of Body and Transference of Consciousness
Ven. Dolpo Tulku Ogyen Choeying Yeshi Rinpoche
English and Tibetan version 81

PS7: Importance of Mental Health
Ven. Dolpo Tulku Ogyen Choeying Yeshi Rinpoche
English and Tibetan version 83

PS14: Art of Stress Management in Sowa-Rigpa
Dr. Thinles Yangjor
English and Tibetan version 85

PS21: Management of Psychological Disorders according to *Bum-bZhi* Text
Dr. Passang Thopchen
English and Tibetan version 99

Session Theme: Pharmaceutics and Research

ཐེམ། སྨན་སྒྲུབ་དང་ཞིབ་འཇུག

PS3: Sowa-Rigpa: Drug Research, its Scope and Challenges
Ms. Tenzin Choedon 110

PS9: Molecular Insights into the Anti-Cancer Properties of Traditional Tibetan Medicine *Yukyung Karne*
Ms. Tenzin Choedon 111

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

PS10: Sowa-Rigpa: Its Development in Modern Pharmaceutics (Action Profiles of Tibetan Formulas)
Dr. Herbert Schwabl 112

PS12: Acharya Vāgbhata and Astangh Hridyam
Dr. Akhilesh Kumar Singh 113

PS13: Sowa-Rigpa Literature in *bsTan'Gyur*
Dr. Dorjee Damdul
English and Tibetan version 120

PS18: Practical Application of Sowa-Rigpa Pharmaceutical
Dr. Dorjee Damdul
English and Tibetan version 127

Session Theme: Advanced Sowa-Rigpa Practice
ཐེག་གསོ་རིག་ཚད་ལེན་སྒོར།

PL2: Sowa-Rigpa: *sMen-Drub* and its Significance
Ven. Geshe Lharampa Jadho Rinpoche 137

PS22: The Knowledge and its Elemental Theory of Illness Reading (*Nad-rTsi*) in Tibetan Astro-Science
Dr. Jampa Chophel
English and Tibetan version 146

The Importance of the *Yuthok Nyingthik*, or its Twelve Uncommon and Special Characteristics
Dr. Nida Chenagtsang
English and Tibetan version 160

Session Theme: Medico-Legal Issues
ཐེག་རྩོད་བང་འཛོལ་བའི་ཁྱིམས་སྒོར།

PL1: Regulation and Quality Control of Ayurvedic, Siddha, Unani and Homeopathic Drugs
Dr. D.C. Katoch 186

PS2: Prospects and Problems of Compliance to Good Manufacturing Practices in Indian Systems of Medicine
Dr. D.C. Katoch 188

PS15: Use of Mercury as Medicine and its Legal Challenges
Prof. (Dr.) Anand Kumar Chaudhary 189

PS19: Principles and Practical Application of Tibetan Medicine in the Western Context
Dr. Lobsang Tsultrim
English and Tibetan version 191

Session Theme: Materia Medica and Its Challenges
ཐེག་རྫས་ཆུང་དང་དེའི་དགའ་གཅད་སྒོར།

PS16: Importance of Conservation of Cold Desert Medicinal Plants for Sowa-Rigpa
Dr. Padma Gurmet 195

PS17: Materia Medica of Tibetan Medicine: Diversity, Identification, Classification and the Method of Checking Quality
Dr. Tsultrim Kalsang
English and Tibetan version 198

PS23: Climate Change and its Effects on the Medicinal Plants
Dr. Tsultrim Kalsang
English and Tibetan version 211

Session Theme: Hands-on Practical Training
ཐེག་ལག་ལེན་དགས་འཁྲིད།

PW1: Sowa-Rigpa: Significance of External Therapies
Dr. Dorjee Rapten Neshar 227

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

PW2:Sowa Rigpa: Practice of *Ku-Nye* Therapy
Dr. Tsultrim Kalsang 229

PW3: Sowa-Rigpa: Practice of *Kyug* Therapy
Dr. Tenzin Jinpa
English and Tibetan version 230

PW4: Sowa-Rigpa: Practice of *Dhug* Therapy
Dr. Tsultrim Kalsang 233

Sowa-Rigpa: Practice of *Yugkcho* Therapy
Dr. Nida Chenagtsang 234

Paper Presentations in Tibetan Language
བོད་ཡིག་རྩོམ་བཀླག་ལས།

PP1:རྗེ་ཡི་རིག་བྱེད་ལས་གཞུང་ལས་ཁའི་ཞས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གཞུས་སྨོང་གསོ་བ་རིག་པ་དང་འབྲེལ་ན་ས་ཆ་ཚོམ་དབྱད་པ།
Dr. Jigme Migyure (Menrampa) 235

PP2:བོན་ཀྱི་སྒྲུན་རྩེས་ལས་འཛོམ་པའི་ཅིའི་ཐུ་སྒོག་སྨོར།
Gyashod Yungdrung Tashi 247

PP3:ཅི་ཙིའི་ཏུ་ཀི་ཀ་མེར་ལས་འཛོམ་པའི་ངལ་བསོས་རིག་པའི་འཛེལ་རིན་ཆང་སྨོང་བ།
Kunkhen 259

PP4:སྒ་ཚེས་པའི་ཚོ་ངོན་བང་ངོས་འཛིན་སྨོར་ལ་བསྒྲུར་དུ་དབྱད་པ།
Wangal Dorjee 272

PP5:སྨོང་ཅེད་ལས་ཐ་སྐྱི་བང་ཀྱི་ཐག་ཏུ་སྒ་རྒྱས་སྨོར་ལ་དབྱད་པ།
Dr. Sonam Palmo 293

བོད་ལྷག་ཁ་གསོ་རིག་པ་གཏར་གཤིའི་འཛེལ་རྒྱ་བང་ཚོམ་རིག་པ་དབྱད་བསོག
Ala Kalsang Kyab and Rinchen Dolma 302

Paper Presentations in English Language
ཨིང་ཡིག་རྩོམ་རིག་ལས།

PP6: Historical Background for Tibetan Medical System in the Republic of Tuva (Russian Federation)
Galina B. Kopeliovich, L.A.Pavlova 319

PP7: Fibromyalgia in Sowa-Rigpa
Nashalla Gwyn Nyinda Menpa 334

PP8: Traditional Tibetan Medicine as an Ancient Personalized Medicine and its Relevance in the Modern World
Dr. MD Yulia Yusipova 354

PP9: Philosophy of Healing Tradition in Tibet (c.617 A.D - c.785 A.D)
Dr. Asrarul Haque (MD) 363

PP10: From Hidden Fever to Silent Inflammation: Translating Concepts
Dr. med.vet.Cecile Vennos 374

PP11: Tibetan Medicine in the Era of Tsarist Russia
Svetlana Chojinimayeva (Ph.D) 376

Tibetan Buddhist Tradition and Neuro-Biology
Prof. Arun Kumar Jha &(Mrs.) Sudha Jha 384

PL=Plenary Lecture **PS**=Parallel Session

PW=Practical Workshop **PP**=Paper Presentation

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Biofuel and Biorefinery Technologies 5

Neha Srivastava · Manish Srivastava
Himanshu Pandey · P. K. Mishra
Pramod W. Ramteke *Editors*

Green Nanotechnology for Biofuel Production

Springer

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Varanasi

Biofuel and Biorefinery Technologies 5
Series Editors: Vijai Kumar Gupta · Maria G. Tuohy

Neha Srivastava · Manish Srivastava · Himanshu Pandey · P. K. Mishra · Pramod W. Ramteke *Editors*

Green Nanotechnology for Biofuel Production

This book focuses on the use of nanotechnology and nanomaterials in the production of biofuels. It describes the current production technologies for different biofuels and their limitations for commercialization, and discusses in detail how nanomaterials could reduce biofuel production costs. After an introduction to biofuels, the book examines biofuels economics and policy; biofuel production processes – advances and limitations; nanotechnology and its energy applications; nanotechnology in biohydrogen production – for cellulases, in algal fuel, and in bioethanol/biobutanol and biodiesel production. It is a valuable resource for researchers and engineers.

Engineering

ISBN 978-3-319-75051-4

9 783319 750514

▸ springer.com

Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Editors
Neha Srivastava
Department of Chemical Engineering and Technology
Indian Institute of Technology (BHU)
Varanasi
India

Manish Srivastava
Department of Physics and Astrophysics
University of Delhi
Delhi
India

Himanshu Pandey
Department of Pharmaceutical Sciences
Sam Higgnbottom Institute of Agriculture Technology and Sciences
Allahabad
India

P. K. Mishra
Department of Chemical Engineering and Technology
Indian Institute of Technology (BHU)
Varanasi
India

Pramod W. Ramteke
Department of Biological Sciences
Sam Higgnbottom Institute of Agriculture Technology and Sciences
Allahabad
India

केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISSN 2363-7609 ISSN 2363-7617 (electronic)
Biofuel and Biorefinery Technologies
ISBN 978-3-319-75051-4 ISBN 978-3-319-75052-1 (eBook)
https://doi.org/10.1007/978-3-319-75052-1

Library of Congress Control Number: 2018930113

© Springer International Publishing AG 2018
This work is subject to copyright. All rights are reserved by the Publisher, whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, reuse of illustrations, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other physical way, and transmission or information storage and retrieval, electronic adaptation, computer software, or by similar or dissimilar methodology now known or hereafter developed.
The use of general descriptive names, registered names, trademarks, service marks, etc. in this publication does not imply, even in the absence of a specific statement, that such names are exempt from the relevant protective laws and regulations and therefore free for general use.
The publisher, the authors and the editors are safe to assume that the advice and information in this book are believed to be true and accurate at the date of publication. Neither the publisher nor the authors or the editors give a warranty, express or implied, with respect to the material contained herein or for any errors or omissions that may have been made. The publisher remains neutral with regard to jurisdictional claims in published maps and institutional affiliations.

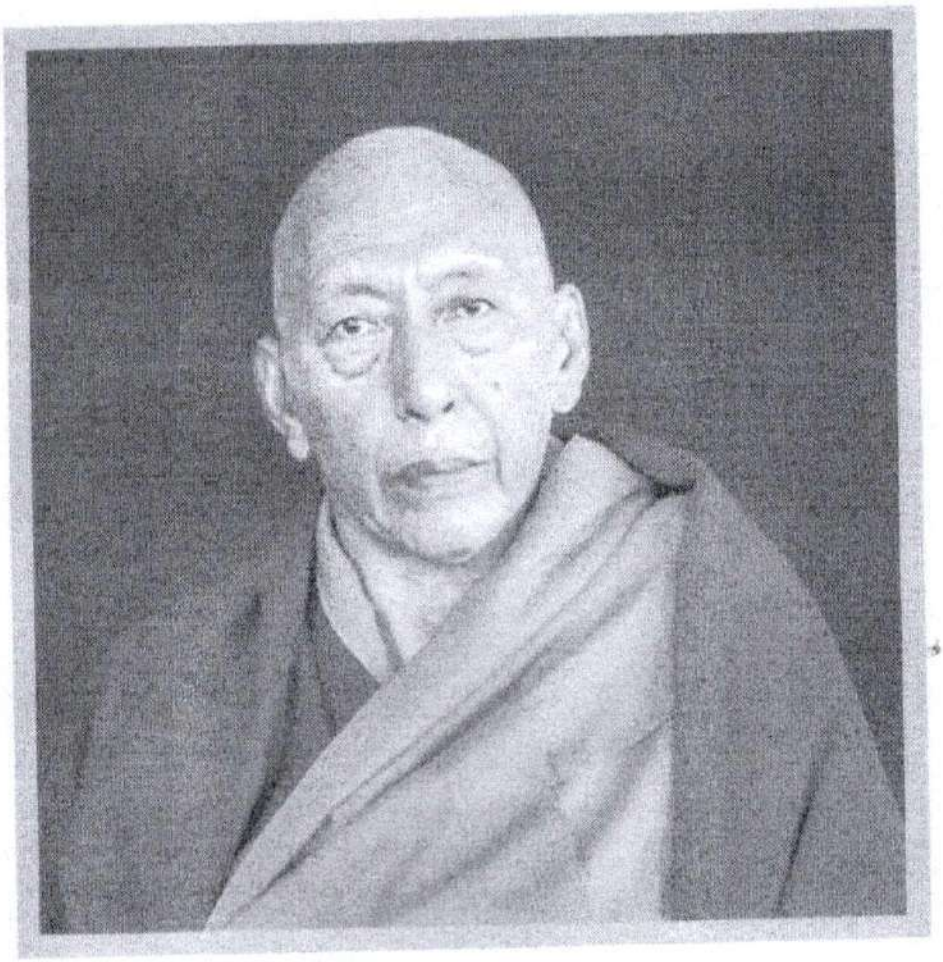
Printed on acid-free paper

This Springer imprint is published by Springer Nature
The registered company is Springer International Publishing AG
The registered company address is: Gewerbestrasse 11, 6330 Cham, Switzerland

Jampa Chophel
(88)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eightieth Birthday

[Part-I]



Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

स्त्री दुनिया
समसामयिक सरोकार

संपादक
रेखा रानी

सहसंपादक
प्रियदर्शिनी



मुख्य कार्यालय

स्वराज प्रकाशन

4648/1, 21-अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-23289915
Email : swaraj_prakashan@yahoo.co.in

शाखा

288, ई.डब्ल्यू.एस., शास्त्रीपुरम
आगरा-282007 (उ.प्र.)

© रेखा गनी एवं प्रियदर्शिनी

मूल्य : ₹ 695
प्रथम संस्करण : 2019
ISBN : 978-93-88891-55-4

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय तुलना शिक्षण शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय-Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

अजय मिश्रा द्वारा **स्वराज प्रकाशन**, 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा ओम आफसेट, जगतपुरी
शाहदरा, दिल्ली-110093 में मुद्रित

अनुक्रम

महिला पत्रिकाओं में स्त्री अस्मिता का स्वरूप और भाषिक संरचना	डॉ. रिंकू घोष	13
उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी समस्या-नॉस्टेल्जिया के विशेष संदर्भ में	डॉ. हर्षलता शाह	20
समकालीन कवयित्रियों के मिथक तथा इतिहास संदर्भ	प्रो. पद्मा पाटिल	25
स्त्री : बढ़ती आर्थिक आत्मनिर्भरता-बढ़ते खतरे	डॉ. शिखा कौशिक	40
महिला कथा लेखन में स्त्री : चेतना की नई अवधारणा	डॉ. रमा पद्मजा	44
बदलाव के लिए सशक्त बनें : कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न	डॉ. साएमावानो	47
स्त्री अस्मिता बॉडी और ब्रेन के बीच	विनीता रघुवंशी	54
आज के दौर का स्त्री लेखन	कलावंती	57
तलाक की प्रासंगिकता	हुस्न तबस्सुम निहाँ	60
यौन उत्पीड़न और राजनीतिक व्यवस्था : एक विश्लेषण	डॉ. शुभी धुसिया	65
स्त्रियों के उत्थान में डॉ. अम्बेडकर का योगदान	डॉ. सुशीला टाकभौरे	69
स्त्री संघर्ष के जरूरी सवाल : अनामिका तथा मैत्रेयी पुष्पा का विमर्शात्मक लेखन	डॉ. अर्चना त्रिपाठी	77
लोकसाहित्य और दलित आदिवासी स्त्री की अभिव्यक्ति	किंग्सन अनिता भारती	84
स्त्री अधिकारों का संघर्ष : भारतीय संदर्भ	डॉ. किगंसन सिंह पटेल	94
उर्दू साहित्य में नारीवादी चिन्तन	प्रो. वसीम बेगम	101
स्त्री आत्मकथा और प्रेम	डॉ. गायत्री सिंह	107
रवीन्द्रनाथ की कहानी 'पत्नी का पत्र' : स्त्री की सच्ची पहचान	डॉ. ज्योति सिंह	113
महाकाव्य 'साकेत' में कैकेयी का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण	डॉ. रेखा सिन्हा	118
आदिवासी कविता में व्यक्त विद्रोह	डॉ. सविता उके	122
तेलुगु की पहली पीढ़ी की दलित स्त्री रचनाकार : जीवन और काव्य	डॉ. मायादेवी	130
प्रवासी साहित्य में भारतीय स्त्री	डॉ. राजश्री पी. मोरे	137
बुरा होता है सच्चाई को गलत ढंग से छिपाना	डॉ. रजनी दिसोदिया	140
वह सुबह यहीं से आएगी...	डॉ. निखिला एच.	148
कामकाजी स्त्री और समाज	डॉ. रजनी बाला	155
'अपनी जमीं अपना आसमाँ' के बहाने-दलित आत्मकथाओं पर एक नजर	डॉ. रजत रानी मीनू	158

REGISTRAR
Deemed University
Varanasi

2455
तालीन लेखन के लिए, वर्ष 1, अंक 2,

प्रस्तुत संस्करण 2010, पृष्ठ-128
2016, पृष्ठ-5
ण 2016, पृष्ठ-106
2016, पृष्ठ-257
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ईश्वरशरण कॉलेज, प्रयागराज

रवीन्द्रनाथ की कहानी–'पत्नी का पत्र' : स्त्री की सच्ची पहचान

–डॉ. ज्योति सिंह

रवीन्द्रनाथ रोमेन्टिक कवि के रूप में जाने जाते हैं। उनके लिए स्त्री सौन्दर्य की, सुकमारता की मूर्ति रही है। जिन्होंने 'उर्वशी' जैसी कालजयी रचना दी, जिसमें स्त्री के सौन्दर्य की सुकुमार छवि उभरकर आती है, वही रवीन्द्रनाथ एक ऐसी कहानी लिखते हैं, जिसमें वह स्त्री को लेकर एक नये ही रूप में हमारे सामने आते हैं, 'पत्नी का पत्र' (बंगला में स्त्रीर पत्र)। इस कहानी में पहली बार ऐसी स्त्री दिखाई देती है जो स्वयं के अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए दिखाई देती है, जो स्वयं को एक व्यक्ति के रूप में देखती है, अब तक वह केवल पत्नी, माँ, बहन के रूप में स्वयं को जानती थी, लेकिन पहली बार वह स्वयं को एक व्यक्ति के रूप में देखती है। उसमें जागरूकता आ रही है, वह स्वयं के अस्तित्व के लिए व्यक्तित्व के पहचान के लिए जद्दोजहद करते हुए देखी जा सकती है।

सामाजिक कहानियों में रवीन्द्रनाथ की प्रमुख कहानी 'पत्नी का पत्र' (स्त्रीर पत्र) का जवाब नहीं। यह अपने ढंग की पहली नारीवादी कहानी है, जहाँ नारी की अस्मिता स्पष्ट रेखांकित है 'अब मैंने खुद को जान लिया है। मर गई पुरानी बहू' यह एक पंक्ति पूरी कहानी का केन्द्रीय बिन्दु है। जिसमें स्त्री अब तक के सभी बन्धनों को तोड़कर बाहर निकलकर आती है। अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। अब धीरे-धीरे उसमें जागरूकता आ रही है। वह बुद्धि का प्रयोग करने लगी है, वह तर्क करने लगी है, वह सही और गलत की पहचान करने लगी है, इस तरह वह स्वयं को समाज के मुख्य धारा से जोड़ रही है।

'पत्नी का पत्र' कहानी में रवीन्द्रनाथ ने स्त्री मनोविज्ञान को सूक्ष्मता से पकड़ने की कोशिश की है, और बहुत हद तक वह इसमें सफल भी रहे हैं। कहानी को पढ़ते हुए यह विश्वास ही नहीं होता कि यह रवीन्द्र लिख रहे हैं, स्त्री मन की इतनी तीखी प्रतिक्रिया को व्यक्त करना वह भी एक कवि द्वारा जो स्त्री को सौन्दर्य और सुकुमार की मूर्ति मानता रहा है। यह अपने आप में उस दौर की बहुत ही क्रान्तिकारी पहल है।

'पत्नी का पत्र' कहानी केवल एक पत्र नहीं है, यह पत्र पूरे स्त्री समाज की त्रासद कथा है, इस पत्र के माध्यम से नारी के अन्तमन को सूक्ष्मता से दिखाने की कोशिश की गई है, उसके जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक के एक विस्तृत कैनवास को इस कहानी में उकेरा गया है। जिससे संघर्ष करते-करते वह अन्त में संसार से विदा हो जाती है। लेकिन इस पत्र में एक ऐसी स्त्री, एक ऐसी पत्नी इस पत्र

REGISTERED
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Varanasi

R.C Negi — 90

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन



सम्पादकद्वय

अजय कुमार मौर्य

रेखा खुशाल बडोले

कुलपति निवास
Babasaheb Bhimrao Ambedkar
Central University
Raebareli Road, Lucknow-226025

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन

सम्पादकद्वय

अजय कुमार मौर्य

रेखा खुशाल बडोले

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

पालि सोसायटी ऑफ इण्डिया

वाराणसी

विषय-सूची

सम्पादकीय

1. डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर प्रणीत सामाजिक समता एवं धर्मनिरपेक्षता — 01
   प्रो. डॉ. बालचन्द्र खाण्डेकर

2. डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय विचार — 08
   डॉ. मालती साखरे

3. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का सामाजिक चिन्तन — 12
   डॉ. रमेशचन्द्र नेगी

4. डॉ. अम्बेडकर के दर्शन में सामाजिक मुक्ति — 18
   डॉ. पिताम्बरदास

5. सामाजिक संलग्न बौद्ध धर्म — 32
   डॉ. ज्ञानादित्य शाक्य

6. डॉ. अम्बेडकर का मानवतावादी सामाजिक चिन्तन — 44
   डॉ. अनामिका सिंह

7. डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा — 51
   अजय कुमार मौर्य

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

8. डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक मानवतावाद 60
अर्चना देवराव हाडके

9. डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय 64
बिना नगरारे

10. डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन की अवधारणा 80
छाया रोडगे

11. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का धम्म : एक सामाजिक क्रांति 85
हिमाद्रि

12. डॉ. अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन में बन्धुता 90
इंदुमती ठवरे

13. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का धर्मान्तरण : एक सामाजिक परिवर्तन 103
लेखराम सेलोकर (भंते लोकपाल)

14. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन में छुआछूत की अवधारणा 115
प्रिती मंगेश नंदेश्वर व मंगेश नंदेश्वर

15. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के धम्म में नारी की स्थिति 121
रेखा खुशाल बडोले

16. डॉ. भीमराव अम्बेडकर की दृष्टि में समानता 129
रूपा वालदे

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

17. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के चिन्तन में स्त्री की स्वतन्त्रता — 135
संतोष टी जांभुळकर

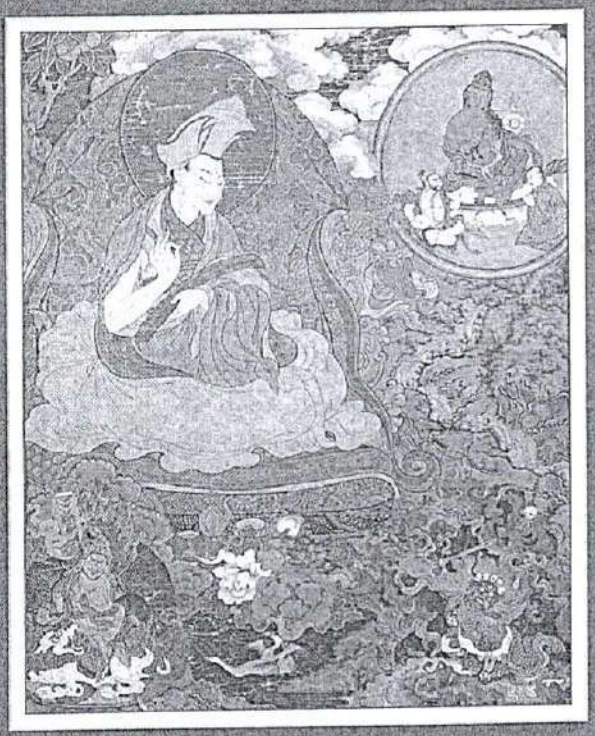
18. वर्ण व्यवस्था में शूद्रों की सामाजिक स्थिति — 141
स्मिता वाडके

19. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सामाजिक चिन्तन में अस्पृश्यता — 146
स्वप्निल दामोधर नंदेश्वर

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

STUDIES IN INDIAN AND TIBETAN BUDDHISM

The Essence of the Ocean of Attainments



The Creation Stage of the
Guhyasamāja Tantra
according to
Paṇchen Losang Chökyi Gyaltsen

Translated by Yael Bentor and Penpa Dorjee

Review

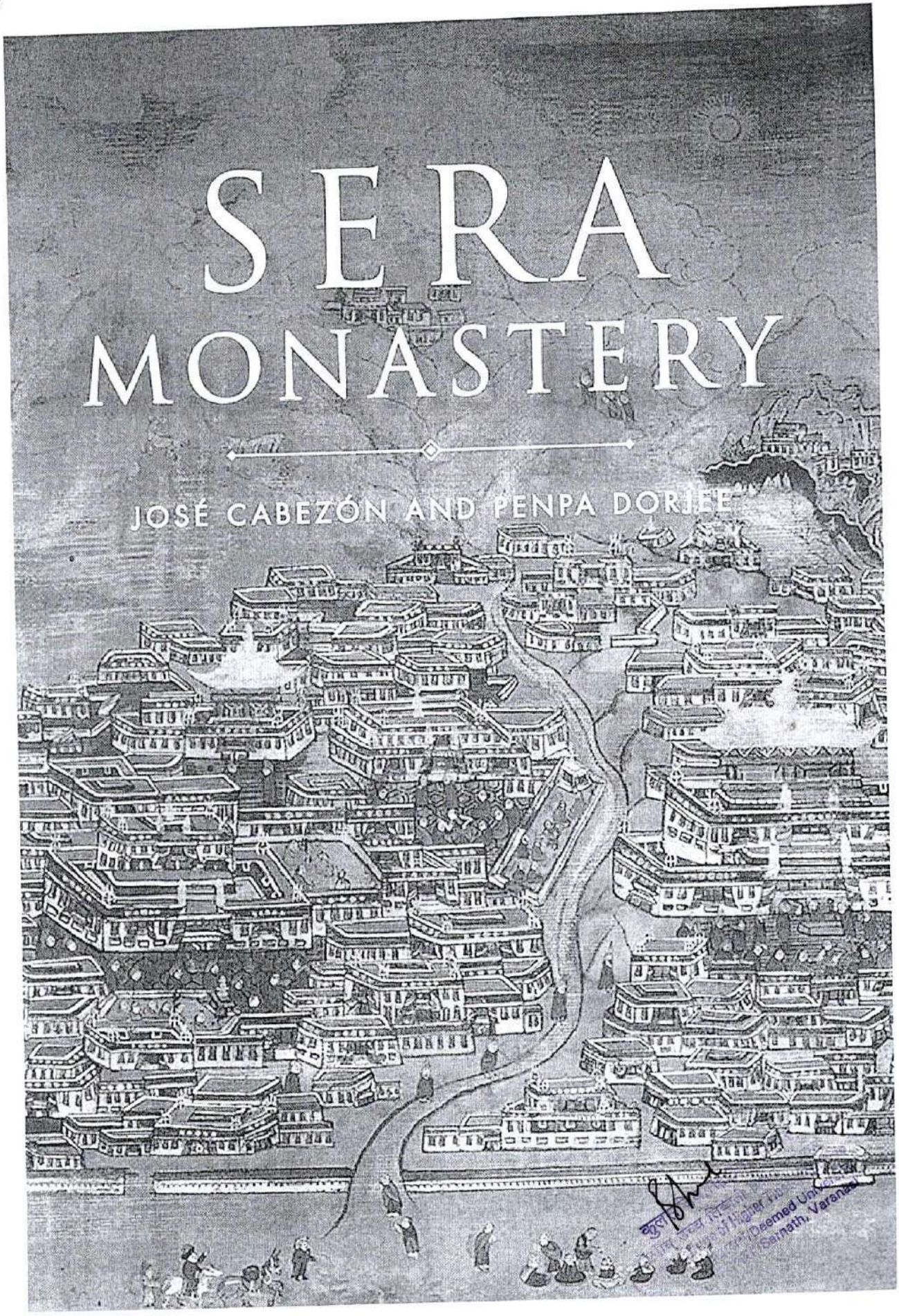
"Just to state two reasons why this work should be read by all those aspiring to pursue the yoga practices of tantric Buddhism: First, in her introduction Yael Bentor has provided one of the clearest and best explanations of the exclusive technique of Unexcelled Mantra by which wisdom and method are combined within a single cognition. This fundamental practice is the very essence of Unexcelled Mantra. Second, in these times of fascination for high tantric practices, especially those of the completion stage, it is refreshing, and indeed necessary, to see a highly competent translation of the prerequisite creation stage, delivered with the academic professionalism and the high-level scholarship of Professor Bentor." -- Gavin Kilty, translator, the Library of Tibetan Classics

The eloquent and very clear explanations of the *Guhyasamaja Sadhana* by the famous teacher of the Fifth Dalai Lama, Pachen Losang Chökyi Gyaltsen, are a fine example of Geluk hermeneutics that skillfully combines a comprehensive knowledge of all relevant canonical sources with well-reasoned critical analysis. With their well-annotated translation of this fine piece of Tibetan scholarship, Yael Bentor and Penpa Dorjee have rendered an invaluable service to scholars and practitioners alike. It can be recommended even to newcomers to the field of tantric studies, given its detailed but straightforward introduction to the complex and fascinating system of generation- stage practice. The introduction also contains a range of interesting new information on the Gelukpa's understanding of Tantra, such as Je Tsongkhapa's statements to the effect that consorts can also be male or that female practitioners are able to attain complete awakening in their female bodies. -- Prof. Klaus-Dieter Mathes, University of Vienna

"Contained in this volume is one of the very best introductions to the practice of the Buddhist class of the unsurpassed or unexcelled tantras. The authors, Profs. Yael Bentor and Penpa Dorjee, translated the first Panchen Lama Losang Chökyi Gyaltsen's (1570–1662) substantial summary of Kedrup Geleg Pelsangpo's (1385–1438) large discussion of the so-called generation stage of the Guhyasamaja Tantra as laid out in accordance with the *Arya transmission of the text. As Gelukpa commentators, Kedrup and the Panchen Lama owe a great deal to Tsongkhapa's (1357–1419) earlier interpretations of the Guhyasamaja Tantra and its attendant theoretical and practical literature. Bentor and Dorjee informed their outstanding translation of this difficult work with copious explanatory notes that are based on a very large corpus of primary and secondary literature. Theirs is an outstanding contribution to the field of Buddhist Studies in general and to the study of tantric Buddhism in particular. One can only hope that similar studies of this sterling quality will follow in its wake." -- Leonard van der Kuijp



Penpa Dorjee - (92)



Deemed University
Sarnath, Varanasi

"No great university has ever had its history written so beautifully or so authoritatively. Sera Monastic University is one of the "three seats," the premier academic institutions in Tibet (now continuing in exile in India). It has produced a staggering number of influential scholars, adepts, and national leaders, and its history is densely interwoven with that of Tibet and the Geluk lineage. In this meticulously researched and elegantly written study, José Cabezón and Penpa Dorjee present a history of a great academic and religious institution, but also undertake a powerful investigation of the role of great institutions of higher education in the formation of national and religious identity, and of the role of academic monasteries in the history and present of Tibet. Not only that, the vibrant prose and absorbing narrative make for compelling reading."—**Jay L. Garfield**, Doris Silbert Professor in the Humanities, Smith College and the Harvard Divinity School

The definitive history of Sera Monastery, one of the great monastic universities of Tibet, from its founding to the present.

Founded in 1419, Sera Monastery was one of the three *densas*, the great seats of learning of the Geluk school of Tibetan Buddhism. With over 9,000 monks in residence in 1959, it was the second largest monastery in the world. Throughout its history, Sera has produced some of Tibet's most important saints, scholars, and political leaders.

The scholars José Cabezón and Penpa Dorjee begin *Sera Monastery* with the history of monasticism from the time of the Buddha through its early development in Tibet and then tell the 600-year story of Sera from its founding to the present. They recount how the monastery grew and evolved during the centuries, how it has fared under Chinese rule, and how it was transplanted in the Tibetan refugee camps of South India. We are introduced to some of Sera's most important lamas and hermits, as well as its curriculum, yearly calendar, the daily life of scholar monks, and the role Sera monks played in the political history of Tibet.

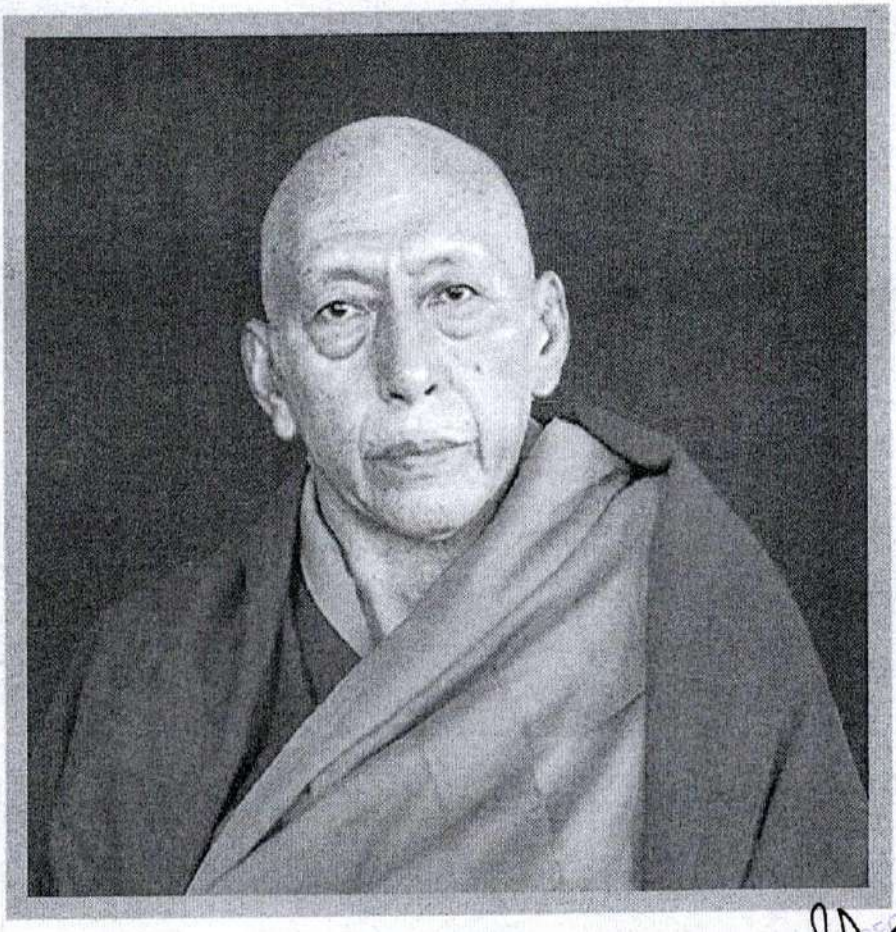
Former Sera monks themselves, Cabezón and Dorjee demonstrate their firsthand knowledge of the monastery, its traditions, and daily life on every page. Scrupulously researched over decades, *Sera Monastery* is the most comprehensive history of a Tibetan monastery ever written in a Western language.

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Lenpa Dorjee - 93

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eightieth Birthday

[Part-I]

Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN : 978-81-936254-7-7

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

གསུམ་པ། བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྲོད་སོགས་རིག་གནས་ཆེ་རྒྱང་སྐོར། 337-627

৫) तिब्बती बौद्ध साहित्य का विकास एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव 337-346
—प्रो. डॉ. पेमा तेनजिन

১০) संस्कृत वाङ्मय को बौद्धावदान 347-362
—डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

১১) བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་གི་བྱུང་བ་དང་དེའི་འགྱུར་ལྡོག་ལ་ཞུན་ཟད་དབྱད་པ། 363-382
—སྤྲོ་འབུམ་རམས་པ་སྒེན་པ་རྡོ་རྗེ།

১২) བོད་སྐད་བརྡ་སྤྲོད་ལས་ཨིང་གི་ཚོགས་ཀྱི་འཛེལ་རིམ་ལ་དཔྱད་པ། 383-396
— འབུམ་རམས་པ་རིག་དགེ་བཤེས་ཚེ་རིང་།

১৩) སྐུམ་ཞུ་བའི་ཚོག་ཐད་དངོས་ཀུགས་སུ་བསྟན་བའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་དཔྱད་པ་བྱོ་གསར་མཐིན་རྒྱུན། 397-414
— འབུམ་རམས་པ་ལྷག་པ་ཚེ་རིང་།

১৪) དབྱངས་ཅན་མའི་སྒྲ་མདེའི་རྣམ་བཤད་སྤྲོ་ན་མ་ལ་ཐན་པ་རྟེགས་དཀའི་སྐུན་པ་སེལ་བའི་ཚིག་ཟེར་བརྒྱ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་མཚམས་སྦྱོར་པ་ཡི་ངེའི་འགྲེལ་པ་སྒྲ་སྒྲུབ་རི་མོ་དང་བཅས་པ་མཆན་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པ། 415-494
—ཨ་ཐུབ་ན་གཡང་རྒྱས་བསྟན་དར།

১৫) བོད་ཡིག་གམ་སྐོ་ཅེའི་སྐད་ཡིག་ཡར་རྒྱས་གཏོང་ཐབས་སྐོར་ཞུན་ཚམ་གྲོས་པ། 495-536
—ཨ་ཐུབ་སོག་རྡོང་བཀྲ་ཤིས་རྒྱལ་པོ།

১৬) བོད་སྐད་དང་འབྲེལ་བའི་འབྲུག་སྐད་ཁེངས་ཁའི་སྒྲ་གདངས་ལ་མདོ་ཚམ་དཔྱད་པ། 537-566
—ཨ་ཐུབ་བསྟན་འཛིན་རྡོ་རྗེ།

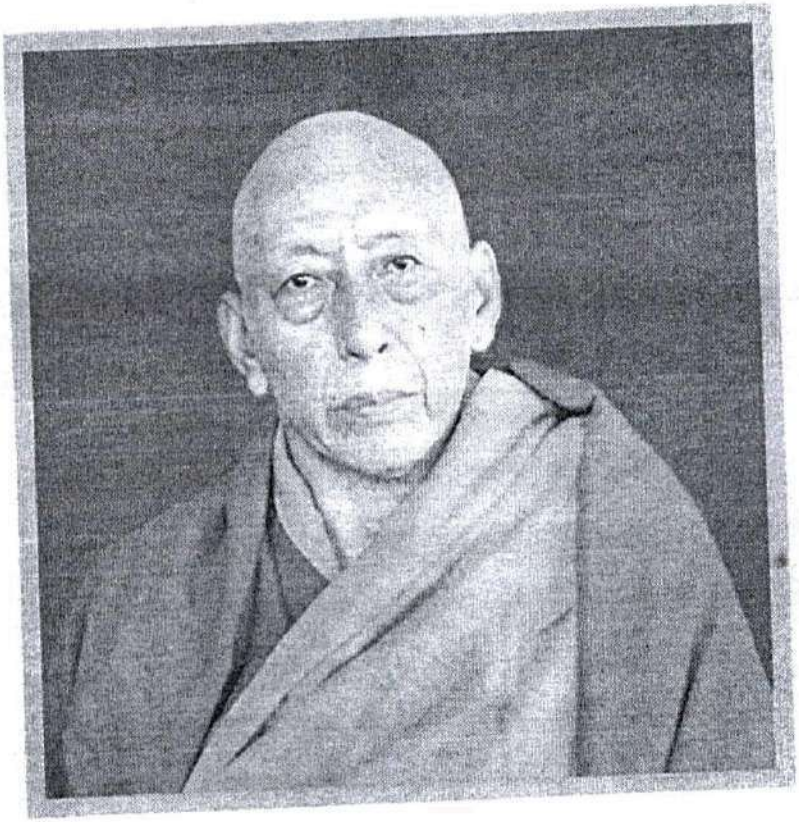
১৭) Preservation and Development of Tibetan/Bhoti Language in Indian Himalayas 567-582
—Dr. Konchok Tashi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी
Sarnath, Varanasi

Gyalsten Namdol — 94

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་བཞུགས་སོ།།

ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

དེ་སྐད་བྱས་པ་ན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཤཱ་རིའི་བུ་ལ་བཀའ་སྩལ་པ། ཤཱ་རིའི་བུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ

ཚལ་གྱང་ཁང་དུ་ལེགས་བཤད་གསེར་ཟེད་དང་། སེ་ར་ཆོས་སྡེ་དམ་སུ་རྣ་ཤེའི་རྣམ་བཤད་ཆེན་མོ་དང་བྲང་རི་མ་ལེགས་བཤད་སྡེའ་མོ། རྒྱ་སོག་སུར་རྣམ་བཞག་རིམ་བའི་རྣམ་བཤད་དང་། སྒགས་རི་མ་ཆེན་མོ། འོལ་ཁ་བསམ་གཏན་གྱིང་དུ་གསང་འདུས་རི་མ་ལྟ་གསལ་སྒོན་དང་། རི་མ་ལྟ་གདན་རྩོགས། བཤད་རྒྱུད་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་དང་། ལྷ་མོ་བཞིས་ཞུས་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་བཤད་མོགས་མཛད། བྱང་ཤུ་སྒྲེད་རྒྱལ་བའི་དབེན་གནས་སུ་ཁྲད་ཆོས་ལྟས་སྒྲིད་བར་དུ་འཚགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ལམ་རི་མ་ཆེན་མོ་མཛད།

དགེ་ལྡན་དུ་དབལ་གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་འགྲེལ་ཆེན་མོ་དང་། དེའི་མཐའ་གཅོད་དང་། མ་བཅད་བསྡུས་དོན་མོགས་མཛད། དེ་བཞིན་དུ་བདེ་མཆོག་ཪྀ་རྒྱུད་ཀྱི་ཀྲི་གླ་སྒྲས་དོན་ཀུན་གསལ་དང་། རྗེགས་རི་མ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོ་རྒྱས་བསྡུས་དང་། ལམ་རི་མ་འབྱེད་པོ་དང་། འཇུག་པའི་རྣམ་བཤད་ཆེན་མོ་མོགས་རྣད་དུ་བྱང་བའི་ལེགས་བཤད་ཀྱི་སྒྲེས་ཆེན་པོ་དག་བསྒྲུན་པར་མཛད་ཡོད་དོ། །འདི་ནི་གཞུང་གཅོ་ཆེ་བ་ཉིད་ཤས་ཀྱི་སྐོར་ལས་མཐའ་དག་པ་འགོད་ཀྱི་མི་ལང་སོ།།

རྒྱལ་བསྟན་དབུང་གི་མཆོ་བཞེན་འཛེལ་ཞིང་རྒྱས།།
བསྟན་འཛིན་པད་དཀར་ཚལ་བཞེན་རྣམ་ཐར་གཙང་།།
བདེ་སྐྱིད་ཉི་ཟླའི་འོད་བཞིན་ཐོགས་བཅུ་དུ།།
འཕྲན་བཞིན་ཁྱབ་པ་རྗེགས་ལྟན་དུས་བཞིན་ཤོག །

སརྦ་མངྒ་ལམ།

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

1 ཁྲད་ཆོས་ལྟའི་སྐོར་ཐུག་བཀྲ་བྱང་མཐའ། 292 (མི་རིགས་དཔེ་བསྒྲུབ།)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

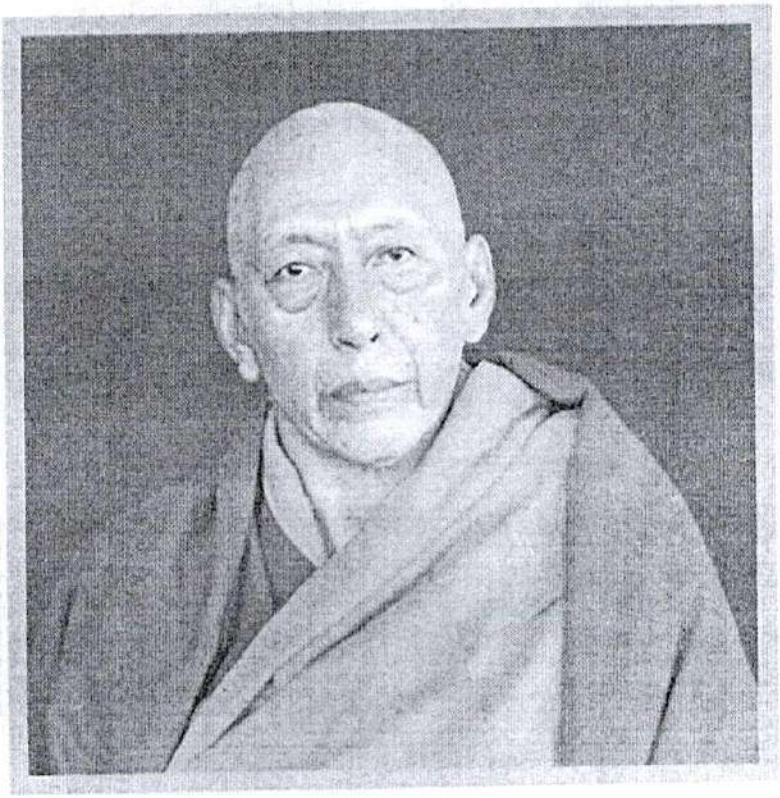
Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

Lobsang Dorjee (95)

Cover Copy (34)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi

Content (3B)

๗། ཤྲཱ་ཏ་དབུས་སོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ལོ་རྒྱུས་དང་། བཀའ་བསྟན་དུ་བཞུགས་བའི་རྒྱ་གཞུང་སོད་འགྲུབ་ལས་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྒྲིགས་བསོ་རྗེ་བྱས་སྐོར། 99-180

— དགེ་བཤེས་འབྱམ་རམས་པ་བློ་བཟང་རོ་རྗེ་རབ་གྲོང་།

๘། ཚོས་ལུགས་ཚོས་བརྒྱད་ཀྱི་མཐུན་ལས་ཀྱི་ངོད་མདངས་གཅིག་ཏུ་བསྒྲིལ་བ་ལྟར་བའི་དགོངས་པའི་སྙིང་བཅུད་གསར་བུའི་ཚེ་ལོང་། 181-210

— དགེ་བཤེས་འབྱམ་རམས་པ་ངག་དབང་བསྟན་འཛིན་ལ།

གཉིས་པ། ཤད་དོན་རིག་པའི་སྐོར། **211-336**

๗། ལས་སོང་ལྟ་སྐྱབས་མགོན་སྐུ་སྲེད་བཅུ་བཞི་པ་ཚེན་པོ་མཚོ་གི་འཕྲོ་བ་མིའི་རིན་ཐང་གོང་འཕེལ་ཡི་རྒྱབས་ཚེན་མངོན་རྟོགས། 211-222

— ཐོ་ཨ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན།

๙། ཐག་འབྱུང་བའི་ལུགས་ལ་ཐ་སྙད་ཚད་བྱེད་ཡོད་མེད་དབྱད་པ། 223-246

— འབྱམ་རམས་པ་སློབ་དཔོན་བཀའ་ཤིས་ཚེ་རིང་།

๑๐། བསྟན་པ་སྐྱི་བཙན་དང་གང་ཟག་སྡོམ་བཙན་གྱི་རྣམ་བཞག 247-265

— ཚུལ་ཁྲིམ་རྒྱལ་མཚན་རྣམ་ཐོལ།

๑๑། Buddhist Studies: My Perspectives 267-292

— Prof. Dr. Wangchuk Dorjee Negi

๑๒། Two Models of Nondualism in Tibetan Madhyamaka: A Close Analysis of Tsongkhapa and Gorampa's Accounts 293-320

— Dr. Sonam Thakchoe

๑๓། The Concept of Reincarnation in Tibetan Heritage and the legacy of the 14th Dalai Lama. 321-336

— Dr. (Ms.) Kalsang Wangmo

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Artical first page (3C)

ཐུབ་ཆ་དབུས་བོད་ཀྱི་གཞུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ལོ་རྒྱུས་དང་། བཀའ་བསྟན་དུ་བཞུགས་པའི་རྒྱ་ཆ་གཞི་བོད་འགྱུར་ལས་ལེགས་སྒྲུབ་དུ་བསྐྱེད་གསོ་རྗེ་བྱས་སྐོར།

དགེ་བཤེས་རྒྱོ་བཟང་རོ་རྗེ་དབང་ཕྱིད།

༄༅། །རྒྱ་ནག་གོང་མའི་སྲིད་དབང་ཉམས་ནས་རྒྱ་ནག་ནི་སེར་རྒྱལ་ཁབ་ཏུ་གྱུར་ཏེ་རིང་ལོ་སོ་སོའོ་བར་གྱང་མིན་ཉང་ཁྲན་ཏང་གི་ཚེ་ཁོ་ནས་ཀྱང་ཁྲན་ཏང་གི་ཚེ་ཁོ་ནས་རྒྱ་ནག་ཏུ་ཡོད་པ་ཡིན་ཞེས་ཤེས་ཀྱི་རེད། ཁོང་ཚོ་ནི་ཕ་ཚ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅིག་ཡོད་ཀྱང་ཁྱད་པར་ཆེ་ཤོས་ནི་ཁོང་ཚོ་ཡིན་ཏེ་ཁོང་ཚོ་ནི་ཕ་ཚ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཡིན་ཞེས་ཤེས་ཀྱི་རེད། ཁོང་ཚོ

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

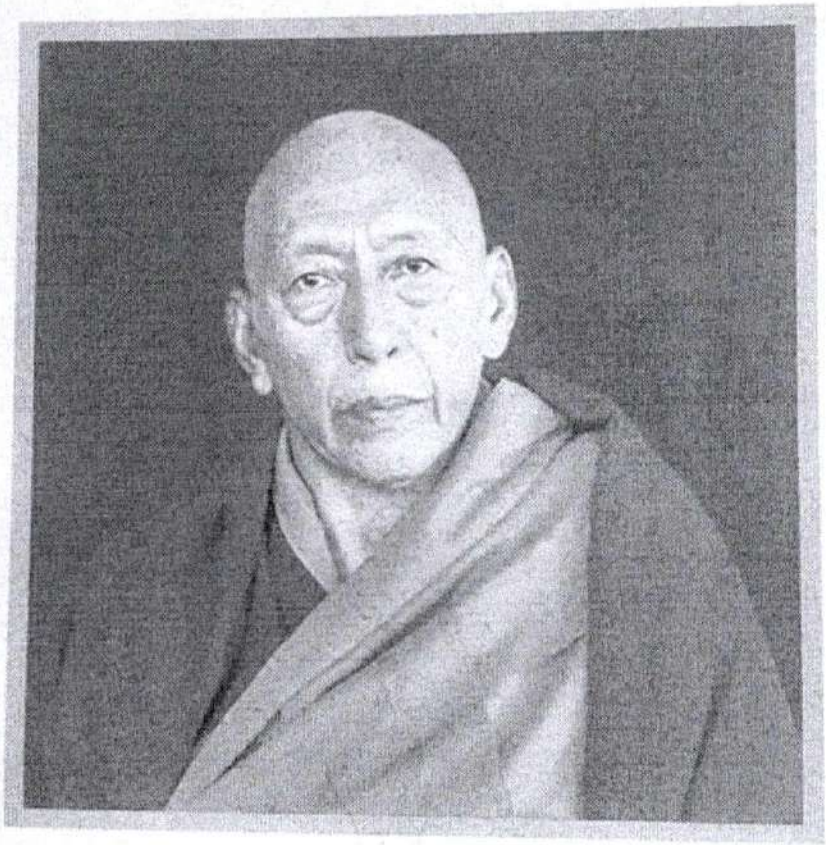
कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

Jampa Samten-96

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-II]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

REGISTRAR
Deemed University
Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

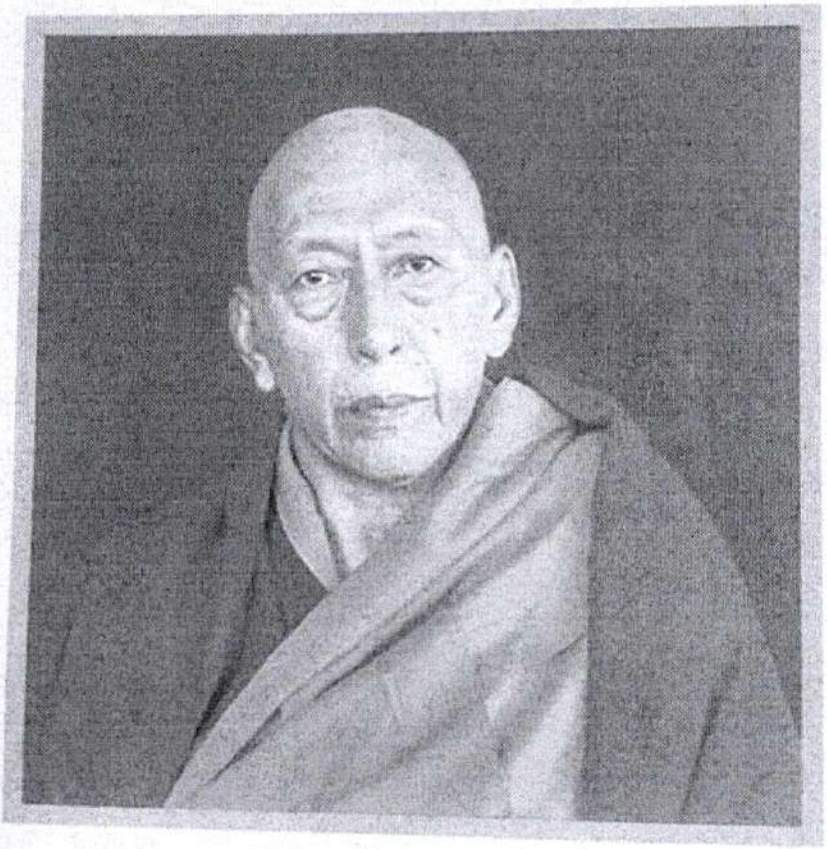


ISBN : 978-81-936254-8-4

Jampa Samten (97)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-II]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

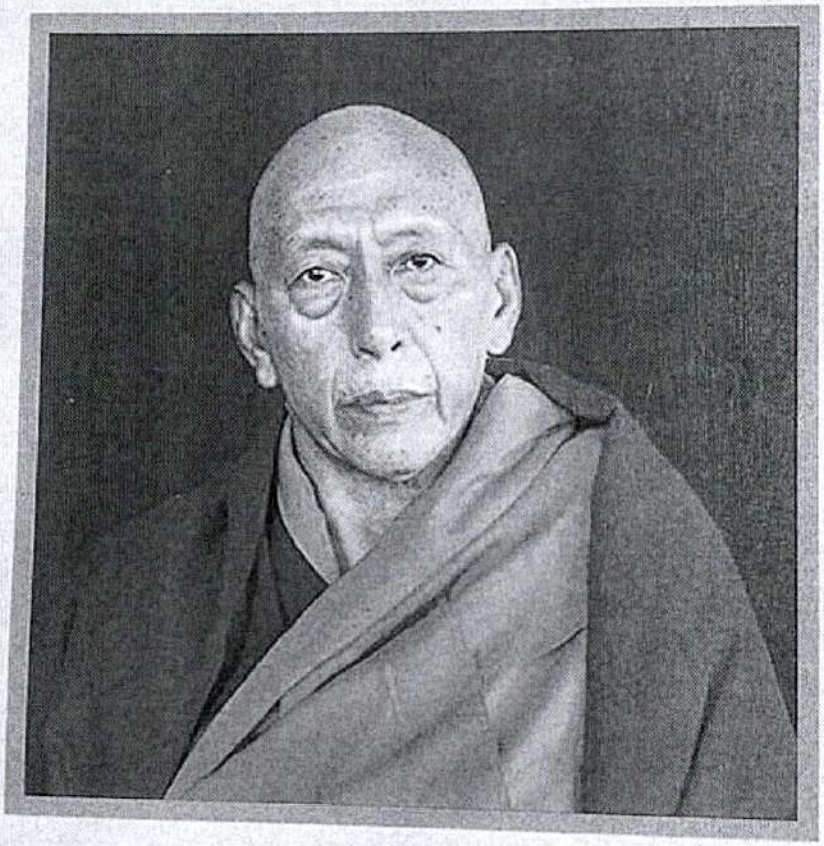
REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi



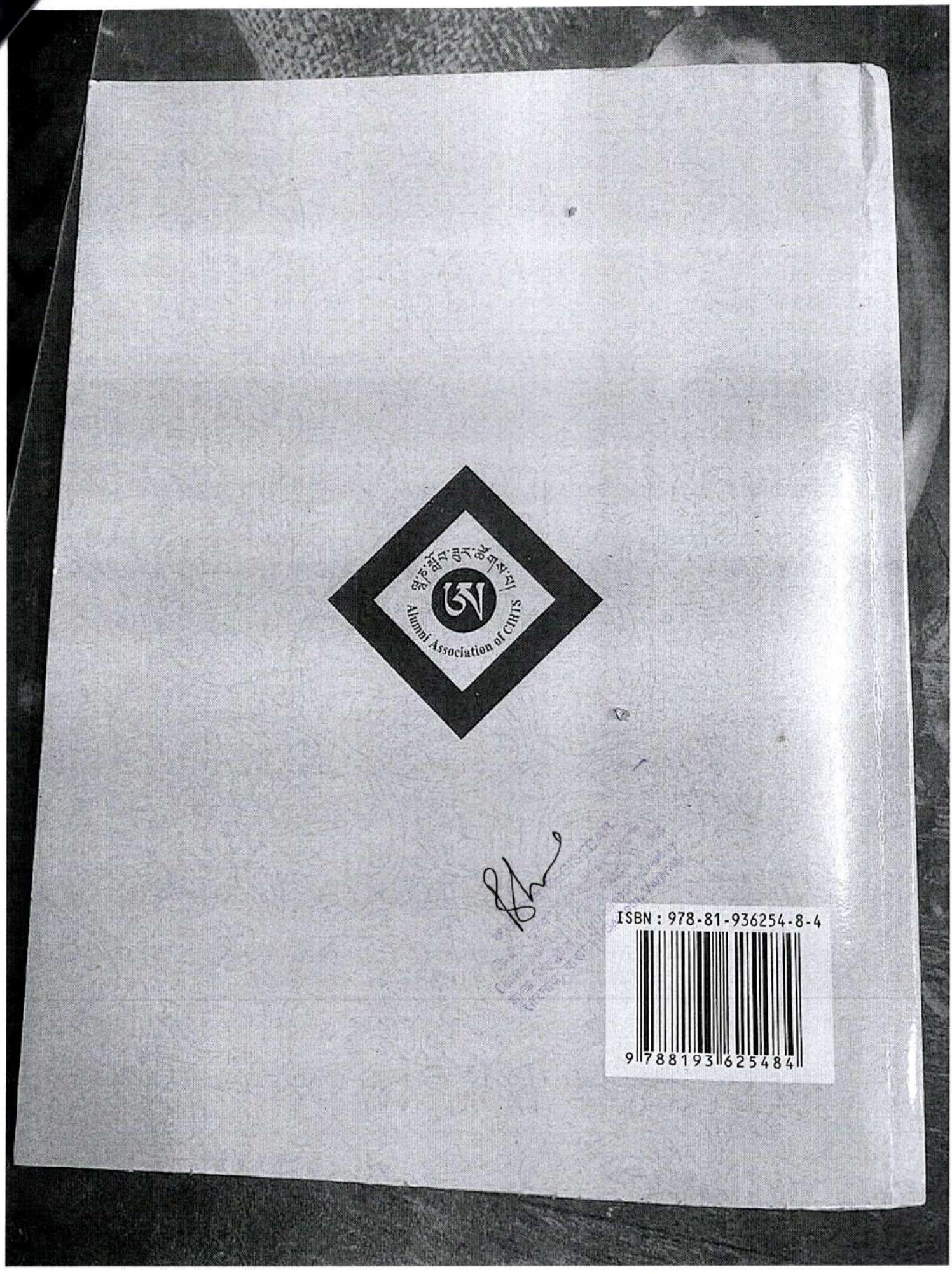
ISBN : 978-81-936254-8-4

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-II]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE



ISBN : 978-81-936254-8-4

ཨཿཀ་དབུས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་དང་། ཨཿཀ་སློབ་ཆུང་ཚོགས་པ། ས་ཀར་ནཱ། ཝཱ་རཱ་ཎ་སཱི།

Central Institute of Higher Tibetan Studies & Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi

ཕྱག་འབྱེར།

ཨཱི། །ཨཿཀ་དབུས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་དང་ཨཿཀ་སློབ་ཆུང་ཚོགས་པ་ཆུང་ནས། ཀྱི་ཧོ་ ༢༠༡༩ ཟླ་ ༡༡ ཚེས་ ༩ ནས་ ༡༡ བར་སོང་དང་དེ་ལ་ག་ཡཁེ་མི་རིགས་ཀྱི་ཚོས་དང་། སྐད་ཡིག ཡོ་རྒྱས། ཤེཁས་བྱང་ཧོག་རྒྱལ་སྲིའི་བཙོ་ཐྲེང་ཚོགས་འདུ་དང་། ཐོ་སློང་དོན་བདུན་ལའི་དགག་ཟིད་དང་། ཤཱསྒྲས་རྗེ་ཟས་གཏོང་ཚེ་དགུང་ལྷའི་མངོན་གཟུང་བསྒོམ་སྐོར་གསུམ་རིང་གི་སྒེ་ཚན་ཞིག་ཏུ་ (ཁོ་ཀྱི་མིང་) _____ མཚོག་ཚོགས་ཞུགས་གནང་སྟེ། ཚོགས་འདུའི་ཁེ་བ། དབྱད་ཚོམས་སྒོག་བྱང་། གོ་སྒྲིག་ཚོགས་བཅར། ཞུས་ན་བཅས་ཀྱི་ཚད་འཛིན་བྱ།

ཀྱི་ཧོ་ ༢༠༡༩ ཟླ་ ༡༡ ཚེས་ ༡༡

བཀའ་ཆྱོད་གྲྭབ་བསྟན་ལྷུང་རིགས།
ཚོགས་གཙོ།
ཨཿཀ་སློབ་ཆུང་ཚོགས་པ།

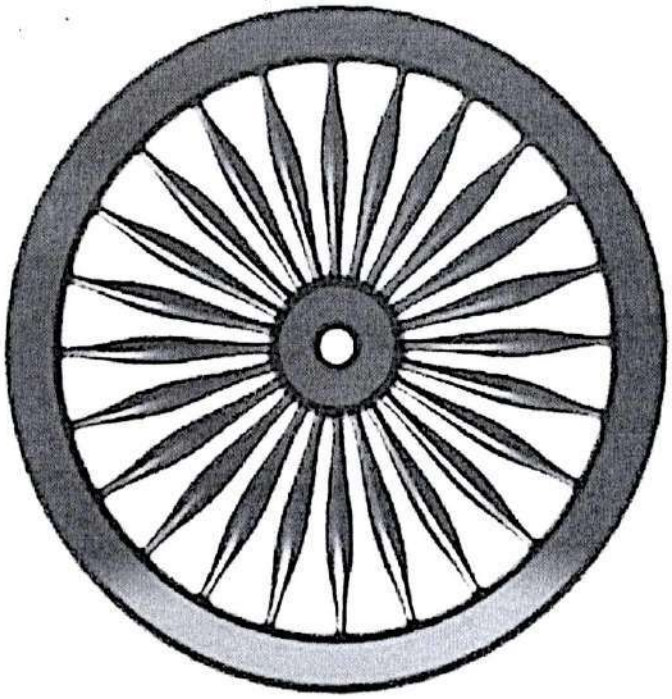
Certificate

This is to certify that Khenpo/Geshe/Lopon/Prof./Dr./Acharya/Mr./Ms. URGYEN *has participated in the 'CIHTS Alumni International Conference on Tibetan & Himalayan Studies', Teaching on Seven-Point Mind Training Text and Felicitation of Prof. Samdhong Rinpoche organized by Central Institute of Higher Tibetan Studies & Alumni Association of CIHTS Sarnath, Varanasi, India from 9-11th November, 2019 as a Chairperson/Paper Presenter/Observer/Organizer.*

11th November, 2019

Thupten Lungrig
President
Alumni Association of CIHTS

Buddhism and Globalisation



Chief-Editor

Ven. P. Seewalee Thero

Editors

Bimalendra Kumar

Ujjwal Kumar

MAHA BODHI SOCIETY OF INDIA

BUDDHISM AND GLOBALISATION

SELECTED PAPERS

CHIEF-EDITOR

VEN. P. SEEWALEE THERO

EDITORS

BIMALENDRA KUMAR

UJJWAL KUMAR

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

MAHA BODHI SOCIETY OF INDIA

BUDDHAGAYA

BUDDHISM AND GLOBALISATION
First Published: 2019, Kolkata
© Maha Bodhi Society of India
ISBN: 978-81-935234-2-1
Price: 1200 INR

Published by:
Maha Bodhi International Media & Publishers Division,
Maha Bodhi Society of India,
Headquarters: Sri Dharmarajika CHetiya Vihara,
4A, Bankim Chatterjee Street,
Kolkata- 700073,
India.
Tel: +91-33- 22415241/ 65364328
Email: mssihq@gmail.com
Website: www.mbsiindia.org

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Varanasi

Printed at Rohini Nandan, Kolkata
Email: rohininandanpub@gmail.com

CONTENTS

Chief-Editor Remarks.....VII
Editors Remarks.....XI
Contributors.....XIII

1. ASOKA WAS THE FIRST TO GLOBALISE DHAMMA: THE MOST INNOCUOUS AND SUBLIME KIND OF GLOBALISATION.....01
Angraj CHAUDHARY

2. ANAGARIKA DHARMAPALA'S MOVEMENT IN BENGAL.....11
Hemendu Bikash CHOWDHURY

3. THE KNOWLEDGE PRODUCTION ON BUDDHIST NUNS IN SRI LANKA: CHANGES AND CHALLENGES.....23
Gihani DE SILVA

4. SONGDHAMMAKALYANI BHIKKHUNĪ ĀRĀMA: AN ECO-TEMPLE.....35
DHAMMANANDA

5. BUDDHISM AND POST-MODERNITY VIS-A-VIS AMBEDKARITE BUDDHISM.....43
Pradeep P. GOKHALE

6. THE EVOLUTION OF BUDDHISM INTO A GLOBAL RELIGION.....57
Michael HARRIS

7. GAṆAPATI IN THE BUDDHIST TRADITIONS OF TIBET AND MONGOLIA.....71
Andrea LOSERIES

8. BUDDHIST PHILOSOPHY AND THE RUBAIYYAT OF OMAR KHAYYAM: A COMPARATIVE STUDY.....89
Md. SHAKEEL

9. HOSSŌ SECT OF JAPANESE BUDDHISM IN THE ERA OF GLOBALISATION 99
Animesh PRAKASH

10. UNDERSTANDING CAMBODIAN BUDDHISM.....113
C. Upender RAO

Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

कुषाणों की ताम्र-मुद्राएं





शिवाशं नित्यं शिवं वन्दते

डॉ. कौशलेश सिंह

ग्रन्थ के विषय में

चीन के कान-सू सीमा-प्रान्त में ई. पू. द्वितीय शताब्दी के आरम्भिक चरण में ता यू-ची नामक एक यायावर जाति निवास करती थी। वे प्रव्रजन करते हुए बैक्ट्रिया अर्थात काबुल-घाटी के क्षेत्र (अमू और सीर दरिया के मध्यवर्ती भाग) में पहुँचे। आरम्भ में वे पाँच राज्यों (भागों) में विभक्त हो गये थे। लगभग एक सौ वर्षों बाद कुजुल कदफिसेस नामक यवगू (अर्थात् अगुआ) ने अन्य राज्यों का एकीकरण करते हुए अपने वंश को 'कुषाण-राजवंश' के रुप में प्रतिस्थापित किया। इस राजवंश के अनेक नरेशों ने भारत वर्ष में अपना साम्राज्य-विस्तार किया। वे अपने विस्तृत साम्राज्य पर दीर्घ अवधि तक शासन किये।

इस वंश के सभी नरेश यथाः कुजुल कदफिसेस, विम कदफिसेस, कनिष्क प्रथम, हुविष्क, वासुदेव प्रथम, कनिष्क तृतीय और वासुदेव द्वितीय एक ही 'कुषाण-वंशावली' से सम्बन्धित थे। इस तथ्य की पुष्टि मथुरा अभिलेख (उत्तर प्रदेश, भारतवर्ष), रबतक अभिलेख (बघलान प्रान्त, अफगानिस्तान) के विवरण, उक्त नरेशों द्वारा प्रचलित मुद्राओं पर चित्रित उनकी आकृति, वस्त्राभूषण और मुद्रा-प्रचलन के सातत्य से होता है।

उक्त नरेशों द्वारा प्रचलित ताम्र और स्वर्ण-मुद्राएं बहुतायत रूप में प्राप्त हुई हैं। कुछ रजत-मुद्राएं भी प्राप्त हुई हैं लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है। इस पुस्तक में इन सभी कुषाण नरेशों द्वारा प्रचलित ताम्र-सिक्कों के प्रकारों, उप प्रकारों, भार-मान, कला एवं धर्म, उत्कीर्ण लेखों एवं प्रतीक-चिन्ह के विभिन्न स्वरूपों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN - 978-93-87199-41-5
9 7 8 9 3 8 7 1 9 9 4 1 5
ISBN - 978-93-87199-41-5
मूल्य : 725.00 रुपये

प्रकाशक :

कला प्रकाशन

बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682
Email : kalaprakashanvns@yahoo.in

© लेखक
डॉ० कौशलेश सिंह

प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये सभी तथ्य लेखक के हैं, प्रकाशक का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। विवाद की स्थिति में लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।

प्रथम संस्करण : 2019
ISBN : 978-93-87199-41-5
मूल्य : 725.00/- रुपये

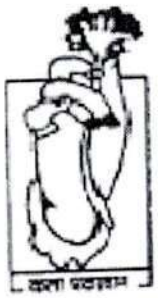
REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :
कला कम्प्यूटर मीडिया
बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682

मुद्रक :
महावीर प्रेस
भेलूपुरा, वाराणसी

कुषाणों की ताम्र-मुद्राएं

लेखक
डॉ० कौशलेश सिंह



कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

2019

कला प्रकाशन

बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5

विषय-सूची

आभार-ज्ञप्ति iii

भूमिका iv-vi

प्रथम अध्याय : **कुषाण-राजवंश का संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास** 1-28

स्रोतों का स्वरूप, यू-ची प्रव्रजन, यू-ची की पाँच शाखाएँ, मिऔस, कुजुल कदफिसेस, विम कदफिसेस, कनिष्क प्रथम, कनिष्क प्रथम के उत्तराधिकारी—वासिष्क एवं कनिष्क (द्वितीय), हुविष्क, वासुदेव प्रथम, वासुदेव प्रथम के उत्तराधिकारी—कनिष्क तृतीय एवं वासुदेव द्वितीय

द्वितीय अध्याय : **कुजुल कदफिसेस की ताम्र-मुद्राएं** 29-52

पहला - हरमयस एवं कुजुल कदफिसेस-प्रकार
प्रथम वर्ग, द्वितीय एवं तृतीय वर्ग

दूसरा - बैल एवं ऊँट-प्रकार

तीसरा - मुकुटमय शिर एवं सिंहासनारूढ़ राजा (या रोमन)-प्रकार

चौथा - शिरस्त्राणयुक्त शिर एवं मकदूनियम सैनिक-प्रकार

पाँचवाँ- राजा का ऊर्ध्वकाय चित्र एवं पैलास-प्रकार

छठाँ - बैठा हुआ राजा एवं खड़ा ज्यूस-प्रकार

तृतीय अध्याय : **विम कदफिसेस की ताम्र-मुद्राएं** 53-77

(सहशासक/युवराज कालीन मुद्राएं)

प्रथम श्रेणी : पशु-प्रकार की ताम्र-मुद्राएं

द्वितीय श्रेणी : नामहीन विरुदाङ्कित ताम्र-मुद्राएं

पहला - शिरस्त्राणयुक्त राजा का ऊर्ध्वकाय चित्र एवं घुड़सवार-प्रकार

दूसरा - खड़ी मानवाकृति एवं लेखहीन-प्रकार

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

तीसरा- घुड़सवार राजा एवं खड़ा ज्यूस-प्रकार
चौथा - राजा का ऊर्ध्वकाय चित्र एवं ज्यूस-प्रकार
पाँचवाँ- द्विमुखी ऊर्ध्वकाय चित्र एवं आहुति देते हुए राजा-प्रकार
छठाँ - किरणें युक्त मुकुटमय ऊर्ध्वकाय चित्र एवं घुड़सवार-प्रकार
तृतीय श्रेणी : नामयुक्त विरुदाङ्कित ताम्र-मुद्राएं
पहला - आहुति देते हुए राजा एवं नन्दी के साथ शिव-प्रकार
दूसरा - राजा का ऊर्ध्वकाय चित्र एवं अर्द्धनारीश्वर-प्रकार

चतुर्थ अध्याय : **कनिष्क प्रथम की ताम्र-मुद्राएं** 78-102

पहला वर्ग : आहुति देते हुए राजा तथा ग्रीक भाषा एवं ग्रीक लिपि में लेखाङ्कित मुद्राएं—
पहला : हेलियोस-प्रकार, दूसरा : ननैया-प्रकार
दूसरा वर्ग : आहुति देते हुए राजा तथा शक भाषा एवं ग्रीक लिपि में लेखाङ्कित मुद्राएं—
पहला : मीरो-प्रकार, दूसरा : माओ-प्रकार, तीसरा : नाना-प्रकार, चौथा : अथसो-प्रकार, पाँचवाँ : ओडो-प्रकार, छठाँ : ओइशो-प्रकार, सातवाँ : बोडो-प्रकार, आठवाँ : आरदोक्षो-प्रकार
तीसरा वर्ग : सिंहासनारूढ़ राजा तथा शक भाषा एवं ग्रीक लिपि में लेखाङ्कित मुद्राएं—
पहला : ओइशो-प्रकार, दूसरा : नाना-प्रकार, तीसरा : माओ-प्रकार
चौथा वर्ग : राजा का ऊर्ध्वकाय चित्र तथा शक भाषा एवं ग्रीक लिपि में लेखाङ्कित मुद्राएं—नाना-प्रकार

पंचम अध्याय : **हुविष्क की ताम्र-मुद्राएं** 103-137

पहला वर्ग : गजारोही राजा;

पहला : मीरो-प्रकार, दूसरा : माओ-प्रकार, तीसरा : अथसो-प्रकार, चौथा : ओडो-प्रकार, पाँचवाँ : ओइशो-प्रकार, छठाँ : नाना-प्रकार, सातवाँ : फैरो-प्रकार, आठवाँ : आरदोक्षो-प्रकार, नौवाँ : हेराक्लीज़-प्रकार, दसवाँ : गणेश-प्रकार, ग्यारहवाँ : बुद्ध-प्रकार
दूसरा वर्ग : सिंहासन (काऊच) पर बैठा राजा;
पहला : मीरो-प्रकार, दूसरा : माओ-प्रकार, तीसरा : अथसो-प्रकार, चौथा : ओइशो-प्रकार, पाँचवाँ : नाना-प्रकार
तीसरा वर्ग : सिंहासन पर पालथी मारकर (क्रास लेग्ड) बैठा राजा;
पहला : मीरो-प्रकार, दूसरा : माओ-प्रकार, तीसरा : अथसो-प्रकार, चौथा : ओडो-प्रकार, पाँचवाँ : ओइशो-प्रकार, छठाँ : नाना-प्रकार, सातवाँ : आरदोक्षो-प्रकार
चौथा वर्ग : राजा का ऊर्ध्वकाय चित्र;
पहला : नाना-प्रकार
पाँचवा वर्ग : अपने बायीं ओर को देखते हुए सिंहासनारूढ़ राजा;
पहला : मीरो-प्रकार, दूसरा : माओ-प्रकार
छठाँ वर्ग : दोनों हाथ ऊपर उठा कर सिंहासन पर बैठा राजा;
पहला : फैरो-प्रकार, दूसरा : अथसो-प्रकार
सातवाँ वर्ग : दोनों पैर एक तरफ मोड़ कर सिंहासनारूढ़ राजा;
पहला : मीरो-प्रकार
आठवाँ वर्ग : अपने बायीं ओर को सिंहासनारूढ़ राजा;
पहला : मीरो-प्रकार

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies

षष्ठम अध्याय :	**वासुदेव प्रथम की ताम्र-मुद्राएं**	138-143
	आहुति देते हुए राजा एवं नन्दी के साथ शिव-प्रकार	
	आहुति देते हुए राजा एवं आरदोक्षो-प्रकार	
सप्तम अध्याय :	**वासुदेव प्रथम के उत्तराधिकारियों की ताम्र-मुद्राएं**	144-150
	कनिष्क तृतीय की ताम्र-मुद्राएं	
	आहुति देते हुए राजा एवं आरदोक्षो-प्रकार	
	आहुति देते हुए राजा एवं नन्दी के साथ शिव-प्रकार	
	वासुदेव द्वितीय की ताम्र-मुद्राएं	
	आहुति देते हुए राजा एवं नन्दी के साथ शिव-प्रकार	
	सिंहासनारूढ़ राजा एवं आरदोक्षो-प्रकार	
	लेख एवं प्रतीक-चिह्न-प्रकार की ताम्र-मुद्राएं	
अष्टम अध्याय :	**कुषाणों की ताम्र-मुद्राओं का भार-मान**	151-164
नवम अध्याय :	**कला एवं धर्म**	165-186
दसम अध्याय :	**मुद्रा-लेखों का लिपिशास्त्रीय अध्ययन, प्रतीक-चिह्न विशिष्ट फलक**	187-192
	संक्षिप्त संकेत-सूची	193-194
	सन्दर्भित ग्रन्थ-सूची	195-206
	चित्रावली (फलक)	207-218

*

प्रथम अध्याय

कुषाण-राजवंश का संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास

स्रोतों का स्वरूप-

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में कुषाण-राजवंश के इतिहास का महत्वपूर्ण स्थान है। इस राजवंश के विषय में जानने के लिए उनका पूर्व का इतिहास जानना अति आवश्यक है। वास्तव में, "कुषाण" मध्य एशिया में चीन के कान-सू सीमा-प्रान्त में लगभग ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी के प्रथम चरण में निवास करने वाली "महान यू-ची" नामक जाति के एक भाग थे। वे प्रव्रजन करते हुए बैक्ट्रिया में स्थापित हुए। कालान्तर में वे भारतवर्ष में प्रविष्ट हुए और दीर्घ काल तक शासन किये।

कुषाणों का राजनीतिक इतिहास जानने के लिए विस्तृत एवं स्पष्ट स्रोतों का अभाव है। कुछ प्राचीन चीनी ग्रन्थों में इनका उल्लेख अवश्य प्राप्त हुआ है, परन्तु वे विवरण क्रमिक रूप में नहीं, बल्कि खण्डित एवं सन्दर्भित रूप में हैं। इन विवरणों में भी कुछ समरूपता एवं अधिकांश विभिन्नता लिये हुए हैं। इसके अतिरिक्त चीनी व्याकरण को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न ढंग से चीनी ग्रन्थों का अनुवाद किया है।

यूनानी लेखकों के कुछ विवरण इनके इतिहास को जानने में आंशिक रूप से सहायक हैं। वास्तव में, उन्होंने शकों का उल्लेख किया है जिसमें कुषाणों का उल्लेख प्रासंगिक रूप से आया है। इन यूनानी विवरणों में कुछ तो चीनी उल्लेखों से साम्यता रखते हैं, परन्तु अधिकांश विरोधात्मक सूचना प्रस्तुत करते हैं।

कुछ साहित्यिक एवं अभिलेखीय साक्ष्य प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से कुषाणों का इतिहास जानने में सहायक सिद्ध होते हैं, परन्तु इनके अधिकांश विवरण उलझनों से परिपूर्ण होने के कारण विवाद रूपी दलदल में फँसे हुए हैं यथा : खलतक अभिलेख से जहाँ एक ओर कुषाणों की राज-वंशावली पर स्पष्ट रूप से प्रकाश पड़ता है एवं अनेक पुरानी मान्यताओं

CDISTRAR Central Institute of Indian Studies Sanskrit, Varanasi



कला-प्रकाशन
बी. 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी
बी. एच. यू., वाराणसी-5

ISBN - 978-93-87199-41-5



ISBN - 978-93-87199-41-5
मूल्य : 725.00 रुपये

Huma Kayoom - 101

Quality Concerns in Education

Editors

D. Balaramulu
Ravindranath K. Murthy
Sreenivasa Dasu P
G. Balaji

Central Institute of Higher Tibetan Studies
सीन्ड हिर...
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Quality Concerns in Education

Editors

D. Balaramulu
Ravindranath K. Murthy
Sreenivasa Dasu P.
G. Balaji

CANADIAN
Academic Publishing

Canadian Academic Publishing
81, Woodlot Crescent, Etobicoke, Toronto,
Ontario, Canada.
Postal Code - M9W 6T3
www.canadapublish.com

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Quality Concerns in Education

©Editors

Disclaimer: We do not warrant the accuracy or completeness of the information, text, graphics, links or other items contained in this book. We accept no liability for any loss, damage or inconvenience caused as a result of reliance on such content. Only the author is the authority for the subjective content and may be contacted.
Any specific advice or reply to query on any content is the personal opinion of the author and is not necessarily subscribed by anyone else.

All Rights Reserved: No part of this book shall be reproduced, reprinted or translated for any purpose whatsoever without prior written permission of the author. All disputes are subject to Hyderabad Jurisdiction only.

First Edition: 2017

ISBN: 978-1-926488-54-7

Published by
Canadian Academic Publishing
81, Woodlot Crescent, Etobicoke, Toronto,
Ontario, Canada.
Postal Code - M9W 6T3
www.canadapublish.com
Printed in India

Cover Design
K. Sudhakara Chary
email: ksudhakarachary@gmail.com

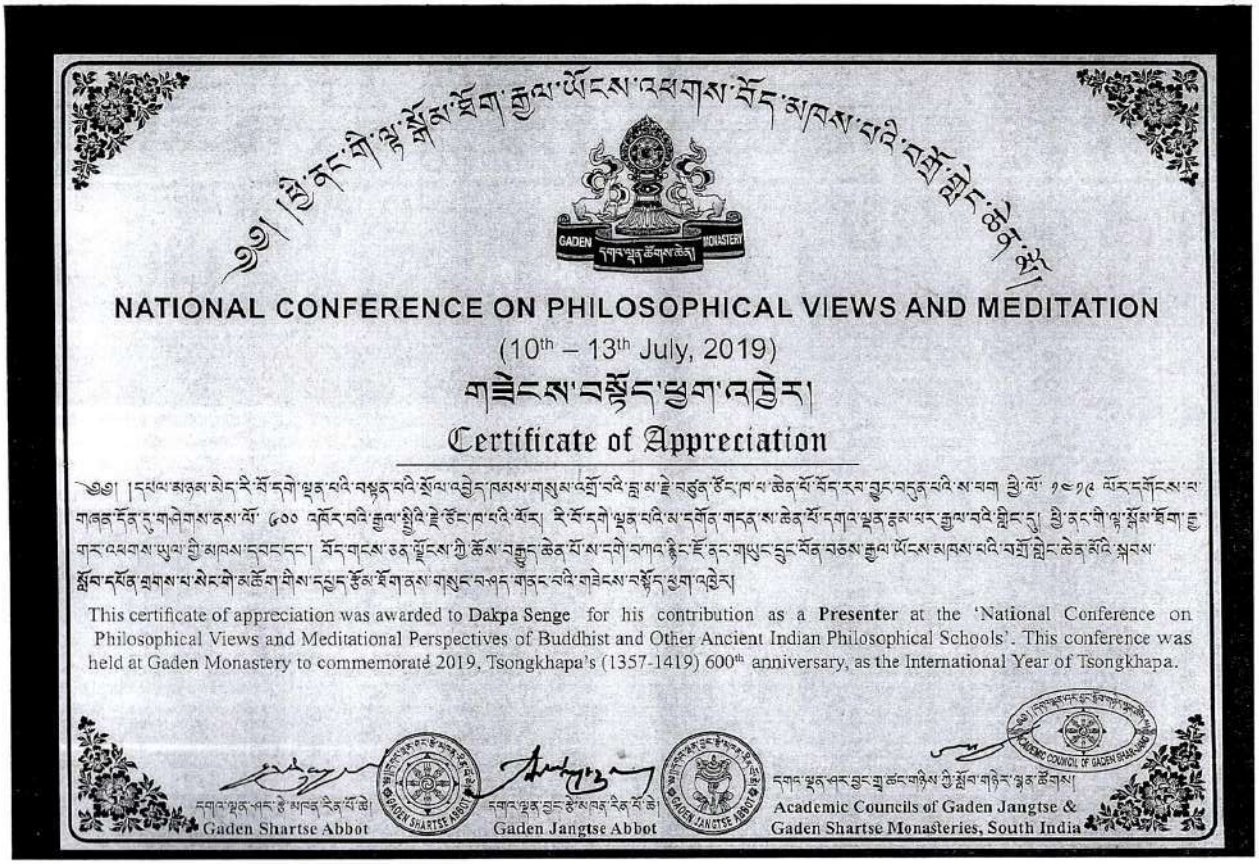
REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Contents

Chapter	Name	Title	Page No
1	**Sujatha & Dr.Jayamma**	Professional Ethics Among Teaching Community – A Step Stone To Gain Quality	1-3
2	**Dr. Jayanna C.T**	Evaluation Of The Factors That Determine Quality In Higher Education	4-5
3	**Dr.P.B.Kavyakishore**	A Birds View On Issues And Challenges Of Higher Education In India	6-8
4	**A. Saraswathi**	Higher Education In India –Issues, Challenges And Suggestions	9-11
5	**Dr. A. Subramanian**	Methods Of Privatization In Indian Higher Education	12-15
6	**Dr. I. Victoria Susan**	Role Of The Teacher In Improving The Quality Of Higher Education	16-17
7	**Y. Ganga Bhavani**	Impact Of Emotional Intelligence And Teaching Competence On Male And Female Teachers	18-20
8	**Tonia Grace Ganta**	Influence Of Mother Tongue On English Communication Skills At Different Levels	21-23
9	**Nandhini Nanjappan**	Language And Social Inequalities In School Education	24-26
10	**Huma Kayoom**	Incorporating Gender Lens In Educational Research	27-29
11	**B.Ravinder Goud**	Ethics And Values In Modern Education	30-31

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Dakpa Senge — 102



GADEN MONASTERY

NATIONAL CONFERENCE ON PHILOSOPHICAL VIEWS AND MEDITATION

(10th – 13th July, 2019)

བཀའ་དྲིན་ཡིག་ཆ།

Certificate of Appreciation

This certificate of appreciation was awarded to **Dakpa Senge** for his contribution as a **Presenter** at the 'National Conference on Philosophical Views and Meditational Perspectives of Buddhist and Other Ancient Indian Philosophical Schools'. This conference was held at Gaden Monastery to commemorate 2019, Tsongkhapa's (1357-1419) 600th anniversary, as the International Year of Tsongkhapa.

Gaden Shartse Abbot

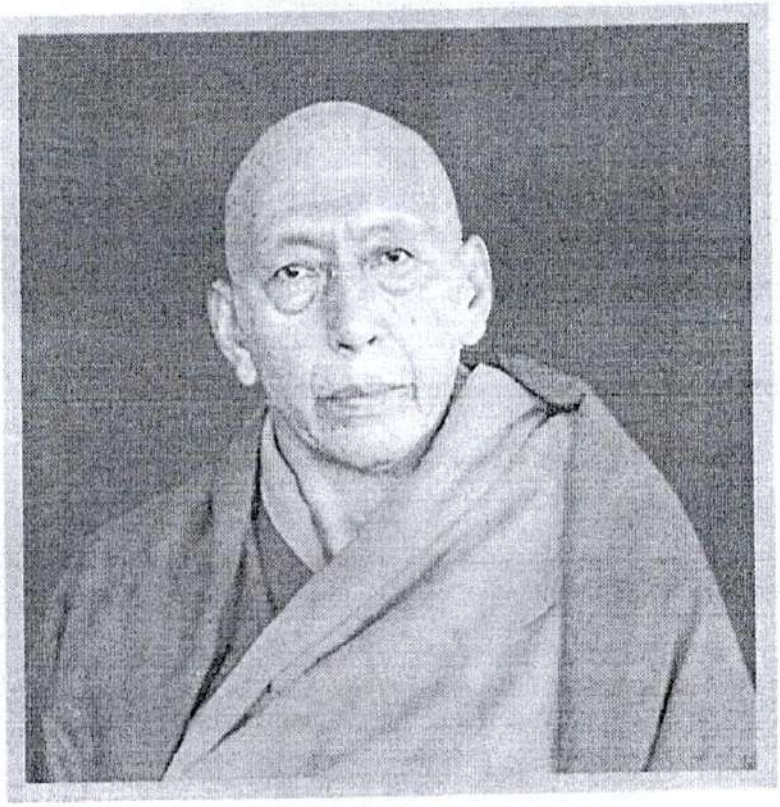
Gaden Jangtse Abbot

Academic Councils of Gaden Jangtse & Gaden Shartse Monasteries, South India

Ngawang Tenphel — 103

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

๗) ཐུབ་ཆ་དབུས་པོད་ཀྱི་གཞུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ལོ་རྒྱུས་དང་། བཀའ་བསྟན་དུ་བཞུགས་པའི་རྒྱ་གཞུང་པོད་འགྱུར་ལས་ལེགས་སྦྱར་དུ་བསྒྲིགས་གསོ་རྗེ་བྱས་སྐོར། 99-180

— དགེ་བཤེས་འབྱམ་རམས་པ་བློ་བཟང་རྡོ་རྗེ་རབ་གྲོངས།

๘) ཚོས་ལུགས་ཚོས་བརྒྱུད་ཀྱི་མཐུན་ལམ་གྱི་འོད་སདངས་གཅིག་ཏུ་བསྒྲིལ་བ་ལ་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པའི་སྙིང་གསར་བུའི་མེ་ལོང་། 181-210

— དགེ་བཤེས་འབྱམ་རམས་པ་ངག་དབང་བསྟན་འཛིན་པ།

གཉིས་པ། ནང་དོན་རེག་པའི་སྐོར། **211-336**

๑) ལོངོང་ས་ལས་སྐྱབས་མགོན་སྐུ་སྒེང་བཏུ་བཞེ་པ་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་འཕྲོ་བ་མིའི་རིན་ཐང་ཐོང་འཛེལ་གྱི་རྟགས་ཆེན་མངོན་རྟོགས། 211-222

— སྒོ་ཁ དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན།

๑) ཐལ་འགྱུར་བའི་ལུགས་ལ་ཐ་སྙད་ཚད་བྱེད་ཡོད་མེད་དཔྱད་པ། 223-246

— འབྱམ་རམས་པ་སློབ་དཔོན་བཀའ་ཕྱེས་ཆེ་རིང་།

๑) བསྟན་པ་སྤྱི་བཙན་དང་གང་ཟག་སློས་བཙན་གྱི་རྣམ་བཞག 247-265

— ཡྃདྷ་རྒྱལ་མཚན་རྣམ་གྲོལ།

๖) Buddhist Studies: My Perspectives 267-292
— Prof. Dr. Wangchuk Dorjee Negi

๗) Two Models of Nondualism in Tibetan Madhyamaka: A Close Analysis of Tsongkhapa and Gorampa's Accounts 293-320
— Dr. Sonam Thakchoe

๘) The Concept of Reincarnation in Tibetan Heritage and the legacy of the 14th Dalai Lama. 321-336
— Dr. (Ms.) Kalsang Wangmo

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

།།ཆོས་ལུགས་ཆོས་བརྒྱད་ཀྱི་མཐུན་ལས་གྲི་འོད་མདངས་གཅིག་ཏུ་བསྡིལ་
བ་ལྟ་བུའི་བའི་དགོངས་པའི་སྐྱེད་བཅུད་གསངས་བྱའི་ཚེ་འོང་བཞུགས་སོ།།

ཅག་དབང་བསྟན་འཛིལ།

ཁམས་གསུམ་ཆོས་རྗེ་རིས་མེད་ཆོས་ལུགས་གཅོ།།
བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་འཛོ་བ་བརྩེ་བས་བསྐྱངས།།
ཐུ་ལཆུ་ཡི་གཅེས་ནོར་སྤ་བཏུན་བཙུགས།།
འཛམ་གླིང་མཛེས་བྱེད་ལྟར་ཤཀིང་ཏུ་ཆེན་པོར་འདུག།
གནའ་དེང་ཤེས་བྱ་གྱུར་ལ་མངའ་བརྩེས་ཤིང་།།
རིས་མེད་འཛོ་ལ་ཐོགས་མེད་སྙིལ་མཛད་པ།།
ལྷུན་པོ་ལྷར་བརྗིད་ཤུགྲིའི་དགེ་སྦྱོང་ཆེ།།
ཟབ་གདོང་བློ་མའི་ཞབས་རྟལ་སྤྱི་བོས་འདུག།
ཤཀྱ་བཀྲས་ཆོས་ལུགས་མཐུན་སྒྲིལ་རྩ་བར་འཛུགས།།
སྨོན་བས་མདོ་རྒྱུད་དུ་མར་གསལ་གསུངས་མོད།།
སྙིགས་དུས་ཤིན་ཏུ་བེད་ཡ་བའི་དུས།།
ཆོས་ལུགས་མཐུན་མདོའི་ལུང་རིགས་འདི་ལྟར་གཟེགས།།

ཞེས་ཡ་ང་བའི་གནས་སྐངས་འདིར་བཀའ་དྲིན་བླ་ལྟག་ཏུ་མཆིས་པའི་ཤ་རྒྱལ་བ་ཡབ་སྲས་
གཉིས་ལ་བསྟོད་ཐུག་དང་བརྩམ་པར་དམ་བཅའི་བསྟུན་བསྡུས་ཏེ་འཚང་བྱ་ཞིང་ལ་འཛུག་པ་ལ།
ཤསོང་ས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་མི་མང་སྤྱི་དང་ཤེས་རིག་གི་བསྟེ་གནས་སྣ་ཚོགས་ཤེས་ག་ལ་
ཐུགས་བསྐྱེད་དམ་བཅའ་གསུམ་མམ་བཞི་སྟེ། ༡ཞེས་ཞེག་ཡིན་པའི་ཚ་ནས་མིའི་ནུས་སྟོབས་
གོང་འཕེལ་དང་། ༢ཞེས་པ་ཞེག་ཡིན་པའི་ཚ་ནས་ཆོས་ལུགས་མཐུན་སྒྲིལ་གནང་རྒྱུ་དང་།
༣ཞེས་པ་ཞེག་ཡིན་པའི་ཚ་ནས་བོད་པའི་ཆོས་དང་རིག་གནུང་སྤ་བཏུན་དང་འགོར་ཡུག་སྤུང་
སྐྱོབ་གནང་རྒྱུ། ༤ཞེའམགས་ཡུལ་དུ་ན་ལབྟ་ཡི་མེམས་ཁམས་ཕྱུག་བྱེད་སྐད་གསོ་གནང་རྒྱུ་ལ་

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

Ngawang Tenphel 104

ཨཨ། ཇི་བོ་དགེ་ལྡན་བའི་བྱང་བའི་ཐོག་རྒྱལ་ཡོངས་བཙོ་སྒྲིང་ཚོགས་འདུ་ཆེན་མོའི་དབུད་རྩོམ་ཡིག་བཤུས།

དཔལ་ཨན་ཨ་མེད་ཇི་བོ་དགེ་ལྡན་བའི་བསྟན་བའི་སྲོལ་འབྱེད་རྗེ་ཙོང་ཁ་པ་ཆེན་པོ་དགོངས་པ་གཞིན་དོན་དུ་གཅེག་ཤས་ནས་ལོ་ངོ་ ༨༠༠ འགོར་བའི་བཀའ་བཏོན་རྗེས་རྒྱུན་ཕྱི་ཚུལ་དུ་གོ་སྒྲིག་ཞུས།

ཕྱི་ལོ་ ༢༠༡༩ ལྕགས་ཡོས་ ༣ ནས་ ༥

National Seminar on
History of Gelug Tradition and its Institutions
(Collection of Articles)

3-5 NOVEMBER 2019



གོ་སྒྲིག་པ། དགེ་ལྡན་ཆོད་གཞུང་ཚོགས།
ལྟ་རྩ་དབུས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ཡག་སློབ་གཉེར་ཁང་། ས་ནཐ། ཝ་ར་ན་སི།

Organized by Gelug Sampradaya

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

ཀ།། །རེ་བོ་དགེ་ལྡན་པའི་བླུང་བའི་ཐོག་རྒྱལ་ཡོངས་བཙོ་ལྡིང་
ཚོགས་འདུ་ཆེན་མོའི་དབྱད་རྩོམ་ལག་བྱ།

དཀར་ཆག

ཨང་། དབྱད་རྩོམ་ཁག་གི་བརྗོད་གཞི།	ཤོག་ཨང་།
༡ རྗེ་བློ་མ་ཅོང་ཁ་པ་ཆེན་རེའུའི་རྣམ་ཐར་དང་འབྲེལ་བའི་རེ་བོ་དགེ་ལྡན་པའི་བླུང་བའི་ལུས་རྣམ་བཞག	དགེ་བཤེས་བློ་བཟང་རྒྱལ་མཚན། 1-90
༢ གངྒན་སྐ་ཆེན་རོ་དབང་ལྡན་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་གློང་གི་བླུང་ཚུལ།	དགེ་བཤེས་བསྟན་འཛིན་ཆོར་བྱ། 91-116
༣ གངྒན་སྐ་ཆེན་རོ་དབལ་ལྡན་འབྲས་དཀར་སྤུངས་པའི་བླུང་ཚུལ།	དགེ་བཤེས་ངག་དབང་དབང་འདུས། 117-140
༤ གངྒན་སྐ་ཆེན་རོ་སེ་ར་ཞེག་ཆེན་གློང་གི་བླུང་ཚུལ།	དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསྟན་འཛེལ། 141-168
༥ ཆོས་སྐྱེ་ཆེན་རོ་བཀྲ་ཤིས་ལྷུན་རོའི་བླུང་ཚུལ།	དགེ་བཤེས་ཤེ་རིང་འཇིགས་མེད་དབང་རྒྱལ། 169-214
༦ གསང་སྔགས་རིག་པ་འཇོག་པ་དབལ་ལྡན་སྨད་རྒྱུད་གྲྭ་ཚང་གི་བླུང་ཚུལ།	དགེ་བཤེས་བློ་བཟང་དབང་གྲགས། 215-216
༧ གསང་སྔགས་རིག་པ་འཇོག་པ་དབལ་ལྡན་སྨོད་རྒྱུད་གྲྭ་ཚང་གི་བླུང་ཚུལ།	དགེ་བཤེས་བློ་བཟང་ཚུལ་ཁྲིམས། 217-236

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

དེས་བཤེས་ངག་དབང་བསྟན་འཛིལ།
ཤུ་ཀ་དགུས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་།

བྱ་མ་རྒྱལ་བ་སྐས་དང་བཅས་པར་བྱུག་འཚལ་ཞིང་སྐྱབས་སུ་མཆི་བོ།།
བརྩེ་བ་ཆེན་པོས་རྩེ་ས་སུ་གཟུང་དུ་གསོལ།

བློ་རིག་བཀྲ་ཤིང་ལྷུན་པོ་ལྷར་བརྩེ་དགྱེས།
བཟང་ཞིང་དཔལ་ལྡན་དབྱངས་མཚོག་བསྟུས་པའི་གསུང་།།
གྲགས་ཤིང་བྱུབ་པའི་མཁྱེན་བརྩེ་ཀུས་པའི་ཐུགས།།
པ་ཀྱའི་གཙུག་རྒྱན་ཅོང་ཁ་པ་ལ་འདུད།།

བྱམས་དང་སྙིང་རྗེའི་ངོ་བོར་འཕྲུངས་པའི་ཐུགས།།
ཆེན་པོའི་གདུང་ཞེབས་མཛད་འཕེན་མཁས་ཁྲིན་ཐུབ་སྐྱེ།།
ཚོས་གདུལ་སེང་ཚོགས་རྒྱ་ལ་ཐོགས་མེད་གསུང་།།
རྗེ་ཉིད་བསྐལ་པའི་བར་དུ་རྟག་མཚོད་དོ།།

གང་གིས་བསྐལ་བར་སྨོན་པའི་གདུལ་བྱ་གང་།།
གང་ཞིག་མཚན་ཙམ་ཐོས་པས་གདུང་བཞལ་གང་།།
གང་གི་མོས་པ་ལྷུར་དུ་སྐྱོན་མཛད་གང་།།
གང་གིས་གང་སྐད་ཅན་མགོན་པོང་མ་བསྟོད་གང་།།

ཀུན་མཁྱེན་བྱང་ཆུབ་འབུམ་པས་མེར་སྨད་གཏོད།།
ཀུན་མཁྱེན་བློ་གྲོས་རིན་ཆེན་མེར་བྱེས་བཏབ།།
ཐུབ་ཚང་གཉིས་ལས་གདན་རབས་ཏི་སྐྱེད་ཅིག །

कुलसचिव कार्यालय/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Nyemang Tenphel-104

ས།།ཐུབ་མཆོག་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་གཤེན་རབ་ཞེས་བྱ་བ།

སྒང་ཁ་བཏོད་པ་ཚེས་ཀྱི་ཟླ་བ།

བཀྲ་ཤིས་སོ།།

ཚོང་པ་པོ།

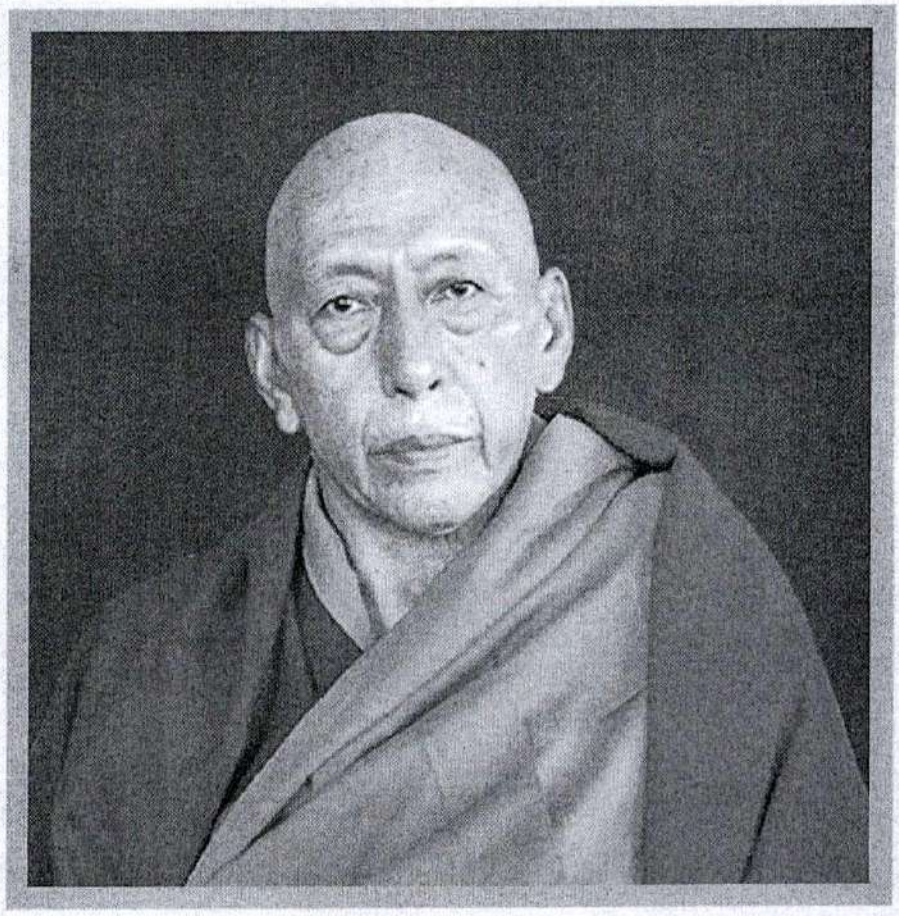
གཤེན་རབ་ཞེས་སྒེར་བཙན་ཤེས་རབ་སྒྲུབ་སྡེ།

ཞི་ཡོ་ཁ་ཤུ་ཁ་ཀ་ཁ་ཤུ་ཁ་ཀ་ཁ་ཤུ་ཁ་ཀ

~~Bon~~ Rinpo Dojee (105)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eighteenth Birthday

[Part-I]



Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

གསུམ་པ། བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྱོད་སོགས་རིག་གནས་ཚེ་རྒྱུད་སྐོར། 337-627

৫) तिब्बती बौद्ध साहित्य का विकास एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव 337-346
—प्रो. डॉ. पेमा तेनजिन

৭০) संस्कृत वाङ्मय को बौद्धावदान 347-362
—डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

৭১) བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་གི་བྱང་བ་དང་དེའི་འགྱུར་ལྡོག་ལ་ཆུང་ཟད་དཔྱད་པ། 363-382
—སྤྲོ་འབུམ་རམས་པ་སྒེན་པ་རྡོ་རྗེ།

৭২) བོད་སྐད་བརྡ་སྤྱོད་ལས་མིང་གི་ཚོགས་ཀྱི་འབེལ་དེམ་ལ་དཔྱད་པ། 383-396
— འབུམ་རམས་པ་རིག་དགེ་བཀྲིས་ཚེ་རིང་།

৭৩) སུམ་ཆུ་བའི་ཚེག་ཐང་དངོས་འབྲེལ་ཟུ་བསྟུན་པའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་དཔྱད་པ་བློ་གསར་མཐིན་རྒྱུན། 397-414
— འབུམ་རམས་པ་ལྷག་པ་ཚེ་རིང་།

৭৪) དབྱངས་ཅན་མའི་སྐྱ་མདོའི་རྣམ་བཤད་སྤྲོ་ཐ་ལ་བན་པ་རྟོགས་དཀའི་སྐབས་པ་སེལ་བའི་ཚེད་ཟེར་བརྒྱ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་མཚམས་སྦྱོར་ལྟ་སོའི་འགྲེལ་པ་སྐྱ་སྐྱབ་རི་མོ་དང་བཅས་པ་མཚན་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བགོད་པ། 415-494
—ཨཱརྱཌཱ་ན་ཐ་སངས་རྒྱས་བསྟན་དབང་།

৭৫) བོད་ཡིག་གམ་སྐྱེ་ཤེའི་སྐད་ཡིག་ཡང་རྒྱས་གཏོང་ཐབས་སྐོར་ཅུང་ཙམ་བྱེད་པ། 495-536
—ཨཱརྱཌཱ་སོ་ཐ་རྡོང་བཀྲ་ཤིས་རྒྱལ་པོ།

৭৬) བོད་སྐད་དང་འབྲེལ་བའི་འབྱུག་སྐད་ཁེངས་ཁའི་སྐྱ་གདངས་ལ་མདོ་ཙམ་དཔྱད་པ། 537-566
—ཨཱརྱཌཱ་བསྟན་འཛིན་རྡོ་རྗེ།

৭৭) Preservation and Development of Tibetan/Bhoti Language in Indian Himalayas 567-582
—Dr. Konchok Tashi

अनुसन्धिता/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

W.D. Negi

प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र



हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या-स्फुटार्थ

अनुवादक एवं व्याख्याकार

प्रो. वङ्छुग दोर्जे नेगी

मूलशास्त्र विभाग

संकायाध्यक्ष हेतु एवं अध्यात्म विद्या

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

सारनाथ, वाराणसी

C.E.: 2019 B.E. 2563

प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र

PRAJÑĀPĀRAMITĀHṚDAYASŪTRA

༄༅། ཤེས་རབ་སྙིང་པོའི་འགྲེལ་པ་དོན་གསལ་བཞུགས་སོ།།



Hindi Translation and Commentary-Sphuṭartha

By

Prof. Wangchuk Dorjee Negi
Department of Mool Shastra
Dean-Hetu evam Adhyatma Vidya
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(Deemed University)
Sarnath, Varanasi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

C.E.: 2019

B.E. 2563

Publisher:
Kun-Phenling Center, Taichung City,
Taiwan, (R. O. C.)

ISBN : 978-81-936254-6-0

First Edition : 2019

Copies : 500

Price : Rs. 200.00

Copyright : Prof. Wangchuk Dorje Negi,
Vill. & Post – Jangi, Kinnaur
(H.P.), 2019
Email : wangchuk.negi@yahoo.com



Printed at :
Sattanam Printers
Pandeypur, Varanasi

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय	III-IV
दो शब्द	V-VIII
भूमिका	XI-XXII
प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र स्फुटार्थ	1-176

भोटभाषा में आर्यदेश का अभिप्राय-1, तथागत ने किस भाषा में धर्मोपदेश दिया-2, भगवान् शब्द का अर्थ-3, प्रज्ञापारमिता का अर्थ-7, हृदय का अर्थ-8, सूत्र का अर्थ-8, अनुवादक का मंगलाचरण-9, एवं मया श्रुतम् का अर्थ-11, पालि परम्परा के अनुसार बुद्ध-वचन-12, चौरासी हज़ार धर्म स्कन्ध-15, पालि परम्परा के अनुसार संगीतियाँ-17, प्रथम संगीति-18, द्वितीय संगीति-19, तृतीय संगीति-19, महायान के अनुसार बुद्ध-वचन-21, महायान बुद्धवचन है-23, महायानी संगीति-28, त्रिपिटक की भाषा-29, प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र का निदान वस्तु-31, पाँच सम्पत्-32, गृध्रकूट-32, भिक्षु संघ-33, बोधिसत्त्व-35, दानपारमिता-42, शील पारमिता-44, क्षान्तिपारमिता-45, वीर्यपारमिता-47, ध्यानपारमिता-48, गम्भीरोदार-समाधि-51, पुद्गल-नैरात्म्य-55, बुद्ध द्वारा शारीपुत्र को प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित करना-61, कुलपुत्र कुलपुत्री का अभिप्राय-64, संस्कृत धर्मों की शून्यता-66, वैभाषिक मत में सत्यद्वय-68, सौत्रान्तिक मत में सत्यद्वय-70, विज्ञानवाद में सत्यद्वय-71, माध्यमिक मत में सत्यद्वय-73, संभार और प्रयोग-मार्ग-83, वेदना आदि चार स्कन्धों की शून्यता-91, वेदना स्कन्ध की शून्यता-92, संज्ञा स्कन्ध की शून्यता-95, संस्कार स्कन्ध की शून्यता-96, कुशल चित्तों के साथ उत्पन्न होने वाले चैतसिक हैं-98, विज्ञान स्कन्ध की शून्यता-100, दर्शन-मार्ग-105, भावना-मार्ग-109, आयतन, धातु और पञ्च स्कन्धों का स्वरूप-112, बारह आयतन की शून्यता-116, रूप आयतन की शून्यता-117, शब्द आयतन की शून्यता-118, रस आयतन की शून्यता-119, गन्ध आयतन की शून्यता-

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान Central Institute of Higher Tibetan Studies डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

119, स्प्रष्टव्य आयतन की शून्यता-120, धर्म आयतन की शून्यता-120, अठारह धातुओं की शून्यता-121, द्वादशाङ्ग प्रतीत्यसमुत्पाद की शून्यता-127, द्वादशांग प्रतीत्यसमुत्पाद का व्यवहारिक पक्ष-128, चार आर्यसत्यों की शून्यता-137, वज्रोपम समाधि-148, अप्रतिष्ठित निर्वाण-149, बुद्ध द्वारा प्राणियों का कल्याण-151, बुद्ध की काय व्यवस्था-153, प्रज्ञापारमिता का महत्त्व-156, प्रज्ञापारमिता ही महामन्त्र है-159, मन्त्र का अभिप्राय-161, प्रज्ञापारमिता मन्त्र-164, मन्त्र निर्माण विधि-168, शिक्षित होने के लिये प्रेरणा-170, अनुमोदन पाठ-171, पार्षदों द्वारा अनुमोदन-174

परिशिष्ट-1 **177-181**

परिशिष्ट-2 **182-185**

परिशिष्ट-3 **186-217**

परिशिष्ट-4 **218-219**

परिशिष्ट-5 **220-223**

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi



ISBN 978-93-5067-940-1

中观庄严论



IBE GIF

Dorjee Damdul - (108)

༣ | རྒྱལ་སྤྱིའི་བོད་ཀྱི་གསོ་བ་རིག་པའི་བཙོ་གྲྭང་ཆོགས་ཆེན་

ཞེངས་གསུམ་པའི་དཔྱད་རྩོམ།

PROCEEDINGS OF THE 3rd INTERNATIONAL CONFERENCE ON SOWA-RIGPA (TIBETAN MEDICINE)

ཟླ་ལོ་༢༠༡༨ ཟླ་༢ ཚེས་༢༥ ནས་ཟླ་༣ ཚེས་༡ བར།

ཆོགས་ཡུལ། ཝཱརཱ་དཎས་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་།

Date: 25th February to 1st March, 2018
Venue:CIHTS, Sarnath, Varanasi

Jointly organized by:

CCTM Dharamsala, DSR of CIHTS Varanasi and CTMI Darjeeling

Organizing Committee Members:

President : Dr. Rakdho Lobsang Tenzin

Vice President : Dr. Sonam Dolkar Oshoe
Secretary : Dr Tsering Tsamchoe
Members : Dr. Dawa Tsering Dranyi
Dr. Rabga Bhutia

Editorial Board:

Chief Editor : Dr. Rakdho Lobsang Tenzin
Assistant Editors: Dr. Dorjee Damdul
Dr. Jasmeet Gill
Dr. Tsering Tsamchoe
Dr. Tashi Dawa
Dr. Sonam Dolkar Oshoe

Published by Department of Sowa-Rigpa, CIHTS Sarnath-221007, Varanasi, UP.

Copyright © 2018, Department of Sowa-Rigpa, CIHTS Sarnath-221007, Varanasi, UP./Central Council of Tibetan Medicine, Dharamsala-176215, HP./Chagpori Tibetan Medical Institute, Darjeeling-734101

All rights reserved. No portion of this book may be reproduced by any means without the prior written permission of the publisher.

CONTENTS

Keynote Address: *Prof. (Dr.) Rakdho Lobsang Tenzin, Chairman CCTM, Dean, Faculty of Sowa-Rigpa and Bhot Jyotish* 1

Session Theme: A Glimpse into the Three Great Medical Systems of Asia
ཐུབ། བཤད་རིག་པོ་རྒྱུས་ལས་འཛོམས་པའི་ལུགས་ཚེན་གཤུམ་གྱི་སྐོར།

PL1: Ayurveda: Knowledge from Home to Hospital
Dr. Shiv Ji Gupta 21

PL1: Traditional Chinese Medicine: Antidotes from History to Present
Dr. Edward Yap 24

PL1: Sowa-Rigpa: Healing from Physical to Spiritual
Prof. (Dr.) Rakdho Lobsang Tenzin
English and Tibetan version 25

PL3: Education, Practice and Research in Ayurveda: Evolutionary Development and Future Challenges
Prof. (Dr.) Sanjeev Rastogi 29

PL4: The Evolutional Development of Traditional Chinese Medicine: Challenges, Training, Practice, Research and Future Development
Dr. Edward Yap 31

PL5: The Evolutional Development of Unani Medicine: Education, Practice, Research, Future Development and Challenges
Prof. (Dr.) Rais-Ur-Rahman 32

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Session Theme: Present Status of Sowa-Rigpa in Asian Countries

ཐེམ། ཨེཤིཡའི་རྒྱལ་ཁབ་བཙག་ཏུ་གསོ་རིག་ཡའི་ཚུལ་གནས་བཤད།

PS1: Legal Issues of Tibetan Medicine in Russia
Ms. Oyuuna S. Rinchinova
Co-author-*Tsymzhit P. Vanchikova* 34

PS4: Sowa-Rigpa in Asia: A Quantitative Overview
Stephan Kloos 42

PS5: Development of Sowa-Rigpa in Bhutan through Research
Mr. Sherab Tenzin 44

PS11: Legal Status of Sowa-Rigpa in Nepal
Dr. Nyima Tsering
English and Tibetan version 47

PS24: Sowa-Rigpa: Historical Background and Current Status in Mongolia
Dr. Ganzorig Davaa-Ochir
English and Tibetan version 51

Session Theme: Clinical Management of Somatic Disorders

ཐེམ། ལུས་ཀྱི་ནད་བཅོས་སློངས།

PL6: Sowa-Rigpa: Knowing Cancer and its Important Parameters
Dr. Dorjee Rapten Neshar
English and Tibetan version 69

PS8: Sowa-Rigpa: Understanding Auto Immune Disease
Dr. Dorjee Rapten Neshar
English and Tibetan version 74

PS20: The Management of Malposition and Malpresentation (Through Sowa-Rigpa and Modern Medicine)
Dr. Passang Dolma. Menrampa
English and Tibetan version 79

Session Theme: Clinical Management of Psychological Disorders

ཐེམ། ཡིད་ནད་བཅོས་ཐབས་སློབ།

PS6: Breakdown of Body and Transference of Consciousness
Ven. Dolpo Tulku Ogyen Choeying Yeshi Rinpoche
English and Tibetan version 81

PS7: Importance of Mental Health
Ven. Dolpo Tulku Ogyen Choeying Yeshi Rinpoche
English and Tibetan version 83

PS14: Art of Stress Management in Sowa-Rigpa
Dr. Thinles Yangjor
English and Tibetan version 85

PS21: Management of Psychological Disorders according to *Bum-bZhi* Text
Dr. Passang Thopchen
English and Tibetan version 99

Session Theme: Pharmaceutics and Research

ཐེམ། སྨན་སྒྲུབ་དང་ཞིབ་འཚོལ།

PS3: Sowa-Rigpa: Drug Research, its Scope and Challenges
Ms. Tenzin Choedon 110

PS9: Molecular Insights into the Anti-Cancer Properties of Traditional Tibetan Medicine *Yukyung Karne*
Ms. Tenzin Choedon 111

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

PS10: Sowa-Rigpa: Its Development in Modern Pharmaceutics (Action Profiles of Tibetan Formulas)
Dr. Herbert Schwabl 112

PS12: Acharya Vāgbhata and Astangh Hridyam
Dr. Akhilesh Kumar Singh 113

PS13: Sowa-Rigpa Literature in *bsTan'Gyur*
Dr. Dorjee Damdul
English and Tibetan version 120

PS18: Practical Application of Sowa-Rigpa Pharmaceutical
Dr. Dorjee Damdul
English and Tibetan version 127

Session Theme: Advanced Sowa-Rigpa Practice
ཐུན། གསོ་རིག་ཟབ་ལམ་སྤྱོད།

PL2: Sowa-Rigpa: *sMen-Drub* and its Significance
Ven. Geshe Lharampa Jadho Rinpoche 137

PS22: The Knowledge and its Elemental Theory of Illness Reading (*Nad-rTsi*) in Tibetan Astro-Science
Dr. Jampa Chophel
English and Tibetan version 146

The Importance of the *Yuthok Nyingthik*, or its Twelve Uncommon and Special Characteristics
Dr. Nida Chenagtsang
English and Tibetan version 160

Session Theme: Medico-Legal Issues
ཐུན། སྨན་དང་འཚེ་བའི་ཁྱིམས་རྩིག

PL1: Regulation and Quality Control of Ayurvedic, Siddha, Unani and Homeopathic Drugs
Dr. D.C. Katoch 186

PS2: Prospects and Problems of Compliance to Good Manufacturing Practices in Indian Systems of Medicine
Dr. D.C. Katoch 188

PS15: Use of Mercury as Medicine and its Legal Challenges
Prof. (Dr.) Anand Kumar Chaudhary 189

PS19: Principles and Practical Application of Tibetan Medicine in the Western Context
Dr. Lobsang Tsultrim
English and Tibetan version 191

Session Theme: Materia Medica and Its Challenges
ཐུན། རྫས་ཚུལ་དང་དེའི་དཀའ་གནད།

PS16: Importance of Conservation of Cold Desert Medicinal Plants for Sowa-Rigpa
Dr. Padma Gurmet 195

PS17: Materia Medica of Tibetan Medicine: Diversity, Identification, Classification and the Method of Checking Quality
Dr. Tsultrim Kalsang
English and Tibetan version 198

PS23: Climate Change and its Effects on the Medicinal Plants
Dr. Tsultrim Kalsang
English and Tibetan version 211

Session Theme: Hands-on Practical Training
ཐུན། ལག་ཤེན་དམར་འཛིན།

PW1: Sowa-Rigpa: Significance of External Therapies
Dr. Dorjee Rapten Neshar 227

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

PW2:Sowa Rigpa: Practice of *Ku-Nye* Therapy
Dr. Tsultrim Kalsang 229

PW3: Sowa-Rigpa: Practice of *Kyng* Therapy
Dr. Tenzin Jinpa
English and Tibetan version 230

PW4: Sowa-Rigpa: Practice of *Dhug* Therapy
Dr. Tsultrim Kalsang 233

Sowa-Rigpa: Practice of *Yugkcho*Therapy
Dr. Nida Chenagtsang 234

Paper Presentations in Tibetan Language
བོད་ཡིག་སྒྲོན་ཆོག་འབག

PP1:ཚོང་པ་རིག་ཏྲིད་འཁར་གསུངས་བའི་ཟས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་གནས་སྐོར་གསོ་བ་རིག་པ་བང་འཛེལ་ནས་ཚ་སོན་བཏུད་པ། 235
Dr. Jigme Migyure (Menrampa)

PP2:ཇོན་ཀྱི་སྐྱན་ལྷོས་འབག་འཛོག་བའི་ཅིའི་ལྟ་སྤྱོག་སྐོར། 247
Gyashod Yungdrung Tashi

PP3:ཅི་ཞིའི་ཏུ་ཁ་ཞེར་འཁག་འཛོག་བའི་བཏུད་བཚོས་རིག་པའི་འཛེལ་རིམ་ཁྲང་ཁང་ཐྲེང་བ། 259
Kunkhen

PP4:སྐབས་ཀྱི་བའི་ཚོ་ངོན་བང་ཇོས་འཛོན་སྐོར་ལ་བསྐུར་དུ་བཏུད་པ། 272
Wangal Dorjee

PP5:སྒྲོང་ཁྲིད་འཁག་ལྷ་སྐྱི་བང་ཁི་ཐག་ཏུ་སྐྱན་སྐོར་ལ་བཏུད་པ། 293
Dr. Sonam Palmo

བོད་ཡུགས་གསོ་རིག་གི་གཏར་གནའི་འཛེལ་ཆུས་བང་ཚན་རིག་གི་བཏུད་བཤོག 302
Ala Kalsang Kyab and Rinchen Dolma

Paper Presentations in English Language
ཨིང་ཡིག་སྒྲོན་ཆོག་འབག

PP6: Historical Background for Tibetan Medical System in the Republic of Tuva (Russian Federation) 319
Galina B. Kopeliovich, L.A.Pavlova

PP7: Fibromyalgia in Sowa-Rigpa 334
Naxhalla Gwyn Nyinda Menpa

PP8: Traditional Tibetan Medicine as an Ancient Personalized Medicine and its Relevance in the Modern World 354
Dr. MD Yulia Yusipova

PP9: Philosophy of Healing Tradition in Tibet (c.617 A.D - c.785 A.D) 363
Dr. Asrarul Haque (MD)

PP10: From Hidden Fever to Silent Inflammation: Translating Concepts 374
Dr. med.vet.Cecile Vennos

PP11: Tibetan Medicine in the Era of Tsarist Russia 376
Svetlana Chojinimayeva (Ph.D)

Tibetan Buddhist Tradition and Neuro-Biology 384
Prof. Arun Kumar Jha &(Mrs.) Sudha Jha

PL=Plenary Lecture **PS**=Parallel Session

PW=Practical Workshop **PP**=Paper Presentation

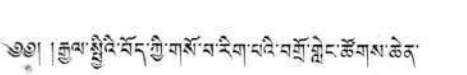
REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

ISBN : 9788193625439

ISBN : 978-81-93625-43-9



PROCEEDINGS OF THE 3rd INTERNATIONAL CONFERENCE ON SOWA-RIGPA (TIBETAN MEDICINE)



Date: 25th February to 1st March, 2018
Venue:CIHTS, Sarnath, Varanasi



Jointly organized by:



CCTM Dharamsala, DSR of CIHTS Varanasi and CTMI Darjeeling



Dorjee Damdul

109

༄༅། །གསོ་ བ་རིག་པའི་གཞུང་ལུགས་ཐམས་ཅད་ ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་ཀུང་བཞི་ལས་དུམ་བུ་གཉིས་ པ་བཤད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་གནས་དང་པོ་རྩ་བ་མདོ་ དང་གཉིས་པ་གྲུབ་པ་ལུས་གནས་ཀྱི་འགྲེལ་ གཤར་ལུས་ཁམས་གསལ་བའི་སྒོན་མེ་ ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

ཚོད་ཟེར་གསུམ་པ།

Volume III

རྫོམ་སྒྲིག་པ། དབོན་པོ་རྡོ་རྗེ་དགྱ་འདུལ།

སྤྱོང་བཙན་དཔེ་མཛོད་ཁང་ནས་བར་སྐྱོན་ཞུས།

C.E. 2018

REGISTRAR

བོད་ཡིད་གསུམ་བའི་ནང་དོན་བརྗོད་བྱ་སྟིང་བསྡུས།

སོད་ཡེད་གསུམ་ལ་འདི་ནི་གསོ་བ་རིག་བའི་གཞུང་ལུགས་ཀུན་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དབལ་ལྡན་ཀུན་གཞིའི་དུམ་བུ་གཅིག་པ་བཤད་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་གནས་དང་པོ་རྩ་བ་མདོ་གནས། གནས་གཅིག་པ་བྱུབ་པ་ལུས་གནས་གཅིག་ཀྱི་འགྲེལ་པ་ཡིན་ཞིང་། བཤད་རྒྱུད་ལ་ལེའུ་སུམ་ཅུ་སོ་གཉིག་ཡོད་པ་ལས་རྩ་བ་མདོ་གནས་ལ་ལེའུ་གཉིག་དང་བྱུབ་པ་ལུས་གནས་ལ་ལེའུ་དྲུག་ཡོད། བྱུབ་པ་ལུས་གནས་འདིར་གཙོ་བོ་ཐ་མལ་རྣད་མེད་ཀྱི་ལུས་ཀོད་ཙམག་གནས་འཇིག་གསུམ་གྱི་སྣོར་བསྡུན་ཡོད། ལེའུ་དང་པོར། རྩ་བ་བཞི་དང་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིག་གིས་བཤད་རྒྱུད་ཀྱི་སྟོམ་ཚིག་བསྡུན་པ་དང་། ལེའུ་གཅིས་པར། ཐོག་མར་མངལ་ཙམག་བའི་རྒྱུ། བར་དུ་འཕེལ་བའི་ཚུལ། མཐར་བཅོལ་བའི་རྒྱུན་རིགས། ལེའུ་གསུམ་པར། ལུས་ཀྱི་རྣང་གི་དབྱིབས་གཟུགས་རྣོ་བཀུ་དང་། ལས། གནད་རྣམས་ཀྱི་འབྲུ་དེའི། ལེའུ་བཞི་པར། ལྷང་ཚད་དང་། འཕེལ་བའི་རྣ། གཉན་པའི་གནས། རྒྱ་ལས་བུ་གཤི་གནས་ལུགས། ལེའུ་ལྔ་པར། ལུས་ཀྱི་གཙོ་བུ་ཁམས་བཅུ་དང་གཙོ་བྱེད་ཉེས་པ་གསུམ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད། ལེའུ་དྲུག་པར། ཐ་ལལ་རྣད་མེད་པའི་སྟོ་གསུམ་སྟྲི་བྱག་གི་ལས་དང་། ལུས་ཀྱི་དབྱེ་བ་བསྟན་ཡོད། ལེའུ་བདུན་པར། ལུས་འདི་ཡི་མཐར་འབྱམ་འཇིག་པར་ངེས་ཤིང་། དེ་ལྟ་བུའི་འཇིག་པ་ལ་མངོན་དུ་བྱོགས་པའི་སྟ་ལྟས་ནི་འཇིག་ལྟས་ཡིན་ལ། འཇིག་ལྟས་ལ་རིང་ལྟས་དང་ཉེ་བའི་ལྟས། མ་ངེས་པའི་ལྟས། ངེས་པའི་ལྟས་རྣམས་དང་། དེ་དག་ཀྱི་རྣོ་རྩྭ་ཐབས་མོགས་བསྟན་ཡོད་དོ།།

ISBN : 978-81-935812-6-1



केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University/डीम्ड विश्वविद्यालय
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Sattanam Printers, Varanasi, Mob. : 9415222495

འཇིག་རྟེན་བདེ་བ་ཇི་སྲིད་པ།།
དེ་ཁུན་གཤན་བདེ་འདོད་པས་བྱང་།།
འཇིག་རྟེན་སྐྱབ་བཟློག་རྗེ་སྐེད་པ།།
དེ་ཁུན་རབ་བདེ་འདོད་པས་བྱང་།།

གང་ཚེ་བདག་དང་གཞན་གཉིས་ཀ།།
སྡུག་བསྔལ་མི་འདོད་མཉམ་པ་ལ།།
བདག་དང་ཁྱད་པར་ཅི་ཡོད་ན།།
གང་ཕྱིར་གཞན་མེན་བདག་བྱང་ངེད།།

ཤེས་སྨན་ཆི་བ་སྐྱེས་སྦྱོང་བཟུང་པས་མོ།།

ཀ།། ཁབས་ཀ་རིག་པའི་ཁང་ལུགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དབལ་སྐྱབ་
ཤྱུད་བཞི་ལས་དྲན་བྱ་གཉིས་པ་བབྱད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་གནས་དང་པོ་
ཪ་ན་མདོ་དང་གཉིས་པ་གྲུབ་པ་ལུས་གནས་ཀྱི་འགྲེལ་
གསར་ལྷས་བསས་གསལ་བའི་སྒྲོན་མེ་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

པོད་ཕྱེད་གསུམ་པ།
Volume III

པོད། ཀ་པ།

ཙོང་སྐྱེག་པ། དབོན་པོ་རྡོ་རྗེ་དབྱུག་འདུལ།

C.E. 2018



ཤྲཱིད་བཙན་དབེ་མཛོད་རྒྱས་དཔར་བསྐྲུན་ཞུས།

Published by: SONGTSEN LIBRARY
P.O. Kulhan, Sahastradhara Road, Dehradun 248013
Uttarakhand, India

ཞེས་བགོ་བ་རིག་བའི་གཏུང་ལུགས་ཧཱལས་ཟད་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དབལ་ལྟར་ཆུད་བཞིན་པ་
དུས་ཐུ་གཉིས་པ་བཤད་པའི་ཆུད་ཀྱི་གནས་དང་པོ་ཐ་མ�པོ་དང་གཉིས་པ་
གྲུབ་པ་ལུས་གནས་ཀྱི་འཕེལ་གསར་ལུས་ཁམས་གསལ་བའི་
སྒོོན་མེ་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

དེབ་འདིའི་བདག་དབང་སྲོང་བཙན་དབེ་མཛོད་ལ་ཡོད། དེ་མཛོད་འདི་ནས་ཚོགས་མཆན་མེད་པར་
དཔོན་ཁྲིགས་བཏུབ་ནས་དབང་བསྒྲུབ་བའི་སྐོར་མི་ཚོགས་ཁ་བསྐོང་བཞིན་པ་རེད།

© Songtsen Library
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, translated, stored in a retrieval system in any form or by any means, electronic or mechanical, photocopying, recording or otherwise, the written permission of the publisher.

སྐྱོལ་ལོ། ཨཀཀ ལོར་སྲོང་བཙན་དབེ་མཛོད་ཁང་ནས་པར་ཐེངས་དང་པོར་

དེབ་གྲངས་ ཨཀཀ ཐམ་པ་དབར་ཁྲ་བཏབ།

Published By
Songtsen Library
(Center for Tibetan and Himalayan Studies)
Drikung Kagyu Institute
P.O. Kulhan, Sahastradhara Road, Dehradun 248013, Uttarakhand, India
Website: www.songtsenlibrary.net Email: songtsenlibrary@gmail.com
Phones: +91 135 2607810, +91 135 2607811 Fax: +91 135 2607813

ཀུལ་སྐྱིའི་ཚད་འཛིན་དབེ་རྟགས་ཨང་། ISBN : 978-81-935812-6-1

C.E. 2018

སྐོན་བའི་འདས་ལོ། ཨཀ་ཅ། ཀཀཁ ངན་ལོ། ཀཀཀ ནོད་ཀུལ་ལོ། ཨཀཅ

ལྷུན་རྩེ་སྐྱ་སྡེ་དགོན་པའི་ཞབས་ཏོག་ལས་ཁུངས།
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi



THE DALAI LAMA

ཨཨ། །ཇར་ཏ་བོད་ཀྱི་གཙུག་ལག་སློབ་གྲྭའི་སྐབས་དགེ་རྒན་པ་དབོན་པོ་རྣོ་རྗེ་དཔྱ་འདུལ་ཚན་པ་དང་པ་ཟམས་གཅོ་རིག་གི་ཚོ་རྒྱུས་དང་བཅས་བཤད་པོད་ཟེང་ལུས་ཆུ་ཐིས་རྒྱོག་པའི་ཞུ་ཡིག་ཀྱང་ཕྱི་ཚོགས་སུ་རྒྱུད་བཞིའི་དགོངས་པ་མ་ལོན་པ་དང་། ཆོས་པ་རྒྱུན་འབྱམས། མཁས་པའི་བཞེད་པ་མི་མཐུན་པ་སོགས་ལ་དབྱད་བསྡུར་གྱི་མ་དང་ཆུ་ཚུལ་ཡོད་ཀྱི་ལུགས་འཛིན་གྱི་ཁྱད་པར་ཡིན། ཁོ་ཚོས་ཀྱང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཐུབ་པ་ཡིན་ལ། ཁོ་ཚོའི་ཐུགས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡང་ཡིད་ཆེས་སུ་འཚམས་ཤིང་། ཚོགས་ཀྱི་སྐྱེ་མཐོ་ཆེ་ཆུང་ཐམས་ཅད་ལ་ཡིད་ཆེས་སུ་ཟབ་ཅིང་ཞི་བདེ་ཡོད་པ་ཞིག་ཡིན། ཁོ་ཚོ་ཡང་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡོད་ཅིང་

དཀར་ཆག

ཨང་།	ཐ་སྙད།	ཤོག་གྲངས།
	ཐུགས་རྗེར་བོད་ལ་སྐྱབས་མཛོད་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་སྔོན་གྲོང་།	iii
	འཕྲི་གཙང་སྐྱབས་མཛོད་ཆེ་ཚང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གི་ཞྭེང་བརྟེད།	v
	རྩོམ་པ་པོའི་གསལ་བཤད།	vii
	ཀན་ཆུང་དངོས་ཀྱི་དཀར་ཆག	xxxv
	བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ཡན་ལག་མཚན་དང་མཆོད་བརྗོད་སོགས།	1
	བཤད་ཆུད་ཀྱི་ནང་དོན་སྤྱིར་བཏང་།	3
༡	བཤད་ཆུད་སྔོན་བ་ཡི་སྐུལ་བའི་ཚུལ།	11
༢	ཀསྱང་སྐུལ་ཡིད་ལས་སྤྲེལ་ཀྱི་བ་བཤད་ཆུད་ཆུལ་བའི་ཚུལ།	23
༣	བཤད་ཆུད་ཀྱི་ཆུལ་ལན།	25
	༣་༡ བཤད་ཆུད་ཉན་བར་གདམས་པ།	25
	༣་༢ བཤད་ཆུད་ཀྱི་ཆུལ་ལན་མདོར་བསྡུན་དགོས་འབྲེལ།	25
	༣་༣ བཤད་ཆུད་ཆུལ་བར་བཤད་པ།	38
	བཤད་ཆུད་ལེའུ་དང་ཡི་སྡོམ་ཚིག།	40
༡	བཤད་ཆུད་ལེའུ་དང་ཡི་སྡོམ་ཚིག་གི་ནང་དོན་སྤྱིར་བཏང་།	40
༢	བཤད་ཆུད་ཀྱི་སྡོམ་ཚིག་མདོར་བསྡུན་པ།	41
༣	བཤད་ཆུད་ཀྱི་སྡོམ་ཚིག་ཆུལ་བར་བཤད་པ།	42

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Doyee Dawdul
(11)

৩৩। ཁམས་བ་རིག་པའི་གཞུང་ལུགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་ཀྲུད་བཞི་ལས་དུམ་བུ་གཅིག་པ་བཤད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་བཀའ་གསུམ་པ་འཕེལ་འགྲིབ་མེད་ཀྱི་འབྲེལ་གསང་མཆོག་གསལ་བའི་མེ་ལོང་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

ལོངས་སྤྱོད་བཞི་པ།

Volume IV



Digitized by eGangotri
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi, Sunderpur, Varanasi

རྫོགས་སྒྲིག་པ། དབོན་པོ་རྡོ་རྗེ་དབང་འདུལ།

སྤྱོང་བཙན་དེབ་མཛོད་ཁང་ནས་པར་སྐྲུན་ཐུབ།

C.E. 2018

ཐོད་ཁྲེང་བཞི་བའི་རྣང་དོན་བརྗོད་བྱ་སྤྱིད་བསྡུས།

ཐོད་ཁྲེང་བཞི་པ་འདི་མི་ཞིག་པ་རིག་པའི་ཁུངས་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་ཀྱུར་བཞིའི་དབུས་བཀྲིས་པ་བཞད་པའི་རྒྱུད་ཀྱི་གནས་གསུམ་པ་འཕེལ་འགྲིབ་རྣམ་ཀྱི་ཚུལ་ལ་ཡིན་ཞིང་། བཞད་རྒྱུད་ལ་ལེའུ་བྱངས་སྡུམ་ཙུ་རྩ་གཉིག་ཡོད་པ་ལས་འཕེལ་འགྲིབ་རྣམ་ལ་ལེའུ་ལྔ་ཡོད། དེ་ཡང་བཞད་རྒྱུད་ལེའུ་བརྒྱད་པ་རྣམ་ཀྱི་རྒྱུ་དང་། དགུ་པ་རྟེན། བཅུ་པ་ཞུགས་ཚུལ། བཅུ་གཅིག་པ་སཙཱ་ཧི། བཅུ་གཉིས་པ་རྣམ་ཀྱི་དབྱེ་བ་ཡིན། སྐྱེར་འཕེལ་འགྲིབ་རྣམ་ལ་རྣམ་དོན་ཚན་པ་དྲུག་ཡོད་ཀྱང་རྣམ་ཞུགས་ཚུལ་དང་གནས་གཉིས་ལེའུ་གཅིག་ཏུ་གསུངས་པས་བསྡོམས་ལེའུ་ལྔ་ཡོད།

ལེའུ་བརྒྱད་པར། རྣམ་ཀྱི་རིང་བའི་སྐྱེ་རྒྱུ་མ་རིག་པ་དང་། ཁྱད་པར་གྱི་རིང་ཞུ་ཁོན་མོང་དྲུག་གསུམ། དེ་དག་ལས་སྐྱེས་པའི་ཅི་རྒྱུ་རྣམ་པར་འཐྲུང་བའི་ཅིས་པ་གསུམ་རྣམས་བསྟན་ཡོད། ལེའུ་དགུ་པར། རྣམ་ཀྱི་ཆུན་སྐྱེ་མཆེད་དང་གསོག་ལྡང་སྲོང་ཆེན་གསུམ་ལས་དང་པོ་སྐྱེ་མཆེད་དྲུག་དོན་དབང་པོ་དམན་ལྡག་ལོག་པ་དང་། གཉིས་པ་གསོག་ལྡང་གྱི་ཆུ་ངོ་བོ་དྲུག་གསུམ། གསུམ་པ་སྲོང་ཆེན་བངོས་ལ་ཅིས་པ་སྤྱིའི་སྲོང་ཆེན་དང་ཁྱད་པར་ཅིས་གསུམ་སོ་སོའི་སྲོང་ཆེན་བསྟན་ཡོད། ལེའུ་བཅུ་པར། རྣམ་ཅིས་པ་རྟེན་པའི་ལྷག་ལ་ཐ་ལྷང་འཇུག་པའི་ཚུལ་གྱི་དགེ་དང་། ཆུགས་རྟེན་ལྟས་གང་དང་གང་དུ་རྟེན་པའི་གནས་གཉིས་གསུངས་ཡོད་པ་ཡིན།

ལེའུ་བཅུ་གཅིག་པར། རྣམ་རྒྱུངས་ཏྲི་ཚ་རྟེན་པའི་ཚེ་དུས་འཁོར་ལོའི་ཚུལ་ལ་ཞུགས་ཚུལ་དང་། ཁྱད་པར་དུ་ཉོན་ཡིད་ཀྱི་དབྱེ་བ་ཆུས་པར་གསུངས་ཡོད།

ལེའུ་བཅུ་གཉིས་པར། རྣམ་རྒྱུངས་ཏྲི་ཚ་རྟེན་པའི་ཚེ་ཟླ་ཚེས་ཀྱི་ཆུ་དང་འཕེལ་ཞད་དུ་གྱུར་པའི་རྐྱེན་ལྔ་ཁོ་ནས་ཁྱད་པར་དུ་ཉོན་ཡིད་ཀྱི་དབྱེ་བ་ཆུས་པར་གསུངས་ཡོད།

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

ISBN : 978-81-935812-7-8
9 788193 581278

Sattanam Printers, Varanasi, Mob. : 9415222495

ཀཱ་ལ་ཆ་ཀྲ་ནི་ཐ་ཡ་ཀཱ་ལ་ཀ་ལ་ཡ་ཏེ།།

ཤེ་ལ་མེ་དཔའ་ཅི་ཞིག་ཡོད།།

ཀཱ་ལ་ཆ་ཀྲ་ནི་ས་སེད་ན་ནི།།

ཤེ་ལ་མེ་དཔའ་བྱམ་ཅི་ལན།།

བདག་ལ་སྐྱོད་པ་ཁཁན་ཡོད་ན།།

བསྐྱོད་པས་བདག་དཔའ་ཅི་ཞིག་ཡོད།།

བདག་ལ་བསྐྱོད་པ་ཁཁན་ཡོད་ན།།

སྐྱབ་པས་མི་དཔའ་ཅི་ཞིག་ཡོད།།

ཆུལ་ཁྲིམས་ཤི་ཁ་ལྟའི་སྐྱོད་འཇུག་ལས་སོ།།

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Sarnath, Varanasi

༄༅། །གསོ་བ་རིག་པའི་གཞུང་ལུགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་
ཀློང་བཞི་ལས་དུས་བྱ་གཉིས་པ་བཞད་པའི་ཀློང་ཀྱི་གནས་གསུམ་པ་
འཕེལ་འགྲིབ་རྣད་ཀྱི་འགྲེལ་གསར་རྣད་ཁམས་གསལ་བའི་
མེ་ལོང་ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

པོད་སྐྱེང་བཞི་པ།

Volume IV

པོད། ང་པ།

རྒྱལ་སྤྱིགཔ། དབོན་པོ་རྡོ་རྗེ་དབུ་འདུག

C.E. 2018

སྤྱོད་བཙན་དཔེ་མཛོད་ཁང་། དབུ་འདུག

Published by: SONGTSEN LIBRARY
P.O. Kulhan, Sahastradhara Road, Dehradun-248013
Uttarakhand, India

༄༅། །གསོལ་བ་རིག་བའི་གཏྲུང་ལུགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉིང་ཁུ་དཔལ་ལྡན་ཀྱུང་བཞི་ལས་
དུམ་བུ་གཉིས་པ་བཞད་པའི་ཀུན་ཀྱི་གནས་གསུམ་པ་འཕེལ་འགྱིབ་རྣ་ཀྱི་
འཁྲིལ་གསར་རྣ་ཁམས་གསལ་བའི་མེ་ལོང་
ཞེས་བྱ་བ་བཞུགས་སོ།།

ངེས་འབྱུང་ཟབ་གནད་སྒོང་བཅས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཡོངས། དེའི་མཁྱེན་པའི་རྣམ་ཅོག་ཙམ་མཐའ་མེད་དུ་
དངོས་པོགས་བརྒྱད་ཀྱིས་བཤད་བཞུགས་པའི་ཆོས་མཛོད་ཅེས་བྱ་བའང་ཡིན་ནོ།

© Songtsen Library
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, translated, stored in a retrieval system in any form or by any means, electronic or mechanical, photocopying, recording or otherwise, the written permission of the publisher.

ཟླ་ཟླ་ལོ། ༢༠༡༨ ལོར་སྒོང་བཙན་དགེ་མཁྱེན་བང་ནས་ཁེང་ནང་ངོས་
དེའི་གྲངས། ༧༠༠ ཐས་ཁ་དའང་དུ་བཏབ།

Published By
Songtsen Library
(Center for Tibetan and Himalayan Studies)
Drikung Kagyu Institute
P.O. Kulhan, Sahastradhara Road, Dehradun 248013, Uttarakhand, India
Website: www.songtsenlibrary.net Email: songtsenlibrary@gmail.com
Phones: +91 135 2607810, +91 135 2607811 Fax: +91 135 2607813

ཀུལ་སྐྱིའི་ཚད་འཛིན་དེབ་རྣམས་ཨང་། ISBN: 978-81-935812-7-8

C.E. 2018

སྐྱོན་བའི་འདས་ལོ། ༢༥༤༢ རབ་ལོ། ༢༥༤ བོད་ཀྱལ་ལོ། ༢༡༠༧

ཤུན་ཐའི་སྒྲུབ་ཁང་དབར་ཁུ་དབར་བསྐྱབ་ཤུགས།



THE DALAI LAMA



ཀུན་ཤིང་དཔལ་ཁྱིད་/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानित विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

དཀར་ཆག

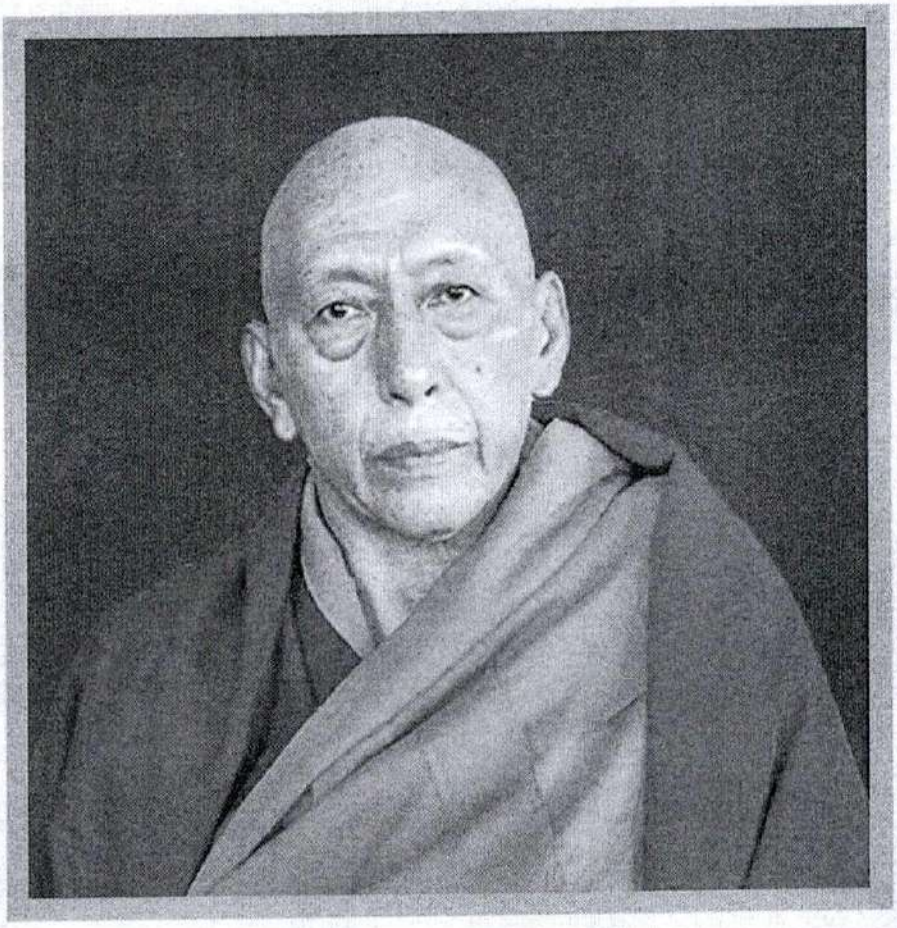
ཨང་།	བརྗོད་བྱ།	ཤོག་གྲངས།
	ཞུམ་རོང་ཁ་སྐྱབས་མགོན་ཆེན་པོ་མཆོག་གི་སྔོན་བྱོང་།	iii
	འཕྲི་བྱང་སྐྱབས་མགོན་ཆེ་ཚང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་གི་བྱོང་བརྗོད།	v
	རྩོམ་པ་པོའི་གསལ་བཤད།	vii
	གཞུང་དངོས་ཀྱི་དཀར་ཆག	xxxiii
	བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ཡན་ལག་མཚན་དང་མཆོད་བརྗོད་སོགས།	1
	བཤད་རྒྱུད་ཀྱི་གནས་གསུམ་པ། འཕེལ་འགྱིབ་ནད།	3
	འཕེལ་འགྱིབ་ནད་ཀྱི་ནང་དོན་སྡིང་པོ།	3
༡	འཕེལ་འགྱིབ་ནད་ཞུས་པའི་ཚུལ།	4
༢	འཕེལ་འགྱིབ་ནད་ཀྱི་ཞུས་ལན།	5
༢.༡	ཉན་པར་གདམས་པ།	5
༢.༢	འཕེལ་འགྱིབ་ནད་ཀྱི་ཞུས་ལན་མདོར་བསྡུན་པ།	6
༢.༣	འཕེལ་འགྱིབ་ནད་ཀྱི་ཞུས་ལན་རྒྱས་པར་བཤད་པ།	9
	བཤད་རྒྱུད་ལེའུ་བརྒྱད་པ། ནད་ཀྱི་རྒྱུ།	9
	ནད་ཀྱི་རྒྱུ་ཡི་ནད་དོན་སྡིང་པོ།	9
༡	ནད་ཀྱི་རྒྱུ་མདོར་བསྡུན་པ།	11

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Parma tarjan — (111)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eighteth Birthday

[Part-I]



REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

ISBN : 978-81-936254-7-7

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

གསུམ་པ། བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྲོད་སོགས་རིག་གནས་ཆེ་རྒྱང་སྐོར། 337-627

༨) तिब्बती बौद्ध साहित्य का विकास एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव 337-346
—प्रो. डॉ. पेमा तेनजिन

१०) संस्कृत वाङ्मय को बौद्धावदान 347-362
—डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

११) བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་གི་བྱུང་བ་དང་དེའི་འགྱུར་ལྡོག་ལ་ཆུང་ཟད་དཔྱད་པ། 363-382
—སྤྲོ། འབྲུམ་རམས་པ་སྒེན་པ་རྡོ་རྗེ།

१२) བོད་སྐད་བརྡ་སྤྲོད་ལས་ཨིང་གི་ཚོགས་ཀྱི་འཛེལ་དེམ་ལ་དཔྱད་པ། 383-396
— འབྲུམ་རམས་པ་དོག་དཀོ་བཀྲིས་ཆོ་དོད།

१३) སྐུམ་ཆུ་བའི་ཆོག་ཐད་དངོས་ཀྱགས་སུ་བསྟན་པའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་དཔྱད་པ་བྱོ་གསར་མཐིན་རྒྱུན། 397-414
— འབྲུམ་རམས་པ་ལྷག་པ་ཆེ་དོད།

१४) དབྱངས་ཅན་མའི་སྐུ་མདོའི་རྣམ་བཤད་སྤྲོབ་མ་ལ་བན་པ་རྟོགས་དཀའི་སྐུན་པ་མེལ་བའི་ཏོད་ཟེར་བརྒྱ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་མཚམས་སྦྱོར་ལྟ་ཏོའི་འགྲེལ་པ་སྐུ་སྐྱབ་རྗེ་སོ་དང་བཅས་པ་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བགོད་པ། 415-494
—ཤྲཱནྟ་ན་ཐ་སངས་རྒྱས་བསྟན་དར།

१५) བོད་ཡིག་གམ་རྩོ་ཇེའི་སྐད་ཡིག་ཡར་རྒྱས་གཏོང་ཐབས་སྐོར་ཆུང་ཙམ་བྱེད་པ། 495-536
—ཤྲཱནྟ་སོ་ཐ་རྩོད་བཀྲ་ཤིས་རྒྱལ་པོ།

१६) བོད་སྐད་དང་འབྲེལ་བའི་འབྲུག་སྐད་ཁེངས་ཁའི་སྐུ་གདངས་ལ་ཞན་ཙམ་དཔྱད་པ། 537-566
—ཤྲཱནྟ་བསྟན་འཛིན་རྡོ་རྗེ།

१७) Preservation and Development of Tibetan/Bhoti Language in Indian Himalayas 567-582
—Dr. Konchok Tashi

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Lama Tenzin – (112)

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA-SERIES - 29

आर्यप्रज्ञापारमितावज्रच्छेदिकासूत्रम्
एवं
आचार्यकमलशीलविरचिता
आर्यप्रज्ञापारमितावज्रच्छेदिकाटीका

ཕྱོགས་དང་མཚུངས་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དོན་ཉེ་བར་བཅོད་པ་
འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་རྡོ་རྗེ་གཅོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་
ཆེས་བྱ་བའི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་པ་བཞུགས་སོ།།

(द्वितीयसंस्करणम्)

सम्पादक: पुनरुद्धारकर्त्ता च
प्रो॰ पेमा तेनजिन

केन्द्रीय-उच्चतिब्बतीशिक्षासंस्थानम्
(मान्य-विश्वविद्यालयः)
सारनाथः, वाराणसी

बुद्धाब्दः - 2562

ख्रीस्ताब्दः - 2019

Central Institute of Higher Tibetan Studies
सारनाथ, वाराणसी-221007

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA-SERIES - 29

PRAJÑĀPĀRAMITĀVAJRACCHEDIKĀSŪTRAM
With
PRAJÑĀPĀRAMITĀVAJRACCHEDIKĀTĪKĀ
of
Ācārya Kamalaśīla

(2nd edition)



Critically edited Tibetan version & Restored into Sanskrit
by
Prof. Pema Tenzin

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
SARNATH, VARANASI

B.E. 2562

C.E. 2019

केन्द्रीय उच्चतिब्बती शिक्षण संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

BIBLIOTHECA INDO-TIBETICA-SERIES - 29

Chief Editor: Prof. Geshe Ngawang Samten
Publication In-charge: Prof. Pema Tenzin

1. **Edition:** 550 Copies, 1994
2. **Edition:** 500 Copies, 2019

Price Hard back Rs. 460.00
Paper back Rs. 370.00

© Copyright by Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi-221007, India, 2019, All rights reserved

Published by:
Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN: 978-81-940337-2-1 HB
978-81-940337-3-8 PB

Printed at Sattanam Printers Pandeypur, Varanasi

Central Institute of Higher Tibetan Studies Deemed University Sarnath, Varanasi

विषयानुक्रमणिका

विषयः		पृष्ठम्
प्रकाशकीय	(तिब्बती)	१
प्रकाशकीय	(हिन्दी)	२
पुरो वाक्		३-४
विषयानुक्रमणिका		५-६
भूमिका	(तिब्बती)	१-२१
भूमिका	(हिन्दी)	२२-९१
शब्दसंकेतसूची		९२
संस्कृतग्रन्थपाठः (पुनरुद्धृतः)		९३-२२६
मंगलाचरणम्		९५
निदानम्		९८
उपोद्घातो बुद्धवंशानुपच्छेदश्च		१०५
प्रतिपत्तिलक्षणम्		१०८
प्रतिपत्तिस्थानम् **(अष्टादशस्थानानि)**		११०
१. चित्तोत्पादस्थानम्		१११
२. पारमितायोगस्थानम्		१२१
३. रूपकायाप्तिकामतास्थानम्		१२९
४. धर्मकायाप्तिकामतास्थानम्		१३१
५. भावनाविशेषलाभेऽनभिमानस्थानम्		१४६
६. बुद्धोत्पादारागतास्थानम्		१५१
७. क्षेत्रविशुद्धिप्रणिधानस्थानम्		१५२
८. सत्त्वपरिपाकस्थानम्		१५३
९. बाह्यशास्त्रेषु व्यपगतरागतास्थानम्		१५४
१०. सत्त्वभाजनलोकयोः पिण्डग्राहविशीर्णतायोगस्थानम्		१६०
११. तथागतपूजासत्कारस्थानम्		१६२
१२. कायचित्तपरिश्रान्तौ वीर्यवैमुख्यानारम्भलाभसत्कारविरहितता		१६२
१३. दु खाधिवासनस्थानम्		१६८
१४. ध्यानरसास्वादविरतिस्थानम्		१७५
१५. अभिसमयकालेऽहमिति विकल्पयोगस्थानम्		१८३

REGISTERED
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

१६. अववादपर्येषणम् १८४
१७. अभिसमयस्थानम् १८८
१८ बुद्धभूमिपर्येषणम् (**सप्तधा**) १९०
१. क्षेत्रपरिशुद्धिसम्पद् १९०
२. अनुत्तरदृष्टिपरिशुद्धिसम्पद् १९२
३. अनुत्तरज्ञानपरिशुद्धिसम्पद् १९३
४. प्राप्तपुण्यस्कन्धाधिपत्यसम्पद् १९५
५. कायसम्पद् १९६
६. वाक्सम्पद् १९७
७. चित्तसम्पद् (**सप्तधा**) १९५
१. स्मृत्युपस्थानम् २००
२. अभिसम्बोधिः २०१
३. महाधर्मार्थप्रज्ञप्तिः २०३
४ महाववादार्थप्रज्ञप्तिः २०४
५. धर्मकायपरिग्रहणम् २०६
६. संसारे निर्वाणे चाप्रतिष्ठानम् २१०
७. प्रस्थितिपरिशुद्धिः (**त्रिविधा**) २१६
१. ईर्यापथेन प्रस्थितिः २१६
२. भाजनसत्त्वलोकाधिपत्येन प्रस्थितिः २१८
३. असंक्लेशेन प्रस्थितिः (**द्विधा**) २२३
१. देशनाऽसंक्लेशः २२३
२. संसारासंक्लेशः २२४

भोटपाठस्य विषयानुक्रमणिका २२७
भोटग्रन्थपाठः २२९–४१६

परिशिष्टानि :

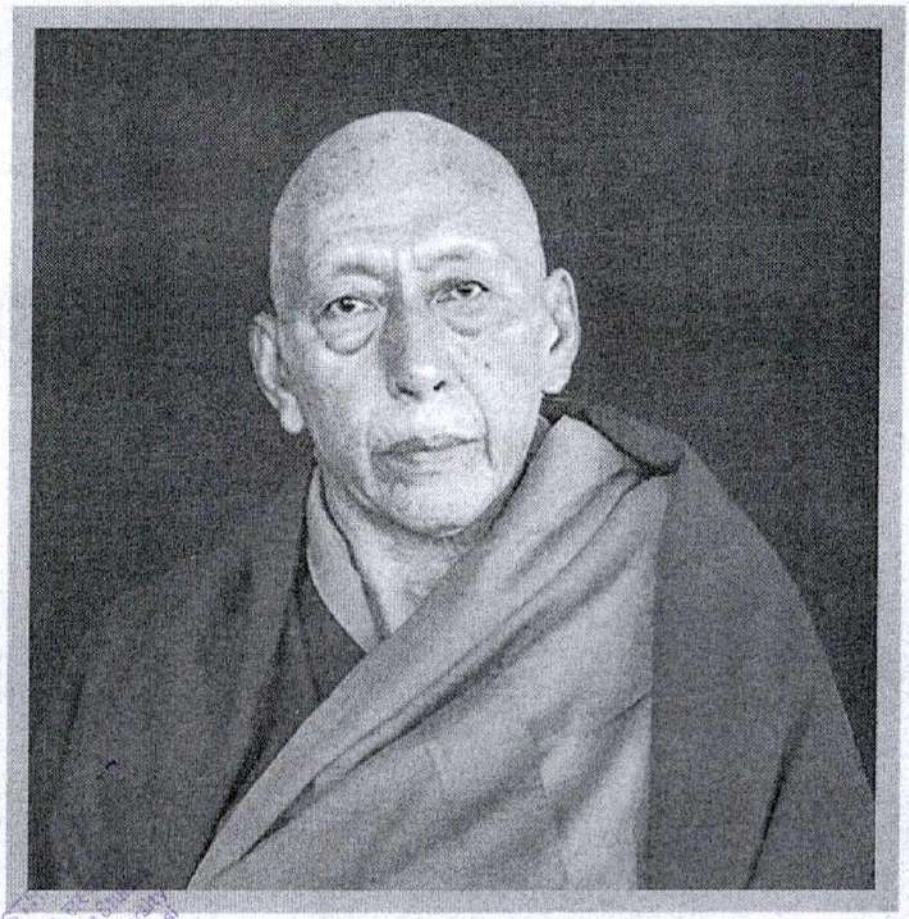
१. अकारादिक्रमेण सहायकग्रन्थानुक्रमणी ४१७
२. अकारादिक्रमेण ग्रन्थागतगद्य–पद्योद्धरणानामनुक्रमणी ४२१
३. * * * ग्रन्थप्रयुक्तविशिष्टसंस्कृत–भोटशब्दानुक्रमणी ४२४
४. आचार्यकमलशीलकृताना ग्रन्थानामनुक्रमणी ४४७

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी-Sarnath, Varanasi

Tashi Tsering (113)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय/Deemed University)
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eighteenth Birthday

[Part-I]



कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

གསུམ་པ། བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྲོད་སོགས་རིག་གནས་ཆེ་རྒྱང་སྐྱོར། 337-627

༨) तिब्बती बौद्ध साहित्य का विकास एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव 337-346
—प्रो. डॉ. पेमा तेनजिन

༡༠) संस्कृत वाङ्मय को बौद्धावदान 347-362
—डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

༡༡) བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་གི་བྱུང་བ་དང་དེའི་འགྱུར་ལྡོག་ལ་ཞུན་ཟད་དཔྱད་པ། 363-382
—ཡོ། འབྲམ་རམས་པ་སྦེན་པ་རྡོ་རྗེ།

༡༢) བོད་སྐད་བརྡ་སྤྲོད་ལས་ཨིང་གི་ཚོགས་ཀྱི་འཛེལ་རིམ་ལ་དཔྱད་པ། 383-396
— འབྲམ་རམས་པ་རིག་དགེ་བཀྲིས་ཚེ་རིང་།

༡༣) སྐམ་ཞུ་བའི་ཚོག་ཐུང་དངོས་ཀུག་ས་ གསལ་བའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་ དཔྱད་པ་བྱོ་གས་མཐིན་རྒྱན། 397-414
— འབྲམ་རམས་པ་ལྷག་པ་ཚེ་རིང་།

༡༤) དབྱངས་ཅན་མའི་སྐྱ་མདེའི་རྣམ་བཤད་སྤྲོབ་མ་ལ་བན་པ་རྟོགས་དཀའི་སྐྱན་ ངས་སེལ་བའི་ཚིད་ཟེར་བརྒྱ་ཤ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་མཚམས་སྦྱོར་ལྟ་སོའི་འགྲེལ་ བ་སྐྱ་སྐྱབ་རི་མོ་དང་བཅས་པ་མཆན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པ། 415-494
—ཨ་ཐུབ་ན་གཤངས་རྒྱས་བསྟན་དར།

༡༥) བོད་ཡིག་གམ་རྩོ་ཏེའི་སྐད་ཡིག་ཡང་རྒྱས་གཏོང་ཐབས་སྐོར་ཞུང་ཙམ་ གྲེང་བ། 495-536
—ཨ་ཐུབ་སོག་རྩོང་བཀྲ་ཤིས་རྒྱལ་པོ།

༡༦) བོད་སྐད་དང་འབྲེལ་བའི་འབྲུག་སྐད་ཁེངས་ཁའི་སྐྱ་གདངས་ལ་ཚད་ ཙམ་དཔྱད་པ། 537-566
—ཨ་ཐུབ་བསྟན་འཛིན་རྡོ་རྗེ།

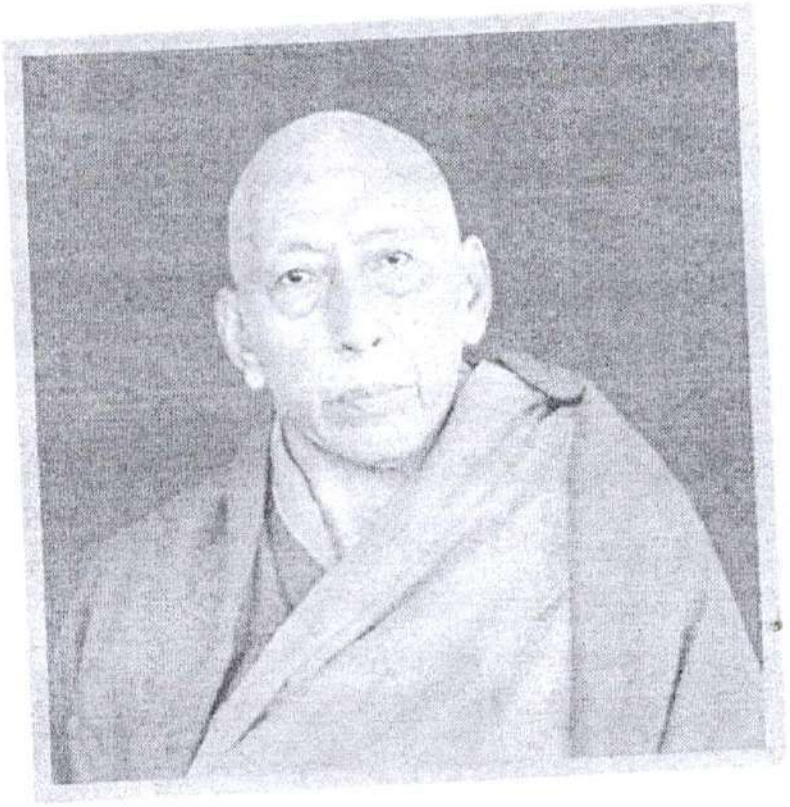
༡༧) Preservation and Development of Tibetan/Bhoti Language in Indian Himalayas 567-582
—Dr. Konchok Tashi

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Gyalsten Namdol
(114)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

CIHTS
Deemed University
Varanasi

ཤེས་བདག་ཉིད་ཆེན་པོའི་མདོད་ལ་ཀུན་གྱི་མཆོག་གསུངས་པ། མདོད་བའི་ལུགས་ཀྱི་བྱང་བ་བརྗོད་པ།

ཨཱརྱ་ཤཱ་ཀྱ་མཆོག་ལྡན།
(ཤེ་བའི་གཙུག་ལག་སློབ་དཔོན།)

ཆོས་དག་ཚོས་རྣམའི་ལྷ་ལས་ཡང་ཡང་གོར་མཁྱེན་བཅོ་ལྔས་བའི། །ཆུ་འཇིག་འཕྲིག་སུ།
མཁས་བཙུན་བཟང་གིའི་དབུས་རྡོ་རྗེའི་གདན་ཁྲིའི་གཙུག་ཏུ་ཟླ་ཉི་ཤར་ལེའུ་བཞི་པ།
ལྷ་སྡེ་མ་སྐྱེད་པའི་ལོ་ཏོག་བཟང་གོ་སྐལ་ལྡན་འཇིག་མར་ཁྱབ་མངའ་བའི། །
འཇིམ་མཐོན་རྒྱལ་བ་སྐས་བཅས་རྣམས་ལ་སྐྱོ་གསུམ་ཀྱིས་བས་བྱག་འཚལ་ལོ། །
རྒྱལ་བའི་དགོངས་བཞུད་མདོ་སྡེ་གསུམ་སྙིང་གི་དབང་གིས་བྱམ་པ་ནི། །
ཤམ་འབྲེག་ཀྱི་མཁྱེན་བའི་དབྱེ་ལ་འགོར་ཁུར་སྐྱེ་གསུམ་ལྡན་མདོད་དེ། །
སྡེད་ཉིད་ལྷ་དང་གསང་ཆེན་ཐེག་པ་རྣོ་གསུམ་ལྟན་ཁྱིན་བཞིན་རྒྱས་མདོད་པ། །
རིགས་གསུམ་གཅིག་བསྡུས་ཚོང་ཁ་པ་ཞེས་སྨན་པའི་ཡོངས་འཇིག་ཁྲབ་དེར་འདུག །།

ཅེས་ཡུལ་ཁྲིད་པར་ཅན་ལ་བསྟོད་པས་དང་འབྲེལ་བའི་ཚིག་པ་བརྗོད་པའིའི་ཆེན་འབྱུང་ལེགས་ལས་ཀྱི་
སྐྱོ་སོ་ཡངས་པོར་ཟེུ་ནས། རྣབས་ཀྱི་དོན་གང་ཟག་བར་བྱ་བ་ནི། དེ་ཡང་ཁྲབ་ཚེ་ས་དང་རྒྱ་ཚེ་ས་
ལས་བརྗོད་ཟེ། མཐའ་དང་སྐུ་ཁྱག་པ་མེད་པའི་ཚེ་ས་ཚིགས་ཀྱི་ཁྱབ་ཚེ་ལ་མཚམས་འཇིན་དུ་
མེད་པའི་ལྷོ་གསར་བཙུ་འཇི་གཅིག་ཀྱི་ཁྱོན་འདི་ར། ཀུངས་དང་ཚད་འཇིན་དུ་མེད་པའི་ཚེ་ས་ཚིགས་ཀྱི་མང་
ཞིང་ཚད་དཔག་བར་དཀའ་བའི་བདེ་འཕྲོ་དང་ངན་འགྲོའི་མེ་མས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ལུ། ཐོག་མ་དང་མཐའ་
མའི་ཚོད་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་ཚེ་ས་ཚིགས་ཀྱི་ཁྱུག་རི་བའི་ཕུ་མཐའ་འཁོར་ཡུག་ཏུ་ཚོགས་ཤིང་ཐམས་
ཀྱང་ཁྱབ་ཅིང་ཁྱབ་བྱེད་ཀྱི་བསོད་ནམས་དང་བསོད་ནམས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་ཡོད་པ་ལས་ཀྱི་ཁྱེད་པ་
བཞིན་ནས། སྣང་ཞིང་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་འཇིག་ཁྲབ་ཀུའི་རྣམ་པ་ཚེ་ས་ཚིགས་ཤིང་བཅད་

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

ཚལ་གྱང་ཐང་དུ་ལེགས་བཤད་གསེར་ཐྭེང་དང་། ས་ར་ཆོས་སྡེངས་ལུ་ཚ་ཤེའི་རྣམ་བཤད་ཆེན་མོ་དང་བྲང་དེས་ལེགས་བཤད་སྡིང་པོ། རྒྱ་སོག་ལུང་རྣམ་བཞག་རིམ་བའི་རྣམ་བཤད་དང་། ཕྱགས་རིམ་ཆེན་མོ། བོལ་ཁ་བསམ་གཏན་ཕྱིང་དུ་གསང་འདུས་རིམ་ལྔ་གསལ་སྒྲོན་དང་། རིམ་ལྔ་གདན་རྟོགས། བཤད་རྒྱུད་ཡེ་ཤེས་རྡོ་རྗེ་ཀུན་ཐས་བཏུས་པ་དང་། ལྷ་མོ་བཞིས་ཞུས་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་བཤད་མོགས་མཛད། བྱང་ཆུ་སྒྲིང་རྒྱལ་བའི་དབེན་གནས་ལུ་བྱུང་ཆོས་ལྟས་བྱུང་བར་དུ་འཐགས་པའི་ཁྱང་རྒྱབ་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་མཛད།

དགའ་ལྡན་དུ་དབས་གསང་བ་འདུས་པའི་རྒྱུད་འགྲེལ་ཆེན་མོ་དང་། དེའི་མཐའ་གཅོད་དང་། སངས་བསྟན་དོན་མོགས་མཛད། དེ་བཞིན་དུ་བདེ་མཆོག་ཙ་རྒྱུད་ཀྱི་ཀྲི་ཀྲ་སྒྲས་དོན་ཀུན་གསལ་དང་། ཕྱོགས་རིམ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་མོ་རྒྱས་བསྡུས་དང་། ལམ་རིམ་འབྲིད་པོ་དང་། འཇུག་པའི་རྣམ་བཤད་ཆེན་མོ་མོགས་སྣད་དུ་བྱང་བའི་ཚེ་གསུང་ཀྱི་སྐྱེས་ཆེན་པོ་དག་བསྡུན་པར་མཛད་ཡོད་དོ། །འདིར་གཞུང་གཅོད་ཆེ་བ་ཉུང་ཤས་ཀྱི་སྐོར་ལས་མཐའ་དག་པ་ཡགོད་ཀྱིས་མི་ལང་ས་ོ།།

རྒྱལ་བསྟན་དབྱར་ཀྱི་མཆོ་བཞེན་འཚེལ་ཞིང་རྒྱས།།
བསྟན་འཛིན་པད་དཀར་ཚལ་བཞེན་རྣམ་ཐར་གཙང་།།
བདེ་སྐྱིད་ཉེ་རྒྱུའི་ཚོད་བཞིན་ཐོག་གས་བཆུ་ཟུ།།
འགྲན་བཞིན་ཁྱབ་ས་རྡོགས་ལྟན་དུས་བཞིན་ཤོག །

སངྒ་མཉྩ་ལམ།

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

1 ཁྲུག་ཆོས་ལྟའི་སྐོར་ཐུབ་བཀའ་བྱབ་མཐའ། 292 (མི་རིགས་དེའ་བསྟན་པ།)

Sherab Nowgyal Gurung
115

ཨཀ། །ཕྱི་ནང་གི་ལུགས་སྒོམ་ཐོག་རྒྱལ་ཡོངས་འཛགས་བོད་མཁས་བའི་བགྲོ་གླེང་ཆེན་མོའི་སྐབས་ཀྱི་ དབྱད་རྩོམ་ཕྱོགས་བསྒྲིགས།

Scholars' Article Collection

National Conference on Philosophical Views and Meditation

(Tibetan and Indian Scholar's Meets)

རྒྱལ་སྤྱིའི་རྒྱ་ཚོང་ཁ་བའི་ལོ།

2019

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

དབལ་མཉམ་མེད་རི་བོ་དགེ་ལྡན་བའི་བསྟན་བའི་སློབ་འབྱེད་རྒྱ་མ་ཚོང་ཁ་བ་ཆེན་པོ་སྐུ་ཞེ་བར་གཅེགས་ནས་ལོ་ ༦༠༠ འཁོར་བའི་བཀའ་དྲིན་རྗེས་བྱན་དུ། གདན་ས་ཆེན་པོ་དགའ་ལྡན་རྣམ་བར་རྒྱལ་བའི་གླིང་ཀར་བྱང་ཐང་གཉིས་ཀྱི་སློབ་གཉེར་ལྷན་ཚོགས་ཐུན་མོང་ནས་འགེམས་སྦེལ་བྱས།

༄༅། །ཕྱི་ནང་གི་ལུགས་སྒོམ་ཐོག་རྒྱལ་ཡོངས་འཕགས་བོད་མཁས་པའི་བགྲོ་གླེང་ཆེན་མོའི་སྐབས་ཀྱི་དཔྱད་ཚོམ་ཕྱོགས་བསྒྲིགས།

Scholars' Article Collection

National Conference on Philosophical Views and Meditation

(Tibetan and Indian Scholar's Meets)

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

རྒྱལ་སྤྱིའི་རྗེ་ཚོང་ཁ་བའི་ལོ།
2019

དབལ་མཆོག་མེད་རི་གོ་དགེ་ལྡན་བའི་བསྟན་བའི་སློབ་འབྱེད་རྗེ་བྱ་མ་ཚོང་ཁ་བ་ཆེན་པོ་སྤྱི་ཞེ་བར་གཤེགས་ནས་ལོ་ ༨༠༠ འགོར་བའི་བཀའ་དྲིན་རྗེས་བྱན་དུ། གཙན་མ་ཆེན་པོ་དགའ་ལྡན་ཆམ་བར་རྒྱལ་བའི་གླིང་གི་ཤར་བྱང་ཐྲ་ཚང་གཉེས་ཀྱི་སློབ་གཉེར་ལྷན་ཚོགས་ཐུན་མོང་ནས་འགེམས་སྦེལ་བྱས།

དཀར་ཆག

སྔོན་གྲོས།.....I
གྲེལ་བརྗོད།.....X
དཀར་ཆག.....A

ཀ། རྒྱ་གར་འཕགས་པའི་ཡུལ་གྱི་ཐྱེ་ཁྲད་གི་ལྟ་བའི་སྐོར།

༡ ཐྱེ་ཁྲད་ལྟ་སྐོས་ཀྱི་སྤྱི་བཤད།.....1
༢ ལྟ་གྲུབ་རིག་པའི་བྱུང་རིམ་དང་འབེལ་རྒྱས། འཇིག་རྟེན་བཀོད་པ་པོ་འདོད་པའི་ལྟ་གྲུབ་སྤྱིའི་སྐོར།.....24
༣ རྒྱ་གར་གྱི་གནའ་བོའི་ལྟ་གྲུབ་ངོ་སྤྲོད་སྙིང་བསྡུས།.....63
༤ གྲངས་ཅན་གྱི་ལྟ་གྲུབ་ཀྱི་སྐོར།.....67
༥ རིགས་པ་ཅན་པའི་ལྟ་གྲུབ་ལས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་གཞག.....82
༦ ཤྲཱི་ཨཱརྱ་ར་ཧུལ་ཙཏྟ་འམ་སློབ་དཔོན་པའི་ལྟ་གྲུབ་སྐོར།.....98
༧ རིག་བྱེད་མཐའ་པའི་ལྟ་གྲུབ་ལས་ཚངས་པའི་རྣམ་གཞག.....114
༨ གཅེར་བུ་པ་དང་རྒྱུད་འབེན་པའི་གྲུབ་མཐའི་སྐོར།.....136
༩ བྱེ་བག་སྨྲ་བའི་གྲུབ་མཐའི་བྱུང་རིམ་དང་སྟེ་ལ་བཅོ་བརྒྱད་སྐོར།.....148
༡༠ བྱེ་བག་སྨྲ་བའི་འདོད་ཚུལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་སྐོར།.....178

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

༡༡ མདོ་སྡེ་པའི་གྲུབ་མཐའི་བྱུང་རིམ་དང་དེའི་གཞུང་དང་སློབ་དཔོན་གྲགས་ཚེ་བ་རྣ་ཡོད་སྐོར། 193

༡༢ མདོ་སྡེ་པའི་འདོད་ཚུལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་སྐོར། 209

༡༣ སེམས་ཅམ་པའི་གྲུབ་མཐའི་བྱུང་རིམ་དང་རྣམ་བདེན་རྣུག་གི་ཁྲད་པར། 222

༡༤ སེམས་ཅམ་པའི་འདོད་ཚུལ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པ་རྣ་ཡོད་སྐོར། 241

༡༥ ཐོགས་མེད་སྐུ་མཆེད་ཀྱིས་འཇུག་གཞིར་རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པས་སྟོང་པའི་ལྟ་བ་འཆད་ཚུལ། 292

༡༦ ཕྱོགས་གླང་ཡབ་སྲས་ཀྱིས་གཟུང་འཛིན་རྣམ་གཞན་ཀྱིས་གྲུབ་པས་སྟོང་པའི་ལྟ་བ་འཆད་ཚུལ། 310

༡༧ དབུ་མའི་གྲུབ་མཐའི་བྱུང་རིམ་དང་གྲུ་སྒྲུབ་ཡབ་སྲས་ཀྱི་ལྟ་བའི་སྐོར། 326

༡༨ ལེགས་ལྡན་འབྱེད་རྩེས་འབྲང་དང་བཅས་པའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ། 369

༡༩ དབུ་མའི་སློབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་དོན་དམ་ལ་རྣམ་གྲངས་དང་རྣམ་གྲངས་མེད་པའི་ཁྲད་པར་ཡེ་མེན་སྐོར། 390

༣༠ ཞི་འཚོ་ཡབ་སྲས་དང་འཕགས་སེང་གི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ། 404

༣༡ སངས་རྒྱས་བསྟན་དང་བླ་ན་གྲགས་པའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ། 420

ཁ། བོད་གངས་ཅན་ལྷོངས་ཀྱི་ཆོས་བརྒྱུད་ཤོ་སོའི་དབུ་མའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ་དང་སྐོམ་སྒྲུབ་སྟིང་དོན་སྐོར།

༣༣ གཡུང་དྲུང་བོན་གྱི་དབུ་མའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ་དང་སྐོམ་སྒྲུབ་སྟིང་དོན། 451

༣༣ སྤ་འགྱུར་རྩེད་མའི་དབུ་མའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ་དང་སྐོམ་སྒྲུབ་སྟིང་དོན། 462

༣༩ མཉམ་མེད་བཀའ་བརྒྱུད་པའི་དབུ་མའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ་དང་སྐོམ་སྒྲུབ་སྟིང་དོན། 505

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

བརྗོད་གཞི། ༢༢) གཡུང་དྲུང་བོན་གྱི་དབུ་མའི་ལྟ་བའི་བཞེད་ཚུལ་དང་སྐོར་སྒྲུབ་སྟྲིང་དོན།

ལྷ་རྟ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེ་མཐའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ཞང་གཞུང་སློབ་དཔོན་ཤཱཀྱ་རྣམ་རྒྱལ་
གཡུང་དྲུང་བོན་གྱི་གདན་ས་དཔལ་ཡུངས་ཀྲིའི་སྐྱབས་སུ་ཕྱིན་ཏེ་སྐྱིངས།

ཏྭེ་མེད་རྣམ་པར་དག་པ་བོན་གྱི་སྐུ། །
འགག་མེད་མཚན་དེས་བཀྲ་བ་རྫོགས་པའི་སྐུ། །
མ་དེས་གང་འདུལ་སྟོན་པ་སྤྲུལ་པའི་སྐུ། །
སྐུ་གསུམ་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་གྱས་པས་བསྟོད། །

ཞེས་མཆོད་པར་བརྗོད་པ་སྟོན་ཏུ་བཏང་ནས་རྣམ་འདེན་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྒྱལ་བ་གཤེན་རབ་མི་བོས་བོན་གྱི་སྐོ་མོ་ཏེ་སྟེང་གསུངས་ལས། གདུལ་བྱའི་ཐྱོ་དང་རིམ་པ་ལྟོས་ཏེ་བོན་ཐེག་པ་རིམ་པ་དགུ་རྣ་ཡོད་ལ། དེ་ཡི་ནང་ནས་ཐུན་ན་མེད་པའི་ཐེག་པ་ནི་ཐུན་མེད་རྫོགས་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ལ།

སྐབས་དོན་འདིར་བོན་གྱི་ཐེག་དགུ་ལ་རྒྱུ་ཐེག་བཞི་དང་འབྲས་ཐེག་ལྟ་ཡོད་པ་ལས། རྒྱུ་ཡི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཡུང་དྲུང་མེམས་དཔའ་སྤྲོས་མེད་པའི་ལུགས་ཀྱི་ལྟ་སྒོམ་གྱི་རྣམ་གཞག་འཆད་པ་ལ་གཉེས་ཏེ། གཞི་ལྟ་བའི་རྣམ་གཞག་བདེན་གཉེས་ཀྱི་ངོ་བོ་དང་ཉམས་ལེན་སྒོམ་པའི་རིམ་པ་གཉེས་ལས། དང་པོ་གཞི་བདེན་གཉེས་ཀྱི་དོན་ལ་དྲུག་པར་བྱ་བ་ལ། ཐེག་པའི་འདོད་ལུགས་དང་། གཞི་བདེན་གཉེས་ཀྱི་རང་བཞིན། ཞར་བྱུང་ཚད་མའི་སྐོར་དང་གསུམ་ལས།

ཐེག་པའི་འདོད་ལུགས།

གཡུང་དྲུང་སེམས་དཔའ་སྤྲོས་མེད་(དབུ་མ་པ)ལས། དོན་དམ་དུ་སྤྲོས་བྲལ་འབའ་ཞིག་དང་། ཀུན་རྫོབ་ཏུ་སྐྱེ་མ་ལུས་བའི་རྟེན་སྣང་ཡོད་པར་འདོད་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་ལུགས་མི་འདྲ་བ་གཉིས་སུ་ཡོད་

Abdaal Printers, Hubli # 99862 10775

བར་སྐྱོན་གྱི་བདག་དབང་ཤར་བྱང་གྲྭ་ཚང་གཉིས་ཀྱི་སྒོ་བ་གཉེར་ལྷན་ཚོགས་ལ་ཡོད།
བར་ཞེངས་དང་པོར་དེབ་གྲངས། ༡༠༠༠

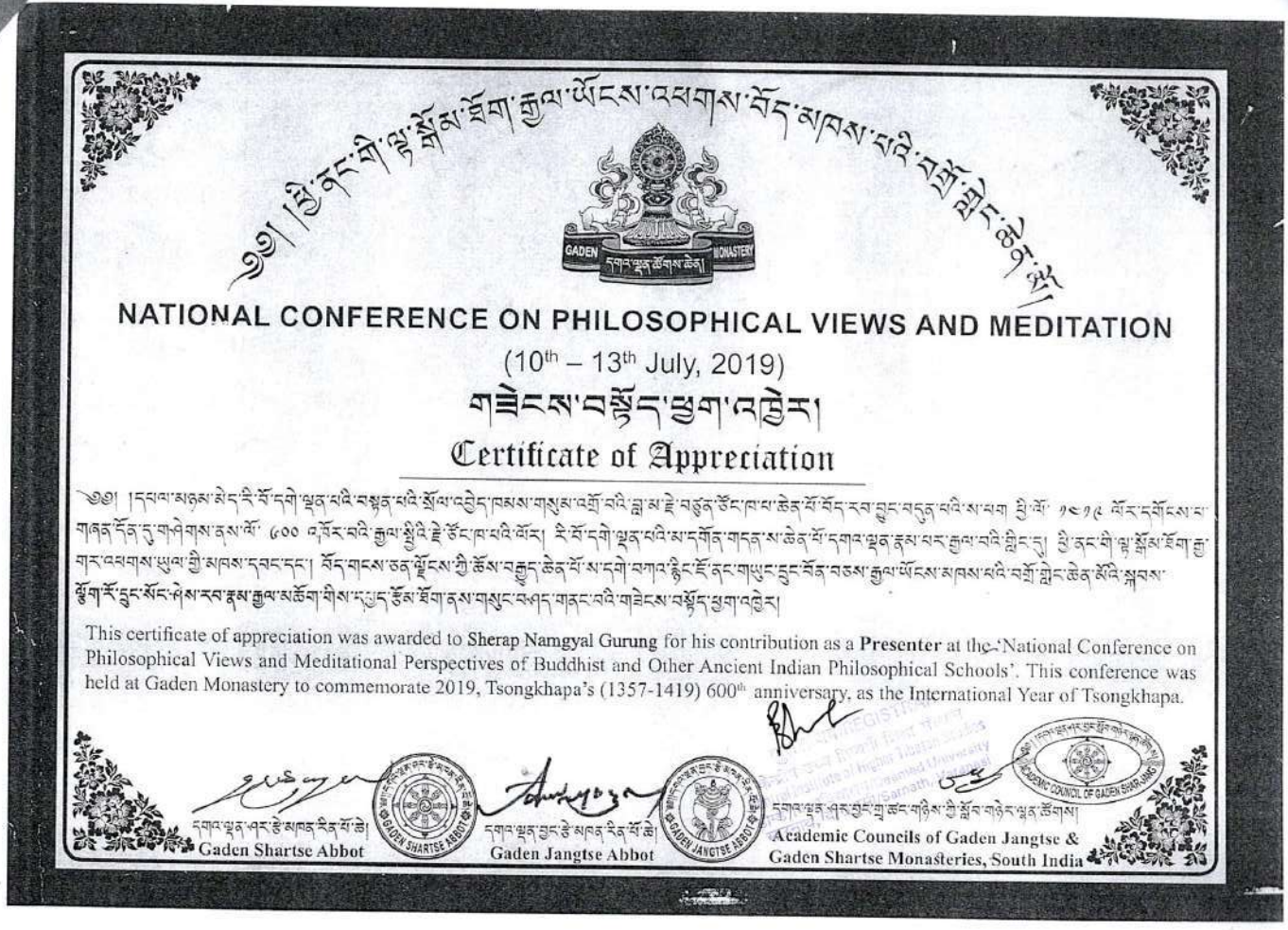
དགའ་ལྡན་ཤར་བྱང་སྒོ་བ་གཉེར་ལྷན་ཚོགས་ནས་བར་སྐྱོན་ཞུས།
2019

ISBN 9 788189 165604

Academic Council of Gaden Shartse & Jangtse
P.O. Tibetan Colony - 581411,
Mundgod N.K. Karnataka, South INDIA

E-mail: gaden_shartsemonastery@yahoo.com
gaden_jangtse@yahoo.com

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi



GADEN MONASTERY

NATIONAL CONFERENCE ON PHILOSOPHICAL VIEWS AND MEDITATION

(10th – 13th July, 2019)

Certificate of Appreciation

This certificate of appreciation was awarded to **Sherap Namgyal Gurung** for his contribution as a **Presenter** at the 'National Conference on Philosophical Views and Meditational Perspectives of Buddhist and Other Ancient Indian Philosophical Schools'. This conference was held at Gaden Monastery to commemorate 2019, Tsongkhapa's (1357-1419) 600th anniversary, as the International Year of Tsongkhapa.

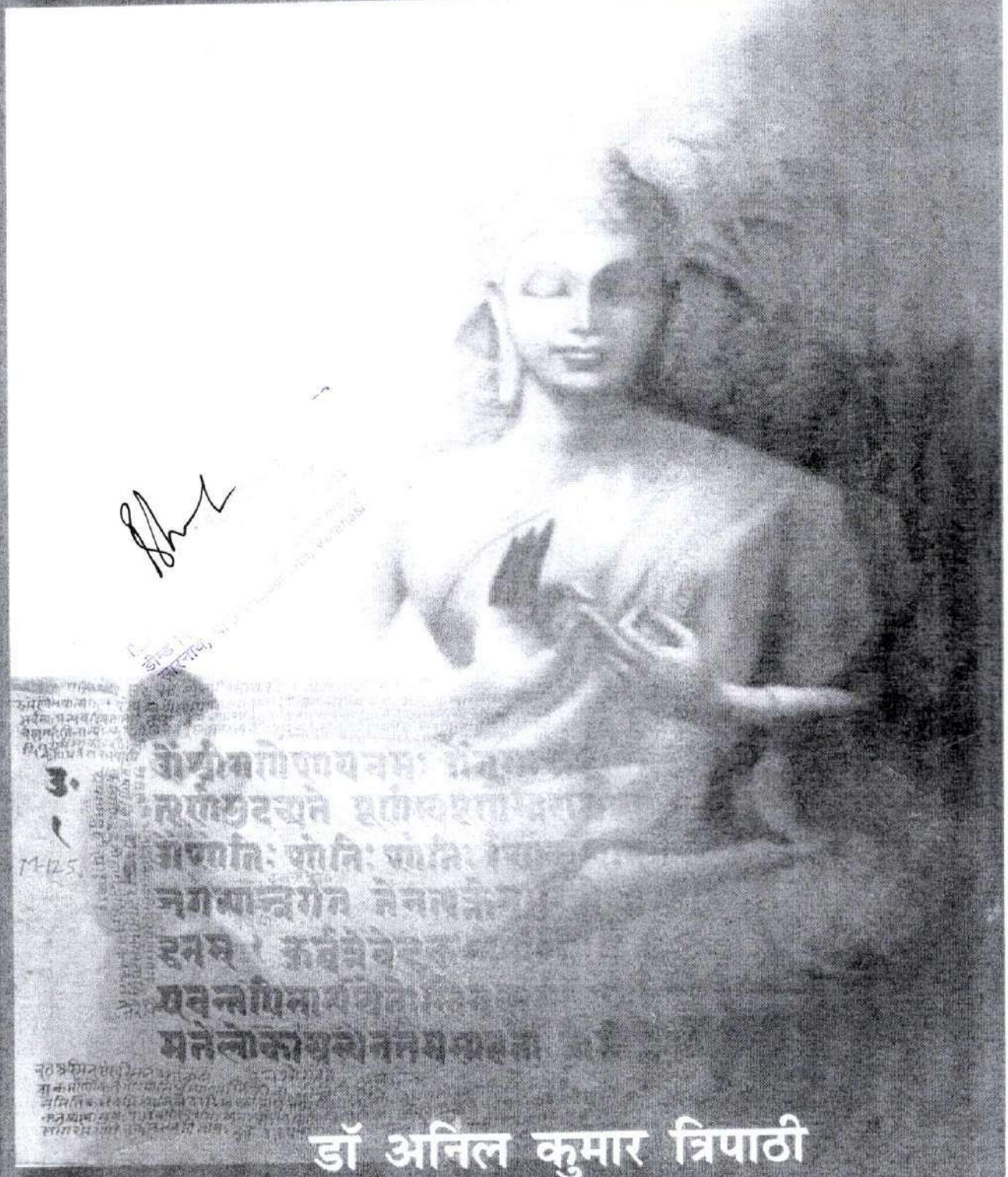
Gaden Shartse Abbot

Gaden Jangtse Abbot

Academic Councils of Gaden Jangtse & Gaden Shartse Monasteries, South India

D P Chaturvedi
116

संस्कृत में बौद्ध-दर्शन



डॉ अनिल कुमार त्रिपाठी



नाम : डॉ अनिल कुमार त्रिपाठी

पिता : स्व0 पं0 श्री बासुदेव त्रिपाठी

जननी : स्वर्गीय श्रीमती सुमित्रा त्रिपाठी

जन्म : फरवरी, 1970, Email: drtripathijee@gmail.com

शिक्षा : स्नातकोत्तर, (एम.ए), बौद्ध–अध्ययन, संस्कृत, आचार्यव्याकरण, आचार्यसाहित्य एवं बौद्ध–दर्शन, पीएच.डी, (संस्कृत बांङ्मय में बौद्ध–दर्शन), मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।

कार्य उपलब्धि : प्राध्यापक (संस्कृत विभाग), महेश सिंह यादव कॉलेज, गया, बौद्ध–अध्ययन विभागमगध विश्वविद्यालय, बोधगया।

व्याख्यान एवं सम्मेलनः नालंदा के पृष्ठभूमि में बौद्ध–दर्शन 2011 (नव नालन्दा महाविहार, नालंदा) श्री गौतम बुद्ध चरित, लोकार्पण समाहरोह के प्रथम वक्ता 2017ए (रा0 म0 लो0 अवध विश्वविद्याय, फैजावाद)

अभिरूचि : इतिहास एवं आध्यात्मिक साहित्य में अभिरूचि एवं मौलिक लेखन तथा बौद्ध एवं संस्कृत साहित्य, दर्शन, इतिहास, आध्यात्मिक साहित्य में अनेको शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित

प्रकाशित कृतियॉ :

1. ***Buddhist Philosophy in Compositions of Hindi Chhayawadi***
2. ***Perspective on Mysticism in Buddhism,***
3. ***Social Perspective of Harmony in Buddhism,***
4. ***Tradition and Cognitive Behavioral Practices in Buddhism.***

प्रकाशाधीन :

1. ***Fragmented Consciousness in Dalit Literature and Higher Education***
2. ***Married Life Concerns in Works of Bhavbhuti.***
3. ***Marks of the Superman in Buddhism***

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
मानित विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

₹ 1195/-

P. K PUBLISHERS & DISTRIBUTORS

J-231/1A, Gali No 14, 4th Pusta , Kartar Nagar,
Delhi -110053
Mob: +919540483251, +917982551449
Email -pkpublication@gmail.com

ISBN 978-81-936993-8-6

प्रकाशक:

पी.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

जे–231/A, गली नं. 14, चौथा पुस्ता,
करतार नगर, दिल्ली–110053

फोन: 9540483251, 79825512449
E-mail: pkpublication@gmail.com

संस्कृत में बौद्ध दर्शन

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

Dr. Anil Kumar Tripathi
Email: drtripathijee@gmail.com

प्रथम संस्करण 2019

आई.एस.बी.एन: 978-81-936993-8-6

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

भारत में मुद्रित:

पी.के पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली–53 के लिए प्रकाशित एवं शहनवाज़ कम्प्यूटर, दिल्ली–द्वारा शब्द संयोजन तथा सचिन प्रिंटर्स, मौजपुर, दिल्ली–53 में मुद्रित।

समर्पण



(11th Oct.1902 - 8th Oct.1979)

परमपूज्या जननी पाराम्बा स्वरूपा स्मृतिशेष ममतामयी
बड़ी माँ शकुन्तला देवी त्रिपाठी तथा वसुस्वरूप
सुखधाम पिता स्व0 पं0 देवनारायण त्रिपाठीजी
के यगुल श्रीचरण–कमलों में भाव–प्रसून
लेकर सादर सश्रद्धा, सविनय
सप्रेम समर्पित!

डॉ. अनिल कुमार त्रिपाठी
एवं
डॉ. संगीता त्रिपाठी

संस्कृत
विज्ञान
के सम
वाग्मय
सिद्धांत
करूण
बौद्ध–
स्थान
बौद्ध–
भगवा
भारत
समन
प्रयास
समय
अर्वाची
रूप में
है। इस
पूर्ण ब
चिन्तव
कहाँ
प्रत्यक्ष
और भ
के प्रति
का अ
प्रस्तुत
स्थापन
करने
सम्प्रति
जिज्ञा
किंचि
को सा



प्रो० धर्मदत्त चतुर्वेदी,

अध्यक्ष– संस्कृत एवं संकायप्रमुख, षब्दविद्या

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, मानित वि0वि0,

सारनाथ, वाराणसी, मो0–9451570835

ई0मेल– ddcsanskrit@gmail.com

"संस्कृत में बौद्ध दर्शन" – कृति समीक्षा एवं पुण्यानुमोदनाश्री.

भगवान् बुद्ध और उनका धर्म दर्शन निश्चित ही विश्वसमुदाय के परमकल्याण के लिये संकल्पित है। बौद्धदर्शन वस्तुतः बुद्ध के लोकातीत तप, त्याग, करूणा, दान, शील, क्षान्ति तथा प्रज्ञा की एक दुर्गम यात्रा का परिणाम ही कहा जायेगा। इसी धर्म दर्शन ने मानव के आन्तरिक व बाह्य व्यवहारों का बड़ी गम्भीरता से परीक्षण कर उसे एक विश्व कल्याणकारी सद्धर्म का मार्ग दिखाया है। इतना ही नहीं बल्कि इस दुनिया के थके मादे दुःख–पीड़ित लोगों को कट्टरवाद तथा रूढ़ियों के पाश से मुक्त कर सत्य, अहिंसा, समानता एवं करूणा की शिक्षा में दीक्षित किया है। परिणामतः बौद्ध धर्म किसी एक देश तक सीमित न होकर आज भारत से लेकर नेपाल, भूटान, म्यॉमार, थाईलैण्ड, घर्मा, चीन, जापान, जर्मनी, तिब्बत, कोरिया, केनाडा इत्यादि इनेक देशों में अपनी ज्ञानगंगा की अविरल धारा प्रवाहित कर रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य है इस धर्म दर्शन की अनुपम लोकहितकारी सुपरीक्षित शिक्षा एवं उसका विशालतम साहित्य। यह धर्मदर्शन आज किसी एक भाषा या एक लिपि तक ही सीमित नहीं बल्कि प्राचीन एवं अर्वाचीन अनेक स्वदेशीय तथा विदेशीय भाषाओं, लिपियों, सीमान्त प्रदेशीय भाषाओं में एक लम्बी ग्रन्थपरम्परा के रूप में निबद्ध है। जब तक कोई भी लेखक इसके समूचे राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय उपलब्ध शिक्षा साहित्य से परिचित नहीं होगा तब तक इसकी लेखनी समग्र परम्परा को समुचित रूप से प्रकाशित नहीं कर सकती। इसमें देवभाषा संस्कृत को प्रथम स्थान प्राप्त है,क्योंकि इसमें भगवान बुद्ध के सूत्र–वचन आज भी जैसे लंकावतार सूत्र, ललितविस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक इत्यादि ग्रन्थ रूप में उपलब्ध होते हैं। वैसे भी दुनियाँ की भाषाओं में संस्कृत को ऐतिहासिक विद्वानों ने सर्वप्राचीन ठहराया है। जहाँ वैदिक साहित्य,

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय, Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

संक्षिप्त परिचय



लेखक	: डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी
पिता	: पं. देशराज चतुर्वेदी
जन्मस्थान	: ग्राम व पोस्ट- आरी, जिला- महोबा (उ.प्र.)
जन्मतिथि	: १.०३.१९५९
शैक्षणिक योग्यता	: आचार्य नव्यव्याकरण, बौद्धदर्शन व पी-एच.डी., काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
अध्यापन	: १९९२ से प्राध्यापक, रीडर तथा २००९ से प्रोफेसर संस्कृतविभागाध्यक्ष एवं शब्दविद्यासंकाय-प्रमुख, केन्द्रीय उच्चतिब्बतीशिक्षासंस्थान, सारनाथ, वाराणसी।

शिक्षा गुरु : आचार्य यमुना प्रसाद शास्त्री (पितृव्य), प्राचार्य, श्रीरामकृष्ण सं.म.वि., मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.), आचार्य वासुदेव द्विवेदी शास्त्री, वाराणसी, स्व. पं. शशिधर मिश्र (व्याकरणाचार्य), वाराणसी, अनुसन्धान-निर्देशन- प्रो. श्रीनारायण मिश्र, वाराणसी।

प्रकाशन-लेखन : १. कातन्त्रोणादिसूत्रवृत्तिः (रूपसिद्धि व हिन्दी टीका), २.वज्रयानदर्शनमीमांसा (संस्कृत-सम्पादन), ३.संस्कृतसेवासाधना (सम्पादन), ४.सर्वदेवपूजादर्पणः (सम्पादन), ५. संस्कृतपत्रमञ्जूषा (सम्पादन), ६.संस्कृतकाव्यगीतवैभवम्, ७.सौम्याब्दकाव्यामृतम् (उ.प्र. संस्कृत संस्थान लखनऊ द्वारा २०१७ वर्षीय विशेष पुरस्कार से सम्मानित) ८.साधारणाब्दकाव्यामृतम् ९. विरोधकृन्नामाब्दकाव्यामृतम् एवं अनेक राष्ट्रीय शोध-सङ्गोष्ठियों में शोधपत्र प्रस्तुति, कविसम्मेलनों में कविता-प्रस्तुति, नाटक अभिनय का निर्देशन, संस्कृतप्रशिक्षण शिबिरों का संचालन, संस्कृत-प्रचार कार्य में सहयोग व पत्र-पत्रिकाओं में १० से अधिक प्रकाशित अनेक शोध-निबन्ध व कवितायें, संस्कृत पत्रिकाओं के सहभागी सम्पादक कार्यपरिषद् एवं विद्वत् समितियों की सदस्यता।

शिवार्चना : निज जन्मभूमि ग्राम- आरी में चन्देले कालीन प्राचीन शिव नादिया मन्दिर जो पूर्णतया विनष्ट हो चुका था, उसका नव-निर्माण जुलाई २०१२ से फरवरी २०१३ तक किया गया, जिसमें १२ ज्योतिर्लिङ्ग एवं अन्य देव-देवियों की कुल २५ प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा महारुद्र यज्ञ के अन्तर्गत वसन्तपंचमी २०१३ को कराई गई। इसका विशेष कार्यक्रम इन्टरनेट यूट्यूब पर Dharmdatt Chaturvedi लगाने पर यज्ञ को क्लिक करने से १-७ डी.वी.डी. २८ भागों में विभाजित यज्ञ कार्यक्रम को देखा जा सकता है।

सम्पर्क : ९४५१५७०८३५, ८८५३१६२४८० ईमेल : ddcsanskrit@gmail.com
वर्तमान पता : संस्कृत विभाग, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी-०७

ISBN: 978-81-941224-3-2 मूल्य : 350.00

शारदा संस्कृत संस्थान
जगतगंज, वाराणसी-221 002.
फोन : (0542) 2204168 (संस्थान) 2452037 (आवास)
e-mail: sharadabhawan@yahoo.co.in, website: www.sharadasansthan.in

परिधाव्यब्दकाव्यामृतम्

रचयिता - प्रो. धर्मदत्तचतुर्वेदी

परिधाव्यब्दकाव्यामृतम्

PARIDHĀVYABDKĀVYĀMṚTAṂ

एकवर्षीयं विविधवृत्ताश्रितं हिन्दी-अनुवादसमेतम्,
1077 सप्तसप्तत्यधिकैकसहस्रपद्यात्मकम्



रचयिता
प्रो. धर्मदत्तचतुर्वेदी
आचार्योऽध्यक्षश्च संस्कृतविभागः
केन्द्रीयउच्चतिब्बती-शिक्षासंस्थानम्, मानितविश्वविद्यालयः
सारनाथः वाराणसी (उ.प्र.)

वि.सं. 2076 सन् 2019

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

रामकथा

वैश्विक परिदृश्य

बृजबाला सिंह



© प्रकाशक

संस्करण : 2019

ISBN : 978-81-7555-872-4

मूल्य : ₹ 1200.00

प्रकाशक :
यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन
22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक :
दिल्ली प्रिन्टर एंड लेमिनेशन
दिल्ली-110 002

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्चतिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

10. इण्डोनीसियाई कला में रामकथा का शिल्पांकन — 72
डॉ. रंजना मालवीय

11. रामकियेन: थाइलैंड की रामकथा — 79
डॉ. सुनीता यादव

12. रामायण निबन्ध: रवीन्द्रनाथ — 83
डॉ. बिन्दु लाहिड़ी

13. रामकथा आधारित मैथिली साहित्य — 90
डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

14. बुन्देली साहित्य में राम कथा — 108
डॉ. बहादुर सिंह परमार

15. लोक परम्परा में 'श्रीराम पाँचाली' और 'श्रीरामचरितमानस' — 127
डॉ. स्वप्ना बन्द्योपाध्याय

16. रामकथा: आधुनिक भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में — 137
डॉ. मीनाक्षी मिश्रा

17. रामकाव्य परम्परा और छन्द रामायण — 146
डॉ. सुमन तिवारी

18. कवितावली में 'लंका दहन' — 156
डॉ. सरिता मिश्रा

19. भरत महामहिमा जलरासी — 164
डॉ. हिमांशु शेखर सिंह

20. आधुनिक परिवेश में रामराज्य की परिकल्पना — 174
डॉ. अनुराग त्रिपाठी

21. सूर का राम काव्य — 180
प्रो. श्रद्धा सिंह

22. तुलसी का कृष्ण-काव्य: श्रीकृष्णगीतावली — 188
डॉ. वृजबाला सिंह

REGISTRAR
Rajkiya Sanskrit Sansthan
Deemed University
Rajkiya Rajkiya Sanskrit Studies
Deemed University
Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyalaya
Varanasi/Sarnath, Varanasi

अध्याय-20

आधुनिक परिवेश में रामराज्य की परिकल्पना

*डॉ. अनुराग त्रिपाठी**

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाव एवं कला, दोनों पक्षों की दृष्टि से इस काल का साहित्य अप्रतिम है। फिर, जिस काल में कबीर, सूर, जायसी, तुलसी, रैदास, मीरा जैसे महान रचनाकार रहे हों और रामचरितमानस जैसी कालजयी रचना का सृजन हुआ हो, वह काल अपने आप महत्त्वपूर्ण हो जायेगा।

तुलसी का रामचरितमानस हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस रचना ने तुलसी को महाकवि ही नहीं विश्वकवि बना दिया। शायद ही कोई ऐसी भाषा हो, जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद न हुआ हो। हिन्दी साहित्य की यह एकमात्र रचना है, जो महल से लेकर झोपड़ी तक के जीवन को अपने में अर्न्तानहित किये हुए है। महाकवि तुलसीदास ने हिन्दी कविता को सामन्ती दायरे से निकाल कर उसे एक उन्मुक्त वातावरण में विचरण करने का अवसर प्रदान किया। रामचरितमानस में लोकजीवन की अभिव्यक्ति हिन्दी साहित्य की एक ऐतिहासिक घटना है।

वस्तुत: रामचरितमानस भारत का जीवनदर्शन है। संस्कृति, धर्म, राजनीति, दर्शन आदि जितने स्वस्थ रूप में इस काव्य में निरूपित हुए हैं, उनका वह रूप अन्य ग्रन्थों में कम दिखाई देता है। पौराणिक कथानक के माध्यम से तुलसी ने अपने युग को प्रस्तुत किया है। इस महाकाव्य की श्रेष्ठता का प्रतिपादन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन शब्दों में किया है–"तुलसी एक महान कवि थे। उनका रामचरितमानस संसार का एक महान ग्रन्थ माना जाता है और माना

* असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी।

जाना भी चाहिए, इस
प्रतिपादक है और भवि

जो भी हो, राम
पर यह ग्रन्थ पूर्णरूप
संज्ञा देकर इसके महा
लोकप्रियता को वे भी
गुप्त ने आलोच्य महा
ग्रन्थ स्वीकार किया है
से इसकी सम्यक् तुल
कहना उचित नहीं हो
काव्य परम्परा में इसक

महाकवि तुलसी
एवं दर्शन को अक्षुण
भूलेगा। इसके अतिरि
को निरूपित किया है
मुख्यत: उनके 'रामच
आधुनिक सन्दर्भ में उ
ने आने वाली पीढ़ी क
दिया है, अन्यथा वह
रह जाता। कालपुरुष
'मानस' के मूल्य आ

मानव समाज जि
सामान्यत: धर्मशास्त्र
का है। स्मृतियों में जि
समाज स्वीकार करत
के द्वारा समाविष्ट हु
विधि-विधान साहित्य
व्याख्या करना भी सा

गोस्वामी तुलसी
दायित्व से परिपूर्ण क
कल्याण-भावना से
और काल की सीमा

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

Amit Mishra
119

INDIAN FOREIGN POLICY & CONTEMPORARY GLOBAL ISSUES

Editor
CHAKALI BRAMHAYYA



Copyright © Editor

All rights reserved. Without limiting the rights under copyright above, no part of this publication may be reproduced, utilized, stored in or introduced into a retrieval system or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the publisher.

The views expressed in this volume are those of the author(s) of the respective papers and do not necessarily those of the Editor and the Publisher.

First Published 2020

ISBN : 978-93-84081-24-9

Price: Rs. 1595.00

Printed at Replika Press Pvt. Ltd.

Writers Choice

B-258, Rama Park Road
Mohan Garden
New Delhi -110059
Email: info@writerschoice.in
Web: www.writerschoice.in

Cataloging in Publication Data--DK
Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>
"India and New World Order in the Contemporary Global Politics" (Conference) (2018 : Amarkantak, India)
Indian foreign policy and contemporary global issues / editor, Chakali Brahmayya.
pages cm
"The book is outcome of the proceedings of international conference entitled "India and New World Order in the Contemporary Global Politics", organized during 20-21, March, 2018 at Department of Political Science & Human Rights, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh."
Includes bibliographical references and index.
ISBN 9789384081249

1. India--Foreign relations--Congresses. 2. World politics--1989- --Congresses. 3. Economic history--1990- --Congresses. I. Brahmayya, Chakali, editor. II. Indira Gandhi National Tribal University. Department of Political Science and Human Rights, organizer. III. Title.

LCC DS445.I53 2018 | DDC 327.54 23

VARANASI

Contents

Foreword vii

Preface ix

Acknowledgements xiii

Contributors xv

1 Role of Cross Border Terrorism in Fomenting Tensions between India and Pakistan 1

DR. AMIT MISHRA

2 Relevance of BRICS: Regional Powers, Global Governance and the Roadmap for Multi-Polar World 15

DR. SUDIP CHAKRABORTY

3 Looking Sino-Indian Maritime Relations in the 21st Century through the Prism of Security 32

RAVI ASHOK THORAT

4 The Dynamics of Transnational Social Movements in the Contemporary Global World 42

DR.CHAKALI BRAMHAYYA

5 India's Claim for Permanent Seat in UNSC: Initiatives and Challenges 72

KARAMALA AREESH KUMAR

6. Non State Actors and Global Health Governance: A Political Economy View from India 85

VIVEK N. D.

7. Gender Inequality and New World Order: An Analysis 102

DR MAMATA PATRA

1

Role of Cross Border Terrorism in Fomenting Tensions between India and Pakistan

DR. AMIT MISHRA

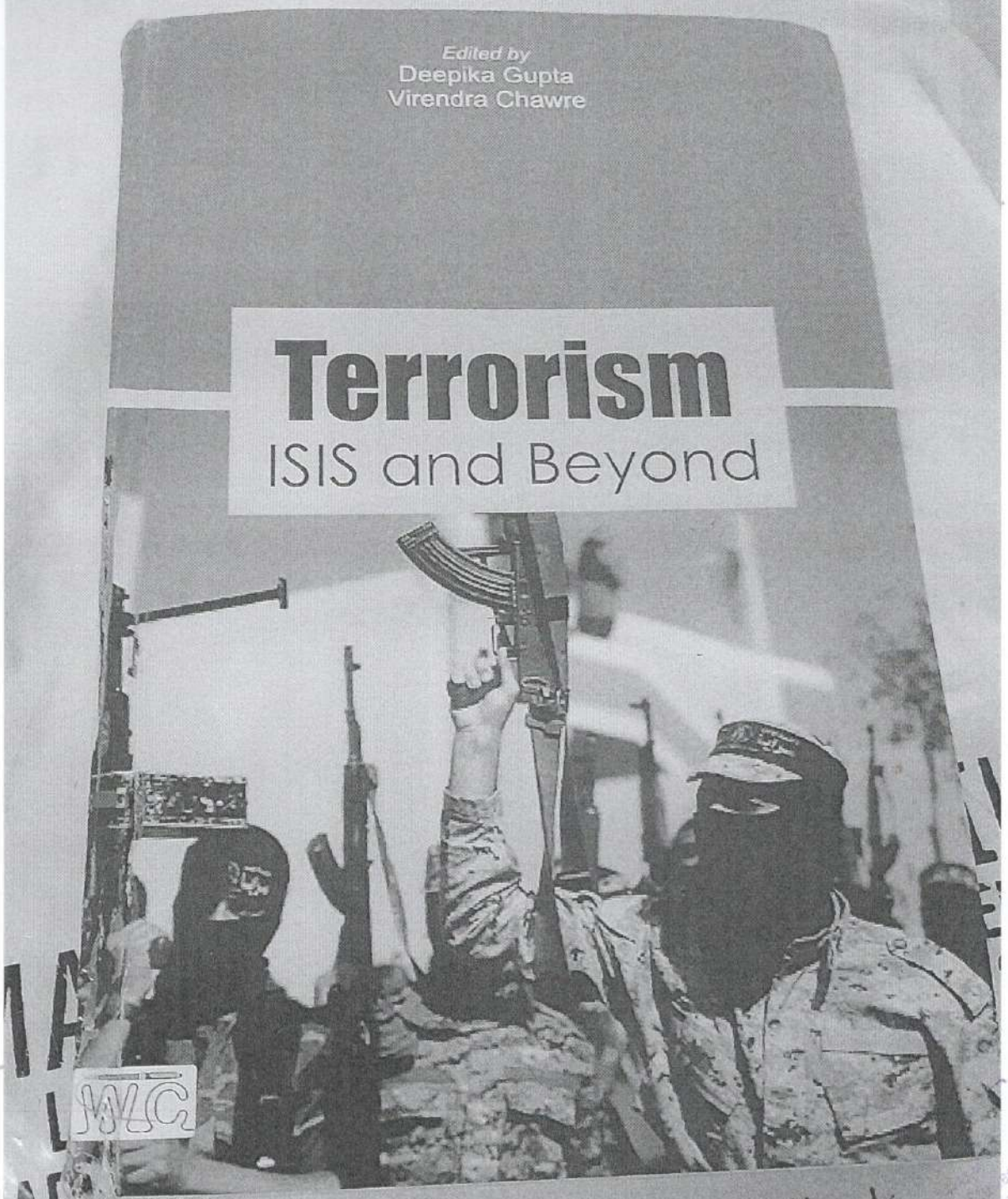
Strategic Situation in the Subcontinent: An Introduction

The bilateral relations between India and Pakistan have been determined in a complex manner since the violent partition of British India in 1947, followed by the Kashmir aggression and the numerous wars and military conflicts fought between the two nations, primarily by the sinister designs of Pakistan and its succeeding generals. Consequently, their relationship has been plagued by hostility, hatred

Amit Mishra
120

Edited by
Deepika Gupta
Virendra Chawre

Terrorism
ISIS and Beyond



WLC

Copyright © Editors

All rights reserved. Without limiting the rights under copyright above, no part of this publication may be reproduced, utilized, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of both the copyright owner and the publisher.

The views expressed by the contributors are strictly their own and the Editors do not necessarily subscribe to them. The contributors are also responsible for the material they have used in their respective chapters –source and copyright permission etc. and the Editors and the Publisher are not responsible at all in this respect.

First Published 2019

ISBN : 978-93-84081-90-4

Price: Rs. 920.00

Printed at Replika Press Pvt. Ltd.

Writers Choice

B-258, Rama Park Road
Mohan Garden
New Delhi -110059
Email: info@writerschoice.in

Contents

Introduction
DEEPIKA GUPTA v

Acknowledgements xiii

Contributors xvii

1 Terrorism: Concept and Complexities
DR. P. KRISHNA MOHAN REDDY 1

2 Terrorism and its Causes
DR. MAHENDRA PRAKASH 19

3 Islamic Fundamentalism in India after 9/11: Issues, Concerns and Impacts
DR. ANITA SHARMA 27

4 ISIS: An Existential Threat to the World?
DR. PAUL ROZARIO 40

5 Threat of ISIS and Implications for India
DR. G. VIJAY KUMAR REDDY 67

ISIS Challenge to South Asia: A Myth or Reality?
DR. VIRENDRA CHAWRE 77

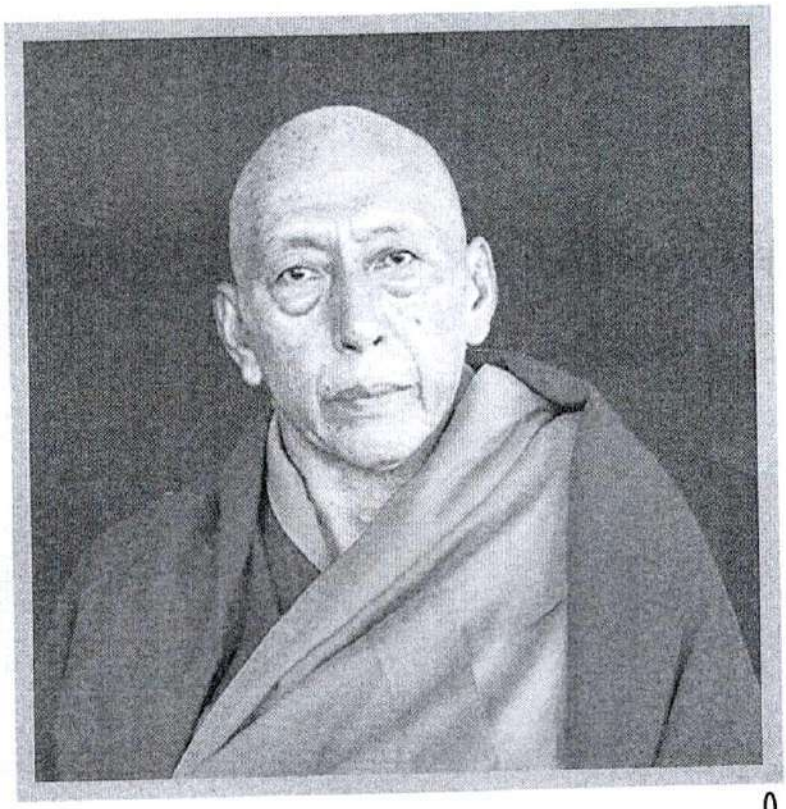
Terrorism in Syria and Global Response
DR. AMIT MISHRA 93

Eliminating Terrorism, United Nations and ISIS
DR. MAHENDRA PRAKASH 113

Lhokpa Tsering – (21)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eighteenth Birthday

[Part-I]

Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
सारनाथ, वाराणसी, Sarnath, Varanasi

གསུམ་པ། བོད་ཀྱི་བརྡ་སྤྱོད་སོགས་རིག་གནས་ཆེ་རྒྱང་སྐོར། 337-627

༨) तिब्बती बौद्ध साहित्य का विकास एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव 337-346
—प्रो. डॉ. पेमा तेनजिन

१०) संस्कृत वाङ्मय को बौद्धावदान 347-362
—डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

११) བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་གི་བྱུང་བ་དང་དེའི་འགྱུར་ལྡོག་ལ་ཆུང་ཟད་དཔྱད་པ། 363-382
—ཐོ་ཨ་འབྲུམ་རམས་པ་སྟེན་པ་རྡོ་རྗེ།

१२) བོད་སྐད་བརྡ་སྤྱོད་ལས་ཕེད་གི་ཚོགས་ཀྱི་འཛེལ་དེམ་ལ་དཔྱད་པ། 383-396
— འབྲུམ་རམས་པ་རིག་དགེ་བའི་ཚེ་རིང།

१३) སྐབས་ཅུ་པའི་ཚོགས་ཐད་དངོས་ཀྱེགས་སུ་བསྟན་པའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་དཔྱད་པ་བློ་གསར་མཐིན་རྒྱུན། 397-414
— འབྲུམ་རམས་པ་ལྷག་པ་ཚེ་རིང།

१४) དབྱངས་ཅན་མའི་སྒྲ་མདོའི་ནན་བཤད་སྤྱོད་མ་ལ་བན་པ་རྣོགས་དཀའི་སྐབས་མ་ཕེ་ལ་བའི་བོད་ཟེར་བརྒྱ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་མཚམས་སྤྱོད་ལྟ་བུའི་འགྲེལ་པ་སྒྲ་སྐྱབས་རྗེ་མོ་དང་བཅས་པ་མཆན་ཀྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པ། 415-494
—ཤྲཱུ་ཏ་ག་མངམ་རྒྱས་བསྟན་དབ།

१५) བོད་ཡིག་གམ་ཐོ་ལེའི་སྐད་ཡིག་ཡང་རྒྱས་གཏོང་ཐབས་སྤྱོད་ཚུད་ཙམ་བྱེད་པ། 495-536
—ཤྲཱུ་ཏ་མོག་རྩོང་བཀྲ་ཤིས་རྒྱལ་པོ།

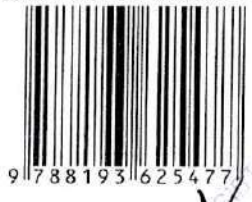
१६) བོད་སྐད་དང་འབྲེལ་བའི་འབྲུག་སྐད་ཁེངས་ཁའི་སྒྲ་གདངས་ལ་ཚད་ཙམ་དཔྱད་པ། 537-566
—ཤྲཱུ་ཏ་བསྟན་འཛིན་རྡོ་རྗེ།

१७) Preservation and Development of Tibetan/Bhoti Language in Indian Himalayas 567-582
—Dr Konchok Tashi

Central Institute of Higher Tibetan Studies
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Deemed University
सारनाथ/Sarnath, Varanasi



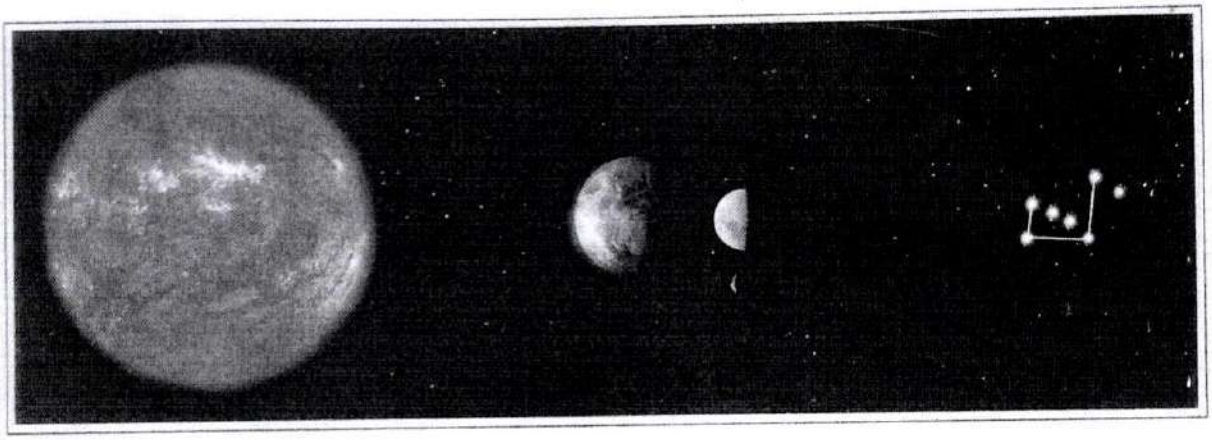
ISBN : 978-81-936254-7-7



Jampa Chophel
122

SAMBHOTA SERIES XX

ས་གཞི་བཤད།



ཨམས་ཞིབ་སྟོབས་ཀྱི་ཀེས་རིག་སྐྱེ་ཚན་ཀྱི་ཉེ་བའི་སྟོབས་དཔོན་བཀྲིས་ཚེ་རིང་མཆོག

ཨམས་ཞིབ།

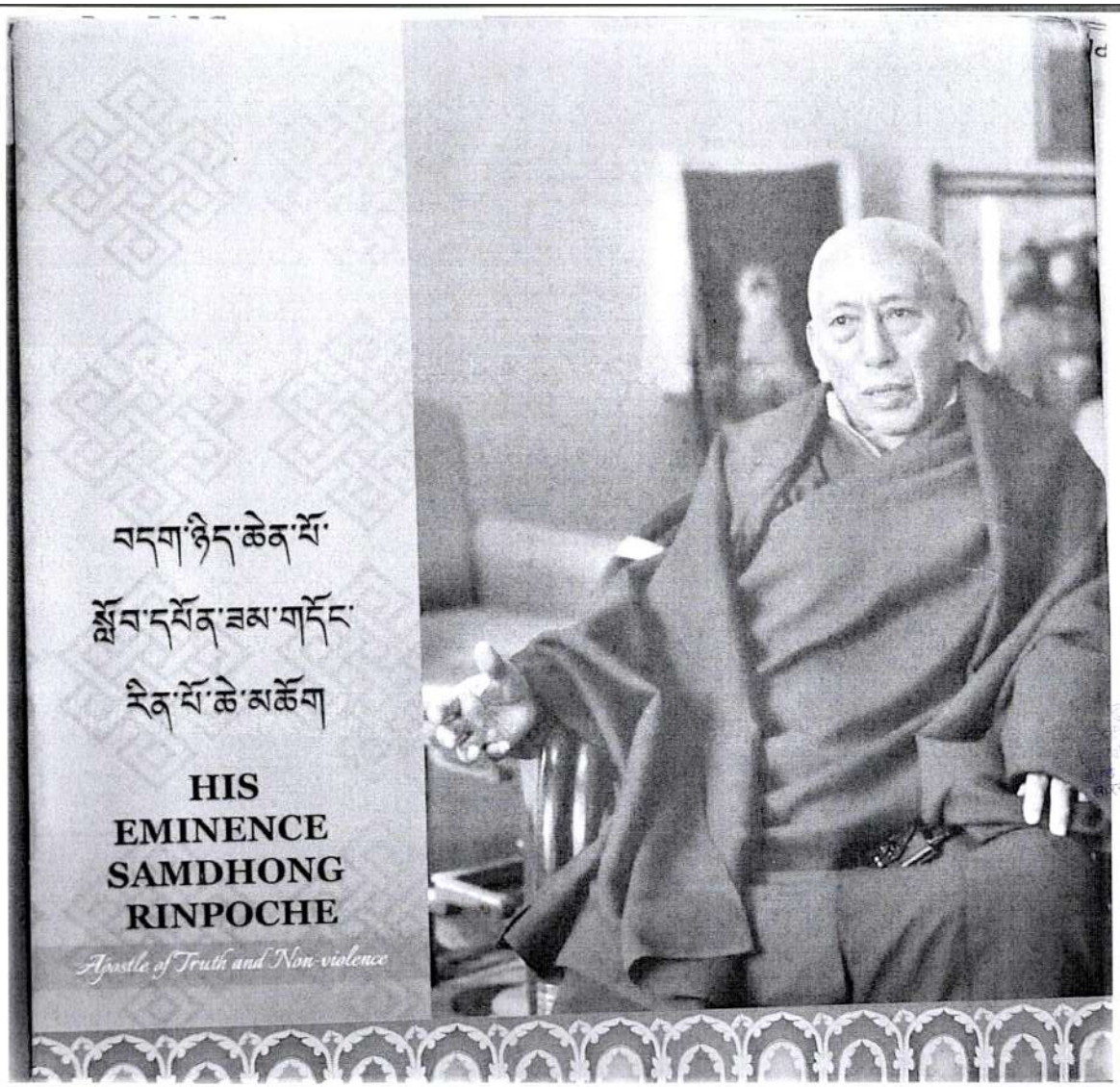
སྒྲུབ་ཁྲིད་ཚོགས་སྟོབས་ཀྱི་སྐོར་ཚེས་སྟོབས་དཔོན་གཞིན་ལ་བྱམས་པ་ཚོས་འཛེལ།

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

འཕགས་པ་གནས་བརྟན་བཞི་འདུས། ༢༥༤༣

ཉམས་ཞིབ་ཀྱི་དབྱད་རྩོམ་འདི་ཉིད་སྤྱི་ནོར་༢གོང་ས་༢སྐྱབས་མགོན་ཆེན་པོ་མཆོག་གིས་ཀྱི་ལོ་ ༢༠༡༩ འགོ་སྟོད་དུ་སྐལ་བཟང་སངས་རྒྱས་སྟོང་གིས་བྱང་ཆུབ་མངོན་དུ་འགྱུར་བའི་གནས་མཆོག་རྩོ་རྗེ་གདན་དུ་དབལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོའི་དབང་ཆེན་ཞེངས་སོ་གཉིས་པ་བཀྲིས་ཆེ་བ་དང་། དབང་ཆེན་དངོས་གཞིའི་དུས་སུ་ས་ཀུ་ཆེས་དུས་བྱེ་བག་གཅིག་གི་སྟེང་ལ་སྐལ་ལྡན་ཀྱི་སྒོ་ནས་མ་རྟོགས་ལ་དབང་ནོད་བའི་དུས་ཆོགས་རྣོ་སྒོང་བཀྲིན་ཆེ་སྐབས། དབལ་ལྡན་ཟུག་བའི་ལས་ལུགས་ལྟར་འཕྲེལ་བརྩོད་གནད་ཞོར་དུ་ཆུ་བ་ངོས་འཛིན་ཐད་ལ་མི་འབྱ་བ་ཡོད་པ་དང་དེ་ཐོག་ཉམས་ཞིབ་བྱ་དགོས་པ་ཆོགས་ཡོངས་ལ་བཀའ་བསྒོས་པ་དང་། སྐབས་མཚམས་རང་ཉིད་ཀྱང་དབང་བླ་ལུང་དུ་སྒྲུབ་པའི་སྐལ་བཟང་གི་དུས་སྟོན་ཞོས་ཤིག་ལས་བསྟོན་པའི་ཚེ་ཤིན་ཏུ་ཉུང་ཤས་ཅིག་ཡོད་པ་ཙམ་ལས་ཁོ་ནས་ཀྱང་ཐུབ་ཀྱི་རེད་ཟེར་བ་ལྟ་བུ་ཞིག་ཡོད་པ་ཡིན་ལ། ཁོ་ཚོ་ཡ

Tsurpa Sangha — (123)



Printed in 2019.
Publisher: The Felicitation Committee to celebrate His Eminence Prof. Samdhong Rinpoche's 80th Birthday in New Delhi
Address: 143, 4th Floor, Uday Park, New Delhi 110049
©: Felicitation Committee
All rights reserved by the Felicitation Committee.

The views/opinions expressed in this book are solely of the author and do not necessarily reflect the views of the publisher.
The portion that has been taken from already published material are acknowledged to the author and publisher-

1) Wisdom House, Ansari Road, Daryaganj New Delhi 110002 and
2) World Wisdom, Inc. P.O. Box 2682, Bloomington, Indiana 47402- 2682

conceived, recorded and edited by Donovan Robert.

Concept and design by Dorjee Namjor, Tibnology, New Delhi.

Edited by Sona Kapila

Printed by Sherig Parkhang Trust, R- 27 & 28, Ramesh Park, Laxmi Nagar, New Delhi- 110092
The production of this Felicitation Volume is financed by Sherig Parkhang Trust.
website:sherigparkhang.com

ISBN: 978-93-84062-73-6
Date: 5th November 2019
Place: New Delhi

केन्द्रीय तिब्बती शिक्षा संस्थान/Central Institute of Higher Tibetan Studies
विश्वविद्यालय/Deemed University
वाराणसी/Sarnath, Varanasi



Contents

Foreword	1
Introduction	3
Section 1 - Biography	9
Section 2- Tributes	27
Section 3- Rinpoche's Vision & Concepts	73
Section 4- Life Sketch	135
Section 5- Photo Gallery	139

REGISTRAR
Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

PROFESSOR SAMDHONG RINPOCHE: CONTRIBUTIONS TO EDUCATION AND HIS ACADEMIC ACHIEVEMENTS

Ven. Geshe Ngawang Samten
Prof. Jampa Samten

Professor Samdhong Rinpoche was born in Jol Nagdrug in Eastern Tibet in 1939.

At the age of about five, Rinpoche was recognized as a reincarnation of the fourth Samdhong and was soon moved to his own monastery, Gaden Dechenling, about one hundred kilometres from his village. At the age of seven years, he was ordained as a novice monk by Kyabje Zongbhum Rinpoche of the Gyalthang Sumtsenling monastery.

When Rinpoche was about nine years old, one of the main disciples of the fourth Samdhong, a great scholar was appointed as his tutor. For four years, Rinpoche learnt reading and writing, grammar, literature, medicine, astrology and primary spiritual practices. At the age of about thirteen, Rinpoche left for Central Tibet to join Drepung monastery in Lhasa. During the eight years from the winter of 1951 to March 1959, Rinpoche completed the study of major philosophical treatises of Abhisamayàlamkara (Buddhist soteriology) and Màdhyamika (Middle way Philosophy) Pramàna (logic), Vinaya (monastic discipline) and Abhidharma (Buddhist cosmology, psychology and others) at Drepung monastery. His scriptural studies were interrupted when the Chinese occupied Tibet in 1959 and Rinpoche crossed over to India at the age of twenty. In India, he resumed his studies with his master Zesung Khansur in Dalhousie. He also completed his Geshe examinations in Dalhousie.

In July of 1960, when Rinpoche was in Sikkim, young incarnated lamas and scholars were summoned to Dharamsala. They were informed that the coming of His Holiness Dalai Lama and influx of the Tibetan refugees to India had accentuated the Tibet issue and that the people of the world had begun taking an interest in the political situation, religions and culture of Tibet. There were increasing numbers of requests from various countries to send Tibetan scholars as teachers and researchers, and even as research associates. It was thought that if Tibetans of proven erudition and excellence were sent to those countries, the Tibet issue would get high-level attention. But before such persons were sent abroad they needed to be trained. Monks are generally not well versed in history, grammar or rhetoric. Hence, an orientation course in these subjects was organized in Dharamsala. They were also to be prepared with a minimum workable knowledge of English language, so that they would not need an interpreter with them wherever they went. A few days after, during an audience with His Holiness Dalai Lama, when they were told that many of them might be sent to other countries whenever required, Rinpoche submitted a request expressing his wish to not be sent abroad.

Rinpoche asked that he be permitted to carry out any work that His Holiness may wish of him, in India and that he would be grateful if he were not asked to go to a distant country. All his spiritual Teachers were in India and Rinpoche wished to remain close to them so that he could continue to learn from them and seek their advice. His Holiness agreed to Rinpoche's request, and gave his word that he would engage Rinpoche for works in India.

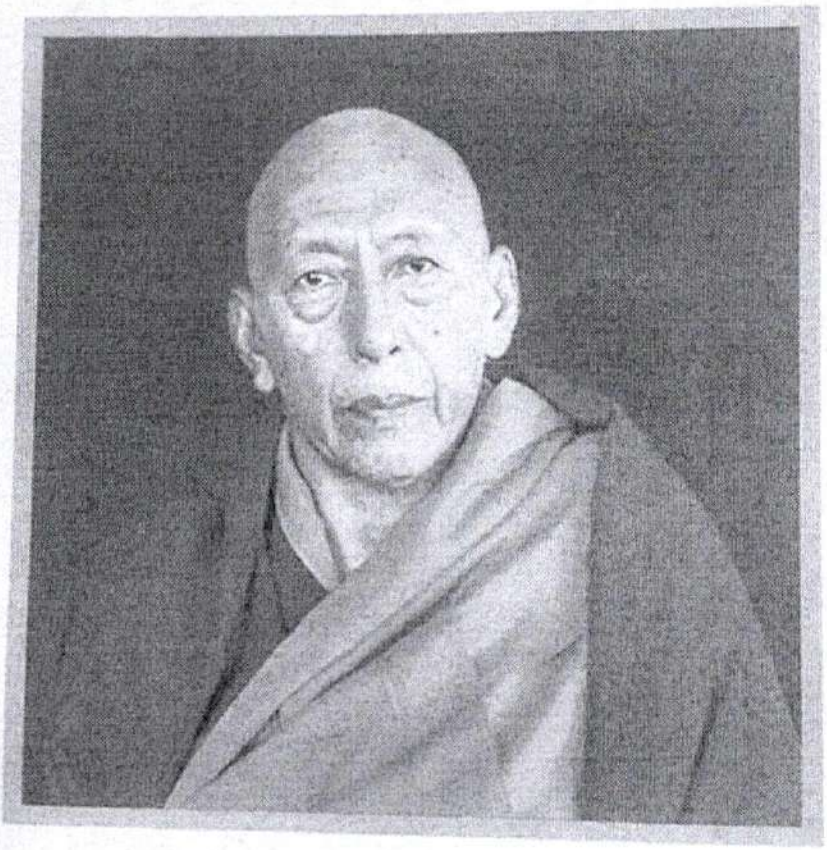
Almost at the same time, it was decided by the Dharamsala establishment that all lamas residing in

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Jampa Samten
124

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-II]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

REGISTRAR
Sampurnanand Sanskrit University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi



Sampurnanand Sanskrit University
संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

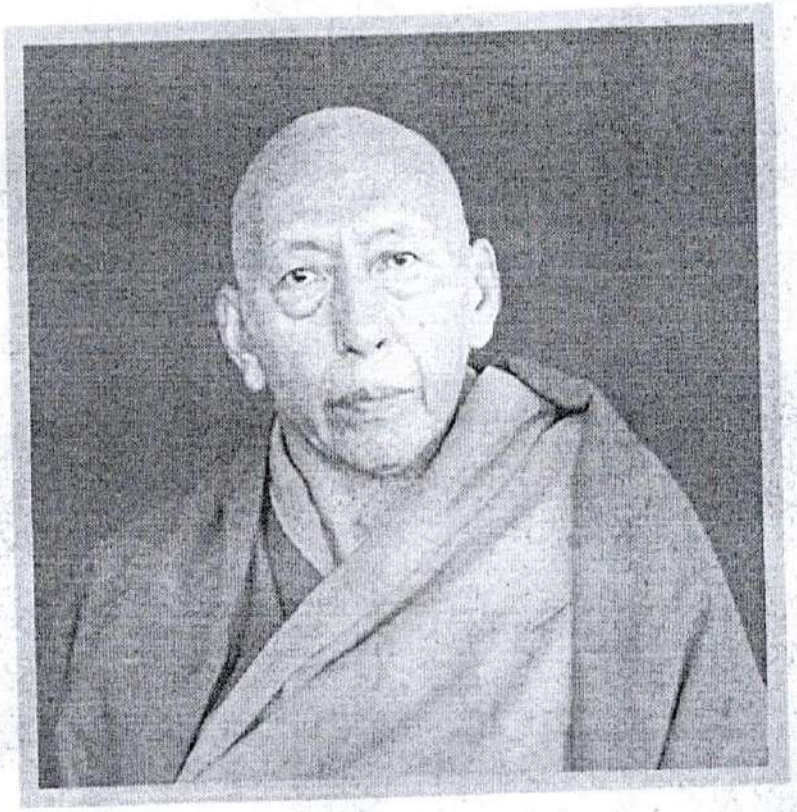
ISBN : 978-81-936254-8-4



Lobsang Dorjee (126)

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

[Part-I]



A COLLECTION OF
ARTICLES AUTHORED BY CIHTS ALUMNI
IN HONOUR OF
PROF. SAMDHONG RINPOCHE

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

A Collection of Articles from CIHTS Alumni in Honour of
the Fifth Samdhong Rinpoche, Lobsang Tenzin
on the occasion of his Eightieth Birthday

[Part-I]



Edited by
The Editorial Board
Prof. S. Rinpoche Felicitation Volume

ALUMNI ASSOCIATION OF CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER
TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007

2019

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

IN SEARCH OF TRUTH : PART II

Editorial Board

Prof. Dr. Jampa Samten
Prof. Dr. Penpa Dorjee
Dr. Jampa Choephel
Geshe Dr. Lobsang Dorjee (Rabling)
Acharya Sangye Tendar
Acharya Pema Choeden

First Edition : 2019

Copyright © by Alumni Association of CIHTS
Sarnath, Varanasi-221007 India, 2019

Published by:
Alumni Association of CIHTS, Sarnath, Varanasi-221007 (India)

ISBN : 978-81-936254-7-7

कुलसचिव/REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Printed at Sattanam Printers, Pandeypur, Varanasi.

གསུམ་པ། བོད་ཀྱི་བརྙན་རྩོམ་སོགས་རིག་གནས་ཚེ་ཆུང་སྐོར། 337-627

(৮) तिब्बती बौद्ध साहित्य का विकास एवं संस्कृत भाषा का प्रभाव 337-346
— प्रो. डॉ. पेमा तेनजिन

(৯) संस्कृत वाङ्मय को बौद्धावदान 347-362
— डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

(১০) བོད་ཀྱི་སྐད་ཡིག་གི་བྱུང་བ་དང་དེའི་འགྱུར་ལྡོག་ལ་ཆུང་ཟད་དཔྱད་པ། 363-382
— ཨོ། འབྲུམ་རམས་པ་སྒེན་པ་རྡོ་རྗེ།

(১১) བོད་སྐད་བརྙན་རྩོམ་ལས་ཨིང་གི་ཚོགས་ཀྱི་འཛེལ་རིམ་ལ་དཔྱད་པ། 383-396
— འབྲུམ་རམས་པ་རིག་དགེ་བའི་ཚེ་རིང་།

(১২) སྲུམ་ཙུ་བའི་ཚོག་ཐུང་དངོས་ཀྱིས་སུ་བསྒྲུབ་བའི་རྒྱུ་མཚན་སོགས་ལ་དཔྱད་པ་བྱོ་གས་མཐིན་རྒྱུན། 397-414
— འབྲུམ་རམས་པ་ལྷག་པ་ཚེ་རིང་།

(১৩) དབྱངས་ཅན་མའི་སྒྲ་མདོའི་རྣལ་འཕྲོ་བ་ལ་ལས་བཅུ་པ་རྟོགས་དཀའི་སྐུན་པ་སེལ་བའི་ཚོད་ཟེར་བརྒྱ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་མཚམས་སྦྱོར་ཡུ་ཡོའི་འགྲེལ་པ་སྒྲུབ་པའི་ཚོ་དང་བཅས་པ་མཚན་གྱི་ཚུལ་དུ་བཀོད་པ། 415-494
—སྒོན་རྡོ་ན་ཐ་སངས་རྒྱས་བསྒྲུབ་དར།

(১৪) བོད་ཡིག་གམ་སྐོ་ལེའི་སྐད་ཡིག་ཡང་རྒྱས་གཏེར་ཐབས་སྐོར་ཞུབ་ཚམ་གྲོན་པ། 495-536
—སྒོན་རྡོ་སོ་ཐ་རྡོང་བཀའ་ཤིས་རྒྱལ་པོ།

(১৫) བོད་སྐད་དང་འབྲེལ་བའི་འབྲུག་སྐད་ཁེངས་ཁའི་སྒྲ་གདངས་ལ་མདོ་ཚམ་དབྱད་པ། 537-566
—སྒོན་རྡོ་བསྒྲུབ་འཕེན་རྡོ་རྗེ།

(১৬) Preservation and Development of Tibetan/Bhoti Language in Indian Himalayas 567-582
—Dr. Konchok Tashi

REGISTRAR
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
Central Institute of Higher Tibetan Studies
डीम्ड विश्वविद्यालय/Deemed University
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

Lobsang Choedak — 127
B (iii) 1-3

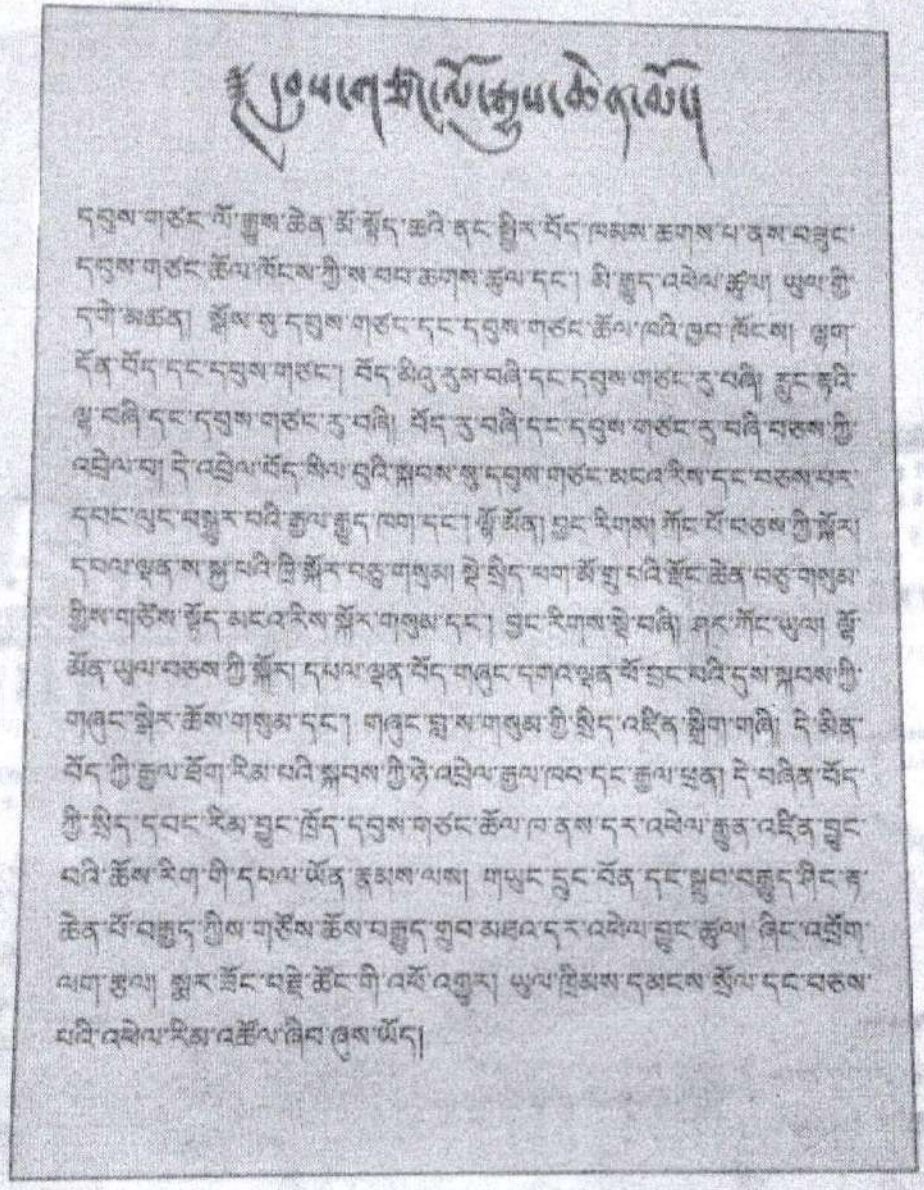
ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོ།

ཀློད་ཆ།

དབུས་གཙང་སྤྱི་བཀའ།

REGISTRAR
Deemed University
Varanasi

དབུས་གཙང་ཆོས་ལྡན་དབུས་སྤྱི་ཁྲབ་ཁང་།





Lobtang Chodak
-128

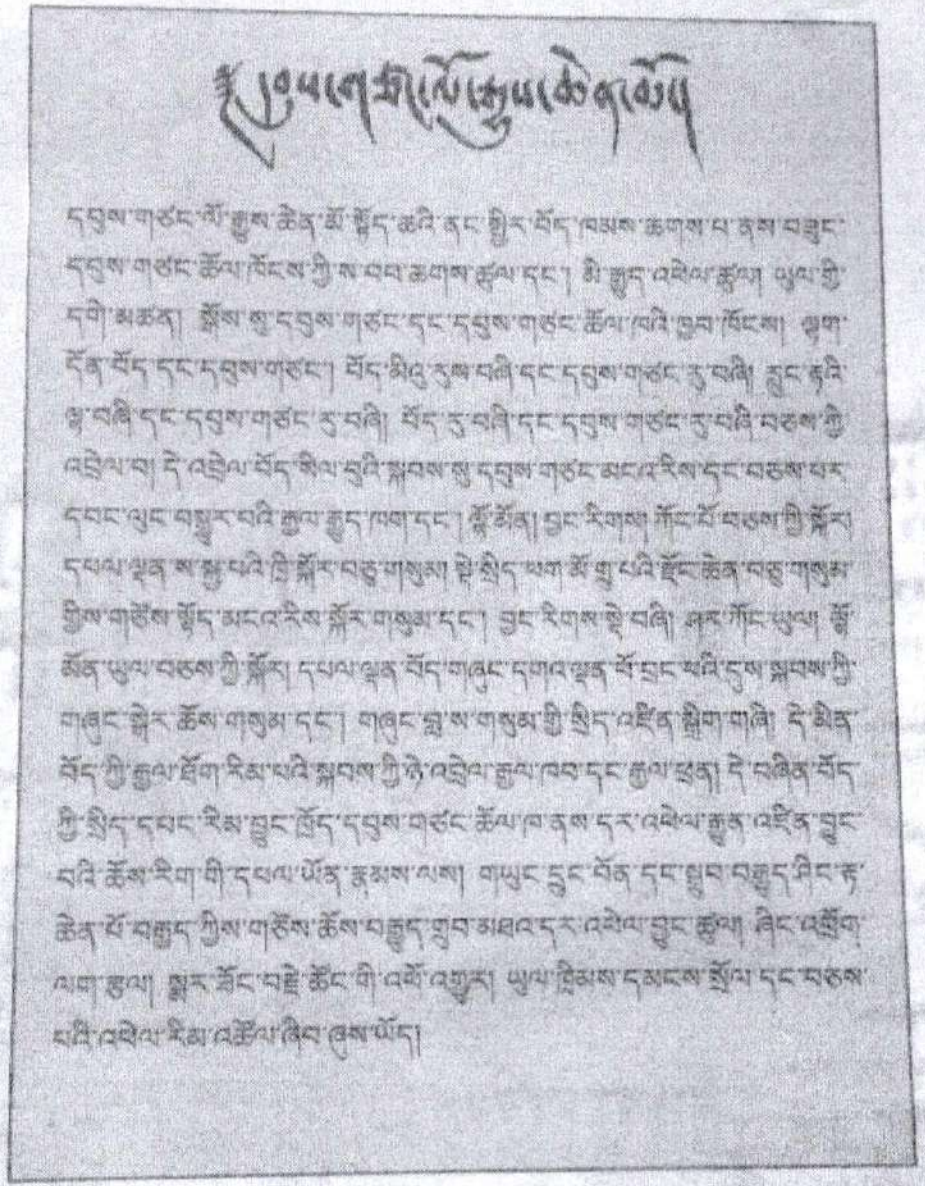
སྤྱི་དོན་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཁ་སྐོང་།

སྒྲུབ་ཆ།

མངའ་རིས། བྱང་རིགས། དྲགས་ཀོང་།

Central Institute of Higher Tibetan Studies
Deemed University
Sarnath, Varanasi

དབུས་གཙང་ཆོས་ལའི་དབུས་སྦྱི་ཁྲབ་ཁང་།




9 789383 091836

Lobzang Tsultak (23)

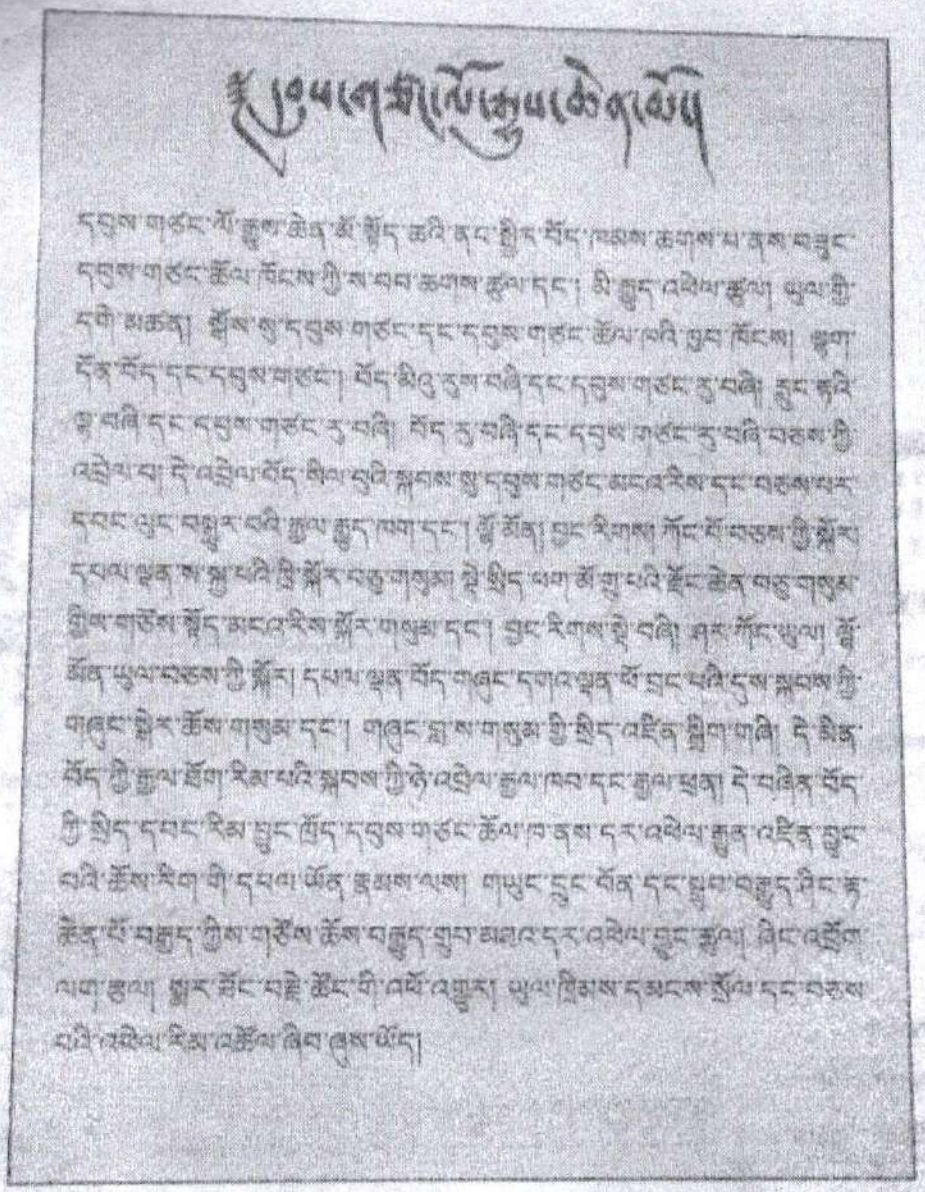
སྤྱི་དཔལ་ལྡན་ཀླུ་ཡི་ཀུན་བཏུས།

བདར་ཆ།

དབུས་ གཙང་། ལྷོ་ཁ།

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
Central Institute of Higher Tibetan Studies
सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ हायर टिबेटन स्टडीज
सारनाथ, वाराणसी/Sarnath, Varanasi

དབུས་གཙང་ཚོས་ཁྲིའི་དབུས་སྦྱིན་ཁྲབ་ཁང་།




9 789383 091836